कैलाश कल्पित

कैलाश कल्पित

# चारुचित्रा

देसाई जी ने दर्द में भरकर कहा, "तुम क्या जानो, दिल की बातें कह कर मैं कितना हलका हो जाता हूँ। तुमको मैंने केवल एक कार्य सौंपा था कि चारुचित्रा को विवाह करने के लिए राजी कर लो किन्तु तुम वह भी नहीं कर पाईं। मेरे सामने मेरी युवा लड़की बैठी है। मेरे स्वास्थ्य का यह हाल है और मेरी आकांक्षा क्या रही है क्या तुम नहीं समझ सकतीं ? चारु का विवाह···" वे फिर खांसे और मोहिनी ने उनकी बात अपने मुख में लेते हुए कहा, "चारु के विवाह की आपको चिन्ता है तो क्या मुझे नही ? मेरे लिए तो वह भार है···"

'भार' का शब्द मां के मुख से निकलते ही चारुचित्रा तपाक से वहाँ आई और बोली, "मुझे भार क्यों समझा जाता है ? मेरे चलने से क्या धरती हिलती है ? मुझे ऐसी बाते पसंद नहीं है।"

देसाई जी ने चारुचित्रा की ओर देखकर कहा, "बेटी, लड़कियाँ तो भार ही कही जाती हैं। कम से कम अपने समाज में तो···"

"इतना देश-विदेश आपने घूमा, किन्तु अपने दकियानूसी विचार नही छोड सके !"

"दकियानूसी···! मुझे दीक्षा देने का प्रयास कर रही हो ? मैं पूछना चाहता हूँ कि तुम अपना विवाह करने की सहमति क्यों नहीं देतीं ? विवाह तो तुमको करना ही होगा।"

वह चिढ़कर बोली, "आप सदैव विवाह की ही रट लगाया करते है। किन्तु मुझे आजीवन अविवाहित रहना है। मैं जान-बूझ कर अपनी स्वतन्त्रता खोना नही चाहती।"

"तुम्हें समझना चाहिए, वैवाहिक जीवन कुंवारे जीवन से अधिक स्वतन्त्र है। यह मिस कहलाने की प्रथा जो पश्चिम से आयात होकर यहाँ चली आई है उसे मैं अपने घर में नहीं पलने दूंगा।"

"पश्चिम से क्यों चली आई है। यह तो यहाँ पहले से विद्यमान है। बौद्ध भिक्षुणियाँ प्रायः आजीवन कुंवारी रहती थी। सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा आजीवन कुंवारी रही !"

किन्तु ऐसे आदर्श से ससार का काय नहीं चल सका और न चलेगा यह बात

दूसरी है कि संघमित्रा अपने महाव्रत को पूर्ण करने मे अपनी ओर देख ही न पाई, किन्तु तुम्हें विदित होना चाहिए कि प्रकृति से विद्रोह करके चलना उचित नहीं।" देसाई जी की लम्बी-लम्बी साँसें चलने लगीं।

मोहिनी ने बीच में बोल कर कहा, "सम्पूर्ण शास्त्रार्थ इसी समय आपको करना है?"

चारुचित्रा ने माँ की बातों पर कोई भी ध्यान न देकर कहा, "मैं विवाह करके इतने दिनों की अपनी साधना, जिसे आपने ही संरक्षण दिया है, दूसरे की इच्छा पर नीलाम कर दूँ?"

वह अधिक रोष में आ गई और आगे बोली, "मैने देखा है, विवाहोपरान्त स्त्री पर प्रत्येक पुरुष अपना स्वामित्व थोपने का दैवी अधिकार समझने लगता है।"

"यह पुरुष की भूल है। किन्तु पुरुष के इस संस्कार को सुधारने के लिए तुम जो मार्ग अपना रही हो वह सर्वथा अनुचित है। हमारे वेदों, पुराणों, रामायण या महाभारत में अथवा भारत के सामाजिक इतिहास में जितनी भी आदर्श महिलाएँ दिखाई देती है, वे सब विवाहिता हैं।" उनको फिर खाँसी आई किन्तु आगे बोले, "कौमार्य जीवन में एक समय वह आता है जब व्यक्ति अन्दर से इस बुरी तरह से विचलित होता है कि उसे कुछ क्षण के लिए अच्छा-बुरा, ऊँचा-नीचा और मान-मर्यादा ि गी का भी ध्यान नहीं रहता। हिमकन्या गंगा में भी जब यौवन की तरंग आती है तो वह भगीरथ मार्ग को भूलकर नर्कसम नालो मे बहने लगती है। कितना भीषण रूप होता है तब उसका! क्या तब वह किसी की सुनती है? नहीं, यौवन पर अंकुश रखने के लिए विवाह आवश्यक है।"

"चारुचित्रा!" मोहिनी देवी बोलीं, "क्यों नहीं आश्वासन दे देती हो कि विवाह कर लोगी।"

चारुचित्रा ने उन्मन होकर कहा, "सोचूँगी कभी···।"

देसाई जी की बडी-बड़ी आँखें निकल पड़ीं। क्रोध में भर कर बोले, "अभी सोचोगी? कब सोचोगी? क्या, जब किसी आडम्बरमय व्यक्ति के बाहुपाश में···"

"बापू," वह चीखी, "आप मुझे इतना असंयत समझते हैं!" वह रो पड़ी।

देसाई जी को सम्बल देने के लिए शास्त्री जी जो देसाई जी के विशेष मित्रों मे थे और इस घरेलू बातचीत के बीच में वहाँ आ चुके थे, बोले, "संयत-असंयत का प्रश्न नही है। ससार बड़ा मक्कार है और मनुष्य की चेतना समान गतिमान नहीं रहती।"

चारुचित्रा ने आँख फाड़कर शास्त्री जी की ओर देखा और पिता की ओर दृष्टि घुमाई। देसाई ने जी धीरे से कहा, "मैं तुम्हारी अन्त:भावनाओं को समझ रहा हूँ, किन्तु मेरा स्वास्थ्य अब ठीक होता दिखाई नहीं देता। अधिक समय तक मैं तुम्हें अपने सरक्षण में न रख पाऊँगा। समय रहते ही कार्य होने में लाभ होता है।"

"किन्तु जब मुझे अपना विवाह करना ही नही है तो समय का प्रश्न···"

"चारुऽऽऽ···" देसाई जी ने अत्यधिक क्रोध में भर कर जोर से डाँटा इतनी देर से मैं तुम्हें समझा रहा हूँ और उनको फिर खाँसी आ गई, किन्तु व अपने आवेश

को न रोक सके और बोले, "तुम अब भी किन्तु-परन्तु किये जा रही हो, मूर्ख !"

देसाई जी के मुख से खून गिरने लगा। उनकी तबियत अधिक खराब हो गई। बैठे-बैठे ही बिस्तर पर पट गिर गए। शास्त्री जी ने उन्हें सम्हाला किन्तु उनके हृदय की गति रुक चुकी थी।

मोहिनी चीखी और चारुचित्रा ने पलंग की पट्टी पर सिर रखकर कहा, "बापू, मैं विवाह करूँगी···मैं विवाह करूँगी। आप आँख खोलें। योग्य वर मिलते ही आपकी आज्ञा का पालन करूँगी।"

## 2

"देखा तुमने माधुरी को ! कितना बढ़िया सितार बजाती है !"

"बहुत बढ़िया, उसके सितार की मधुर झन्कार से मुझे नींद आ गई।"

"मैं तो वहाँ बैठा-बैठा सोच रहा था कि कभी कोई अवसर आये तो तबले के साथ उसकी संगत करूँ।"

"तुम तो मॉरिस कालेज हर लड़की के साथ तबले की संगत करना चाहते हो। उस दिन कमला का सूद का जलतरग सुना तो उसके साथ संगत करने को उतावले हो गये। कल सुधा वर्मा का गिटार सुना तो बोले, एक दिन तबले की सगत इसके साथ भी करनी है और आज माधुरी का सितार सुना तो कहते हो, अवसर मिले तो तबले पर उसकी सगत करूँ।"

"तुम क्या समझो संगत का मजा, दिन भर बैठे बस अपना बेला रगड़ा करो, रिऊँ, रिऊँ, रिऊँ।"

"हाँ मैं क्या समझूँ कि सम माँगने के बहाने आँख कैसे लड़ाई जाती है। मैं कहता हूँ अधिक रोमांस में पड़ोगे तो किसी दिन बुरे फँसोगे।"

"अच्छा गुरु जी दीक्षा दे रहे हैं !" नटवरलाल बोला, "अपनी कहो जब घर की छत पर बैठकर शरद् की चाँदनी में नौशाद की फिल्मी धुनें बजाते हो और सामने की खिड़की पर स्वर्णलता आकर बैठ जाती है तब कैसी गुदगुदी होती है ?"

"वह तो मेरी प्राइवेट है···" रूपकुमार ने कहा।

"प्राइवेट···" नटवरलाल हँसा, "भई तुम्हारी एक और मेरी चार।"

"एक माने एक, किन्तु चार माने एक भी नही।"

"माना कि एक भी नहीं, किन्तु स्वर्णा ही कौन तुम्हारी हो गई है ?"

"न सही, उसे बैठा देखकर कुछ देर स्वर साधना की प्रेरणा तो मिल जाती है। नियमित अभ्यास करने का बहाना तो हो जाता है।"

"सीधे मार्ग पर अब आये तुम, अभ्यास का ही बहाना तो मैं ढूंढ़ता हूँ। तबले का रियाज डण्डे मारने से कम थोड़े ही होता है।"

"किन्तु एक बात है।"

"क्या ?"

हम लोगों की यह रोमांटिक आदत ठीक नही वस्तुत स्वर साधने के लिए

सयम की आवश्यकता है ।"

नटवरलाल रूपकुमार की बात पर हसा और बोला, "अरे यार, सब ऐसे ही चलता है, यह दुनिया है मौज लेने की। आदर्शवादी बनने से लोग मूर्ख समझते है। मुझे देखो दिन भर जासूसी उपन्यास पढ़ता हूँ। तीन घण्टे तबले का रियाज किया। शाम को एक पेग ह्विस्की लेकर फिर जब कनाट प्लेस की सैर करता हूँ तो ऐसा मालूम होता है मानो मिस इण्डिया, मिस फ्रांस, मिस युनिवर्स और न जाने कौन-कौन मेरे ही चारो ओर घूम रही हैं।"

"वाह, बहुत अच्छे ! रहो लखनऊ में और स्वप्न देखो कनाट प्लेस का। यहाँ पर भी कुछ पीकर आये हो क्या ?"

"अरे ! मुझे दिल्ली की याद आ जाती है, मेरा मतलब है हजरतगंज से। क्या बताऊँ यहाँ अपना कोई साथी नहीं है। एक तुम मिले सो वो भी प्राऽऽइ···वेट वाले। मुझको भी भागीदार बनाओ तो देखो फिर स्वर्णलता को थिरकते हुए तुम्हारी छत पर बुला देता हूँ या नहीं।"

"तुम क्या बुलाओगे, वह भी क्या कोई बाजारू है ! शरीफ घर की लड़की है।'

"शरीफ घर की लड़की है तो मैं किस शरीफ से कम हूँ !"

"हाँ···वह तो आपकी एक-एक बात से प्रत्यक्ष है किन्तु···"

"किन्तु-परन्तु कुछ नही। कल से आऊँगा। तुम्हारे साथ तबले का रियाज करने मे कुछ मुझे भी मौज आयेगी।"

"आओ। मुझे तो अच्छा है, किन्तु क्या बताऊँ, महीने भर बाद ही तो मेरा कोर्स पूरा हो जायेगा और फिर उसके बाद पूना लौट जाना है।"

"अरे तो परीक्षा तक ही तो मुझे भी रुकना है, इसी परीक्षा के बाद मुझे भी लखनऊ छोड़कर दिल्ली चला जाना है।"

"अच्छा, यह तो बताओ यह ह्विस्की पीने की लत तुम्हें कहाँ से पड़ी ?"

"तुम्हें मालूम है कि मेरे यहाँ सिले-सिलाये कपड़ों का व्यापार होता है।"

"हाँ, हाँ, वह तो आपकी नित नई बुशशर्टें याद दिलाया करती हैं।"

"हाँ तो इन कपडों को तैयार करने के लिए जिस मिल से हमारे यहाँ कपडा लिया जाता है उसके मालिक सेठ लक्ष्मणदास का लड़का कमलचन्द्र मेरे यहाँ दिल्ली मे पूणे प्रायः आता है।"

"ठीक, ठीक, कमलचन्द्र ! ध्यान आया। बहुत दिन हो गये, तुमने मुझे बताया था कि कमलचन्द्र तुम्हें जबरदस्ती रूपमहल होटल में ले गया था और वहाँ पहली बार तुमने मिस बालटी···।"

"नहीं-नहीं, मिस बाटलीबाय···।"

"हाँ मिस बाटलीबाय का नृत्य देखा।"

"हाँ बाटलीबाय का नृत्य, सर नीचे और पेट ऊपर। जाँघ तक खुली टाँगो मे लकड़ी की जूती पहने जब वह खट-खट करती हुई नाचती थी तो ऐसा मालूम होता था मानो कोई नट पैरो मे बाँस बाँधकर चल रहा हो

रूपकुमार की बात सुनकर हँसा और रूपकुमार आगे बोला, "याद आ गया, वह अपने हाथ में पेग लेकर तुम्हारे सामने पीठ करके खड़ी हो गई थी और फिर कमर को बेंत की तरह लचकाकर उसने सिर अपनी एड़ी से छुआते हुए तुम्हें पेग पकड़ा दिया था···"

"हाँ, और तभी सब चिल्ला उठे थे···एक्सीलेण्ट ! सचमुच दिल्ली की बात ही दूसरी है।"

"और क्या, यहाँ कहाँ मिस बाटलीबाय धरी है।"

"गोली मारो बाटलीबाय को।" नटवरलाल ने पैंतरा बदला, "जो सौन्दर्य देसी लड़कियों मे है वह उन मोम की पुतलियो में नहीं।"

"अरे भाँग की बूटी में जो आनन्द है वह ह्विस्की में···"

"यह बात मैं नहीं मानता, ह्विस्की की तरंग भाँग में नहीं मिल सकती।"

"भाँग भी कभी पी है ?"

"क्यों नहीं, संसार के किस क्षेत्र का मुझे अनुभव नहीं ? अच्छे-बुरे सभी कामो मे मैं घुस चुका हूँ।"

"तब तो बड़े अनुभवी आदमी हो, इस अनुभव का उपयोग क्या है ?"

"रूपकुमार, तुम तो बिल्कुल बुद्धू हो, अनुभव का उपयोग क्या बढ़ई के बसूले की तरह किया जाता है, अनुभव वह हथियार है जो आरी, रन्दा, हथौड़े का काम एक साथ करता है।"

"ठीक है, किन्तु अनुभव भी तो कई प्रकार के होते हैं।"

"मुझे अपने मतलब से मतलब। बेकार का विवाद बन्द करो और यह बताओ कि कल से किस समय अपने घर पर मिला करोगे ?"

"भई मेरा कोई ठीक नहीं है, अच्छा फिर कभी सोचकर बताऊँगा।"

"बहुत चतुर दिखाई देते हो, किन्तु याद रखना स्वर्णलता का प्रेम जीतने का एकमात्र मार्ग है—उसका नाम किसी प्रकार मारिस कालेज में लिखवा दो।"

"मैं तुम्हारी तरह हाथ धोकर किसी के पीछे नहीं पड़ता। अपने काम से काम रखता हूँ और बहती गंगा में हाथ भी धो लेता हूँ।"

"मेरे और तुम्हारे सिद्धान्त में बहुत अन्तर है, खैर ! यह बताओ तुम्हारे यहाँ पुणे में कभी घूमने आऊँ तो···?"

"अवश्य आओ, मैं तुम्हें वहाँ की एक-एक जगह घुमाऊँगा। कब आने की सोच रहे हो ? इसी गर्मी मे ?"

"नहीं अभी नही, किन्तु कभी आऊँगा अवश्य।"

ललित कला महाविद्यालय में, विद्यालय के संस्थापक मगनलाल देसाई की 65वीं जन्मतिथि मनाई जा रही थी। देसाई जी ने अपने पिता की सम्पूर्ण धनराशि इस महाविद्यालय की स्थापना में उस दिन से दस वर्ष पूर्व दान कर दी थी। वे स्वयं संगीत और चित्रकला के विशेष प्रेमी थे। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में केवल कला-साधना ही की थी शिक्षा प्राप्त और देश विदेश की यात्रा करने के बाद उनके

हृदय में सबसे बड़ी अभिलाषा जो जागृत हुई थी वह यह कि भारत में भारतीय भाषाओं के प्राचीन साहित्य में शीघ्र ही शोधकार्य किया जाय और यहाँ एक ऐसा अन्तरराष्ट्रीय कला विद्यालय खोला जाए, जहाँ पूर्व व पश्चिम के कलात्मक समन्वय से एक नवीन धारा की सृष्टि हो।

महाविद्यालय का शिक्षण सत्र संस्थापक के जन्मदिन से ही आरम्भ होता था, अतः नये-नये विद्यार्थियों की भीड़ विशेष उत्साह से विद्यालय के रंगारंग कार्यक्रमों में व्यक्त होती थी।

महाविद्यालय का महाकक्ष अतिथियों और उल्लसित विद्यार्थियों से भरा था। मंच का नीला रेशमी पर्दा सुनहरी गोट से सुशोभित मंच के सौन्दर्य को अपने में समेट-कर पल-पल प्रकम्पित हो रहा था।

महाकक्ष में लगे स्पीकरों से अचानक तीन घण्टे टन-टन-टन सुनाई दिये। वहाँ सन्नाटा छा गया और फिर शंखध्वनि सुनाई दी। महाकक्ष की बिजलियाँ बुझ गईं और मंच का घूँघट खुला। वाद्य-वृन्द ने जयजयवन्ती राग छेड़ा और तबले की थिरकन के साथ नर्तक ने दूध से धुले विद्युत-प्रकाश में मंच की धड़कन अपने अंक में समेटी। दर्शक मूर्तवत होकर उसकी शास्त्रीय प्रस्तुति देखने लगे। मुद्रा प्रदर्शन, भाव अभिव्यक्ति और पट चारित्र्य तीनों का सामंजस्य संतुलित रूप से दर्शकों पर जादू करने लगा। उत्तर भारत की कत्थक शैली के अन्तर्गत उसने प्रथम नायिका भेद का सफल प्रदर्शन किया, फिर वहाँ विभिन्न रसों का अवतरण किया गया। करुण, शान्त, ताण्डव, रौद्र, वीर, अद्भुत और शृंगार आदि रसों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए मंच पर क्रमशः हरा, सफेद, नीला, लाल, गुलाबी, नारंगी और धनुषी रंग फेंका गया।

एक दर्शक ने कहा—प्रथम कोटि का कलाकार है। दूसरे ने कहा—उच्चकोटि का निर्देशन हुआ है। तीसरे ने कहा—अरे भाई, यह तो बिन्दा महाराज का शिष्य है, इसकी क्या बात, और चौथी आवाज थी एक महिला की—यह तो हमारे विद्यालय का छात्र है शिव शंकर।

महाकक्ष में तालियाँ बज उठीं। नर्तक ने नमस्कार किया, बिजली की सारी बत्तियाँ एकसाथ बुझ गईं और पल भर में जैसे ही पुनः प्रकाश हुआ दर्शकों ने मनीपुरी शैली के घाघरे में चमचमाती तीन युवतियों को मंच पर देखा। इस समय सम्पूर्ण वाद्य धीरे-धीरे बज रहे थे और बाँसुरी की आलाप निर्जन वन होने की घोषणा कर रही थी। घुँघरुओं की रुनझुन से शान्त वातावरण कम्पित होना आरम्भ हुआ। गोटे-पट्टे और जरी से जड़े घाघरे मंच पर चक्कर लेने लगे।

आषाढ़ की जलती मिट्टी में जब वर्षा की पहली बूँदें गिरती हैं तो मिट्टी दाने-दाने होकर पायल के घुँघरुओं की की तरह इधर-उधर छिटकने लगती है। मंच पर शनैः-शनैः अन्धकार हुआ। बादल गरजे, बिजली चमकी और घुँघरुओं की रुनझुन ने पानी बरसा दिया। पल भर में आकाश स्वच्छ हो गया और पुनः वर्षा का आगमन मनीपुरी नृत्य में अवतरित होने लगा भृकुटी का संचालन और हाथों की मुद्राएँ दर्शकों को अपनी ओर आकृष्ट करने लगीं महाकक्ष में पीछे बड़े किसी ने फुसफुसाया—नीले लहँगे वाली

युवती बहुत अच्छा नाच रही है। दूसरे ने कहा—सबसे पतली कमर भी तो उसी की है और इसी क्षण एक बालिका बोली—यह मेरी दीदी है। अगल-बगल के लोग हँस पड़े किन्तु एक ने चुपके से पूछा—क्या नाम है तुम्हारी दीदी का ? उत्तर मिला—नलिनी।

"नलिनी ! अहा ! कितना अच्छा नाचती है···" उसने कहा और फिर पूछा, "कहाँ रहती हो ?" बालिका इस प्रश्न का उत्तर दे भी न पाई थी कि एक अधेड़ महिला बोली, "आपका क्या तात्पर्य है ?" वे महाशय ऐसे रूखे प्रश्न को सुनकर सन्न हो गये। धीरे से बोले, "कुछ नहीं" और धीरे से महाकक्ष के बाहर चले गये।

थोड़ी ही देर में मनीपुरी नृत्य समाप्त हुआ और अब दक्षिण भारत के केरल क्षेत्र के प्रसिद्ध नृत्य कथकली का अवसर आया। मृदंग, झाँझ और पखावज अग्रणी हुए। वाम अंग से पूर्व कलानेत्रियों ने प्रस्थान किया और दक्षिण अंग से एक नवीन षोडशी दिखाई दी। रेशमी धोती का काछा बाँधे और बालों में फूलों का सुन्दर शृंगार किये रक्त-रंजित करबला को यन्त्रवत् चालित करते हुए युवती ने मंच के बीच प्रस्तुत होकर नृत्य के बोल बोलना प्रारम्भ किये। मृदंग के बोल इस समय सुनने योग्य थे। कला का प्रदर्शन अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच गया। ऐसा भासित होता था मानो वाद्य के बोल नर्तकी के अंगों से झर रहे हैं। द्रुत गति से उसके अंग-प्रति-अंग चालित थे और इतनी स्फूर्ति उसकी प्रत्येक क्रिया से टपक रही थी मानो आकाश से चपला धरती पर उतर आई हो। महाकक्ष मे तड-तड़ तालियाँ बज उठीं और उस छोटी बालिका ने घबराकर अपनी माँ से पूछा, "माँ, क्या पद्मा मेरी दीदी से अच्छा नाच रही है ?" माँ ने कहा, "नहीं-नहीं, घबड़ाओ नहीं, प्रथम पुरस्कार तुम्हारी दीदी ही पायेगी ?" थोड़ी देर के बाद ही पद्मा ने रेशमी सिल्क के कुर्ते और महीन सफेद धोती के साथ सिर पर धानी रंग का साफा बाँध मंच पर प्रवेश किया और हाथ जोड़कर दर्शकों को धन्यवाद देकर कहा, "आप अब हमारे आज के नृत्य-आयोजन का अन्तिम कार्यक्रम देखेंगे। आपके सम्मुख हमारे विद्यालय की मात्र आठ वर्षीय बालिका कुमारी मीना जोशी तामिलाकम व तंजोर क्षेत्र का नृत्य दिसि अट्टम प्रस्तुत करेगी। महाकक्ष में तालियाँ बजीं और मीना जोशी ने राधा के रूप में मंच पर पदार्पण किया। अभिनयात्मक रूप से उसने कृष्ण को ढूँढना प्रारम्भ किया। वह चारों ओर घूमी, नाची और दौड़ी किन्तु कहीं कोई दिखाई न दिया। वह विरह की मुद्रा मे बैठ गई। उसकी आँखें बन्द हो गई, उसने लम्बी साँस लेनी शुरू की और बेले के करुण स्वर ने जंगल का सम्पूर्ण वातावरण प्रस्तुत कर दिया। मंच पर सध्या की लाली फूटी। सूर्य की अन्तिम रश्मियाँ लम्बी-लम्बी परछाइयाँ छोड़ने लगी और इसी क्षण राधा ने कृष्ण की परछाईं भ्रामक रूप से एक वृक्ष के नीचे देखी। वह दौडी और पेड़ के तने से लिपट गई। वाद्य-वृन्द ने अजीब-सी झन्कार उत्पन्न की और सन्ध्या की लाली रात्रि की कालिमा में बदल गई। सम्पूर्ण मंच नीला हो गया। झींगुरो की झन्कार उठने लगी और राधा विह्वल अवस्था में अपने भ्रम से पृथक हुई। उसने अपने शृंगार को धीरे-धीरे मंच पर बिखेर दिया,और अपने घुंघरूओं की छुन-छुन के साथ विरह और एकाकीपन के अनेक भाव व्यक्त किए। रात के सन्नाटे में कुछ देर के लिए झींगुरो की आवाज उभरी फिर शनै-शनै प्रात की बेला आई दूर से भैरवी सुनाई दी।

मंच पर सिन्दूरी किरण पड़ने लगी और देखते ही देखते किरणें सुनहरी हो गइ और श्वेताम्बर की झलक के साथ ही राधा ने दूर देखा। गायों के गले की घण्टियाँ बजती सुनाई दीं। राधा ने विशेष नर्तन के साथ इधर-उधर देखा। बाँसुरी की मधुर ध्वनि हुई और राधा इसी स्वर की ओर भागती हुई अदृश्य हो गई।

हर्ष से तालियाँ बज उठीं। मंच की मुख्य यवनिका गिरी और महाविद्यालय के प्रधानाचार्य ने मंच पर आकर बोलना प्रारम्भ किया—

"उपस्थित सज्जनो! हमारे अतिथिगण एवं विद्यार्थियो! आज हर्ष का विषय है कि ललित कला महाविद्यालय ने अपनी सेवा के दस वर्ष पूर्ण किए है और उसी का प्रतिफल है कि हमारे बीच हमारे नगर के गण्यमान्य महानुभाव उपस्थित हुए हैं। पिछले वर्षों तक हमारे महाविद्यालय की ऐसी प्रथा रही कि हम सरकारी उच्च पदाधिकारियो को अपना मुख्य अतिथि बनाकर वार्षिक उत्सव का सांस्कृतिक कार्य सम्पन्न करते थे, किन्तु इस वर्ष हमारे महाविद्यालय की कार्यकारिणी की समिति ने यह निर्णय लिया कि कला-विद्यालयों के मुख्य उत्सव कला-विशेषज्ञो के संरक्षण में होने चाहिए। फलत: हमने इस बार ऐसी ही योजना बनाई और हमें गर्व है कि हमारे आमन्त्रण को नगर के प्रतिष्ठित चित्रकार श्रीयुत जोगालकर जी ने ही नहीं स्वीकृत किया, हमारे युग की सर्वाधिक प्रख्यात कवयित्री महादेवी ने भी, जो एक चितेरी भी हैं, यहाँ आने का कष्ट किया है। वे दोनों हमारे बीच विद्यमान हैं और मैं अब दोनों अतिथियों से निवेदन करूँगा कि वे मंच पर पधारें।"

श्री जोगालकर जी तथा महादेवी जी ने दर्शकों की प्रथम पंक्ति से उठकर मंच पर पदार्पण किया और महाविद्यालय के मंत्री पद की शोभा बढ़ाती हुई एक सुन्दर युवती ने कुछ रजिस्टर और पत्रों के साथ अतिथियों को नमन किया। मेज पर पुरस्कार सामग्री सजी हुई थी। प्रधानाचार्य ने उस सामग्री के ऊपर के आवरण को हटाते हुए कहा, "मैं कुमारी चारुचित्रा से निवेदन करूँगा कि वे महाविद्यालय का वार्षिक विवरण प्रस्तुत करें।"

कुमारी चारुचित्रा ने वार्षिक विवरण समाप्त करते हुए अन्त में कहा, "इस वर्ष के वार्षिक उत्सव में आज के दिन जिन-जिन कलाकारों ने भाग लिया है उनमें सोलह कलाकारों को पुरस्कार दिया जा रहा है। यह पुरस्कार शास्त्रीय संगीत, सरल संगीत, वाद्य वादन और नृत्य प्रदर्शन के लिए दिए जा रहे हैं। हमारी निर्णायिक समितियो ने इन सोलह पुरस्कारों के अलावा 20 विशेष पुरस्कार देने के लिए अपना मत प्रकट किया है और हर्ष के साथ हम आज घोषणा करते हैं कि हमारे नगर के नामी रईस सेठ लक्ष्मणदास के सुपुत्र कमलचन्द्र उर्फ कमल बाबू ने इन 20 पुरस्कारों को अपनी ओर से देने का वचन दिया है। हम सब कमल बाबू के प्रति आभारी हैं। आज के नृत्य कलाकारो में प्रथम पुरस्कार शिवशंकर को दिया जा रहा है। द्वितीय पुरस्कार पद्मा चेट्टी को और तृतीय पुरस्कार कुमारी मीना जोशी को दिया जा रहा है। मीना जोशी को एक विशेष पुरस्कार भी दिया जा रहा है। श्री शिवशंकर जो हमारे विद्यालय के एक प्रमुख छात्र रहे हैं और . की अन्तिम परीक्षा में विशेष योग्यता से उत्तीर्ण होकर हमारे

विद्यालय से इस वर्ष विदा होंगे, आपके सम्मुख थोड़े से शब्दों में कुछ बोलेंगे।"

चारुचित्रा ने शिवशंकर को आमंत्रित किया। वह मंच पर आया और श्री जोगालकर जी ने उसके हाथ में एक फुट ऊँची नटराज की चाँदी की मूर्ति पकड़ाई। महाकक्ष में तालियाँ बजीं और शिवशंकर ने नतमस्तक हो उसे स्वीकार किया। उसने बोलना शुरू किया—

"आदरणीय जोगालकर जी, उपस्थित अतिथिगण, गुरुवर रामास्वामी जी पिल्ले एव मेरे दोस्तो ! मैं नही कह सकता कि आज मैं अपने स्वप्न की उस झलक को जो प्राय: मेरी कल्पना में व्यापती थी, साक्षात् देखकर कितना प्रसन्न हूँ। मेरा जो उल्लास है वह मेरा थिरकता हुआ हृदय ही इस समय व्यक्त कर सकता है, मेरे शब्दों में शक्ति नही है कि मैं कुछ कह सकूँ। जिस समय मुझे मेरे गुरु ने मेरी योग्यता का प्रमाण-पत्र दिया, मुझसे कहा था कि कला सीखने के बाद कलाकार का कर्तव्य होता है कि वह उसे दिन-प्रतिदिन विकसित करे। उसे सुप्त न होने दे। और उसका अधिक से अधिक प्रसार करने का भी प्रयास करे। मैं आश्वासन देना चाहता हूँ कि मैं जीवन भर नृत्यकला का सेवक रहूँगा और उत्तर भारत की कत्थक शैली का, जिसमें मेरी विशेष रुचि रही है और जो नृत्य कला की एक प्रमुख पुष्ट शैली है उसके विकास का प्रयास करूँगा। मुगल काल के विलासप्रिय जीवन ने और निम्नकोटि की नर्तकियों ने कुछ शताब्दियों से इस शैली को कलुषित कर रखा था। मैं अच्छन महाराज के प्रयासों को आगे बढ़ाता हुआ अपनी नृत्य मण्डली बनाकर गुरुवर श्री पिल्ले के आशीर्वाद से कत्थक को विश्व मंच पर लाऊँगा। माता सरस्वती मुझे शक्ति दें।"

उसने सिर झुकाकर नमन किया।

महाकक्ष में तालियाँ बज उठी। चारुचित्रा ने तत्पश्चात् सभी पुरस्कार विजेताओ के नाम लिए और वितरण कार्य समाप्त हुआ।

महाकक्ष में बैठी उस बालिका ने कहा, "माँ, नलिनी दीदी का नाम नहीं लिया गया। उसे पुरस्कार नहीं मिला।" माँ ने कहा, "इस विद्यालय में अब बेईमानी होने लगी है, चलो घर चलें। कल ही नलिनी का नाम न कटवा दिया तो कहना। पद्मा को पुरस्कार मिला और नलिनी को नही दिया गया। मनीपुरी नृत्य को वह पग्गड़बाज क्या जाने। यह सारी करतूत उस दक्खिनी पिल्ले की है। रामास्वामी पिल्ले असम और बगाल की कला को क्या जाने। वेश्याओं को नृत्य सिखाकर रोटी कमाने वाला आज यहाँ नृत्याचार्य बना है !"

माँ और बेटी महाकक्ष के बाहर हो गईं। चारुचित्रा ने उन्हें बाहर जाते देखा किन्तु कुछ बोल न सकी। प्रधानाचार्य ने प्रो० जोगालकर जी से कुछ शब्द बोलने का आग्रह किया और बोले—

"मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि मैं आज इस सांस्कृतिक कला-विद्यालय के सूत्र ललित कला के मंच से कुछ बोलने का अवसर पा रहा हूँ। वस्तुत: यह विद्यालय ललित कला के जिस विशेष अग की सेवा अब तक करता आया है मैं उसमे अपना कोई भी अधिकार नहीं रखता किन्तु फिर भी मैं यह हूँ कि चित्रकला संगीत से ज भी

है। सम्भव है हमारे वक्तव्य में शोध का अभाव हो किन्तु मैं यह समझता हूँ कि प्रत्येक चित्रकार अपने चित्र मे प्रकृति का संगीत बटोरता है। एक अच्छे चित्रकार के लिए विशेषतया भारतीय पद्धति में संगीत-शास्त्र का ज्ञाता होना भी शायद आवश्यक होता है क्योंकि प्रत्येक राग-रागिनी के स्वरूप को चित्रकारों ने ही प्रस्तुत किया है और निश्चय ही ऐसी चित्रकारिता दोनो कलाओ के पाण्डित्य का सामंजस्य है। सगीत का प्रत्येक स्वर सुनाई दे यह आवश्यक नहीं। प्रत्येक प्राकृतिक दृश्य अपने आप कुछ गाता है और जिसको चित्रकार ही सुनता और समझता है, इसलिए मैं समझता हूँ कि नित्य-प्रति जितने भी प्राकृतिक दृश्य चित्रकारों द्वारा उतारे जाते है वे सभी संगीतमय और भावमय है। मै इस विद्यालय के इस वर्ष के कार्यक्रमो से बहुत प्रभावित हुआ हूँ और इसके लिए मैं कुमारी चारुचित्रा जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ। मुझे यहाँ लाने का श्रेय चारुचित्रा जी को है जो स्वयं एक प्रथम कोटि की कलाकार हैं। आपके बीच आपके ही किसी व्यक्ति का परिचय दूँ यह उचित नही। किन्तु इतना मैं कहना चाहता हूँ कि चारुचित्रा जी का स्थान आधुनिक चित्रकारों में विशिष्ट है, विशेषतया महिला के नाते। उन्नीसवीं शताब्दी मे पशिया की प्रसिद्ध चितेरी कुमारी बेनहूर ने जो आदर ओर सम्मान पेरिस की चित्र-प्रदर्शनी में महारानी द्वारा पाया था, वही कुमारी चारुचित्रा आज के युग में पाने की अधिकारिणी हैं। राजा बेनहूर का प्रसिद्ध चित्र 'घोड़ा हाट' जो न्यूयार्क नगर में मेट्रोपोलिटन म्यूजियम आफ आर्ट में रखा है वह कलाकर्त्री ने जब स्वयं बेचा था, तो केवल 9000 डालर उसने पाये थे। किन्तु बाद मे वही चित्र 53,000 डालर मे बिका। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति स्वयं अपना मूल्य नहीं जानता और न समकालीन उसका मूल्यांकन करना आवश्यक समझते हैं। किन्तु व्यक्ति की कृति ही होती है, जो उसका मूल्यांकन करा देती है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई, कि इस महाविद्यालय में एक चित्रकला-विभाग भी इस वर्ष से खोला जा रहा है। मुझे आशा है कि कुमारी चारुचित्रा अपने इस प्रयास में पूर्णतया सफल होंगी। सेठ मगनलाल देसाई ने जिस सफलता के साथ संगीत की कला को शास्त्री जी के सहयोग से उत्कर्ष प्रदान किया है उनकी पुत्री चारुचित्रा अवश्य ही चित्रकला को उसी स्तर से विकसित करेगी।

"हम हृदय से इस महाविद्यालय के कर्णधारों की प्रशस्ति करते हैं और अपने सहयोग का आश्वासन देते हैं। हमारे देश के प्रत्येक नगर में ललित कला-केन्द्र की आवश्यकता है। सामाजिक स्तर सदैव सांस्कृतिक कार्यक्रमों से और कला के परिमार्जन से ऊपर उठता है। हमारा देश सहस्रों वर्ष पुरानी संस्कृति रखने का गौरव प्राप्त किए हुए है। हमारा कर्तव्य है कि हम धर्मकीर्ति जैसे विद्वानों और नालन्दा जैसे विश्व-विद्यालयों की शृंखला को जीवित रखें। हम एक बार पुनः इस महाविद्यालय के कार्य-कर्त्ताओं की सराहना करते हुए इस संस्था के संस्थापक की स्वर्गीय आत्मा के प्रति अपना प्रणाम अर्पित करते हैं और हृदय से कामना करते हैं कि यह विद्यालय दिन-प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर हो

अब प्रधानाचार्य श्री कुन्दनलाल शास्त्री ने श्रीमती महादेवी से आग्रह किया कि

वे दो शब्द बोल कर सभा को कृतार्थ करें। समारोह में पधारी कवयित्री महादेवी ने कहा—

"समाज के परिष्कार के लिए सांस्कृतिक समारोहों की आवश्यकता अपरिहार्य है। संगीत मनुष्य की अन्तरात्मा को उज्ज्वल करता है। जीवन की सारी व्यथा तथा उसका सुख-दुःख संगीत में बँधा है और उसकी गहन अनुभूति संगीत द्वारा ही सम्प्रेषित होती है।

"विश्व मे, संगीत कहीं भी इतना पुराना नहीं जितना कि भारतवर्ष का है। सगीत में किस-किस तरह के परिवर्तन आये, हमें इस पर अभी शोध करना है किन्तु यह सदैव मानव में प्रेम का संचार करता रहा है यह सर्वविदित है।

"स, रे, ग, म आदि सातों स्वर हमारे समग्र जीवन को एक सूत्र में बाँधते है। स्वरों के आधार पर ही सात स्वर्ग, सात पाताल और सात पृथ्वी-खण्ड की कल्पना की गयी है। जितना पूर्ण भारत का शास्त्रीय संगीत है उतना विश्व में कहीं का नहीं। विदेशी भारत की आत्मा को संगीत के माध्यम से पहचानने और देखने का प्रयास करता है। इसीलिए हमारे संगीतज्ञ जब विदेशो में जाते हैं तो अपनी कीर्ति के साथ भारत का यश भी बढ़ाते हैं। संगीत को मात्र मनोरंजन का साधन मानना उचित नहीं, वह हृदय के मंदिर का शृंगार है। संगीतज्ञ योगी के समान होता है। उसकी साधना निरतर प्राणायाम और योग से ही सफल होती है। संगीत केवल प्रदर्शन की ही नहीं बल्कि आत्मा मे ग्रहण करने की भी वस्तु है। लोग जैसे गंगा में स्नान करते हैं वैसे ही वे संगीत-सरिता मे भी मोक्ष की अनुभूति पाते हैं। मैं इस समारोह के संयोजकों को बधाई देती हूँ।"

महादेवी के भाषण के बाद शास्त्री जी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए समारोह के समाप्त होने की घोषणा की।

माँ और बेटी महाविद्यालय से समारोह से असंतुष्ट होकर बीच में ही उठकर वहाँ के रेस्तरां में आ चुकी थीं। सर्दी के कारण दो प्याले कॉफी के तैयार कराये गये। बेटी ने प्याला आते ही उसकी चुस्की धीरे से ली, किन्तु माँ ने प्याले के चारों ओर ध्यान से देखा। वह प्याला एक स्थान पर माथे की बिन्दी भर खण्डित था। माँ ने अपनी त्योरी चढ़ाई और बैरे को बुलाया। बैरे के आते ही उन्होंने प्याला दिखाकर कहा—कॉफी उठा ले जाओ और दूसरा प्याला लाओ। बैरे ने पूछा—क्यों हुजूर? और उन्होने अधिक क्रोध दिखाकर कहा—टूटी क्रॉकरी में कॉफी लाए हो, ऐसे-ऐसे रेस्तरां भी अब ऐसी क्रॉकरी प्रयोग में लायें तो फिर···। प्याला बैरे ने चुपचाप उठा लिया और थोड़ी ही देर में दूसरा प्याला उनके सामने आ गया। उन्होंने धीरे-धीरे करके कॉफी का प्याला खाली किया और इसी क्षण महाविद्यालय का उत्सव समाप्त हुआ। लोगों की भीड़ रेस्तरां में आने लगी। लगभग सभी कुर्सियाँ भर गईं। एक अधेड़ जवान ऊनी सर्ज के सूट में सजा हुआ माँ-बेटी की टेबिल के पास आकर खड़ा हो गया और बोला, "कामिनी देवी आप!" कामिनी ने चौंककर आँख उठाई और लक्षण मुस्कराकर धीरे से बोली आप आइए बैठिए कामिनी ने अब बेटी से कहा 'वीणा क्या तू नलिनी

दीदी से कह कि मैं यहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रही हूँ। वह अपने नृत्य का सारा सामान ठीक से एकत्र कर यहाँ आ जाए। देखना, कोई वस्तु छूटने न पाए।"

वीणा आदेश पाते ही अपनी दीदी नलिनी के पास चली गई और नवागन्तुक ने पूछा, "कहाँ हैं आप आजकल ?"

"यहीं धरमपेठ पर मकान ले लिया है।"

"आप तो ऐसा चुपचाप हमारे फ्लैट से उठ गई कि मुझे पता भी नहीं चलने दिया।"

"क्या करती, आप तो दिल्ली गए हुए थे और यहाँ आपके फ्लैट का किराया सहा नहीं जा सकता था। हजार रुपये पाने वाला व्यक्ति चार सौ रुपये का फ्लैट लेकर रहे, तो फिर कैसे पूरा होता ? उसी स्तर की अन्य वस्तुएँ और रहन-सहन भी तो होना चाहिए !"

"हाँ, हाँ, किन्तु आपने मुझसे एक बार कहा तो होता ! मैं पचास रुपये कम करवा देता।"

"तब तो ठीक था, लेकिन धरमपेठ पर मुझे ढाई सौ रुपये में अच्छा मकान मिल गया है।"

"जब से आपने फ्लैट छोड़ा है, तभी से मैं आपको खोज रहा था। आज यहाँ मिल ही तो गई।"

कामिनी ने आँखें चुराते हुए कहा, "अच्छा ही हुआ, आपको मेरा पता नहीं मिला।"

उसने चौंककर पूछा, "क्यों ?" उत्तर मिला, "स्थिति अब वह नहीं है। आजकल मेरी सौतेली लड़की जिसके विषय में मैंने आपसे बताया था, अपने नाना के यहाँ से आ गई है। पहले उन लोगों का विचार था कि उसका विवाह आदि वे वहीं से करेंगे, किन्तु उसके नाना की मृत्यु हो जाने से वहाँ की स्थिति बदल गई और वह अब यहाँ धरमपेठ में हम लोगों के साथ ही रहती है।"

"ओ···हो···तब तो···। सम्भवतः अब वह भी जवान होगी।"

"हाँ, वह सयानी हो चुकी है। यहीं विद्यालय में ही नृत्य सीखती है।"

"क्या नाम है ?"

"नलिनी। किन्तु अब यहाँ से उसका नाम कटवा दूँगी। घर पर ही मास्टर रख कर उसे नृत्य सिखाना चाहती हूँ।"

"घर पर ही ? ठीक है। कोई अड़चन नहीं।"

कामिनी ने तिरछी चितवन से देखकर कहा, "आप क्या सोच रहे हैं ? पुरानी बातों को अब नया न करिये। वे पुराने चार महीने अब नहीं लौट सकते।"

"कठिनाई क्या है ?" उसने आँखों में आँखें डालकर कहा, "साम्याल साहब त आजकल भी दौरे पर रहते हैं और फिर नलिनी के मास्टर शिक्षा देने आयेंगे, हम लोग के मिलने-जुलने के लिए उतना समय···।"

कामिनी ने अपने होंठ काटते हुए कहा "अच्छा अब कभी घर पर मौके

आइये, इस समय यहाँ अभी नलिनी आती होगी।"

वह चुपचाप उठकर चल दिया।

ललित कला महाविद्यालय में संगीत की कक्षा लगी हुई थी। श्री पाठक जी वायलिन से परिचय कराते हुए छात्रों से बोले—प्रत्येक विद्यार्थी को बेला सीखने के लिए ताल का कुछ ज्ञान होना आवश्यक है। बेले के सुरो को लय में बाँधने के लिए तीन प्रकार के तालों को सीखना अच्छा होता है—16 मात्रा में त्रिताल, 12 मात्रा में एक ताल और 10 मात्रा में झपताल···।

पाठक जी का गुरुभाषण हो रहा था कि एक विद्यार्थी ने हाथ उठाकर कहा, "मुझे ये तीनों ही ताल आते हैं।"

पाठकजी ने उस विद्यार्थी का स्वागत करते हुए पूछा, "तुम्हारा नाम ?"

वह बोला, "रूपकुमार।"

पाठक जी ने अपने अन्य विद्यार्थियों की ओर देखकर पूछा, "और किसी को भी ताल का ज्ञान है ?" एक युवती ने हाथ उठाया। पाठक जी देखकर बोले, "अरे नलिनी, तुम हो ? तुम तो उस्ताद होगी। जिसको नृत्य का इतना सुन्दर अभ्यास हो, उसके लिए तबले की छोटी-मोटी ताल की क्या गिनती।"

नलिनी हँस पड़ी और रूपकुमार ने ध्यान से उसे देखा।

किसी ने द्वार की कुण्डी खटखटाई और चारुचित्रा की माँ श्रीमती मोहिनी ने द्वार खोलकर बाहर झाँका। देखा कि महाविद्यालय के प्रधानाचार्य शास्त्री जी आये हुए हैं। मोहिनी देवी ने चारुचित्रा को अन्दर जाकर सूचना दी—महाविद्यालय के प्रधानाचार्य कुन्दनलाल शास्त्री जी आये हैं। चारुचित्रा ने दौड़कर उनका अभिवादन किया। शास्त्री जी ने अतिथि-कक्ष के सोफे पर बैठते हुए चारुचित्रा से पूछा, "चित्रकला-विभाग के लिए कोई उचित अध्यापक आपको मिला या नहीं ?"

"हाँ-हाँ, मिल गये हैं। जोगाल्कर जी के घर गई थी, उन्होंने ही एक प्रसिद्ध चित्रकार से मेरा परिचय कराया। उनका नाम है बेनी शर्मा।"

"क्या वे दक्ष कलाकार हैं ? मेरा तात्पर्य है कि विद्यालय में कला-शिक्षण की निपुणता भी उनमें है ?"

"हाँ-हाँ, पारंगत हैं। मैंने तो उनके बहुत-से चित्र देखे है। मैं समझती हूँ, वे अच्छा कार्य करेंगे।"

"बात यह है कि विद्वान् और गुणी दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे जो अपने आप में रमते हैं। और दूसरे ऐसे होते हैं, जो जानकार चाहे कुछ कम हों, किन्तु दूसरो को गुण देने में रस लेते है और दक्ष भी होते हैं। विद्यालय सदैव दूसरे प्रकार के···"

"हाँ, मैं समझ गई। बेनी शर्मा हमारी आवश्यकता अवश्य पूरी कर सकेंगे। शर्मा जी पहले अपना एक निजी कला-केन्द्र चलाते थे।"

'तब तो ठीक है हाँ मैं आपके पास एक और बात पूछने आया था

"कहिए-कहिए ?"

"उस दिन कमल बाबू ने जो रुपये देने का वचन दिया था, क्या वे प्राप्त हो चुके ?"

"अभी तो नहीं, किन्तु शायद दो-चार दिन मे प्राप्त हो जायें। ऐसे रुपयों के लिए तकाजा करना भी तो उचित नहीं मालूम होता।"

"बात तो ठीक है किन्तु अनुभव यह बताता है कि रईस लोग प्रायः नाम लूटने के लिए ऐसे अवसर का लाभ उठा जाते हैं। यदि हमने ढील डाली, तो लोढ़ाराम कनौडिया के रुपयों की तरह यह भी बस मिलते ही रहेंगे।"

"हाँ, ठीक है आपका कहना, मैं अवसर निकालकर जल्द ही जाऊँगी उनके यहाँ।"

"हाँ, अवश्य जाना। बात यह है कि रुपए ही सौ काम निकालते हैं। अपने विद्यालय के फण्ड में रुपया जमा रहेगा, तो अच्छा रहेगा।"

"अच्छा तो होगा ही। मुझे आपसे एक बात पूछनी थी।"

"क्या ?"

"सुना है नलिनी ने नृत्य की कक्षा से नाम कटवा लिया है।"

"मुझे नहीं मालूम। आपको किसने बताया ?"

"मेरे यहाँ नलिनी की छोटी बहन वीणा आई थी। उसी ने कहा कि माँ दीदी का नाम आपके महाविद्यालय से कटवा रही है।"

"वह तो बड़ी अच्छी लड़की थी। नृत्य में वह प्रवीण निकल सकती थी। किसी दिन विद्यालय का नाम रोशन करती।"

"हाँ, यह तो था ही। किन्तु उसकी माँ चाहती थी कि नलिनी साल भर में ही विशारद कहलाने लगे। वीणा कहती थी कि वार्षिकोत्सव में पद्मा को पुरस्कार दिया गया किन्तु दीदी को नहीं। भला पद्मा और नलिनी का क्या साम्य ? वह नृत्य के चौथे वर्ष में है और नलिनी अभी दूसरे वर्ष में।"

"यदि ऐसे संकीर्ण मनोभाव के पीछे नलिनी का नाम कटवाया गया है, तो उसकी माँ ने बड़ी भूल की है।"

"मालूम होता है, नलिनी की माँ अधिक पढ़ी-लिखी नहीं है, नहीं तो वह ऐसी दूषित भावना की शिकार न होतीं।"

"कुछ भी हो, यह बुरा हुआ। किन्तु ऐसे लोगों के लिए विद्यालय का स्तर नहीं गिराया जा सकता और फिर प्रतियोगिता के समय निर्णायक समिति के कार्य में कौन हस्तक्षेप कर सकता था ?"

"मैं आपसे सहमत हूँ। कला को उचित रूप से जिसे भी सीखना है, उसे विद्यालय पर विश्वास करके चलना पड़ेगा।

"निश्चय ही। अच्छा, अब मैं चलता हूँ, शर्मा जी को अब आप ही विद्यालय मे बनाये रखने का दायित्व रखेंगी क्योंकि अच्छे कलाकार कठिनाई से ही कहीं ठहरते हैं। और हाँ कमल बाबू से मिलना भी

"अवश्य, अवश्य···।"

"नमस्ते।"

"नमस्कार।"

"नलिनी, तुम्हारी जैसी जिद्दी लड़की तो मैंने देखी नहीं।" कामिनी बोली, "जिस विद्यालय से एक बार मैंने नाम कटवा दिया, फिर वहीं तुम्हें नाम लिखाने की क्या आवश्यकता थी?"

"नगर में अन्य कोई विद्यालय ऐसा है ही नही जो ललित कला महाविद्यालय के समकक्ष हो।"

"नहीं है, तो मैंने घर पर मास्टर लगाने को कह दिया था। कल से भोला महाराज नृत्य सिखाने आयेंगे। क्या वे किसी से कम पारंगत हैं?"

"परन्तु मैंने तो बेला सीखने के लिए नाम लिखाया है।"

"बेला न ठेला, कुछ भी सीखने को नहीं उस विद्यालय में।"

"क्यों क्या हुआ?"

"जो मैं कहती हूँ करो। अधिक बात मत किया करो।" माँ ने डाँट बताई और अपने घरेलू कार्यों में व्यस्त हुई।

नलिनी ने देखा, घड़ी में 10 बजे हैं। वह चुपचाप सैण्डल पहनकर उस दिन भी खिसक गई बाहर महाविद्यालय की ओर।

चारुचित्रा ने कमल के बँगले पर पहुँचकर बाहर की घण्टी बजाई। कमल ने बाहर आने का कष्ट किया। देखा, चारुचित्रा खड़ी है। वह स्वागत के साथ उसे अन्दर ले गया।

शानदार अतिथि-कक्ष था। एक ओर शंकर-पार्वती की सुन्दर-सी मूर्ति रखी थी। कक्ष की दीवालों पर चार चित्र चारों ओर तीन-तीन फुट के शीशे में जड़े थे। चारुचित्रा ने ध्यान से एक चित्र को देखा। उसे आभास मिला कि वह गुरुवर अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की तूलिका है। वह दूसरी दीवाल पर देखने लगी। इसकी शैली दूर से ही बता रही है कि वह यामिनीराय की कृति है।

कमल चारुचित्रा को इस तल्लीन अवस्था में छोड़कर अन्दर गया। चारुचित्रा तीसरी दीवाल की ओर मुड़ी और उसने चैतन्य महाप्रभु को हरिकीर्तन की असाधारण तल्लीन मुद्रा में देखा। उसको यह समझने में देर न लगी कि वह उसके युग के प्रसिद्ध चित्रकार क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार की कला है और जब चौथी दीवाल पर उसने दृष्टि डाली तो उसने तीन चित्र एक साथ लगे देखे। दो चित्र ईरानी शैली के थे और उन दोनो के बीच एक भारतीय सुन्दरी अपने केशों का शृंगार करती दिखाई दे रही थी। चारुचित्रा सोचने लगी—यह चित्र किसके हो सकते हैं? थोड़ी ही देर में उसके मस्तिष्क में भारत की प्रगतिशील चितेरी अमृता शेरगिल का ध्यान आया और उसको यह समझने में फिर देर न लगी कि वह अमृता शेरगिल के मूल चित्र की अनुकृति है

ईरानी चित्रों को पर्याप्त समय तक देखने के बाद उसे ख्वाजा अब्दुस्समद और मीर सैयद अली का नाम याद आया। उसने मन में सोचा—वे दोनों चित्र इन्हीं की कलम के कमाल हैं। वह चित्रों को देखने के बाद सोफे पर बैठ गयी और मन ही मन कमल बाबू की रुचि की सराहना करने लगी। इसी क्षण कमल ने कक्ष में पदार्पण किया। सामने के सोफे पर वह आकर बैठा और पीछे-पीछे कमल का नौकर चाय लेकर आया। चाय को प्याले में डालते हुए कमल ने पूछा, "कैसे कष्ट किया?"

"चली आई कुछ कार्यवश।"

"कहिये? मैं क्या सेवा कर सकता हूँ।"

"वह वार्षिकोत्सव के पुरस्कार···"

"ओ समझा, समझा। मेरे तो ध्यान से ही उतर गया था। अच्छा हुआ आप आ गईं।"

"यही सोचकर मैं आई कि आप कहीं भूल न गए हों। बड़े लोगों के पास बहुत-से काम होते हैं। उनके लिए किसी वस्तु का भूल जाना···"

"नहीं, नहीं, मुझे अपनी भूल पर खेद है। रुपए तो आपको अवश्य ही मिल जाते। आपका साधारण-सा पत्र ही पर्याप्त होता।"

"मैंने तो यूँ ही कहा। मैं जानती हूँ कि आपके लिए हजार रुपए कुछ नहीं है।"

कमल ने पतलून की जेब से चेक-बुक निकाली और कहा, "मैं तो कुछ रुपये और देता, किन्तु आपके उत्सव के पहले मेरे पास कोई आया ही नहीं। मैं तो कला को मानव के जीवन की आत्मा मानता हूँ।"

"वह देख रही हूँ। आपने जिन अनुपम चित्रों का संकलन किया है, वे अद्वितीय हैं। जिस दिन हमारा सम्पन्न वर्ग धन जोड़ने अथवा शराब के प्यालों के साथ होटलबाजी के स्थान पर कला और साहित्य का मूल्यांकन करने लगेगा, उस दिन हमारा सामाजिक स्तर कितना ऊपर उठ जाएगा!"

"निश्चय ही।" कमल ने हाँ में हाँ मिलाकर कहा, "पाश्चात्य जगत् वाले जो अपने को इतना संस्कृति सम्पन्न समझते हैं, तो क्या वे हम से अधिक गुणी हैं? उन्होंने उनके पास जो कुछ भी है, उसे सजाकर रखना सीखा है और अपनों का आदर करना सीखा है। किन्तु हमने केवल अपना उदर पालना सीखा है।

"हमारे आर्थिक शोषण ने इने-गिने व्यक्ति ही समाज में ऐसे रख छोड़े हैं, जो कला की ओर चिन्तातुर हो सकते हैं।"

"अर्थ तो प्रधान है ही, किन्तु हमारे यहाँ सम्पन्न लोगों में भी रुचि नहीं।"

"आज नहीं है, किन्तु कभी थी। दक्षिण भारत के अनगिनत देवालय और उन पर निर्मित असंख्य मूर्तियाँ अतीत के सहस्रों कलाकारों के कार्यावशेष हैं। आज का कलाकार अपनी एक-एक रेखा पर अपनी छाप देने को सजग रहता है। किन्तु उस समय के कला-स्तर को आँकिए जब अजन्ता और इलोरा-जैसी कलाकृतियों को उस समय के कलाकारों ने श्रमबिन्दु समझ कर यों ही छोड़ दिया। ढूँढ़े से भी कहीं उन महान शिल्पियों का नाम नहीं मिलता

"यही कुछ उपलब्धियाँ हैं, जिनके ऊपर हम गर्व कर पाते हैं। आजकल हमारे यहाँ कलाकार हैं ही कहाँ ?"

"···और जो हैं भी, उनका भी कौन आदर करता है ? इतना बड़ा चित्रकार मुलगाँवकर यदि हिन्दू देवी-देवताओ को अभिनेत्रियो के रूप में प्रस्तुत कर कलैण्डर-कम्पनियों से कान्ट्रेक्ट न करे तो उसे कौन पूछे ?"

"और श्री दलाल यदि प्रणय-प्रधान चित्रो को न बनाएँ, तो कौन उन्हे पहचाने।"

"आप दलाल की बात करते है। अजी यहाँ सुभो टैगोर और हुसेन को कोई नही पहचानता। बुरा हाल है। उस दिन मेरी बात अचानक एक चित्रकला के प्राध्यापक से होने लगी। बात ही बात में मैंने रामकिंकर और डी० पी० रायचौधरी का नाम लिया। अध्यापक महोदय मेरा मुँह ताकने लगे। सांखो चौधरी, धनराज, राघव सबके सब उनके लिए अन्जान पुरुष थे।"

इन नामों को सुनकर कमल सकपकाया किन्तु फिर उसने ऐसे सिर हिलाया जैसे सभी को जानता हो। उसने शीघ्र ही पुरस्कार का चेक आगे बढ़ाया और चारुचित्रा धन्यवाद ज्ञापित करते हुए लौट पड़ी।

"आज मैं तुम लोगों को वेला के विभिन्न भागो को बताऊँगा और उसके बाद कुछ समय के लिए ताल से परिचय कराऊँगा।"

पाठक जी ने वाद्य का विश्लेषण करते हुए उसका पूरा परिचय छात्रों को दिया और पूछा, "सभी समझ गए या नहीं ?" रूपकुमार को छोड़कर बाकी सभी के हाथ ज्ञातव्यता प्रकट करने के लिए उठ गये। पाठक जी ने रूपकुमार को देखकर पूछा, आपकी समझ में नहीं आया ?" रूपकुमार ने मुस्कराकर कहा, "थोड़ा-थोड़ा समझा हूँ। पाठक जी ने कहा, "अच्छा, बाकी धीरे-धीरे याद हो जाएगा। आज आप त्रिताल, 16 मात्रा में अपने साथियों को सुनाएँ। मैं हाथ की ताली से संकेत दूँगा।" रूपकुमार ने तबले के बोल बोलने प्रारंभ किये—

धा धिं धिं धा, धा धिं धिं धा, ता तिं तिं ता, धा धिं धिं धा
धा धिं धिं धा, धा धिं धिं धा, ता तिं तिं ता, धा धिं धिं धा"

पाठक जी बोले, "बहुत ठीक।" रूपकुमार ने पूछा, "आगे एक ताल 12 मात्रा भी सुनाऊँ ?" पाठक जी ने कहा, "नहीं, अब 12 मात्रा की ताल नलिनी सुनाएगी।" नलिनी ने संकेत पाते ही बोल बोलने प्रारंभ किये—

धीं धीं धागे तिरकिड, तू ना, क त्ता, धागे तिरकिड धी ना
धीं धीं धागे तिरकिड, तू ना, क त्ता, धागे तिरकिड धी ना"

पाठक जी ने कहा, "शाबाश !" नलिनी ने आँखें फड़फड़ाकर मुस्कान बिखेरी। रूपकुमार अपने आप ही बोल उठा. "गुरुजी, अब झपताल 10 मात्रा में सुनिए—

धी ना, धी धी ना, तीना, धी धी ना।
धी ना, धी धी ना तीना धी धी ना

"बस-बस, बस···" पाठक जी बोले, "धीरे-धीरे आगे बढ़ो भाई !" पाठक जी ने बेला उठाया और गज को तारों पर रखते हुए कहा, "देखो, वाद्य पर बायें हाथ की उँगलियाँ यों रखी जाती हैं और गज को पकड़ने की विधि यह है ।" सभी छात्रों ने ध्यान से देखा । पाठक जी ने कहा, "बेला सदा 'सा' और 'प' स्वर से मिलाया जाता है। देखो, यह स्वर इस प्रकार निकालते हैं ।" रूपकुमार ने कहा, "गुरुजी, बाजे को थोड़ा मेरे हाथ में दीजिए, मैं प्रयास करूँ ।" पाठक जी ने उसके हाथ में बेला पकड़ा दिया, और रूपकुमार ने गज को तारों पर रखते ही एक गत बजानी शुरू की । सारे विद्यार्थी और पाठक जी विस्मय से उसे देखने लगे । पाठक जी ने कहा, "अरे, आपको तो बहुत कुछ आता है । लाइये बेला मुझे दीजिए । आप अपना नाम दूसरे वर्ष में लिखाइये ।" रूपकुमार ने गत के साथ लहरा भी बजाना शुरू किया । वह विलम्बित से द्रुत में आया और फिर चौगुन में आ गया । बात ही बात में उसने एक फिल्मी धुन पकड़ ली । पाठक जी बोले, "आप तीसरे वर्ष में नाम लिखायें । रूपकुमार के मीठे हाथ को देखकर और उसकी तैयारी पर मुग्ध होकर थोड़ी देर में वे फिर बोले, "आपको अब क्या सीखना है, "आपका तो चौथा वर्ष भी पूरा हो चुका है ।" रूपकुमार ने गज उठाकर चूमा और बेले को पाठक जी की ओर रखते हुए कहा, "नमस्ते । मैं चलता हूँ ।"

पाठक जी व उनके सभी विद्यार्थी विस्मय से उसे देखने लगे । रूपकुमार ने तिरछी दृष्टि से नलिनी को देखा और वहाँ से चल दिया ।

"नलिनी !" कामिनी ने कहा, "तुम्हारी ढिठाई मुझे पसंद नहीं । जब मैंने तुमसे कह दिया कि ललित कला महाविद्यालय में मत जाना, तो फिर तुम क्यों गईं ? या तो नृत्य सीख लो या फिर बेला, और फिर हाँ, बेला भी मैं वहाँ सीखने नहीं दूँगी । मुझे तुम्हारी उद्दण्डता पसंद नहीं । बोलो, कल से तो नहीं जाओगी वहाँ ?"

"नहीं, अब नहीं जाऊँगी ।" नलिनी ने कहा, "किन्तु मैं अब नृत्य नहीं सीखूँगी । मैं अब बेला सीखना चाहती हूँ ।"

"अच्छी बात है, किन्तु वहाँ नहीं सीखने दूँगी ।"

"फिर कहाँ ?"

"घर पर ।"

"घर पर कौन सिखाएगा ?"

"बहुत मिल जायेंगे । शाम को भोला महाराज आते होंगे । तुम उन्हीं से कहना । वे अवश्य किसी अच्छे बेला-वादक को जानते होंगे ।"

नलिनी चुप रही । वह अपने हृदय से रूपकुमार के नयन-बाण निकालने लगी, किन्तु रूप की कला ने नलिनी को न जाने क्यों तड़पने में ही कुछ आनन्द दिया ।

सन्ध्या हुई । भोला महाराज नृत्य सिखाने आए । नलिनी ने क्षमा माँगते हुए कहा, "मैं अब नृत्य नहीं, बेला सीखना चाहती हूँ ।"

"क्यों, नृत्य क्यों नहीं ?"

'मुझे बेला बहुत अच्छा लगता है

स्थिर मन से चलना चाहिए चार दिन बेला सीखकर फिर कहोगी कि अब

बेला नहीं सितार सीखूंगी।

"नहीं गुरु जी, मैं पहले बेला सीख लेना चाहती हूँ, तब फिर नृत्य का कोर्स पूरा करूँगी।"

"जैसी इच्छा किन्तु बेला का शिक्षक तो ऐसा नहीं मिलेगा जो घर पर सिखाने आए।"

"आप क्या ऐसे किसी भी व्यक्ति को नहीं जानते जो बेला बजाना जानता हो ?"

"मैंने सुना है रूपकुमार नाम के कोई कलाकार हैं जो बेला बजाते हैं और शायद वे..."

"रूपकुमार ! अरे, वह तो कल का लड़का है। अभी पिछले साल ही तो मारिस कालिज का कोर्स समाप्त करके आया है। आकाशवाणी के अपने कार्यक्रम देने का प्रयास कर रहा था। अब प्राइवेट ट्यूशन करने लगा हो तो मैं नहीं कह सकता।"

"किन्तु सुना है, वे बजाते तो अच्छा है।"

"हाँ, है तो उसका मीठा हाथ। और हाँ, तैयारी भी बजाता है किन्तु..."

"किन्तु क्या ? आप उनसे कह दीजिए, मैं अच्छी फीस..."

"नहीं, नहीं फीस की बात नहीं है। बात यह है कि वह एक युवा..."

इन्हीं बातों के बीच नलिनी की माँ ने वहाँ पदार्पण किया। भोला महाराज ने उन्हें प्रणाम किया और नलिनी की माँ ने पूछा, "कहिये, नलिनी की राय से आप सहमत हैं ?"

"मैं क्या कहूँ ?" भोला महाराज ने कहा, "जब बेटी नृत्य सीखना ही नहीं चाहती तो फिर बेला सीखना ही होगा।"

"क्या कहूँ, आजकल की सन्तान तो आज्ञा मानना पाप समझती है। इनके पिता तो महीने में 20 दिन दौरे पर रहते है और निपटना मुझे पड़ता है। अब जब वह बेला सीखना चाहती है, तो फिर किसी बेला-मास्टर को तय कर दीजिए। आपका परिचित कोई है ?"

"हाँ, है तो एक। किन्तु वह..."

"है तो फिर उन्हें ही बुला दें। किन्तु की क्या बात है ? फीस मैं दे लूंगी।"

भोला महाराज दिल की दिल में ही रखे रह गये और नलिनी की माँ वहाँ से चलती बनी।

ललित कला महाविद्यालय में कुन्दनलाल शास्त्री अपने कार्यालय में बैठे हुए थे। एक नवयुवक ने उनके कमरे में प्रवेश किया और बोला, "आचार्य जी, बेनी शर्मा जी आज भी नहीं आये ? हम लोग, जो चित्रकला के विद्यार्थी हैं, क्या घर जाएँ ?"

"आपका नाम ?" शास्त्री जी ने युवक से पूछा।

"मुझे देवकीनन्दन 'निकष' कहते हैं।"

"निकष !" यह आपका उपनाम मालूम होता है। क्या आपकी साहित्य में भी रुचि है ?

"अवश्य।" देवकीनन्दन हँसकर बोला, "यों ही थोड़ा-बहुत लिखता रहता हूँ।"

"यह तो अच्छी अभिरुचि है। आप चित्रकला सीखने के अतिरिक्त और क्या करते हैं?"

"मैं विश्वविद्यालय में शोध-कार्य कर रहा हूँ। वैसे मैंने अंग्रेजी और संस्कृत में एम० ए० किया है।"

"आप तो बड़े होनहार युवक दिखाई पड़ते हैं। मुझे आपको जानकर प्रसन्नता हुई। आप अपनी कक्षा में जाएँ, मैं अभी कुछ प्रबन्ध करता हूँ।"

देवकीनन्दन 'निकष' अपने साथी मित्रों के पास आया और उनसे उसने कहा कि शास्त्री जी नये अध्यापक को आज भेज रहे हैं।

शास्त्री जी चारुचित्रा के पास पहुँचे और उससे बोले, "यदि शर्मा जी इस मस्ती से पढ़ायेंगे, तो फिर कैसे काम चलेगा? एक सप्ताह में 4 छुट्टी उन्होंने ली है। बेचारे विद्यार्थियों का समय अकारण नष्ट होता है। रोज-रोज छुट्टी देना अच्छा नहीं लगता। क्या किया जाये?"

"बात तो आप ठीक कह रहे हैं, किन्तु ऐसे प्रतिभावान के यदि सप्ताह में 4 घण्टे भी मिलते रहें तो हमारा काम चल सकता है?"

"इसके माने हुए कि हम चित्रकला के केवल 16 घण्टे ही एक मास में रखें।"

इससे अधिक की वास्तव में आवश्यकता नहीं है, क्योंकि चित्रकला हाथ पकड़कर सिखाने वाली वस्तु नहीं। हमने तो अपने यहाँ केवल ऐसे विद्यार्थी लिए हैं, जिनको प्राथमिक ज्ञान है और जो उच्च स्तर की ओर बढ़ना चाहते हैं। एक दिन एक प्रकार का काम बताकर कई दिन तक उस पर अभ्यास कराया जा सकता है।"

"फिर भी किसी गुरु के बिना यह कार्य तो नहीं चल सकता। किसी न किसी को विद्यार्थियों के साथ बैठना तो पड़ेगा ही।"

"हाँ, यह बात तो है।"

"तो फिर इसके अर्थ यह हुए कि महाविद्यालय एक कार्य के लिए दो शिक्षक रखे। इतनी आय यहाँ कहाँ है? इन विद्यार्थियों से क्या शुल्क की दर कुछ बढ़ा दी जाये?"

'नहीं, यह तो कला पर टैक्स लगाने के समान बात है।"

"तब क्या किया जाये? दूसरा मार्ग यह है कि आप इस भार को सँभालें। कृपा कर आप कक्षा में जाएँ।"

"मैं!" चारुचित्रा ने प्रश्न-भरी दृष्टि से शास्त्री जी को देखा और फिर गर्दन झुकाकर बोली, "चित्रकला की कक्षा में कुछ-एक लोग तो मुझसे भी आयु में बड़े दिखाई देते हैं। मुझे तो गुरु बनने में संकोच होता है।"

"कला के क्षेत्र में आयु का कोई मूल्य नहीं।" शास्त्री जी ने कहा, "यह साधना की वस्तु है। आपने इस गुरुत्व को पहले समझ लिया है, इसलिये आप अधिकारिणी हैं कि गुरु-रूप में प्रस्तुत हों। आयु का प्रश्न उठता ही नहीं और फिर एक छात्र तो है ही, जो अधिक आयु का है। आपने तो उसे देखा होगा।"

'हाँ-हाँ देखा है तभी तो संकोच कर रही हूँ क्या नाम है उसका?

"देवकीनन्दन निकष।"

"हाँ-हाँ, निकष। बेनी शर्मा उस दिन निकष की ही चर्चा कर रहे थे।"

"क्या चर्चा थी?"

"यही कि वह बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि का व्यक्ति है।"

"होगा। आपको क्या करना है? आप आज कक्षा में निःसंकोच जाएँ।"

"आपकी आज्ञा सर्वथा मान्य है। मैं कक्षा में अभी जाती हूँ।"

चारुचित्रा उठी और चित्रकला शिक्षण कक्षा में पहुँच गई। चारुचित्रा को देखकर विद्यार्थियों ने उसका अभिवादन किया।

चारुचित्रा ने एक बार कक्षा के सभी विद्यार्थियों की ओर देखा और बोली—

"आज से आप लोगों की शिक्षा के लिए नया प्रबन्ध हो रहा है। अब सप्ताह मे दो दिन बेनी शर्मा जी दीक्षा देंगे और बाकी दिन मैं उनके,बताये हुए विषय का परिचालन करूँगी। मैं कोई नई वस्तु स्वयं से नहीं बताऊँगी, क्योंकि यह कार्य शर्मा जी का ही रहेगा। मैं आज संक्षेप में भारतीय चित्रकला का इतिहास बताना चाहती हूँ। अपने विषय के इतिहास की रूपरेखा से अवगत रहने से विषय में गहराई से कार्य करने की अभिरुचि होती है और अपना मार्ग प्रशस्त होता रहता है।

" भारतीय चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी हमारी संस्कृति है। संसार के प्रत्येक देश के इतिहास की आदि रेखा किसी न किसी समय पर जाकर निर्धारित कर दी गई, किन्तु भारतीय संस्कृति के विषय में जितनी भी खोज होती है, उतनी ही उसकी आदि रेखा पीछे हटती जाती है। यही कारण है कि हमारे ब्राह्मण-समाज ने अपनी संस्कृति को सनातन माना है अर्थात् वह संस्कृति, जो अपना आदि व अन्त न रखती हो। पुराणों के सृजन का अभी तक कोई निश्चित काल निर्धारित नहीं हो पाया है, किन्तु सृष्टि के उत्थान-क्रम को न मानने वाले शास्त्रियों ने अनुमानित किया है कि पुराण व वेद लगभग 5000 वर्ष पुराने हैं। सनातनी विचार से पृथक होकर हम यदि इस अनुमान को ही सही मान लें, तो आज से 5000 वर्ष पूर्व हम अपने समाज और संस्कृति का स्वरूप उस रूप में पाते हैं, जो वेदों में मिलता है। हम कितने संस्कृति-सम्पन्न उस समय में थे! संस्कृति का विकास शताब्दियो में होता है, इसलिए यह समझा जा सकता है कि वह संस्कृति, जिसकी धरातल वाली पहली ईंट आज से 5000 वर्ष पूर्व ऐसी पुष्ट देख रहे हैं, उसकी नींव समय के क्रोड़ में कितनी गहरी है।

" संस्कृति के साथ ही कला का विकास भी होता है और इसलिए भारतीय चित्रकला जो पत्थरों पर अंकित मिलती है उसकी नींव अभी प्रमाणित रूप से मापी नहीं जा सकी है। कला का विकास देश की ऐतिहासिक और धार्मिक स्थितियों से अन्योन्याश्रित सबंध रखता है, इसलिए उसकी शैली तथा उसका स्वरूप बदलता रहता है। ऐसी स्थिति भी आती है, जब उसमें अवरोध उत्पन हो जाता है और कुछ काल के बाद एक नई धारा का स्रोत फूटता है। इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर हम भारतीय चित्रकला को ठीक से समझने के लिए उसको 15 भागो में विभक्त करते हैं इनम एक भाग अवरोध-काल का है इसको यदि हम नगण्य समझें तो बाकी 14 की विभक्ति इस प्रकार हो सकती है

चारुचित्रा ने विधिवत् चित्रकला के इतिहास पर विस्तृत प्रकाश डाला, किन्तु वह अपना भाषण समाप्त भी न कर पाई थी कि उसने देखा 'निकष' आँखें बन्द करके अपना सिर जोर से मल रहा है। चारुचित्रा ने उसके निकट होकर पूछा—

"आपको क्या हो गया ?"

उत्तर मिला, "सरदर्द।"

"क्यों ?"

"क्यों, क्या बताएँ ? आप चित्रकला के स्थान पर किसी विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ातीं तो अधिक उत्तम होता।"

"आपको मेरे इतने लम्बे भाषण में कुछ भी ज्ञातव्य नहीं लगा ?"

"ज्ञातव्य है, किन्तु ललित कला के प्रेमी न तो ऐसा रूखा भाषण कभी पढ़ते है, न सुनते हैं।"

चारुचित्रा सोचने लगी—क्या उसने ऐसे स्थान पर ऐसा भाषण देकर भूल की ?

इसी समय महाविद्यालय का घण्टा टन से बोल गया।

वाराणसी में अखिल भारतीय संगीत-सभा हुई। बड़े-बड़े गायनाचार्य और वादक आमन्त्रित हुए। नृत्य-कला के पारंगत भी पधारे। रामास्वामी पिल्ले का वहाँ आमन्त्रित होना असाधारण बात न थी। पहले दिन की बैठक का कार्यक्रम रात को तीन बजे नृत्याचार्य रामास्वामी पिल्ले के कत्थक-शैली के नृत्य पर समाप्त हुआ। दर्शकों की वाह-वाह से श्री पिल्ले का सीना फूल उठा था। वे मंच से हटने के बाद अपने प्रशंसकों से हाथ मिला रहे थे कि एक रूपरंजना ने श्री पिल्ले की आँखों में आँखें डालकर कहा, "उस्ताद जी, कहाँ रहे इतने दिन ? बहुत दिन बाद दिखाई दिए।"

श्री पिल्ले ने तुरन्त उसे पहचानते हुए कहा, "मैं आजकल ललित कला महाविद्यालय, पुणे में कार्य कर रहा हूँ। काशी आने का अवसर ही नहीं मिलता।"

"अब तो आप काशी आ गये ?" वह बोली।

"हाँ, चार दिन के लिए आया हूँ। अब एक दिन आपके यहाँ भी आऊँगा।"

रूपरंजना बोली, "आपके काशी छोड़ने से हम लोगों की बड़ी हानि हुई। हम लोगों के यहाँ कोई अच्छा कलाकार नृत्य सिखाने के लिए आना पसंद नहीं करता।"

श्री पिल्ले ने मुस्कराकर कहा, "मेरी कीमत अब पता चली है ? हाँ, एक बात बताइये। सभा के कार्यक्रम में आप भी सम्मिलित हो पाई हैं अथवा नहीं ?"

"नहीं।" रूपरंजना ने कहा, "मैं स्वयं भाग लेना चाहती थी ? किन्तु यहाँ की कार्य-संयोजन समिति ने अवसर ही नहीं दिया।"

"कला के प्रदर्शन में भी भेदभाव ! कलाकार का अधिकार है कि वह अपने क्षेत्र में पूर्णतया मुक्त हो। उसको पूरा अवसर मिलना चाहिए।"

"किन्तु यहाँ की इस सभा के संयोजक हम नर्तकियों के नृत्य को कला नहीं मानते।"

"जो शास्त्र-युक्त है वह कला है जिस कृति में भाव हो आकर्षण हो और

आनन्द प्रदान करने की शक्ति हो, उसे ही शास्त्र में प्रवेश मिलता है। वस्तु पहले है, उसके नियम बाद में बने हैं। भाषा पहले बोली गई है, व्याकरण बाद में तैयार हुआ है। नृत्य पहले है, उसका शास्त्र बाद में बना है। आपको सम्मिलित नहीं होने दिया, यह अन्याय है, संकीर्णता है।"

"समाज में हमारी आवाज सुनने वाला कोई नहीं है।"

"किन्तु कलाकार के रूप में तो सभी को सुनना पड़ेगा।"

"कौन सुनता है?"

"मैं सुनने को विवश करूँगा। आखिर न सुनने का कारण क्या बताते हैं?"

"कहते हैं, पेशेवर नर्तकियाँ भाग नहीं ले सकतीं।"

"पेशेवर के क्या माने? यदि कोई चित्रकार अपने चित्रों को बेचकर पैसा पैदा कर सकता है, कोई कवि कवि-सम्मेलनों में गाकर दक्षिणा ले सकता है, कोई गायक या वादक महफिलों में जाने की फीस ले सकता है, तो एक नर्तकी नृत्य के पेशे से यदि अपनी जीविका चलाती है, तो कलाकारों के बीच उसका बहिष्कार क्यों?"

"यह तो आप ही समझें।" रूपरंजना ने कहा और श्री पिल्ले बोले, "समाज को नर्तकी के शरीर-व्यापार से घृणा है। जो इससे मुक्त है वह पूर्णतया आदर की पात्र है?" श्री पिल्ले इन शब्दों को कहकर कुछ देर चुप रहे और फिर बोले, "आज रात को आप लोगों की तरफ आऊँगा।"

"अवश्य आइये। आपसे मिलने को आँखें तरस गईं।" वह प्रसन्न होकर बोली।

चौक की गलियों में रात के समय रामास्वामी पिल्ले जब पहुँचे और उनके कानों में घुँघरू और तबले की ठनक पड़ी, तो उन्हें पहले का जमाना याद आने लगा। वे सोचने लगे, कभी इन गलियों में रोज आना पड़ता था और दूर से ही 'उस्ताद जी' को पान की गिलौरियाँ भेंट करने वाले कम से कम 4-5 व्यक्ति मिल ही जाते थे। किन्तु आज मुझे यहाँ कोई पहचानने वाला नहीं मिलता। ये दुकानें भी वैसी ही हैं, यह बाजार भी वैसा ही है और यहाँ भीड़भाड़ भी वैसी है। किन्तु अब समय वह नहीं है।

एक कोठे पर दादरे की गमक सुनाई दी। ठिठककर खड़े हो गये। सारंगी, तबले और मँजीरे की दौड़ धीमी पड़ी, तो किसी के सुरीले बारीक कण्ठ से सुनाई दिया—

तोरी पायल बाजेगी छम छम रे।
चाहे लाख चलो री गोरी थम थम के॥

रामास्वामी पिल्ले को उस्ताद बिन्दा महाराज का ध्यान आया। उनको कितना मजा इस दादरे के बोल पर आता था! वे सोचने लगे—इसी बोल पर कभी उन्होंने ठुमका लगाया था। नहीं, ठुमका ही नहीं बहुत बार नाचा था और हाँ, इसी बोल को शान्ति, रामेश्वरी और सिद्धेश्वरी को सिखाया भी था।

वे अधिक ध्यान से उस को सुनने लगे को मन

: म र बोले—यह तो वही रामेश्वरी बाई है अच्छा उसने अपना कोठा

बदल लिया। श्री पिल्ले सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए। केवल दो व्यक्ति वहाँ बैठे दिखाई दिए और रामेश्वरी पूर्ण रस-सिक्त होकर गा रही थी। श्री पिल्ले को देखते ही वह उठकर खड़ी हुई और उसने उनका स्वागत किया।

श्री पिल्ले ने गद्‌गद होकर कहा, "बहुत सन्नाटा है। बुलबुल खिजाँ में कैसे चहक रही है?"

रामेश्वरी ने हँसकर कहा, "आप लोग तो बड़ी-बड़ी सभाओं के चमन में बैठते हैं। किन्तु यहाँ तो मसला है—

अदबो-हुनर के फूल जो दामन में हों बंधे।
लूटो मजा बहार का बंजर में बैठ कर॥

"वाह, वाह, वाह"—श्री पिल्ले ने सिर हिलाकर कहा और वहाँ बैठे व्यक्तियों की ओर देखकर पूछा, "आप लोगों की तारीफ?"

रामेश्वरी बाई ने कहा, "आप हैं जनाब 'नूर' और आप हैं जनाब 'वारिस'। दोनों ही अपने फन के उस्ताद। नूर साहब ने पता नहीं, किन-किन शायरों की अदब के दरख्तों से शेरों के गुच्छे तोड़े हैं और हजरत वारिस ने हसीन सुरों में उन्हें सजाया है।"

जनाब नूर ने छूटते ही कहा, "हजार कुछ है, मगर दाद रामेश्वरी को ही मिलती है।"

"क्यों नहीं," श्री पिल्ले बोले, "हुनर का इजहार भी तो इनसे ही होता है।"

"बड़ी हसद होती है, तो आप भी जोड़ा पहनकर बैठ जाइये।" रामेश्वरी ने नूर की तरफ देखकर कहा और वहाँ सभी हँस पड़े।

रामेश्वरी ने सौम्य होकर नूर साहब से दो-चार शेर सुनने का आग्रह किया। जनाब वारिस ने नूर के गले में हाथ डालकर कहा, "चलिए, चला जाए, रामेश्वरी को दिल खोलकर अपने उस्ताद से मिलने दीजिये।"

श्री पिल्ले ने चौंककर कहा, "वारिस साहब चुटकियाँ लेने में शातिर दिखाई देते हैं।"

"कुछ न पूछिए। चुटकियाँ लेने में ये शातिर और महफिल उठाने में यह माहिर।" रामेश्वरी ने कहा, "मैंने नूर साहब से दो-चार शेर की फरमाइश की, और आप कहते हैं, चलिए चला जाए!"

"बुरा मान गई?" जनाब वारिस ने कनखियों से देखकर पूछा और नूर के गले में हाथ डालकर मुस्कराहट से कहा, "सुना दो ना दो-चार शेर।"

जनाब नूर ने कहा, "मेहमान की खातिर में 'घोड़े' साहब को पेश करता हूँ।"

" 'घोड़े' साहब कौन?" श्री पिल्ले ने पूछा।

"उर्दू के दिलदार शायरों में 'घोड़े' साहब की अपनी अलग जगह है। जनाब का कलाम सुनिये—

उस हसीं डाकू से बेतहाशा मैं भगा
बैंक में जाकर के चौका दिल जमा कर लीजिये

"वाह ! क्या चटपटा शेर है !"

"जनाब, फिर सुनिये—

उस रोज आँसुओं की, जो मैंने झड़ी लगाई।
उस बेहया ने घूम कर छाता लगा लिया ॥"

"क्या कहने !"

"क्या इज्जत बख्शी है !"

"अजी बस पूछिये नहीं। अच्छा, अब एक और शेर सुनिये—

निगाहें फेर दे गालों पे मेरे ऐ माशूक।
सेवनो-क्लाक (ब्लेड) बहुत महँगा है ॥"

"वाह ! क्या तेज निगाहें हैं आपके माशूक की !"

"आदाब अर्ज है।" नूर साहब ने कहा, "अब इजाजत दीजिये।"

"एक और" श्री पिल्ले बोले।

"हाँ, एक और सही।" रामेश्वरी बाई ने तिरछी निगाहों से इशारा किया

"अच्छा, एक और कहे देता हूँ। लेकिन फिर चलने की इजाजत चा
सुनिये—

रश्क है कमबख्त मक्खी से मुझे,
यार के गाल पर जा चिपकी है ॥"

"वाह, क्या चिपकी है !"

"तौबा है, जनाब आपके रश्क पर।" रामेश्वरी ने कहा।

वारिस और जनाब नूर, दोनों ही चल दिये। रामेश्वरी ने उनसे फिर आ
श्री पिल्ले ने शुक्रिया अदा किया और वे दोनों चले गए।

"अच्छा उस्ताद जी ! पुणे में दिन कैसे कट रहे हैं ?"

"पैसा तो अच्छा मिल जाता है, किन्तु दिल नहीं जमता।"

"हाँ, वहाँ सभी पराए दिखाई देते होंगे। परदेश है।"

"परदेश ही समझो। यहाँ तो लड़कपन से रहा। बनारस और लखनऊ के
धर जाना कम ही हुआ।"

"पूना से तो आपका मदुरा निकट है। उधर नहीं गये ?"

"कहाँ जाता वहाँ ? वह तो मेरे लिए और भी परदेश है। मैंने मदुरा
ो गर्भ में था। मेरे पिता की बदली जब से उत्तर भारत को हुई, फिर
ा को जाना हुआ ही नहीं और जब मैं तीन साल का था तभी तो मेरी माँ
थी।"

"हाँ, हाँ, ध्यान आया। आपने एक बार अपने बारे में यह बताया था।
बताइये, सान्याल साहब के क्या रंग है ?"

? ध्रुपद और ख्याल वाले ? आप तो उनकी
में गई थीं शायद ?

"हाँ, हाँ, मैं ही नाचने गई थी। बुढ़ापे की शादी में उनका जवान दिल अजब रग ला रहा था।"

"वे सान्याल साहब अब पुणे मे रहते हैं।"

"अच्छा!" रामेश्वरी बाई ने विस्मय प्रकट किया।

"हाँ, और उनके दो लड़कियाँ हैं।"

"दो? क्या इसी नई पत्नी से?"

'नहीं। एक तो वह पहले ही थी जिसका नाम नलिनी है और दूसरी पांच वर्ष की है, वीणा।"

"तब तो सान्याल साहब ने बड़ा जोर मारा।"

"जोर क्या मारा? एक दिन मुझसे कह रहे थे—जिस आशा से मैंने दूसरा विवाह किया था, वही न हुआ। बेचारे एक पुत्र की इच्छा रखते हैं।"

"भगवान् जाने, लोग लड़कियों से क्यो घृणा करते हैं?" वह हाँसी।

"नहीं, घृणा तो वे नहीं करते। नलिनी तो ऐसी बनी-ठनी रहती है कि बस···"

"अच्छा! तब तो आपकी बैठक सान्याल साहब के यहाँ नित्य होती होगी?"

"राम कहो। उनकी वह कामिनी जो है ना, वह सभी को बिल्ली की तरह बकोटती रहती है। पता नहीं, किस ऐंठ में रहती है! मुझसे तो उसे विशेष चिढ़ है।"

"अच्छा!"

"और क्या? नलिनी मेरे ललित कला महाविद्यालय में नृत्य सीखने आया करती थी। वार्षिकोत्सव हुआ। नलिनी को कोई पुरस्कार नहीं मिला। उस बिल्ली ने मेरे ऊपर ताना कसा कि मैं उससे जलता हूँ, नलिनी को मेरे कारण ही पुरस्कार नहीं मिला। उसने नलिनी का नाम कटवा लिया।"

"बड़ी अनोखी औरत है।"

"बात यह है कि सान्याल की बुढ़ौती ने उसे शेर कर रखा है, किन्तु अपने को क्या लेना-देना है? सान्याल जब कभी मौके से मिल जाते हैं, कुछ देर की बैठक हो जाती है।"

"एक बात तो आपने बताई नहीं?"

"क्या?"

"ललित कला महाविद्यालय में आपकी पहुँच कैसे हुई?"

"इन्हीं सान्याल सालब की कृपा से। बम्बई प्रदेश की सरकार की ओर से वे शिक्षा-विभाग के एक विशेष अधिकारी के रूप में पुणे बुलाए गये थे और वहाँ पहुँचकर वे ललित कला महाविद्यालय के सदस्य बने। थोड़े दिनों बाद उनका पत्र मुझे मिला कि मैं पुणे चला जाऊँ। वहाँ 700 रुपये की नौकरी का प्रबन्ध हो सकता था। मैं फौरन चल दिया। ऊपर से कुछ ट्यूशन भी कर लेता हूँ।"

"तब तो सान्याल साहब ने आपका बड़ा काम किया।"

"मैं मानता हूँ और नलिनी के विवाह में आप देखिएगा वह रौनक कर दूँगा कि

"मुझे भी बुलाइयेगा।"

"क्यों नहीं, आपको सान्याल साहब स्वयं पत्र लिखेंगे। दोनों तरफ का रेल-भाड़ा दिया जायेगा और भेंट भी दिलाऊँगा।"

"किन्तु उस बिल्ली का क्या करियेगा ?"

"वह मेरे और सान्याल साहब के व्यवहार के बीच में एक पल ठहर नहीं सकती।"

रात को घड़ी ने 12 घण्टे बजाये। चारुचित्रा अपने चित्र के साथ तल्लीन थी। मोहिनी ने करवट बदली, तो देखा कमरे की बिजली जल रही है। मोहिनी ने तीव्र स्वर में पुकारा, "चारुचित्रा !"

"जी।"

"तुम अभी जग रही हो ?"

"........."

"चुप क्यों हो ?"

"कुछ नहीं, यों ही।"

"कुछ नहीं के क्या अर्थ हैं ? घड़ी ने अभी बारह बजाए हैं और तुम अभी भी जाग रही हो ?"

"एक चित्र में व्यस्त हो गई थी।"

"तुम पागल हो जाओगी इन चित्रों के पीछे।"

चारुचित्रा मौन रही और मोहिनी देवी सो गईं। लगभग एक घण्टे बाद जब उनकी आँख फिर खुली, तो देखा कमरे की बिजली अब भी जल रही है। मोहिनी ने पूछा, "अभी तुम सोई नहीं ?"

कमरे से उत्तर नहीं आया। मोहिनी चारपाई से उठीं और कमरे में पहुँची। देखा चित्र-फलक पर महात्मा बुद्ध का एक सुन्दर-सा चित्र खिंचा हुआ है और चारुचित्रा अपने हाथ में तूलिका लिए दीवाल से सिर टेक कर सो गई है। मोहिनी ने उसके हाथ से तूलिका खींची और बड़बड़ाईं, "ऐसी लड़की है कि क्या कहूँ इसे ! चित्रों के पीछे दीवानी हो गई है !" मोहिनी ने एक दूसरी मेज पर एक अन्य चित्र रेखांकित देखा। चित्र में प्रातः सूर्य की किरणें बादल के दो टुकड़ों के पीछे से इधर-उधर छिटक रही हैं। मोहिनी चित्र को कुछ देर तक देखती रहीं और तभी उन्होंने बारीक श्वेत रेखाओं से निर्मित एक युवती का अर्धांग देखा। अभी जो उन्हें बादल के टुकड़े दिखाई दिए थे, वे अब एक चोली के दो खण्ड दिखाई दिए। मोहिनी मन ही मन मुस्कराईं और चारुचित्रा को हिलाकर बोलीं, "चल पलंग पर सो। यहाँ लेट गई।"

चारुचित्रा चुपचाप उठी और अपने पलंग पर जा लेटी। रात को उसने एक स्वप्न देखा—

दिल्ली में बहुत बड़ी चित्र प्रदर्शनी लगी हुई है। देश-विदेश के राजदूत और कलाविद प्रदर्शनी में घूम रहे हैं उसका चित्र भी लगा हुआ है और सैकड़ों लोग उसके

चित्र को देखकर मन्त्रमुग्ध हो रहे हैं। एक ने कहा—इस चित्र के पीछे पर्याप्त परिश्रम किया गया है। दूसरे ने कहा—प्रथम पुरस्कार इसी को मिलना चाहिए।

चारुचित्रा वास्तव में मुस्कराई, किन्तु उसे आभास मिल गया कि वह स्वप्न देख रही है। उसने करवट बदली और अब उसने दूसरा स्वप्न देखा—

"विवाह तो तुम्हें करना ही होगा।" बापू ने कहा, "···मुझे दीक्षा देने का प्रयास मत करो।"

"मैं विवाह करके इतने दिनों की साधना दूसरे की इच्छा पर नीलाम कर दूँ।"

"कौमार्य जीवन में एक समय वह आता है जब व्यक्ति इस बुरी तरह से विचलित होता है कि उसे कुछ क्षण के लिए अच्छा-बुरा, ऊँच-नीच, मान-मर्यादा किसी का भी ध्यान नहीं रह जाता।···हिमकन्या गंगा में भी जब यौवन की तरंग आती है, तो वह भगीरथ-मार्ग को भूलकर नरक सम नालों में बहने लगती है···यौवन पर अंकुश रखने के लिए विवाह आवश्यक है।"

"किन्तु जब मुझे विवाह करना ही नहीं है, तो···"

"चारु···इतनी देर से तुम्हें समझा रहा हूँ और तुम किन्तु-परन्तु किये जा रही हो!"

बापू के मुँह से खून गिरने लगा। उनकी तबीयत अधिक खराब हो गई··· शास्त्री जी ने जब उन्हें सँभाला तो उनके हृदय की गति रुक चुकी थी।

"···बापू मैं विवाह करूँगी···"

"बापू मैं विवाह करूँगी।" ये शब्द स्वप्न में नहीं चारुचित्रा के मुख से वास्तविक रूप से निकले। वह सिसकी भरने लगी और इसी समय मोहिनी ने उसके माथे पर हाथ फेरते हुए कहा, "बेटी क्या है? कोई भयंकर स्वप्न देखा क्या?"

चारुचित्रा ने धड़कते हुए हृदय के साथ आँख खोली और बोली, "मैंने बापू की मृत्यु का दृश्य सपने में देखा है।"

मोहिनी ने कहा, "उन्हीं ने तुझे इसलिए स्वप्न दिया है कि तू उनकी आज्ञा का पालन कर। तुझे न जाने क्या सनक सवार है कि विवाह के नाम से चिढ़ जाती है। उनको मरे चार वर्ष हो गये और तू आज भी अविवाहित है।"

"मैं···विवाह करूँगी।" चारुचित्रा ने कहा, "आप धैर्य रखें। मैंने बापू की आत्मा को आश्वासन दिया है कि मैं विवाह करूँगी। मैं विवाह करूँगी, अवसर आने दो।"

"न जाने कब वह अवसर आयेगा? मेरा कहना तो एक बार भी तूने नहीं माना। तुझे कोई वर पसन्द नहीं आता।"

"माँ, यह बात मैं स्वयं नहीं समझती कि मुझे क्यों पसन्द नहीं आता?

"तू प्रत्येक पुरुष को अपने मार्ग का रोड़ा समझती है। तू प्रत्येक पुरुष को शंका और अहम् की दृष्टि से देखती है।"

"उँह! मुझे सोने दो इस समय।" चारुचित्रा ने कहा और मोहिनी अधिक न भिड़कर चुप अपने बिस्तर पर चली गईं

"आपने अपना बेला मँगा लिया ?"

"हाँ हाँ, यह देखिये जर्मनी मेड है ।"

रूपकुमार ने केस को खोलकर बेला निकाला । नलिनी उत्कण्ठा से रूप को और उसके हाथ के बेले को देखने लगी ।

रूपकुमार ने गज के बालों को देखते हुए नलिनी से पूछा, "राजन है ?"

"राजन क्या ?"

"राजन लगाने से गज के बाल अच्छे रहते हैं । बाजार से राजन मँग लीजियेगा ।"

"मँगा लूँगी, और कोई चीज ?"

"हाँ, एक जोड़ा तबला भी चाहिए ।"

"तबला तो मेरे पास है, कहिये तो अभी ले आऊँ ।"

"अच्छा, अभी रहने दो । आज बेले को पकड़ना सीखो ।"

"और बजाना ?"

"बजाना भी सिखाऊँगा । पहले गज पकड़ना तो आ जाये ?"

वीणा ने कमरे में आकर देखा, उसकी दीदी बेला सीख रही है । कुछ क्षण खड़ी रहने के बाद विस्मय से बोली, "अरे, आप तो वही हैं ।"

"वह कौन ?" नलिनी ने वीणा से पूछा और रूपकुमार ने वीणा को टेढ़ी दृष्टि से देखा । वीणा ने मुस्कराकर रूपकुमार से कहा, "आप ही ने तो उस दिन दीदी के नृत्य को सराहा था ।"

"कब ? किस दिन ?"

महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव के दिन । जब दीदी बड़ा-सा लहँगा पहनकर नाच रही थीं ।"

रूपकुमार मुस्कराया और नलिनी ने प्रश्न-भरी दृष्टि से रूपकुमार को देखा । रूपकुमार ने कहा, "आप बाजा सीखिये, यह पगली है ।"

"हूँ, मैं पगली हूँ !" वीणा ने चिढ़कर कहा, "और दीदी का नाम किसने पूछा था ?"

रूपकुमार ने कहा, "मैं क्या जानूँ !"

"मैं क्या जानूँ !" वीणा बोली, "आप तो हमारा घर भी पूछ रहे थे।"

नलिनी ने रूप की ओर देखकर कहा, "यह क्या कह रही है ?"

रूपकुमार ने आँखें नचाकर कहा, "इसको भ्रम है । कोई और होगा ।"

वीणा ने रोष में आकर कहा, "झूठ न बोलिये ।" और रूपकुमार ने हँसकर कहा, "इतनी जल्दी क्रोध चढ़ आया ? मैं ही था ।"

वीणा बोली, "देखो दीदी ।" और नलिनी ने कहा, "मास्टर जी, आप तो बड़े शरमीले मालूम होते हैं । सच बताइये, क्या आपको मेरा नृत्य पसंद आया था ?"

आप तो बहुत अच्छा नृत्य जानती हैं रूपकुमार ने कहा नलिनी ने धीरे से कहा 'तो आप यह मानते हैं कि मैं भी कुछ दू यह हँस पड़ी और

रूपकुमार ने कहा, "अच्छा, अब बेला सीखिये।"

नलिनी ने कहा, "पाठक जी कहते हैं कि बेला सीखने के लिए तबले के बोल सीखना आवश्यक है। आप क्या तबले के बोल पहले नहीं सुनेंगे।

"मैंने जान लिया है कि आपको सभी बोल आते हैं और अब तबले के बोल तबले पर ही सुनूँगा।"

"तो तबला उठा लाऊँ ?"

"उठा लाओ। किन्तु लाभ क्या होगा ? अभी बेला बजाना तो सीख लो, फिर संगत मैं कर दिया करूँगा।"

"किन्तु मास्टर साहब, आज आप ही कुछ सुनाएँ, तबला मैं बजा देती हूँ।"

रूपकुमार ने कहा, "अच्छा, यों ही सही। ले लाओ तबला।"

नलिनी ने वीणा से कहा, "जा, तबला उठा ला।"

वीणा ने कहा, "मैं नहीं लाती।" और वह वहाँ से भाग गई। नलिनी तबला उठा लाई और वह शाम रूपकुमार के बेला-वादन में ही बीत गयी। नलिनी ने अपने तबला-वादन का प्रदर्शन किया।

संध्या के समय चारुचित्रा जब ललित कला महाविद्यालय से घर आई, तो उसकी माँ मोहिनी ने उसे एक पत्र दिया और बोलीं, "यह पत्र कमल बाबू का नौकर दे गया है और तुम्हें आज 7 बजे चाय पर बुलाया है।"

चारुचित्रा ने पत्र पढ़ा—

कुमारी चारुचित्रा जी,

विदित हो कि मेरे कारखाने के कर्मचारी आगामी मास में एक नाटक खेलना चाहते हैं और उन लोगों की इच्छा है कि वे संस्कृत के किसी अच्छे नाटक का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत करें। मंच की रूपसज्जा का कार्य मुझे सौंपा गया है। आपसे निवेदन है कि आप आज शाम को मेरे यहाँ चाय पिएँ और अपनी कला तथा बहुमूल्य सम्मति से सहयोग दें। मेरे यहाँ मेरे एक मित्र और होंगे। वे बिल्कुल अपने ही आदमी हैं। आप निःसंकोच आने का कष्ट कर सकेंगी तो आभारी हूँगा।

आपका<br>
कमलचन्द्र

मोहिनी ने पूछा, "यह कमल बाबू वे ही हैं न, जिन्होंने उस दिन महाविद्यालय में पुरस्कार घोषित किए थे ?"

"हाँ," चारुचित्रा ने छोटा-सा उत्तर दिया।

"तब तो बड़े आदमी मालूम होते हैं। जाओ चली जाओ।"

"जाऊँगी" चारुचित्रा ने कहा और घड़ी देखी घड़ी में अभी पौने छ बजे थे। उसने मुँह-हाथ धोया और कपड़े वह अपने साधना-कक्ष में आई

पर बचपन और यौवन का चित्र कसा हुआ था। मोहिनी देवी ने कमरे में आकर कहा, "तुम्हारा यह चित्र अभी पूरा नहीं हुआ ?"

चारुचित्रा ने तूलिका को रंग में बोरते हुए कहा, "अभी तो इसमें बहुत काम बाकी है।"

"अब क्या बाकी है ? सभी कुछ तो बन चुका है।"

"अभी इसमें नीले रंग की तीन फेर बाकी हैं।"

"तो आज ही तीनों रंग घोल कर चढ़ा दो ना।"

"नहीं, आज केवल एक ही रंग फेरा जाएगा। कल धीरे-धीरे दूसरा रंग फेरा जायेगा और परसों तीसरा रंग।"

"तुम बहुत धीमे काम करती हो, इतने दिन से यही करती चली जा रही हो और अभी तीन रंग एक दिन में फेरना नहीं सीखा। भगवान जाने, कब एक चित्र तैयार होगा।"

"यह फाइन आर्ट है, यानी सूक्ष्म कला। एक-एक चित्र महीनों में बनता है और कुछ तो जीवन में एक।"

"बनते होंगे, तेरे बाबा भी यही कहा करते थे, किन्तु मैं इस कलाबाजी को आज तक समझ न पाई।" मोहिनी ने कहा और चारुचित्रा अपने चित्र के साथ व्यस्त हुई। मोहिनी कक्ष के बाहर आई किन्तु उनका मन न लगा और चारुचित्रा से फिर बोली, "कमल बाबू के यहाँ नहीं जाना है क्या ? बेचारे ने कितने आदर से बुलाया है। उठो जाओ।"

चारुचित्रा ने तूलिका को एक बार सम्पूर्ण चित्र पर फेरकर उसे पानी के गिलास मे छोड़ा और वह उठ खड़ी हुई।

"आइये, आइये, चारुचित्रा जी। हम लोग आपकी प्रतीक्षा में ही थे।" कमल बाबू ने कहा। चारुचित्रा ने अपनी घड़ी देखकर कहा, "मुझे देर तो नहीं हुई ? घड़ी मे 7 बजकर एक मिनट हुआ है।"

"नहीं, देर कहाँ हुई है, आप बिल्कुल समय से आई हैं," यह शब्द कमल बाबू के मित्र के थे।

चारुचित्रा ने उनको देखा तो वे, वे ही थे जिनके सिर में उस दिन चित्रकला की कक्षा में दर्द होने लगा था। चारुचित्रा ने कुछ विस्मय से पूछा, "आप !" और कमल बाबू ने तुरन्त कहा, "आप देवकीनन्दन 'निकष' हैं। अच्छे साहित्यिक हैं और मेरे अपने ही मित्र हैं।"

"समझी।" चारुचित्रा ने कहा, "आप ही के तो उस दिन···"

"जी हाँ, जी हाँ। मुझे ही उस दिन आपके भाषण से सिरदर्द हो गया था।" निकष ने कहा।

"तो आप इन्हें पहले से जानती हैं ?" कमल बोला।

हाँ यो ही कुछ चारुचित्रा मुस्कराई और निकष ने हसकर कहा आप तो

मेरी गुरु हैं ।"

चाय के प्याले में चाय ढाली जाने लगी और नाटक की वार्ता प्रारम्भ हुई । चारुचित्रा ने मूल प्रसंग छेड़ते हुए कहा, "आप लोग संस्कृत का नाटक खेलने का विचार क्यों रखते हैं ?"

कमल बाबू बोले, "बात यह है कि हिन्दी नाटकों का इतिहास तो बिल्कुल नया है और प्रसाद के नाटक मंच के विचार से उत्तम नहीं लिखे गये हैं ।"

"प्रसाद को न लीजिये, उनके उत्तरकालीन लेखकों के नाटक उठा लीजिये । अब तो मंचोपयोगी बहुत से नाटक लिखे जा चुके हैं ।"

कमल बाबू ने हिन्दी नाटकों को उपेक्षित करते हुए कहा, ' हिन्दी के नाटको मे इस समय एकांकी की भरमार है जो घंटे भर में समाप्त हो जाते हैं और जो पूर्ण नाटक हैं उनमें इतने अधिक दृश्य-परिवर्तन हैं कि मंच का शृंगार ही बदलना कठिन हो जाता है ।"

"फिर भी बहुत से नाटक अपने मतलब के निकल आएँगे । संस्कृत के नाटको का वातावरण उपस्थित करना बड़ा कठिन हो जाता है" निकष ने गम्भीरता से अपनी बात कही ।

कमल बाबू बोले, "हिन्दी लेखकों के नाटक चुनना मैं भी चाहता था । भगवती बाबू, डा० वर्मा, अश्क, लक्ष्मीनारायण मिश्र या डा० लाल के नाटकों में से किसी को भी हम चुन सकते थे किन्तु कारखाने के कार्यकर्त्ता कहते है कि दशहरे के दिनों में संस्कृत नाटक ही खेलना ठीक होगा ।

"पता नहीं कौन है आपके कारखाने का नेता—" निकष ने कहा, "उन्हें तो कोई प्रगतिशील नाटक चुनना चाहिए था ।"

कमल बाबू ने बात काटकर कहा, "प्रगतिशील नाटक खेलने का अवसर दशहरा नहीं और कोई दिवस हो सकता है ।" उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई, "चारुचित्रा जी, यह बताइये, संस्कृत का नाटक शकुन्तला कैसा रहेगा ?"

"शकुन्तला नाटक तो अच्छा है किन्तु बहुत घिस चुका है । इसको हिन्दी के मंच पर बार-बार उतारना ठीक नहीं ।"

निकष ने बीच में ही कहा, "सन् 1789 ई० में जब सर विलियम जोन्स ने इसका अनुवाद अंग्रेजी में किया तो वहाँ के साहित्यकारों ने दाँतों तले उँगली दबा ली थी इसलिए हमें इसी नाटक को खेलना चाहिए ।" उसने फिर बात बदली और व्यंग्य से बोला, ' किन्तु पुराने दुष्यन्त से तो आधुनिक दुष्यन्त ही अच्छे हैं । कम से कम इतने प्रगतिशील तो हैं कि अपनी प्रेमिका को···"

कमल बाबू ने आधी बात पकड़कर कहा, "आप तो प्रगतिशीलता की बात फिर करने लगे । आखिर आपका तात्पर्य क्या है ?"

निकष बोला, "उस युग में एक दुष्यन्त ने एक सुन्दरी से प्रेम कर जब उसे भुला दिया तो वह आज तक याद किया जाता है किन्तु आज के मनचले युवक जो अपनी शकुन्तलाओं को भूलना नहीं चाहते उनका चित्र कोई क्यों नहीं

चारुचित्रा ने निकष की बातों की ओर खिंचकर पूछा, "यह अनुभव आपको कैसे हुआ ?"

कमल ने बात मोड़ते हुए कहा, "भई, आप लोग दूसरी ओर चले जा रहे हैं।" उसने निकष को संबोधित कर पूछा, "क्यों यदि कादम्बरी देखा जाए तो कैसा रहेगा ?"

निकष ने कहा, "कादम्बरी तो नाटक नहीं है, गद्य काव्य है। हाँ, अब हम आप में से कोई बाणभट्ट बने तो उस कथा का नाटक भी तैयार हो सकता है।"

"आज तुम कैसी बात कर रहे हो निकष !" कमल ने कहा, "प्रत्येक बात में व्यंग्य अच्छा नहीं लगता।"

"आप लोग स्वप्नवासवदत्ता, प्रियदर्शिका या मालविकाग्निमित्र क्यों नहीं खेलते ?" चारुचित्रा बोली।

"बहुत ठीक।" कमल ने कहा, "मालविकाग्निमित्र पर ही अब विचार करेंगे।"

"मालविकाग्निमित्र से तो मालती-माधव अच्छा है। उसे ही क्यों न खेला जाय ?" निकष बोला।

कमल ने कहा, "निकष का ही कहना सही, अब हम मालती-माधव ही खेलेंगे।"

"किन्तु संस्कृत के नाटकों में जो वातावरण मिलता है उसको उपस्थित करना···"

"अब किन्तु-परन्तु से काम नहीं चलेगा।" कमल ने दृढ़ता से कहा, "अब तो हमें मालती-माधव खेलना ही है।"

निकष ने अलमस्ती से चाय का प्याला मुँह से लगाते हुए कहा, "हरि इच्छा। किन्तु नाटक की लिपि पुनः तैयार करनी होगी।"

"कोई बात नहीं, यह काम मैं करा लूँगा।" कमल ने कहा और चारुचित्रा के प्याले को खाली देखकर उसमें चाय उड़ेली।

कमल ने चारुचित्रा से मंच के पर्दे तैयार करने का आग्रह किया और चारु ने पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

ललित कला महाविद्यालय की नृत्य-कक्षा चल रही थी।

रामास्वामी पिल्ले ने अपने पैरों में घुंघरू बाँधे और शिष्यों से बोले, "कत्थक नृत्य उत्तर भारत में अधिकतर बादशाहों, नवाबों और जागीरदारों के यहाँ आश्रय पाता रहा था। इस नृत्य को मुख्यतः भावात्मक शैली मिली है। आधुनिक नृत्य पारंगतों में इस शैली में शम्भू महाराज प्रधान हैं। इस नृत्य की विशेषता पद-चालन में है। अंगों के हाव-भाव तो काम करते ही हैं किन्तु पद से जो आन्दोलन जिसको 'रिदिम' कहते हैं, उत्पन्न किया जाता है वही मुख्य है। देखिए इस प्रकार—

धीं धीं धागे तिरकिड तीना कता धा गे तिरकिड धीना
धी ना धी धी ना तीना धी धी ना

पर्दों का संचालन दिखाने के बाद वे बोले, "अब कुमारी मीना जोशी अपने को प्रस्तुत करें।"

मीना जोशी ने पहले तबले के बोल बोले फिर सफलता से पदो का संचालन किया।

श्री पिल्ले ने कक्षा की दूसरी बालिका दमयन्ती का नाम लिया और दमयन्ती ने भी सफलतापूर्वक घुँघरुओं से मापित नृत्य प्रस्तुत कर दिया।

श्री पिल्ले ने कहा, "अच्छा अब दोनों ही एक साथ प्रस्तुत हो।" मीना दौडकर दमयन्ती के बगल में खड़ी हुई और श्री पिल्ले ने तबले के बोल बोले, दोनो ही बालिकाएँ छनछनाने लगीं। पिल्ले ने कहा, "वाह, बहुत अच्छा।"

इसी समय कमल ने वहाँ पदार्पण किया और श्री पिल्ले ने उनको स्वागत के साथ कक्षा के अन्दर बुलाया। कमल ने पूछा, "कहिए, हमारे नाटक के लिए आप मीना जोशी को भेजेंगे ना ?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं। मीना जोशी और दमयन्ती दोनों को ही आपकी सेवा मे प्रस्तुत करूँगा। देखिये दोनो कैसा नाचती हैं," श्री पिल्ले ने दोनो को ही फिर आज्ञा दी कि वे प्रस्तुत हों।

तबला थिरका। दोनों ही पुनः छनछनाने लगीं। कमल बाबू ने दोनों की पीठ ठोकी और वहाँ से लौट गये।

मीना जोशी और दमयन्ती को शिक्षा देने का समय जैसे ही समाप्त हुआ पद्मा ने उसी कक्षा में प्रवेश किया। श्री पिल्ले ने पद्मा की असाधारण प्रसन्नता भरी मुद्रा को देखकर पूछा, "आज क्या कोई नया समाचार है ?"

"हाँ," पद्मा ने कहा, "वह कमल बाबू हैं ना, उनके कारखाने में एक नाटक खेला जा रहा है। मेरा उस नाटक की नायिका के लिए चयन हुआ है।"

"अच्छा ! कमल बाबू से आपका क्या परिचय है ?"

"वे मेरे मामा 'निकष' जी के मित्र हैं।"

"उनके कारखाने की कोई महिला नायिका नहीं बन सकती थी क्या ?" श्री पिल्ले ने पूछा।"

"ये मैं नहीं जानती, किन्तु उन्होंने पहले परिचय में ही मुझसे कहा—मालती की भूमिका को पद्मा यदि तुम करो तो बहुत अच्छा है। मेरे मामा ने कहा, कोई बात नही, कर लो ! मैं तो चाहती ही थी, बस बात तय हो गई।"

"आपके मामा का उनसे परिचय कितना पुराना है ?"

"वे तो अभी दो महीने से ही इलाहाबाद से यहाँ आये हैं, परिचय भी इतना ही पुराना होगा।"

"इलाहाबाद से यहाँ आये हैं ?"

"हाँ, वे वहाँ विश्वविद्यालय में पढ़ते थे।"

जो हो समझा

"कोई विशेष बात है क्या ?

श्री पिल्ले ने बात समाप्त कर कहा, "नहीं, कुछ नहीं। आज का अन्तिम नृत्य अभ्यास प्रारम्भ करो।"

पद्मा पैर में घुँघरू बाँध कर खड़ी हुई और बोली, "मैं प्रस्तुत हूँ।"

श्री पिल्ले ने पूछा, "स्थायी भाव कितने होते है?"

"नौ," पद्मा ने उत्तर दिया।

"कौन-कौन से?"

"रति, हास, क्रोध, शोक, उत्साह, भय, घृणा, विस्मय और शान्ति।"

"अच्छा, रति भाव प्रदर्शित करो।"

पद्मा ने प्रदर्शन किया।

"अब भय और क्रोध का साम्य प्रस्तुत करो।"

पद्मा ने उसका भी प्रदर्शन किया।

"शाबाश, अब हास और उत्साह का क्रमशः प्रदर्शन प्रस्तुत करो।"

पद्मा ने पूर्ण सफलता से उसे भी प्रस्तुत किया।

"अच्छा बताओ, वात्स्यायनानुसार कितनी कलाएँ हैं?"

"चौंसठ।"

"कौन-कौन-सी?"

"गायन, बादन, नृत्य, चित्र, पुष्पास्तरण, नेपथ्य प्रयोग, इन्द्रजाल, कौचुमार, प्रहेलिका, नाट्य, काव्यक्रिया, छन्दज्ञान, पाक, क्रियाकल्प···"

"बस, बस, बस ठीक है। आप पूर्ण निपुण हो चुकी हैं। इन कलाओं मे जो ललित कलाएँ हैं वे मानव की संस्कृति के अलंकार हैं और इन ललित कलाओं का प्रत्येक सेवक समाज में आदर का पात्र है। मैं आपको गुरुदीक्षा देता हूँ···जहाँ भी जाना आत्मसम्मान से जाना। जहाँ भी सम्मिलित होना कला की मान-मर्यादा की रक्षा करना। कैसी भी स्थिति में आचरण-भ्रष्ट मत होना। अभ्यास करना मत भूलना और सदा अन्य कलाकारों का सम्मान करना।"

"आजकल आपने माल मँगाना बहुत कम कर दिया है।" सेठ लक्ष्मण दास ने नटवरलाल के पिता से कहा।

"क्या बताऊँ मेरा व्यापार दिन-प्रतिदिन बिगड़ रहा है। अकेला आदमी हूँ, क्या-क्या करूँ?"

"क्यों, नटवरलाल से काम क्यों नहीं लेते?"

"नटवरलाल ही काम का होता तो फिर रोना ही काहे का था। उसकी आदते कुछ इतनी खराब हो गई हैं कि कुछ न पूछिये।"

"क्यों-क्यों? कुछ आगे भी बताइयेगा।"

"बताते भी शर्म आती है। वह कुछ ऐसे चक्कर में पड गया है कि दुकान का काम देखना तो दूर उल्टा जब अवसर पाता है नोटो की माला कुछ के गले मे छोड आता है

"क्या आपको ठीक पता है कि वह इसी चक्कर में···।"

"अजी यह बातें भी कहीं छिपती है ? आजकल दिल्ली का वातावरण इतना खराब हो गया है कि जहाँ दुनिया की हर वस्तु महँगी होती जा रही है वहीं यह औरतें सस्ती से सस्ती उपलब्ध हो रही हैं।"

"यह तो सचमुच बड़ी चिन्ताजनक बात है। नटवरलाल का दिल यदि दुकान पर नहीं जमता तो उसे किसी अन्य कार्य में लगाइये।"

"क्या लगाऊँ अन्य कार्य में ! कहता था कि उसे संगीत से बहुत प्रेम है। उसने कहा, मैं संगीताचार्य बनूँगा। मैंने सोचा संगीत बहुत अच्छी चीज है, यदि उसका दिल इसी में जमे तो संगीत ही सिखाया जाय। चार साल के लिए लखनऊ के मारिस कालिज मे संगीत सीखने के लिए भेज दिया किन्तु सुपुत्र जी वहाँ से तबला सीखकर आये। मैंने कहा था कि या तो कंठ संगीत सीखना अन्यथा कोई ऐसा वाद्य जिसका स्वतन्त्र महत्त्व हो किन्तु उसने क्लारेनेट, बेला या गिटार जैसे वाद्यों के स्थान पर सीखा तबला और अब पता नहीं किस-किस बाईजी के यहाँ तनक-धिन किया करता है।"

"यह तो उसका जीवन ही चौपट कर देगा। अच्छा हो आप उसका विवाह कर दीजिये।"

"उसके लिए भी तो वह राजी नहीं होता। बड़ी कठिनाई से एक ऐसी लड़की मिली है जो स्वय अच्छा बेला बजाती है और अच्छी गायिका भी है। उसके इन गुणो ने उसे कुछ अपनी ओर खींचा है। वह उससे विवाह करने को कुछ-कुछ तैयार है।"

"कुछ-कुछ तैयार है तो अब आप उसका विवाह कर ही दीजिये।"

"ये ही तो मैं भी सोच रहा हूँ।"

"सोचना क्या है ? लड़की देखने में तो अच्छी है ?"

"सुना तो है कि लड़की अच्छी है किन्तु अब वास्तव में···"

"तो उसमें क्या है, किसी को देखने के लिए भेज दीजिये।"

"किसी को क्या भेजूँ, वह तो स्वयं ही देखना चाहता है। आपके पुणे में ही तो वह लड़की है।"

"पुणे की लड़की है ?"

"हाँ।"

"किसके यहाँ की ?"

"एक हैं श्री तारकनाथ सान्याल।"

"क्या करते हैं ?"

"शिक्षा विभाग में आफिसर हैं। आप शायद जानते हों।"

"नहीं, मैं तो नहीं जानता, किन्तु आप अपने पुत्र को भेज दीजिये, मेरे यहाँ आकर रुक जायेगा।"

"हाँ आपके यहाँ ही भेजूँगा। आपका उससे परिचय तो होगा ?"

"नहीं मेरा तो परिचय नहीं है किन्तु कोई बात नही"

आपके पुत्र कमल बाबू से तो उसकी बड़ी मित्रता है कमल बाबू जब भी

यहाँ आते हैं, वह उनके साथ में घूमने जाता है।"

"हाँ, हाँ, वह तो मुझे मालूम है।"

"किन्तु क्या आपसे कभी भी उसका सामना नहीं हुआ ?"

"कहाँ हुआ ?"

"बुरी बात क्या, आजकल के लड़के ऐसे ही हैं। वे या तो बड़ों के सम्मुख ही नहीं आयेंगे और यदि आये भी तो ऐसी उपेक्षा करेंगे कि···खैर आप कोई भी चिन्ता न करें। नटवरलाल को अवश्य ही पुणे भेजें। कमल से उसका परिचय है। वह स्वागत करेगा।"

"स्वागत की क्या बात है, आपकी सेवा उसे करनी चाहिए।"

प्रात: के सात बजे थे। चारुचित्रा जलपान कर रही थी। इसी समय द्वार पर किसी ने दस्तक दी। मोहिनी ने द्वार खोला तो एक सम्भ्रान्त व्यक्ति को बाहर खड़ा पाया। मोहिनी ने पूछा, "आप किसे चाहते हैं ?"

"चारुचित्रा जी से मिलना चाहता हूँ।"

"आपका नाम ?"

"मुझे देवकीनन्दन 'निकष' कहते हैं।"

"क्या काम है ?"

"मुझे कमल बाबू ने भेजा है। उनके कारखाने में एक नाटक खेला जा रहा है, उसी के सम्बन्ध में कुछ काम है।"

मोहिनी ने उन्हें अतिथि कक्ष में बिठलाया और चारुचित्रा को सूचना दी कि कोई 'निकष' जी आये हैं। चारुचित्रा तुरन्त अतिथि कक्ष में आई और उसने उनका अभिवादन किया।

"कहिये कैसे आना हुआ आपका ?"

"कमल बाबू ने आपसे मंच की भुजाएँ बनाने का निवेदन किया था, क्या आपने कुछ बनाया···?"

"हाँ, हाँ, अभी मैं आपको दिखाती हूँ।" चारुचित्रा अन्दर गई और जल्द ही चाय की ट्रे लेकर आई।

निकष ने मुस्कराकर कहा, "सम्भवत: यह मंच-भुजाएँ नहीं है।"

"नहीं," चारुचित्रा हँसी, "यह तो चाय है।"

"इस औपचारिकता की क्या आवश्यकता थी। लखनऊ से तो पुणे पर्याप्त दूर है।"

चारुचित्रा ने ठिठककर कहा, "क्या सम्पूर्ण शिष्टाचार लखनऊ में ही सिमट कर रह गया है ? महाराष्ट्र के आतिथ्य से सम्भवत: आप परिचित नहीं।"

निकष कुछ क्षण चुप रहा। फिर बोला, "लाइये वह देखें।"

ने कहा 'वह तो भारी वस्तु है आइये अन्दर चलिये वहीं देख लीजियेगा

निकष चारुचित्रा के साधना-कक्ष में पहुँचा। उसे लगा, मानो वह किसी जादू-नगरी में आ गया है। चारों ओर तरह-तरह के चित्र दिखाई दिए। निकष ने अपने को सम्भाला कि चारुचित्रा यह न समझे कि वह कुछ अधिक विलोड़ित हो रहा है किन्तु, जिधर भी उसकी दृष्टि गई ठहर गई। चारुचित्रा अन्दर ही अन्दर गर्वित हुई और एक लम्बे फलक की ओर इंगित करके बोली, "यह है स्टेजविंग अर्थात् मंच-भुजाएँ। इन पर मैंने टैप्सट्री की डिजाइन बनाई है ?"

"टैप्सट्री क्या ?"

"आधुनिक कला में टैप्सट्री का विशिष्ट स्थान है। पर्दे आदि के ऊपर जो कार्य किया जाता है उसे टैप्सट्री कहते हैं। कपड़े की डिजाइनें जो बनती हैं सब टैप्सट्री शाखा के अन्तर्गत आती हैं।"

निकष ने फलक को ध्यान से देखकर कहा, "सचमुच बहुत सुन्दर डिजाइन आपने बनाई है। सम्पूर्ण होने पर और भी अच्छी लगेगी।"

निकष ने अपनी दृष्टि फिर चारों ओर घुमाई और उसके मुख से निकल गया, "आपने तो बहुत प्रकार के चित्र बना रखे हैं, सभी का रूप अलग-अलग दिखाई देता है।"

"हाँ, किन्तु इनमें से कुछ मेरा संकलन है और कुछ अपनी कृति है।"

"आपने तो छोटा-सा संग्रहालय बना रखा है, जरा मुझे इन चित्रों से परिचित कराइये ?"

"अवश्य, अवश्य," चारुचित्रा ने कहा, "पहले आप मेरे कुछ चित्र देखिये। यह चित्र है जिसका शीर्षक है भूख। भूख जीवन की सबसे प्रबल वस्तु है। संक्रान्ति काल मे यह मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देती। पेट के पीछे मनुष्य गधा बन जाता है। पेट पेट नही रह जाता, राक्षस हो जाता है। इस चित्र में भूख के राक्षस ने मनुष्य के पेट मे बैठकर उसे जीवन भर बोझ ढोने वाला जानवर बना दिया है।"

निकष गम्भीरता से उसकी बातों को सुनने लगा और चारुचित्रा ने कहा, "ये देखिए, इस द्वारा 'भय' को मूर्त रूप देने का प्रयास किया गया है। व्यक्ति का सम्पूर्ण शरीर शरीर न रह कर मात्र आँख बन गया है। वह केवल आँख से नहीं सम्पूर्ण शरीर के मेरुदण्ड से भय के भूत को देख रहा है।"

"वाह !" अनायास निकष के मुख से निकला और पूछा, "और यह बुद्ध का चित्र ?"

"यह अभी अधूरा है, इसमें मैं अनन्त शान्ति की मुद्रा समाहित कर देना चाहती हूँ।"

"किन्तु आपके पूर्व दो चित्रों से इसका विषय बिलकुल विपरीत है।"

"वह यथार्थ है, यह आदर्श है। हम यथार्थ से आदर्श की ओर अग्रसर होते हैं। कला के माध्यम से हमारा प्राप्य सुख, शान्ति, संतोष और आनन्द है। भूख, भय, संत्रास और उत्पीडन का चित्रण मात्र युगधर्म है हम ऐसे युग से गुजर रहे हैं कि इनकी उपेक्षा नही कर सकते मानव जिन दिनो जीवन की प्राथमिक से तृप्त था उसने

ऐसी कला का सृजन किया, जो युग-युगों तक अभिभूत करती रहेगी। आइये अब आपको दिखाएँ वे चित्र जो दृष्टि के सम्मुख आते ही हमें उस कल्पना लोक में उतार देते हैं जहाँ आनन्द ही आनन्द है।"

चारुचित्रा ने अपने कक्ष की दीवाल से एक पर्दा खिसकाया और बोली—

"यह चित्र जिसे आप देख रहे हैं, पूर्णतया ईरानी शैली का है और यह ईरानी शैली का वह चित्र है जिस पर राजस्थानी शैली का प्रभाव है। इसे हम उत्तरकालीन मुगल शैली के अन्तर्गत मान सकते हैं।"

निकष की दृष्टि अन्य चित्रों पर पड़ी और चारुचित्रा ने कहा, "यह मधुबनी शैली में है और यह राजपूताना शैली मे है। प्रेमी राजकुमार अपनी प्रेयसी को पेड़ो की झुरमुट से देख रहा है।"

निकष ने कनखियो से चारुचित्रा की ओर देखा—वह पूर्णतया गम्भीर थी।

निकष आगे बढ़ा और चारुचित्रा चित्रों के साथ-साथ क्रमशः बोलती गई, "यह चित्र पहाड़ी शैली में है। पहाड़ी शैली में भी कई शाखाएँ हैं, जैसे कांगड़ा, नाहन और गढवाली।" निकष धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया और चारुचित्रा कहती गई, "यह चित्र पाल शैली का है। और देखिये, यह भगवान बुद्ध महाबोधि वृक्ष के नीचे बैठे हैं।" वह आगे बोली—

"और यह चित्र है अजन्ता शैली में। अजन्ता शैली की मुख्य पहचान उँगलियो और आँखों की आकृति से की जाती है। उँगलियाँ सदा लोचदार मुड़ी हुई होती है और आँखें आम की फाँक के समान होती है। वक्ष पर्याप्त उभरे हुए दिखाए जाते हैं और कटि पतली।"

निकष ने चारुचित्रा के मुख की ओर पुनः देखा। वह पूर्णतया गम्भीर थी। वह पुन चित्रों की ओर देखता हुआ आगे बढ़ा और चारुचित्रा बोली, "अजन्ता के अतिरिक्त बातापी, बाघ, एलोरा और सित्तलवासन आदि गुफाओ की कला भी बड़ी उत्कृष्ट है। मैं उनकी अनुकृतियाँ एकत्र करने के प्रयास में हूँ।" निकष ने केवल अपना सिर हिलाया और चारुचित्रा ने एक नवीन चित्र की ओर इंगित करके कहा, "अब आप पाश्चात्य शैली के चित्रों को देखिये। ये चित्र मेरे पिता पेरिस की प्रदर्शनी से खरीद कर लाये थे। वहाँ चित्रकला में बहुत से वाद चल रहे हैं। इस चित्र को भविष्यवाद या फ्यूचरिज्म के अन्तर्गत मानते है। इसे अभिव्यक्तिवाद अर्थात् एक्सप्रेशनिज्म कहते हैं। यह देखिये, यह घनवाद अर्थात् क्यूबिज्म की श्रेणी में आता है और यह चित्र भाववाद अर्थात् ऐब्सट्रैक्टिज्म में गिना जाता है।"

निकष ने लम्बी साँस ली और चारुचित्रा बोली, "देखिये यह चित्र पिकासो का है। आधुनिक कला के क्षेत्र में स्पेन के पिकासो को बहुत प्राप्त है। वैसे अब थोड़े दिनो से पिकासो की आलोचना जोरों से शुरू हुई है। 'मनिग्ज' और 'ब्लमिक' नामक कला के आलोचको ने पिकासो की कला को भ्रामक बतलाया है।"

"आपको तो चित्रकला के सम्बन्ध में बहुत ज्ञान है।" निकष ने अपने मस्तक पर हाथ रगड कर लम्बी साँस ली

"यह तो कुछ भी नहीं, आधुनिक चित्रकला-शास्त्र इतना विस्तृत हो गया है कि मेरा ज्ञान शतांश भी नहीं ठहरता।"

"यह दशा तो ज्ञान की प्रत्येक शाखा की है किंतु फिर भी आपने जिस कलात्मक रुचि को पाया है उसका ज्ञानार्जन भी बहुत किया है। आप तो हमारे समाज का गौरव है।"

ऐसा न कहिये निकष जी।" चारुचित्रा आत्मविभोर होकर बोली, "यदि निकष ने ऐसा कह दिया तो फिर···"

"मेरी कसौटी कोई नहीं, मैं इस क्षेत्र में बोलने का भी कोई अधिकार नहीं रखता; फिर भी जो कुछ भी आभास मैं ले सका हूँ उससे मै अपने हृदय मे कौन-सा स्थान आपको दे बैठा हूँ, मैं नहीं कह सकता।"

चारुचित्रा को रोमांच हो उठा। वह चौंककर बोली, "यह आप क्या कह रहे है?"

निकष ने साधना कक्ष के बाहर आते हुए कहा, "आइये ड्राइंग रूम में बैठें।"

चारुचित्रा बाहर आई और निकष ने सोफे पर बैठते हुए कहा, "मैं तो समझता था, केवल साहित्य में ही अनेक वाद हैं, किंतु देखता हूँ कि चित्रकला के वादो का तुलनात्मक अध्ययन करती।"

"साहित्य के विषय में मैं आपको बता सकता हूँ किंतु तुलनात्मक अध्ययन के लिए आपको कोई विशेष वस्तु मिल सकेगी, इसमें मुझे शंका है।"

चारुचित्रा को निकष की संतुलित बातें कुछ प्रिय लगीं और वह उसके विषय मे कुछ अधिक जानने की इच्छुक हुई। उसने पूछा, "निकष जी! वैसे आप मुख्य रूप से क्या कार्य करते हैं?"

"मैं तो चित्रकला का एक साधारण विद्यार्थी हूँ।" निकष मुस्कराया।

"नहीं, नही," चारुचित्रा ने कहा, "इसके अतिरिक्त आप क्या करते है?"

"मैं आजकल विश्वविद्यालय में शोध का कार्य कर रहा हूँ।"

"शोध का कार्य? आपने एम० ए० कर लिया होगा?"

"क्यो, क्या यह आवश्यक है कि शोध का कार्य करने वाला एम० ए० अवश्य हो।"

चारुचित्रा मुस्कराई, बोली, "आपका शोध विषय क्या है?"

अंग्रेजी मे शोध कार्य कर रहा हूँ। मेरा विषय है, भारतीय संस्कृति का आधुनिक पाश्चात्य भाषाओ के साहित्य पर प्रभाव। (Shadow of Indian culture on the litrature of the modern languages of the west)

"यह तो बहुत गूढ़ विषय है। आपको तो पश्चिम की बहुत-सी भाषाओं को सीखना पड़ेगा।"

"हाँ, यदि ऐसा मैं कर पाता तो बहुत ही अच्छा होता किंतु मैं थोड़ी-सी ही भाषाएँ जानता हूँ फिर भी अंग्रेजी के अतिरिक्त मैंने फ्रेंच जर्मन और रूसी भाषाएँ

सीख ली हैं, लैटिन भी सीखूंगा। यह भाषाएँ सम्भवतः मेरे कार्य के लिए पर्याप्त होंगी।"

"तो क्या केवल अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन और रूसी ही पश्चिम की जीवित भाषाएँ हैं ?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है किंतु इन भाषाओं के पोषकों ने अपनी भाषा को सम्पन्न बनाया है। विश्व की प्रत्येक प्रमुख कृति को अपनी भाषा में अनूदित कर रखा है। इन भाषाओं के माध्यम से आप संसार की सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ पढ़ सकते हैं। जर्मनी के फिलिप रिक्लाम नामक प्रकाशन ने प्रकाशन-क्षेत्र का रेकार्ड तोड़ दिया है। विश्व की प्रत्येक भाषा की क्लासिक अर्थात् प्रमुख कृति उसके द्वारा जर्मन भाषा में प्रस्तुत कर दी जाती है। जर्मन भाषा इतनी समृद्ध है कि उसके माध्यम से आप जापानी, चीनी और कोरियन साहित्य तक के अनूदित ग्रंथ पढ़ सकती हैं।"

"मैंने सुना है कि चीन में भी कई भाषाएँ हैं, कू-यू ही और कैन्टनीज आदि।" चारुचित्रा की जिज्ञासा जागृत हुई।

"वैसे तो छोटे से ब्रिटेन में छः भाषाएँ हैं किंतु इससे उनके कार्य में कोई अन्तर नही पड़ता। प्रकाशक के यहाँ प्रत्येक क्षेत्र का एक-एक विभाग होता है जिसका प्रतिनिधि जर्मन विश्वविद्यालय के विदेशी भाषाओं के विभागों से निरंतर सम्पर्क रखता है।"

"अच्छा ! तो क्या ब्रिटेन में सभी जगह इंगलिश नहीं है।"

"नहीं वहाँ इंगलिश, गैलिक, मैंक्स, वैल्श, कौर्निश और नौर्मन फ्रेंच आदि छः भाषाएँ बोली जाती हैं।"

चारुचित्रा ने विस्मय से निकष की ओर देखा और हल्की मुस्कान के साथ बोली, "अपने विषय के आप पंडित दिखाई देते हैं। उतने छोटे द्वीप में जब छः भाषाएँ जीवित हैं तो हमारे इतने बड़े देश में यदि 14 भाषाएँ हैं तो···"

"यही भाषाएँ तो हमारे ज्ञान का भण्डार हैं। सभी भाषाओं में अपने-अपने प्रकार के रत्न पड़े है। हिंदी में यदि इनका अनुवाद कर लिया जाय तो हमारी राष्ट्र-भाषा भी पर्याप्त समृद्ध हो जाय।"

"···और यदि विश्व की सम्पूर्ण भाषाओं से उसी प्रकार से मधु एकत्र किया जाए जिस प्रकार से जर्मन या रूस वालों ने किया है, तो फिर ?"

"फिर तो हमारी राष्ट्रभाषा का कल्याण ही हो जाय।"

चारुचित्रा कुछ क्षण तक चुप रही और फिर बोली, "आपने अपने शोध की सुविधा के लिए अवश्य ही विभिन्न भाषाओं के प्रमुख लेखकों की सूची तैयार की होगी ?"

"क्यों नहीं, बिना इसके हम आगे कार्य ही क्या कर सकते हैं ? मैंने लेखकों की सूची और पुस्तकों की सूची साथ-साथ तैयार की है। बहुत सी ऐसी पुस्तकें हैं जिनका अपना बड़ा महत्त्व है किन्तु उनके लेखकों का पता नहीं चलता अब आप बैबीलोन की प्राचीन पुस्तक को ही लीजिये इसके लेखक का पता नहीं है। हम कहते

है कि विश्व मे भारतीय सभ्यता सबसे पुरानी है, किन्तु दूसरे विद्वान दलील देते हैं कि मिस्र या बैबीलोन की सभ्यता प्राचीनतम है। ऐसी दशा मे हमको गिल्यामेष, अपने उपनिषद् और ग्रीस के यूरिपिडीज की रचनाओ को एक साथ पढ़ना पड़ेगा। हमे होमर का साहित्य भी पढ़ना है और कन्फ्यूशियस के साहित्य को भी जानना है।"

चारुचित्रा ने लम्बी साँस खींचकर कहा, "आपने तो अपने सिर पर बहुत बडा बोझ लाद रखा है।"

निकष ने अँगड़ाई ली और सोफे से उठ खड़ा हुआ। वह बोला, "ऐसी चीजे बोझ नही होतीं। बुद्धिवादियो के आनन्द का साधन होती हैं।"

चारुचित्रा ने मन्द मुस्कान से कहा, "मैं भी उस आनन्द का कुछ आभास ले रही हूँ।"

निकष ने सौम्यता से चारुचित्रा की आँखों में आँखें गड़ाकर कहा, "आनन्द के भी प्रकार होते हैं, आप जिस कलात्मक संसार में आनन्द लेती है वह देव-दुर्लभ है।"

चारुचित्रा ने कहा, "मैं तो आपके आनन्द की परिभाषा भी नहीं बाँध सकती।"

निकष ने बिदा की आज्ञा लेते हुए कहा, "मैं कल कमल बाबू के यहाँ जा रहा हूँ, उनसे क्या कहूँगा ?"

चारुचित्रा ने उत्तर दिया, "कहना क्या है, कल तक दोनों भुजाएँ तैयार कर दूँगी।"

"नमस्कार।"

"नमस्कार।"

घड़ी ने दस का घंटा बजाया और कमल के घर के द्वार की घंटी टनटनाई।

कमल से पहले नटवरलाल ने बाहर की ओर झाँका। एक गौरवर्ण अधेड़ महिला नीली फ्राक पहने दिखाई दी। नटवर ने कमल से कहा, "हेलन आ गई।"

दोनों मित्र उसके स्वागत के लिए नीचे पहुँचे। हेलन ने नटवरलाल को भी पहचाना और दोनों मित्रों के बीच खड़े होकर उसने अपने दोनों हाथ दोनों के गले में डाल दिये। तीनों ही ऊपर पहुँच गये। कमल ने 'जानीवाकर' की बोतल खोली और तीन पेग में उसे ढाला। तीनों ने प्याले से प्याला मिलाया और हेलन ने अंग्रेजी में कुछ शब्द कहे। नटवरलाल ने उसी को हिन्दी में दोहराया, "हम गुनाह इसलिए करते है कि खुदा की हुकूमत खुदा के हाथ में ही महफूज रहे।"

पेग खाली हुए। कमल ने कहा, "आज के डान्स के साथ में मैं एक नया रेकार्ड लगाऊँगा। यह अमरीकी नीग्रो-सांग है···आई वान्ट ए ब्लैक डार्लिंग। मैं एक काली प्रेयसी चाहता हूँ।"

रिकार्ड रेडियोग्राम पर चलने लगा और ने हेलन का दाहिना हाथ

बायें हाथ में लेकर उसकी कमर पर अपना दाहिना हाथ रखा। हेलन ने स्टेपिंग शुरू की और वहाँ बालरूम डान्स होने लगा।

थोड़ी देर बाद नटवरलाल ने हेलन की कमर छोड़ी और हाथ से छूटते ही कमल ने हेलन की कमर पर हाथ रखा। रेडियोग्राम पर रेकार्ड अपने आप ही बदल गया··· व्हाइट स्टार्स आर द मास्टर्स आफ ब्लू स्काई। नटवरलाल ने कहा, "वाह, क्या बढ़िया गाना है—श्वेत तारे नीले आकाश के राजा हैं।"

यह नृत्य बड़ी देर तक होता रहा और घड़ी ने एक बजाया। अचानक बाहर की घंटी फिर बजी! नटवरलाल ने बाहर झाँका तो घबड़ा गया। अन्दर जाकर कमल से बोला, "काका जी आ गये हैं।"

"अब क्या किया जाय?" कमल घबड़ाया। नटवरलाल ने तुरन्त कहा, "घबड़ाने की क्या बात है, काका जी से बात बनाकर कह दो—हम लोग मिस्टर जेम्स व मिसेज जेम्स हैं और आपके मेहमान हैं।"

"क्या बाबू जी तुम्हें पहचानते नहीं?"

"बिल्कुल नहीं, मैंने कभी उनका सामना किया ही नहीं।"

"मालूम हो गया, पक्के जासूस लेखक हो।" कमल ने किवाड़ खोल दिये और सेठ लक्ष्मणदास ने अन्दर आते हुए पूछा, "यह दो बजे रात को रेडियोग्राम कैसे बज रहा है?"

कमल ने तुरन्त कहा, "मेरे एक ईसाई मित्र मिस्टर जेम्स आये हैं और साथ में उनकी पत्नी भी है। वे अभी ही आये हैं। रेडियोग्राम उन्हीं के स्वागत में बज रहा है।"

सेठ ने सिर हिलाया और आगे कुछ नहीं पूछा।

मिस्टर जेम्स और मिसेज जेम्स ने सेठ से हाथ मिलाया। सेठ जी ने ऊपर से नीचे तक एक बार उन दोनों को देखा और फिर अपने कमरे में चले गये।

चारुचित्रा ने मंच-भुजाओं को रात में बैठकर पूरा किया। थक जाने के कारण वह चुपचाप अपने पलंग पर लेट गई। उसे अचानक निकष की कुछ बातों की याद आयी। वह सोचने लगी—संसार में कितनी ऐसी वस्तुएँ हैं जिन्हें मैं नहीं जानती। निकष ने कितनी नई-नई बातें बताईं। सचमुच उनका अच्छा अध्ययन है। 'भारतीय संस्कृति का पाश्चात्य पुष्ट भाषाओं के साहित्य पर प्रभाव' जैसे गूढ़ विषय पर अनुसंधान करना साधारण लगन का कार्य नहीं है।

किन्तु हाँ, उस दिन चित्रकला पर जब मैंने थोड़ा-सा गम्भीर भाषण दिया था तो उनके सिर में दर्द होने होने लगा था। जिसका मस्तिष्क इतने रूखे विषय का आदी है उसके सिर में दर्द उस जरा से भाषण से हो जाए यह तो सम्भव नहीं। अवश्य ही उस दिन उनके सिर में दर्द होने का कोई मन्तव्य था, सम्भवतः दो क्षण मुझे अपनी ओर आकृष्ट करने का उपक्रम हो। आज जब उन्होंने मुझसे बातें कीं तो कहा—मैं अपने हृदय में कौन-सा स्थान आपको दे बैठा हूँ मैं नहीं कह सकता मुझे रोमांच हो उठा

था। किन्तु उन्होंने यह कहा क्यों, इसको मैं न समझ पाई। और हाँ जब मैं चाय लेकर आई थी तो उन्होंने मीठी चुटकी लेकर कहा था—संभवतः यह तो मंच-भुजाएँ नहीं हैं। वह कितना सौम्य परिहास था और हाँ एक बार उन्होंने मेरी आँखों में आँखें गड़ाकर यह भी कहा था—आप जिस कलात्मक संसार में आनन्द लेती हैं वह देव-दुर्लभ है। सचमुच वे कला को कितना आदर देते है ! उन्होंने मुझको सम्मान देते हुए कहा—आप तो हमारे समाज का गौरव हैं ! कितनी अच्छी रुचि है उस पुरुष की, अहा !

चारुचित्रा विचारों के सागर में दूर तक बहती हुई सो गई और उसने एक अजीब-सा स्वप्न देखा—

उसको किसी ने आकर झकझोर दिया है। वह कहती है—कौन हो ? एक बूढ़ा दिखाई देता है, जिससे वह बिलकुल अनजान है किन्तु वह कहता है—तुम्हारे लिए मैंने योग्य वर खोज लिया है। वह पूछती है कि कहाँ है वह, और बुड्ढा निकष को पकड़कर चारुचित्रा के सामने लाता है। वह उसका हाथ पकड़कर निकष के हाथ में थमा देता है और वह कुछ नहीं बोल पाती। सारा दृश्य धुआँ बनकर मिट जाता है और निकष न जाने कहाँ की यात्रा से आकर उसके हाथों मे एक सुन्दर भेंट देता है। वह चन्दन की लकड़ी के केस में जड़ी हुई 12 कटोरियाँ देखती है। उसी में एक ओर मोटी और पतली 24 तूलिकाएँ ताँबे के तार में कसी है। एक चौड़े दराज मे 36 प्रकार के रंगों के ट्यूब रखे हुए हैं। उसने गद्‌गद हृदय से निकष की ओर देखते हुए उस भेंट को ले लिया है। सम्पूर्ण दृश्य फिर धुएँ में बदल जाता है और फिर वह देखती है—निकष उसके साधना कक्ष में लगे सम्पूर्ण चित्रों को उठा-उठाकर फेंक रहा है। वह चीखकर कहती है कि यह क्या कर रहे हैं आप ? तब उसे उत्तर मिलता है—आज से केवल मेरा चित्र बनाओ। इस घर में सर्वत्र मेरा चित्र होगा, मेरा।

चारुचित्रा की नींद टूट गई। वह घबड़ा उठी। उसने अनुभव किया, उसके शरीर से पसीना छूट आया है। उसने आँख खोली तो देखा उसकी माँ उसके बगल में पड़ी सो रही है। चारुचित्रा ने समझ लिया कि यह केवल स्वप्न था, किन्तु फिर भी वह अपने साधना कक्ष में गई और उसने देखा कि उसके सम्पूर्ण चित्र सुरक्षित हैं। वह अपने पलग पर पुनः जाकर लेट गई और सोचने लगी—

क्या निकष सचमुच इतनी आत्मपूजा चाहने वाला व्यक्ति है ? नहीं, इतना स्वार्थी व्यक्ति वह नहीं हो सकता। इस स्वप्न का क्या मनोविज्ञान है, मैं नहीं समझती।

चारुचित्रा ने करवट बदली और फिर सो गई

रूपकुमार ने नलिनी के हाथ में बेला पकड़ाकर कहा, "सा और पा का स्वर निकालिए।"

नलिनी ने दोनों ही स्वर बजाकर सुनाए।

रूपकुमार ने कहा, "अब आपको उँगलियों और गज की सहायता से अन्य स्वर निकालना बताऊँगा। आप मेरे हाथों को ध्यान से देखिए।"

रूपकुमार ने बेला अपने हाथों में लिया और बायें हाथ की चारों उँगलियो के तारों पर रखते हुए कहा—

"आपको इन चार उँगलियों के नाम बतला चुका हूँ। अब देखिए किस उँगली से कौन स्वर निकलता है। गज के संचालन पर ध्यान दीजिएगा।"

"तर्जनी से कोमल रे, तीव्र रे, कोमल ध और तीव्र ध बजेगा।"

"मध्यमा से कोमल ग, कोमल नि और तीव्र नी स्वर बजेंगे?"

"अनामिका से कोमल म, तीव्र म और तार सप्तक का स स्वर बजता है।"

"कनिष्ठा से प, रे और तार सप्तक के अन्य स्वर बजेंगे।"

रूपकुमार ने सभी स्वरों को बजाकर दिखाया और पूछा, "आप कुछ समझी?"

नलिनी ने कहा, "कुछ भी नहीं।"

रूपकुमार ने पूछा, "क्यों?"

नलिनी ने कहा, "न मालूम क्यों।" वह मुस्कराई।

रूपकुमार ने कहा, "मालूम होता है कि आपका ध्यान कहीं और था।"

"नहीं तो, ध्यान तो आपकी ओर ही था," नलिनी ने अपने होंठ काटे।

रूपकुमार मुस्कराया और बोला, "ध्यान मेरी ओर था, तो अवश्य ही आप कुछ और सोच रही थीं।"

नलिनी ने सिर खुजलाकर कहा, "पता नहीं क्या सोच रही थी। अच्छा मास्टर जी, फिर बताइए।"

रूपकुमार ने फिर से सभी स्वरों को बताया और पूछा, "अब समझ में आया कि नहीं?"

"थोड़ा-थोड़ा समझ गई हूँ, किन्तु आप तो बिल्कुल नहीं समझते।"

"क्या?" रूपकुमार ने नलिनी की आँखों में आँखें डालकर पूछा।

नलिनी ने सकुचाकर कहा, "अच्छा! समझा, किंतु जल्दी तो आपकी ओर से ही रही है।"

"क्या?" नलिनी ने तिरछी चितवन से पूछा।

नलिनी ने सकुचाकर कहा, "कुछ नहीं, यही कि मैं जरा देर में समझती हूँ।"

रूपकुमार ने मन्द मुस्कान के साथ कहा, "यही कि पूरा स-रे-ग-म आज ही सिखा दूँ?"

नलिनी ने गम्भीर होकर कहा, "नहीं, अब मैं जल्दी नहीं करूँगी। आप एक ही स्वर नित्य बताइए।"

रूपकुमार हँसा और बेले को रखकर बोला, "आपने नृत्य छोड़ दिया, कहीं बेला भी अधूरा रखकर न छोड़ दीजिएगा।"

नलिनी ने धरती की ओर देखकर कहा, "ऐसी सम्भावना तो नहीं है।"

"अच्छा, नृत्य को छोड़ने का कारण क्या हुआ था?"

"मैं नहीं जानती ये तो मेरी माँ जानें। उन्होंने ही छुड़वाया है।"

आपकी माँ कुछ तीव्र की मालूम होती हैं

प्रेरणा से। ये क्या सीखने देती।"

"ठीक, ठीक, अब मैं बिलकुल समझ गया।"

नलिनी ने रूपकुमार की आँखो से आँखें मिलाकर पूछा, "न समझे हों तो फिर से समझाऊँ।"

रूपकुमार ने कहा, "आपका सरगम मेरे सरगम से अधिक अर्थमय है किन्तु सरल नही है।" वह हँसा और उठकर चलने को उद्यत होते हुए बोला, "अब चलता हूँ, समय हो गया है।"

नलिनी ने नमस्कार किया।

"क्या बताऊँ आपके तो दर्शन ही नहीं होते," श्री पिल्ले ने सान्याल साहब को देखकर कहा।

"क्या कहूँ भाई, ऐसी नौकरी है जो घर में साँस ही नहीं लेने देती।"

"ये ही तो मेरी विवशता है। बहुत दिनों से आपका गाना-बजाना नहीं सुना।"

"क्या गाना और क्या बजाना! आजकल वीणा की माँ ने वह आफत जोत रखी है कि बस कुछ न पूछिए!"

"क्यों, क्यों? किसलिए?"

"किसलिए क्या, नलिनी की और उसकी एक मिनट नही पटती। 8-10 दिन मे जब भी घर लौटकर आता हूँ श्रीमती जी नलिनी की और नलिनी अपनी माँ की शिकायत मेरे कानों में भरती है।"

"अच्छाऽऽ अब दोनो ओर से शिकायत होने लगी है, तब तो फिर स्थिति गम्भीर है। नलिनी अपनी माँ की क्या शिकायत करती है?"

"नलिनी भी अब बड़ी हो गई है, यह तो आपको पता ही है। दुनियादारी भी कुछ समझने लगी है।"

"क्यों नहीं 18 साल की लड़की है। आगे कहिए, बात क्या है?"

सान्याल साहब ने होंठों को दाँतो से काटते हुए कहा, "बात कहने वाली तो नही है किन्तु मनुष्य तब तक हलका भी नहीं होता जब तक दिल की बात किसी अपने से कह नहीं लेता।"

"कहो, कहो," श्री पिल्ले ने सान्याल साहब के मुँह के पास अपने कान लगाये।

सान्याल साहब बोले, "क्या बताऊँ, दूसरा विवाह करके मैं पछता रहा हूँ। इतनी बार कामिनी को मैंने ताड़ना दी किन्तु···"

"कामिनी?"

"हाँ, हाँ, वीणा की माँ का नाम कामिनी ही तो है। मैंने एक-आध बार हाथ भी चला दिया किन्तु इतनी चपला स्त्री है कि मानती ही नहीं। सुना है उसके पास कोई आता-जाता है।"

"कौन है जो आपके घर में सेंध लगा रहा है।"

"क्या कहूँ नलिनी ने अपनी आँखो देखा है और मुझे बताया है कामिनी से

यदि मैं रंचमात्र भी इस बारे में बात करता हूँ, तो वह बाँसों उछलने लगती है; रोना-धोना और भूख हड़ताल करके अग्नि-परीक्षा देने को तैयार हो जाती है।"

"क्या आपको भी कोई शक है?"

"पहले तो नहीं था, किन्तु एक दिन के अनुभव ने···"

"सान्याल साहब, आप बुरा न मानें तो कहूँ। ढलती उमर उभरते यौवन को कहाँ तृप्त कर सकती है। बुढ़ौती में विवाह किसी बूढ़ी ही से करे तो ठीक रहता है।"

किन्तु सम्भ्रांत परिवार की महिलाएँ ऐसी नहीं होतीं। मैं यह कभी भी सहन नही कर सकता कि···।"

"सम्भ्रांत और शराफत के नाम पर बूढ़े लोग चाहे जितना भी नवयौवनाओं को अपने हाथ का खिलौना बनाएँ किन्तु प्रकृति की माँग कुछ और ही होती है।"

"पिल्ले साहब! यह आप क्या कह रहे हैं? इसके माने दुनिया की जितनी भी स्त्रियाँ बूढ़ों को ब्याही हैं उनमें कोई भी शरीफ नहीं है?"

"यह मैं नहीं कहता, बहुत-सी हैं जो संयत जीवन व्यतीत कर देती है किन्तु सभी एक-सी तो नहीं होतीं। किसी की भावनाएँ अधिक तीव्र होती हैं और किसी की कम। कोई लोक-लज्जा की सीमा बहुत दूर तक देखती है और कोई अपनी नाक के नीचे ही तक। कामिनी से नलिनी की न पटने का कारण ठीक ही है। नलिनी तरुणी है, कामिनी के कार्यों में वह काँटे की तरह खटकती होगी।"

"किन्तु अब मैं क्या करूँ?"

"सीधा-सा मार्ग यह है कि आप यहाँ से बदली करवा लीजिए। उस व्यक्ति से सम्बन्ध अपने आप टूट जायगा।"

"अरे भाई, इसी यारबाशी से बचने के लिए तो मैंने वाराणसी छोड़ा, कहाँ-कहाँ से जोर लगवाया तो देश से विदेश हुआ। अब यहाँ से कहाँ जाऊँ!"

श्री पिल्ले ने देखा, सान्याल साहब सचमुच अधिक चिन्तित हैं किन्तु उन्होंने पूछा, "तो क्या वाराणसी में भी कुछ ऐसी ही बात थी?"

"वह तो कामिनी ही जाने किन्तु मुझे शक हो गया था।"

"भाई एक बात कहूँ, बुढ़ापे में शंका का रोग भी बढ़ जाता है।"

"किन्तु अब शंका की बात नहीं रह गई है।"

"अच्छा! तो फिर! आप कहें तो चार दिन बैठकर ताक लगाई जाए और उन श्रीमान् जी की तबीयत हरी की जाय।"

"किन्तु ऐसे तो पूरे मोहल्ले में डुग्गी बज जायेगी कि सान्याल साहब की पत्नी···"

"समस्या टेढ़ी है, किन्तु जब आपने मुझसे कहा है तो कुछ न कुछ प्रबन्ध अवश्य करूँगा। हाँ यह तो बताइये, नलिनी की क्या बात आपको पता चली है।"

"क्या कहूँ अपनी लड़की की बात है, न तो कहते बनता है न छिपाते।" सान्याल साहब ने जाने क्या सोचकर कहा "जाने दीजिये नलिनी की मैं उतनी चिन्ता नहीं रता

श्री पिल्ले बोले, "आप भी उल्टी बात करते हैं। अरे नलिनी की चिन्ता तो पहले करनी चाहिए।"

सान्याल साहब बोले, "कामिनी कहती थी, नलिनी के बेला मास्टर जो आते है नलिनी उनसे प्रणय···"

"कौन है बेला मास्टर ?"

"एक हैं, रूपकुमार !"

"रूपकुमार ! आप लोग लोग भी तो कमाल करते हैं। आग और रुई को साथ-साथ रखकर भी चाहते हैं कि लपक न उठे। रूपकुमार अच्छा-खासा नवयुवक है, सुन्दर है और गुणवान है, उधर आपकी नलिनी का यौवन-पराग उसे विलोड़ित कर रहा है, फिर भी आप यह आशा करते हैं कि वे एक दूसरे के प्रति आकृष्ट न हों।"

"संसार में संयम-नियम, चरित्र-विवेक भी कोई वस्तु होती है अथवा···"

'चरित्र का बहुत बड़ा मूल्य है किन्तु जो मनुष्य समझते हैं उन्हीं के लिए। नलिनी का वातावरण जब इतना दूषित है तो फिर उसे प्रोत्साहन प्राप्त ही है।"

"प्रोत्साहन की आप बात कहते हैं ? कामिनी उसके प्रति कितनी कट्टर है यह आप सम्भवतः नही जानते।"

"कभी-कभी अधिक कट्टरपन भी उल्टा प्रभाव लाता है, फिर जब कामिनी जी स्वयं ही ऐसी हैं तो फिर बेटी तो बेटी है।"

सान्याल साहब मौन रहे और श्री पिल्ले ने अधिक सिमटकर पूछा, "बात कुछ अधिक बढ़ गई है क्या ?"

"नहीं, अभी तो मुझे नया अंकुर ही लगता है।"

"तब क्या है, रूपकुमार को छुड़ा दीजिए।"

"मैंने ऐसी धमकी नलिनी को दी थी कि यदि वह बेला सीखने के अतिरिक्त और कोई व्यवहार बढ़ायेगी तो ठीक न होगा ?"

"नलिनी ने क्या कहा ?"

"कहती क्या, कहने लगी सब झूठ है। माँ जी उससे डाह करती हैं इसलिए उल्टी-सीधी बात लगाया करती हैं।"

"आप क्या आभास लेते हैं ?"

"मुझे भी कुछ शंका है।"

"क्या ?"

"कि नलिनी और रूपकुमार में अवश्य कुछ है।"

"तब फिर अधिक क्या सोचना, छुड़ा दीजिए उसे। न रहे बाँस और न बजे बाँसुरी।"

"यही मैं भीसोचता हूँ, किन्तु नलिनी का विवाह तो करना ही है और रूपकुमार को मैंने देखा है, वह बुरा भी नहीं है।"

श्री पिल्ले हँसे और बोले तो आपके हृदय में भी चोर है बुरा न मानिए तो एक बात कहूँ

"कहो, तुम्हारी किस बात का मैंने बुरा माना है।"

"आप रूपकुमार पर अत्याचार कर रहे हैं।"

"क्यों ?"

"चारा डालकर किसी की गाय बाँधना धर्म थोड़े ही है। बेचारा अच्छा हो भी तो, जब नलिनी की ओर से आमन्त्रण मिलेगा तो वह अपने आपको कहाँ तक सम्हालेगा !"

"भाई क्या बात करते हो, ये आज के लड़के बेचारे नहीं होते। सिनेमा की प्रेम-कहानियाँ देख-देखकर इतने पक जाते हैं कि घर की डाल से टूटकर नीचे गिरते समय उन्हें यह होश नहीं रहता कि वे मिट्टी में गिर रहे हैं या मैले में।"

"तो इसीलिए आप नलिनी के स्वच्छ आँचल मे उसे लिए ले रहे हैं ? आपका तात्पर्य क्या है ?"

सान्याल साहब हँसे और बोले, "तात्पर्य यह कि अभी जब इन्हीं लड़कों को कन्या के वर के लिए खोजा जाता है तो ये अपने माँ-बाप की ओट में चमड़ा मढ़ी डुगडुगी न बजा कर मुँह की डुगडुगी बजाते है।"

"बात तो ठीक है, किन्तु किया क्या जाय ? यह तो हमारी सामाजिक मनोवृत्ति है जो इतनी दूषित हो गई है, किन्तु इसका उत्तर यह नहीं है कि समाज मे कोर्टशिप चालू कर दी जाय।"

"कोर्टशिप ?"

"यह कोर्टशिप ही तो है कि युवतियों को अपना दिलदार ढूंढ़ने का अवसर दिया जाय और वे दस युवकों को अपने हावभाव से आकृष्ट कर उनको टटोलें। प्रेम विवाह कभी भी सफल नहीं होते।"

"मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ किन्तु इस समस्या या कुरीति का कारण क्या है ?"

"इस सामाजिक कुरीति का मुख्य कारण हमारी दास मनोवृत्ति है। हमारे नव-युवकों को अपने ऊपर इतना विश्वास नहीं होता कि वे अपनी आय से अपने परिवार या गृहस्थी की गाड़ी भली भाँति चला ले जाएँगे। फलतः अन्दर ही अन्दर वे सोचते हैं कि जितना भी रुपया मिल जाय अच्छा है। इतने समय तक दासता में रहने के कारण पहली बात जो हमारे यहाँ सोची जाती है वह यह कि कुछ ऐसा प्रबन्ध हो जाना चाहिए जिससे बेटे को एक ही झटके में सारे सुख मिल जायें। यदि हमारी व्यवस्था सबके भोजन और कपड़े का परोक्ष बीमा करने लगे तो बहुत-सी दूषित मनोवृत्तियाँ हमारे समाज से मिट सकती हैं। हमारे नवयुवकों को यह विश्वास होना चाहिए कि जीवन-यापन के लिए उनके मार्ग खुले हैं। लड़को के नीलाम होने का कारण भी यही है। यदि सभी युवकों की रोजी-रोटी का प्रबन्ध हो तो एक ही वर के चारों ओर आठ-आठ कन्याओं के बाप क्यों फिरें ?"

"और यदि कन्याएँ भी जीविकोपार्जन करने लगें तो ?"

"तो उससे कोई विशेष लाभ नहीं व्यक्तिगत जीवन जीने के लिए महिलाओं

का नौकरी करना अच्छा हो सकता है किन्तु सामाजिक स्तर से पुरुष कमाए और महिला उसकी सहयोगी बने तभी अधिक सुखी जीवन हो सकता है।"

"क्यों, यदि दो व्यक्ति धनार्जन करेंगे तो परिवार की आर्थिक स्थिति, क्या अच्छी नहीं होगी ?"

"पारिवारिक जीवन में अर्थ सब कुछ ही नहीं होता। परिवार की शान्ति, मानसिक शान्ति पर बहुत कुछ आधारित है। वस्तुतः पुरुष को ही. इतना वेतन मिलना चाहिए जिससे सम्पूर्ण परिवार का भरण-पोषण हो सके। प्रकृति ने पुरुष और स्त्री के शरीर को अलग-अलग प्रकार से बनाया है और उनकी व्यक्तिगत तृष्णाओं के साथ एक तृष्णा ऐसी भी दी है जो स्त्री के द्वारा ही पुरुष की और पुरुष के द्वारा ही स्त्री की पूरी हो सकती है। यह क्रिया अप्रत्यक्ष रूप से हमें संकेत देती है कि स्त्री और पुरुष सहयोगी हो और ठीक इसी प्रकार से उनके प्रत्येक कार्य भी सहयोग रूप में ही आने चाहिए। दोनों ही यदि नौकरी करते हैं तो यह सहयोग नहीं सामाजिक स्तर पर यह स्त्री की पुरुष से होड़ है। सहयोग और होड़ में अन्तर है और यही होड़ जहाँ एक ओर समाज के दूसरे पुरुष को बेकार बनाती है वहीं दूसरी ओर घर की शान्ति में काँटा भी बोती है। स्त्रियों का नौकरी करना वस्तुतः अप्राकृतिक है। देखिए न, प्राकृतिक आदान-प्रदान तो दोनों ही करते हैं किन्तु सन्तान स्त्री को ही जनना पड़ती है। यहीं से स्त्री और पुरुष का कार्यक्षेत्र बदल जाता है। स्त्री सन्तान की सेवा-सुश्रूषा प्रारम्भ करती है और पुरुष उसके भरण-पोषण का प्रबन्ध करता है, यदि दोनो ही भरण-पोषण की व्यवस्था के लिए बाहर चले जाएँ तो अबोध नन्हा बालक किसकी गोद में दूध ढूंढ़ेगा ?"

सान्याल साहब यह सुनकर बोले, "वाह पिल्ले जी वाह, आपने तो इस उलझन का डोरा-डोरा अलग कर दिया। सामाजिक समस्याओं को एक नृत्य कलाकार इतनी दूर तक सोचता था समझता होगा मैं तो आशा भी नहीं करता था ?

श्री पिल्ले ने सीना तानते हुए मुस्करा कर कहा. "सच्चा कलाकार समाज मे जागरूक और गम्भीर चिन्तन रखने वाला होता है।" वे प्रासंगिक बात की शृंखला मे एक कड़ी और जोड़कर बोले, "बहुत से परिवारों में आजकल पति-पत्नी दोनों ही नौकरी करते हैं और किसी प्रकार निभा भी लेते हैं, किन्तु यह स्वाभाविक नहीं है। निश्चय ही ऐसे परिवारो में मानसिक शान्ति कम है।"

सान्याल साहब बोले, "हम लोग भी कहाँ से कहाँ चले गए। अपनी समस्या अपने ही पास रह गई और समाज के प्रश्नों को हल करने में हम जुट गए !"

"कोई बात नहीं।" श्री पिल्ले ने कहा, "इससे भी लाभ हुआ है, आप यदि चाहते हों तो रूपकुमार के घर वालों से मिलकर बाकायदा मैं विवाह तय करूँ।"

"आप क्या रूपकुमार के घर वालो को जानते हैं ?"

"जानता तो नहीं, किन्तु इतना जानता हूँ कि वे लोग यहीं पुणे में रहते हैं।"

"किन्तु मैंने तो सुना है वह लखनऊ से यहाँ आया है।"

अजी वह रहने वाला यहीं का है उसकी भतीजी दमयन्ती हमारी शिष्या है वह लखनऊ केवल मारिस कालिज का कोस परा करने गया था

"अच्छा समझा। तो आप, अब यह कार्य अवश्य कर दें। मैं पहले नलिनी से छुट्टी पाना चाहता हूँ। कामिनी से मैं निपटता रहूँगा।"

"चलिए यह तय हुआ। अब आप एक नया समाचार सुनिए।"

"कहिए, नया समाचार तो अवश्य सुनूँगा।"

"मैं काशी गया था।"

"अरे, कब ?"

"अभी थोड़े दिन पहले ही। वहाँ अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन था।"

"अच्छा ! तब तो बड़ा मजा आया होगा, कौन-कौन कलाकार आए थे ?"

"बहुत से आए थे—नारायणराव व्यास, ओंकारनाथ ठाकुर, गजानन राव जोशी, डी० वी० पलुस्कर, हीराबाई बड़ोदकर, डागर बन्धु, माणिक वर्मा और भोलानाथ भट्ट।"

"और वादकों में ?"

"वादकों मे रविशंकर, अलाउद्दीन खां, अलीअकबर खां, बिस्मिल्ला, लालजी, गोदई, थिरकवा, जोग, पलुस्कर, माधोसिंह, अन्नपूर्णा ··।"

"अन्नपूर्णा कौन ?"

"उस्ताद अलाउद्दीन खां की पुत्री, रविशंकर की पत्नी।"

"ओ समझा। वीणा तो वह खूब बजाती होगी।"

"क्या कहना। उसकी वीणा ने और गोदई जी के तबले ने जादू कर दिया। गोदई जी के साथ माधोसिंह जी पखावज बजा रहे थे।"

"वाह, ऐसा बढ़िया अवसर तो अब शायद ही कभी आये। क्या कहूँ, मैं न हुआ।"

"वहाँ संगीत का केवल प्रदर्शन ही नही हुआ। संगीत पर कई एक भाषण भी हुए।"

"ध्रुपद और ख्याल पर कोई बोला था।"

"हाँ, उस्ताद फैयाज खाँ के एक शागिर्द थे, वे ही बोले थे।"

"क्या कहा उन्होंने ?"

"पूरा तो मुझे याद नहीं, जो ध्यान में है वह कुछ इस प्रकार है—उत्तर भारत मे हिन्दुस्तानी संगीत का बहुत बड़ा केन्द्र मध्यभारत रहा है। यहाँ के राजे-महाराजो ने कितने ही संगीताचार्यो को बराबर आश्रय दिया। सचमुच वे कला का मूल्य करना जानते थे। ग्वालियर के किले का मानमन्दिर मानसिंह तोमर की कलाप्रियता का प्रतिरूप आज भी खड़ा है। राजा मानसिंह तोमर स्वयं बहुत बड़े संगीतज्ञ थे और ख्याल, ध्रुपद व धमार के पंडित थे। उन्हें यदि ध्रुपद पद्धति का जन्मदाता कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। आज शास्त्रीय संगीत जनमत में इतना उपेक्षित बना हुआ है कि जिस भू-भाग में तोमर और तानसेन जैसे ध्रुपद और तराना गायकों के संरक्षण में लगभग एक सहस्र आचार्य विराजते थे वहीं अब दो-चार भी आचार्य नहीं दिखाई देते। आज शास्त्रीय संगीत के पोषण की जो आवश्यकता है उसे कोई संगीत-प्रेमी ही समझ सकता है"

"वाह-वाह-वाह," सान्याल साहब बोले, "बहुत अच्छी बात कही गयी। सचमुच आज शास्त्रीय संगीत को जीवित रखने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। मैं वहाँ होता तो मैं भी कुछ बोलता।"

"आपकी वहाँ आवश्यकता थी। मुझे आपकी याद वहाँ कई बार आई। जब रामेश्वरी बाई ने आपको पूछा तो मुझे···"

"अच्छा, क्या रामेश्वरी बाई के यहाँ भी गये थे ?"

"हाँ गया था, किन्तु वह उस दिन वहाँ भी आई थी। उसने मेरा नृत्य भी देखा और मुझे घर पर बुलाया भी था। मैं घर गया तो उसने पूछा—सान्याल साहब के क्या हाल है ?"

"अच्छा ! उसने मुझे पूछा ?"

"हाँ-हाँ, आपको और आपकी पत्नी को भी। पूछने लगी सान्याल की बीवी का क्या हाल है ?"

सान्याल साहब हँसे और बोले, "वह तो मेरे विवाह मे आई थी। उससे कहना था कि वह नलिनी के विवाह में भी बुलाई जायेगी।"

"मैंने तो पहले ही कह दिया है। मैं जानता था कि आप उसे अवश्य बुलाएँगे।"

"ठीक है, ठीक है, उससे मैं अवश्य ही मिलूँगा।"

"क्यों नही !" श्री पिल्ले ने चुटकी ली, "इश्क ही तो है।"

"इश्क !" सान्याल साहब विस्मय भरी मुस्कान से बोले और श्री पिल्ले जोर से हँसे। वे उठकर चलने को उद्यत हुए और कहा—"इश्क पर जोर नहीं, है वह आतिश गालिब, जो लगाए न लगे और बुझाए न बुझे।"

सान्याल साहब ने सिर हिला कर गालिब को दाद दी और श्री पिल्ले से बोले, "आज तो बहुत बातें हुईं। कभी-कभी मिल जाया करो।"

श्री पिल्ले ने चलते हुए कहा, "मैं तो रोज बैठकबाजी चाहता हूँ किन्तु आप जब मिलें। अच्छा अब चलूँ, नमस्ते।"

"नमस्ते।"

निकष ने पद्मा को साथ लिया और वह कमल के यहाँ पहुँचा। नटवरलाल और कमल ने स्वागत के साथ दोनों को बिठाया। कमल ने अपने मित्र नटवरलाल का परिचय देते हुए कहा, "आप मेरे मित्र नटवरलाल हैं। आप एक अच्छे उपन्यासकार है। लगभग 20 पुस्तकें आपकी प्रकाशित हो चुकी हैं। आजकल बम्बई की एक फिल्म कम्पनी मे कला निर्देशक हैं।"

पद्मा और निकष ने नटवरलाल का अभिवादन सिर हिला कर किया और निकष ने हाथ मिलाया।

पद्मा ने कुतूहलता में डूबकर पूछा, "आपका फिल्म कम्पनी में बहुत लोगो से परिचय होगा ?"

हाँ हाँ' ने पद्मा को ऊपर से नीचे तक देखकर कहा 'कभी बम्बई

आइये तो आपको शूटिंग दिखाऊँ।"

निकष ने नटवरलाल से पद्मा को इंगित करके कहा, "इसे नृत्य कला से बहुत प्रेम है।"

नटवरलाल ने छूटते ही कहा, "बम्बई आइयेगा तो रामगोपाल, गोपी कृष्ण, वैजयन्ती, सितारा, संध्या और हेलन से भी मिला दूँगा।"

पद्मा की आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं, वह बोली, "आपका परिचय उदयशंकर से भी होगा?"

"हाँ-हाँ, वह तो मेरे साथ बहुत दिन तक मैरीन ड्राइव में रहता था।" नटवर ने बेधड़क अपना रोब जमा दिया।

'एक नर्तक मेरे विद्यालय में भी बहुत अच्छा था"—पद्मा ने कहा, "वह दूसरा उदयशंकर बनने की सोचा करता था।"

"कौन ? क्या नाम है उसका ?" नटवर ने पूछा।

"शिवशंकर।"

शिवशंकर का नाम सुनकर कमल बोला, "हाँ, बहुत बड़ा कलाकार वह भी होगा एक दिन। मैंने भी उसका नृत्य देखा है।"

नटवरलाल ने कहा, "जानता हूँ उसे भी, अभी थोड़े दिन हुए उसकी नृत्य मण्डली दिल्ली गई थी।"

"अच्छा!" पद्मा ने विस्मय से पूछा, "क्या उसकी नृत्य मण्डली बन गई ?"

नटवरलाल बोल भी न पाया था कि कमल फिर बोला, "आपको नहीं पता ? वह तो आजकल सम्पूर्ण भारत में घूम रहा है। मैंने उसके कई विज्ञापन प्रमुख पत्रों में देखे हैं।"

"बताया ना, वह मेरे ललित कला महाविद्यालय का ही तो छात्र था।" पद्मा ने अपनापन प्रकट किया और फिर पूछा, "उसकी मण्डली में कितने लोग होंगे ? कुछ लड़कियाँ भी हैं या नहीं ?"

"लड़कियाँ क्यों नहीं हैं, लगभग 10 लड़कियाँ हैं और दो अन्य नर्तक हैं।" वादकों को मिलाकर लगभग 20 व्यक्ति होंगे।" नटवरलाल ने कहा और कमल अपने मतलब की बात की ओर खींचता हुआ बोला, "वह तो यहाँ भी आने वाला है। जब आयेगा तो उसका नृत्य अवश्य ही देखा जायेगा। हमें अब नाटक की बात करने दो। उसने निकष से पूछा, "आप चारुचित्रा के घर गए थे ?"

"हाँ।"

"मंच-भुजाएँ आई मीन स्टेज विंग्स बन गईं या नहीं ?"

"लगभग बन चुकी थीं। सम्भव है वे आज ही आपके यहाँ से उसे पहुँचा दें।"

"कैसी डिजाइन बनी है ?"

"मुझे तो बहुत अच्छी लगी। हाँ, पद्मा को जो पार्ट आपने देने को कहा था वह दे दीजिए।"

"पार्ट तो अलग-अलग लिखे नहीं गए। मैंने तो अभी नाटक की रूपरेखा तैयार की है।"

"क्या रूपरेखा है ?" निकष ने पूछा।

कमल ने कहा, "मालती-माधव नाटक तो आपका पढ़ा हुआ होगा। उसमें देखिए, यही पात्र तो हैं।"

"पढ़िए," निकष ने मुस्कराकर कहा, "पात्र थोड़े ही बदल जायेंगे।"

कमल ने कमीज की जेब के एक कागज निकाल कर पढ़ना शुरू किया—"नाटक में 16 पात्र हैं, 9 नारी पात्र और 7 पुरुष पात्र। नारी पात्रों के नाम—मालती, कामन्दकी, सौदामिनी, अवलोकिता, लवंगिका, मन्दारिका, मदयन्तिका, कपालकुण्डला और बुद्धरक्षिता।

निकष ने सिर हिला कर सहमति प्रकट की और कमल ने पुरुष पात्रों के नाम सुनाए—"माधव, देवरत, भूरिवसु, नन्दन, कलहंस, मकरन्द और अघोरघंट।"

निकष ने कहा, "खलनायक की भूमिका में किसे उतारा जा रहा है ?"

कमल ने नाटक तो पढ़ा ही नहीं था। शास्त्री जी की सहायता से पात्रों के नाम नोट कर लिये थे। पूछ बैठा, "खलनायक कौन ?"

निकष ने कहा, 'मेरा तात्पर्य है नन्दन का पार्ट किसे दिया जा रहा है ?"

कमल ने बात बनाई, "ओ, आपका अर्थ है विलेन से। वह पार्ट तो मेरे मित्र नटवरलाल ही कर रहे हैं।"

निकष ने कथा के आधार पर चुटकी ली, "तो पद्मावती के राजा के साले साहब आपके मित्र ही हैं।"

नटवर चौंककर बोला, "मैं किसी का साला नहीं।"

कमल ने नटवर के कन्धों को थपथपाया और बोला, "नाटक के अन्दर कभी-कभी बाप के बेटे का बेटा बनना पड़ जाता है। कितने अभिनयप्रेमी मंच के ऊपर अपनी पत्नी की प्यारी बाँहो को दूसरे की कमर पर देख कर मुस्कराते हैं और कभी-कभी अपनी पत्नी के ही चाकर बनकर उसके भी चरण दबाते हैं। आपको राजा का साला बनने में···।"

सभी लोग जोर से हँस पड़े। नटवरलाल ने इशारा समझा, बोला, "नन्दन का कैरीकेचर, मेरा मतलब है नन्दन का रूप-चित्रण, ऐसा दूँगा कि लोग यह भूल जायेंगे कि वे बीसवीं सदी के युग में बैठे हैं।"

"क्यों नहीं, आप अभिनय नगरी के निवासी हैं," पद्मा बोली, "आप जो भी करें थोड़ा है।"

कमल ने पद्मा से बात करके कुछ आनन्द लेना चाहा। वह बोला, "सुना है पद्मा जी, आप पृथ्वी थियेटर में बुलाई गई थीं।"

पद्मा ने विस्मय से कहा, "नहीं तो ! कौन कहता है ?"

मैंने सुना था

'किससे सुना था ? कौन कहता है ?

"यह तो मुझे याद नहीं, किन्तु आप इतने विस्मय में क्यों आ गईं ? क्या आपकी नृत्यकला उस थियेटर की नर्तकी से कम है ?"

'उसमे नर्तकी थी ही कौन ?" निकष ने कहा।

पद्मा का हाथ हाथ मे लेते हुए नटवर ने कहा, "यदि सम्भव हो तो पद्मा देवी, मुझे एक नृत्य कला दिखा दीजिए।"

"हाँ-हाँ दिखाएँगी क्यो नहीं।" कमल ने मित्र की बात का समर्थन करते हुए पद्मा को बढ़ावा दिया, "पद्मा जी को सम्भवत कोई आपत्ति न होगी।"

पद्मा ने निकष की ओर देखकर अपनी इच्छा प्रकट की, किन्तु निकष ने कहा, "इस समय तो केवल मालती का पार्ट लेने पद्मा आई है, फिर कभी आप लोग नृत्य देख लीजिएगा।"

नटवर बोला, "मैं तो दिन का मेहमान हूँ। बम्बई से बड़ी मुश्किल से आ पाया हूँ। आपका नृत्य देख पाता तो किसी नई फिल्म में कन्ट्रैक्ट दिला देता। कुछ रुपये भी मिल जाते और ख्याति भी।"

पद्मा ने फिर मामा की ओर देखा। निष्कष ने नटवरलाल की बातों से यह आभास ले लिया कि वह पद्मा का नृत्य किसी प्रकार देखना ही चाहता है। उसने पद्मा को ऐसे मनचले लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कर देना ठीक नहीं समझा। उसने कहा, "आज तो पद्मा के पाँवों में घुँघरू भी नहीं हैं, आज जाने दीजिए।"

कमल ने कहा, "घुंघरू मेरे पास रखे हैं, कहिए अभी ला दूं ?"

पद्मा चाहती थी कि वह नटवरलाल को नृत्य अवश्य दिखा दे। फलतः उसके मुँह से तुरन्त निकला, "अच्छा ले आइए।"

निकष ने कहा, "नही, इस समय नही। मुझे कुछ कार्य है। मैं नहीं रुक सकूँगा।"

नटवरलाल ने कहा, "आपको कार्य है तो आप अपने कार्य की हानि न करे। पद्मा को मैं कमल बाबू की कार में आपके घर पहुँचा दूंगा।"

निकष ने मन ही मन कहा—यह लोग कैसे हैं जो मन की बात नहीं समझते। उसने दृढ़ होकर कहा, "मैं पद्मा को अकेला नहीं छोड़ सकता।"

कमल और नटवर दोनों ही चुप रह गए। वहाँ कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया और फिर निकष ने कहा, "अच्छा अब हम लोगों को चलने की आज्ञा दीजिए।"

कमल बोला, "यह कैसी बात ! बैठिए, चाय आ रही है उसे तो पीते जाइए।"

"हाँ, उसके आने तक मैं रुक सकता हूँ।" निकष ने कहा, "आप लोग मेरी बात का बुरा तो नहीं माने ?"

"नहीं, नही, ऐसी भी क्या बात है," नटवर ने कहा और कमल ने सिर हिला कर नटवर की बात का समर्थन किया।

चाय की ट्रे आई। और इसी क्षण चारुचित्रा ने कमल के अतिथि कक्ष में प्रवेश किया। चारुचित्रा को देखकर सभी ने अभिवादन किया और चारुचित्रा ने मुस्करा कर कहा "आपके नाटक के लिए मैंने मंच भुजाएँ तैयार कर दी हैं।"

कमल ने कहा और चारुचित्रा ने निकष व पद्मा को

देखा । वह पद्मा के बगल में बैठ गई ।

"आप हैं कुमारी चारुचित्रा," कमल ने कहा । नटवरलाल ने सिर हिलाया और कमल ने फिर तुरन्त ही पद्मा से कहा, "अब आप, इनका परिचय चारुचित्रा जी से करा दीजिए ।"

पद्मा इस कार्य के लिए बिल्कुल तैयार न थी । वह मुस्कराई और झिझकी । उसने कहा, "अब आप ही इनका भी परिचय करा दें ।"

निकष बीच में बोला, "मैं परिचत कराए देता हूँ । आप हैं श्री नटवरलाल, उपन्यासकार एवं चलचित्र निर्देशक ।"

चारुचित्रा ने नटवरलाल को ध्यान से देखा और नटवरलाल ने मुस्कान भरे चेहरे से अपनी आँखें फड़फड़ाईं ।

चारुचित्रा ने मुस्कराकर कहा, "बड़ी प्रसन्नता हुई आपसे मिलकर ।"

"और मुझे भी ।" नटवरलाल ने कहा ।

"आपके कौन-कौन से उपन्यास हैं ?" चारुचित्रा ने पूछा ।

नटवरलाल ने पैंतरा बदल कर कहा, "बहुत से हैं । मैं आपको एक सेट भेंट कर दूँगा ।"

"मुझे भेंट पाकर प्रसन्नता होगी । कृपया एक-आध उपन्यास का नाम बताएँ । शायद मैंने पढ़े हों ।"

"अवश्य पढ़े होंगे । बात यह है कि मेरे उपन्यास 8000 से कम एक संस्करण में नही छपते और वे लगभग एक महीने में ही बिक जाते हैं ।"

"तब तो आपके सभी उपन्यासों के कई संस्करण हो चुके होंगे ।"

"नहीं यही, तो कठिनाई है और फिर मैं चिन्ता भी नहीं करता ।"

"कमल ने घंटी बजाई और उसका नौकर उपस्थित हुआ । कमल ने यहाँ से दूर हटकर उसे आज्ञा दी कि किसी अच्छे होटल से बढ़िया नाश्ता तुरन्त लाए । नौकर चला गया और कमल ने लौटते ही चारुचित्रा से कहा, "मेरे मित्र भी बड़े मस्त जीव हैं ।"

निकष ने कहा, "वह तो दिखाई दे रहे हैं, चारुचित्रा जी ने इतनी बार उपन्यासों के नाम पूछे किन्तु उन्हें होश ही नहीं कि कौन क्या पूछ रहा है ।"

नटवरलाल ने घूरकर निकष की ओर देखा किन्तु जब निकष की आँख उसकी ओर गई तो वह खाँसकर बोला, "भई कमल बाबू, जरा आपको मेरे उपन्यासों के नाम बता दो ।"

कमल बोला, "आपने अब तक 20 उपन्यास लिखे हैं । सभी जासूसी । भयकर लुटेरा, खूनी वेश्या, नकाबपोश औरत, जादू नगरी, भूतलोक, किन्नर देश, हिजड़ों का देश और पेरिस की नर्तकी आदि ।"

चारुचित्रा ने निकष की ओर देखा और निकष ने चारुचित्रा की ओर । दोनो ने ही लम्बी साँस छोड़ी और चारुचित्रा ने धीरे से कहा, "समझी ?" और तत्पश्चात् निकष बोला आपने सचमुच साहित्य की बड़ी सेवा की है आप पाँच और लिख दीजिए तो बेचारे को आपकी रजत-जयन्ती मनाने का सौभाग्य

प्राप्त हो जायेगा।"

नटवर मन ही मन निकष के व्यंग्य से कुढ़ गया और पद्मा ने कुछ भोलेपन से कहा, "मामाजी, लेखक की तो आयु पर जयन्ती मनाई जाती है।"

निकष ने कहा, "वह तो स्वर्ण जयन्ती या हीरक जयन्ती होती है किन्तु हम यदि किसी नवयुवक बन्धु को अभिनन्दन देना चाहते हैं तो रजत जयंती के लिए उसकी पुस्तक संख्या को आधार बनाना पड़ेगा।"

चारुचित्रा ने निकष का समर्थन करके कहा, "आपने पते की बात कही, मैं आपका समर्थन करती हूँ।"

कमल ने यह अनुभव किया कि निकष अब बुरी तरह से नटवर को नत करना चाहता है। उसने अपनी घडी की ओर जानबूझकर देर तक देखा। निकष ने पूछा, "कितना समय हुआ ?"

"आपके जाने का समय हो गया होगा। इस समय आठ बजे हैं।" कमल ने कहा।

निकष ने समझ लिया कि कमल यह चाहता है कि अब वह जाय किन्तु चारुचित्रा के आ जाने से निकष की इच्छा कुछ क्षण बैठने की ओर हुई। उसने बात बनाई, "अरे आठ बज गए! मुझे साढ़े सात बजे एक मित्र से मिलना था, वह बेचारा अब मेरे घर आकर लौट भी गया होगा। जब नहीं गया, तब कुछ देर और बैठ सकता हूँ।"

कमल और नटवर ने एक दूसरे को देखा और नटवर ने दाँत पीसे।

चारुचित्रा ने कमल से पूछा, "कहिए नाटक की क्या प्रगति है ?"

"काम हो रहा है, किन्तु बहुत धीरे गाड़ी चल रही है। मैंने शास्त्री जी को नाटक रूपान्तरित करने को दिया था किन्तु अभी एक अंक भी अनूदित नहीं हुआ।"

"यह समाचार तो अच्छा नहीं है। आप उसे जल्द ही अनूदित कराएँ, नही तो कम समय रहने पर अभिनेता अपने पार्ट ठीक से याद नहीं कर पाते और नाटक में प्राम्पटिंग करानी पड़ती है।"

"मैं अपने नाटक में प्राम्पटिंग कभी नहीं पसंद करता। यदि नाटक तैयारी पर नहीं है तो तो उसकी तारीख बढ़ा देना अधिक उचित समझता हूँ।"

"आज आपने मुझे बुला भेजा था, कोई विशेष कार्य तो नहीं है।"

"कार्य तो यों ही आपने बहुत बड़ा कर दिया। आज आपको बुलाने का विशेष कारण नटवरलाल जी से आपका परिचय कराने का था। आपको विदित होना चाहिए कि हमारे मित्र नटवरलाल लेखक के अतिरिक्त कला निर्देशक भी बहुत अच्छे है और इनका तबला तो फिर कहना ही क्या, साथ ही मंचसज्जा या किसी भी दृश्य की पृष्ठभूमि तैयार करने में आप बड़े निपुण व्यक्ति हैं।"

चारुचित्रा ने नटवरलाल की ओर पुनः ध्यान से देखा और वह कुछ बोलने भी न पाई थी कि निकष ने पद्मा के पीछे से अपना हाथ बढ़ाकर चारुचित्रा को सतर्क किया। चारुचित्रा ने नटवरलाल से पूछा, "आपको तो फिर पेंटिंग का भी ज्ञान होगा।"

ने पहले ही सुन रखा था कि चारुचित्रा एक सिद्ध चितेरी है इसलिए

उसके आगे झूठ बोलकर फँस जाने के डर से उसने बात घुमाई, "मेरे मित्र कमल बाबू ने कुछ भूल कर दी है। वास्तव में मैं मंच के शृंगार में नहीं पात्रों के शृंगार के कार्य मे कुछ हस्तक्षेप रखता हूँ, अर्थात्, 'ग्रीनरूम' का कार्य सम्पन्न कर सकता हूँ।"

"समझी," चारुचित्रा ने कहा, "ग्रीनरूम का कार्य सम्हालना भी साधारण कार्य नहीं है। आपसे हम लोगों को अच्छी सहायता मिलेगी।"

नटवरलाल मुस्कराया और इसी क्षण कमल के नौकर ने होटल के बैरे के साथ वहां पदार्पण किया। बैरे ने इशारा पाते ही तिपाई उठाकर बीच मे रखी और ट्रे को उस पर रखकर उसका आवरण हटाया। टोस्ट, मक्खन, नमकीन, बिस्कुट और चाय सुन्दर टी-सेट में सजी हुई थी।

निकष ने सोचा कि अब उसका बैठना ठीक नहीं है। वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और साथ ही पद्‌मा भी चलने को उद्यत हुई। चारुचित्रा ने कहा, "आप लोग थोड़ी देर और बैठें, मैं भी साथ चलती हूँ।"

"हाँ, हाँ, कम से कम दो घण्टे तो और बैठिए।" नटवरलाल ने ताना कसा।

चारुचित्रा ने चिन्तित होकर नटवरलाल की ओर देखा, किन्तु उसने अपनी आँखें पीछे फेर लीं। निकष ने कहा, "मुझे अब चलने दीजिए, मैं देर से आया हूँ।"

कमल मौन रहा और चारुचित्रा भी कुछ न बोल सकी। वे दोनों वहाँ से चल दिए। पद्‌मा ने चारुचित्रा को 'दीदी' शब्द के सम्बोधन से नमस्कार किया और अब सभी के हाथ जुड़ गए।

निकष के सामने जो बातें हुई थीं उससे चारुचित्रा ने नटवरलाल को कुछ अश्रद्धा की दृष्टि से अपनाया, किन्तु कमल के आग्रह से उसने जलपान शुरू किया। नटवरलाल नें चाय छानकर प्यालों में ढाली और चारुचित्रा के प्याले में चोरी से सफेद गोलियाँ छोड़ दी। वस्तुतः चारुचित्रा वहाँ रुकना नहीं चाहती थी किन्तु फिर भी जलपान करने तक उसने रुकने में कोई बुराई नहीं समझी। नटवरलाल ने चारुचित्रा को चाय का प्याला दिया। तीनों ने ही चाय की प्याली खाली कर दी। चारुचित्रा को कुछ नशा-सा आने लगा। वह घबड़ाई और तुरन्त उठकर चलने को उद्यत हुई। उसने अपनी घड़ी देखकर कहा, "कमल बाबू, अब मुझे आज्ञा दीजिए, मैं चलना चाहती हूँ।"

कमल ने बिल्कुल अनजान बनकर कहा, "अच्छा फिर किसी दिन आइएगा। मैं कल आपके यहाँ से मंच-भुजाएँ उठवा लूँगा।"

चारुचित्रा उठकर खड़ी हुई किन्तु लड़खड़ाकर सोफे पर गिर पड़ी। वह चीखी, "कमल बाबू, यह मुझे क्या हुआ?" नटवर दौड़कर अतिथि कक्ष का द्वार बन्द करने आया किन्तु उसकी कल्पना के विरुद्ध निकष वहाँ खड़ा था। उसने किवाड़ पर हाथ रखा ही था कि निकष बोला, "मैं पद्‌मा को घर पहुँचा आया हूँ और आपके पास दो घण्टे नहीं चार घण्टे बैठूँगा।"

नटवरलाल घबड़ा गया। उसने अन्दर ही अन्दर जलते हुए कहा, "आइए, आप भी ठीक अवसर पर आए "

'कौन-सा अवसर? निकष ने कहा और कमरे मे पैर धरते ही देखा

सोफे पर मूर्छितावस्था में पड़ी है। कमल ने निकष को देखा और घबड़ाकर कहा, "आप ! और उसने तुरन्त बात बनाई, "पता नहीं इन्हें क्या हो गया। अभी-अभी हम लोगों के साथ जलपान करके उठी ही थी कि···।"

"मैं देख रहा हूँ कि जलपान की प्लेटें रखी हैं।" निकष ने रूखे स्वर में कहा और कमल वहाँ से घर के अन्दर जाते हुए बोला, "मैं अभी दो मिनट में कोई दवा लेकर आता हूँ, आप यहीं चारुचित्रा के पास बैठें।" वह अन्दर गया और नटवरलाल भी पीछे-पीछे तुरन्त अन्दर पहुँचा।

"अब क्या होगा ?" कमल ने फुसफुसाकर पूछा।

"कोई चिन्ता नहीं, वह अपनी लाल शीशी लाओ। अभी उसे चेतना प्राप्त हो जायेगी।"

"वही तो मैं लेने आया हूँ, किन्तु तुमने इतनी जल्दी यह सब क्यों किया ?"

"आवश्यक था, जैसी-जैसी बाते निकष के सामने हम लोगो की आपस में हुईं, उससे क्या तुम आशा कर सकते थे कि चारुचित्रा फिर यहाँ आती ?"

"क्यों नहीं, चारुचित्रा के सामने कोई ऐसी बात नहीं हुई थी जिससे वह मेरे यहाँ आने में संकोच करती।"

"हो सकता है, किन्तु पद्मा तो अब शायद न आये।"

"वह अब क्या आयेगी," निकष का तो विश्वास ही डिग गया।

नटवरलाल चुप रहा और कमल थोड़ा क्रोध में आकर बोला, "तुमने तो सारा गुड गोबर कर दिया। निकष को हम लोगों पर शंका हो चुकी है। अपनी शान बाहर क्या है तुम नहीं जानते। यदि एक बार भी बदनामी हो गई तो फिर मैं कहीं का नही रहूँगा।"

"मत घबराओ," नटवरलाल ने कहा, "अभी सब ठीक हुआ जाता है। निकष को क्या पता कि मैंने क्या किया है।"

"मैं जानता हूँ कि तुमको, चारुचित्रा को वश में करने का केवल यही मार्ग मालूम था ? तुमसे सुन्दर ढंग से तो मैं उसे अपने वश में कर लेता।"

"वह अकेली होती तो मैं भी सोच सकता था किन्तु निकष जैसा चतुर व्यक्ति जब उसका मित्र है तो तुम्हारी दाल कहाँ गल सकती थी ?"

"खैर, चलो बाहर चलें, नहीं तो निकष क्या सोचेगा कि हम लोग इतनी देर तक यहाँ क्या करने लगे।"

कमल ने अपनी लाल शीशी ली और आगे-आगे वह तथा पीछे-पीछे नटवर अतिथि कक्ष में आये।

कमल ने कक्ष खाली देखा और कहा, "अरे चारुचित्रा तो चली गई। मैं कहता न था कि हम लोगो को देर हो गई है, चारुचित्रा को शायद होश आ गया होगा।"

"होश तो उसे बिना इस दवा के अभी एक घण्टे नहीं आ सकता निकष उसे उठा ले गया हो तो बात दूसरी है

"सब चौपट हो गया। आज वह गई, अब शायद कभी न आये। कोई ठीक थोड़े ही है, निकष उसे उठा ले जा सकता है। इतना कच्चा प्लाट रखते हो, तो तुम जासूसी उपन्यास क्या लिखते हो ?"

"मुझे क्या पता था कि निकष मेरा भी चाचा है। वह कमबख्त शायद आधे रास्ते लौट आया।"

"उसके आने के बाद भी हम लोग नहीं समझे।"

"मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि वह उसे मूर्छितावस्था में ही उठा ले जाएगा।"

"कुछ भी हो, अब तो चिड़िया हाथ से गई।"

"क्या चिन्ता है, हाथ में लासा है तो बहुत-सी फँसेंगी।"

"किन्तु अब नाटक और रिहर्सल का क्या होगा ? आगे का कार्यक्रम समाप्त हो गया ? बदनामी अलग होगी।"

"नाटक कहाँ खेला जाने वाला था। समझ लो ये नाटक समाप्त हो गया और रही बदनामी की बात, तो कौन बदनाम कर सकता है ? किसी के पास कोई प्रमाण है ? कोई भी ऐसी-वैसी बात करे उसे डाँट दो। कोई अधिक अकड़े तो मानहानि का मुकदमा ठोक दो। चारुचित्रा ने वह कुछ भी नहीं देखा था जिससे उसे कोई शंका उत्पन्न होती या आगे हो। वह जब भी मिले उससे निर्भीक बात करना और उससे स्वय से आज की बीमारी के विषय में पूछना।"

"खैर, वह तो किया ही जाएगा। दो-चार दिन में फिर आमन्त्रित करूँगा कि वह मेरे यहाँ आये।"

"ठीक-ठीक, आये और नाटक में सहायता करे।"

"धत तेरे नाटक की" कमल ने नटवर के कन्धे पर हाथ मारा और नटवरलाल ने नथुने फुलाकर लम्बी-लम्बी साँसें लीं।"

निकष चारुचित्रा को टैक्सी में लिटाकर अपने एक पूर्व परिचित डाक्टर कल्याण चन्द्र के पास लाया। डाक्टर ने चारुचित्रा की नाड़ी को देखते हुए बताया कि उसे नशे की मिलावट से बनाई हुई कोई चीज दी गई है। निकष ने मन-मन-ही घृणा और द्वेष से अपने नथुने फुलाये। डाक्टर ने इंजेक्शन देते हुए पूछा, "यह कैसे क्या हुआ ? आपकी यह कौन हैं ?"

"सब बताऊँगा डाक्टर साहब, यह नगर के एक नामी रईस के सुपुत्र की करतूल है।"

"अच्छा !" विस्मय और कुतूहलता में डूबकर डाक्टर साहब बोले, "कौन है ? वह चाहता क्या था ?"

निकष चुप रहा। चारुचित्रा ने अपने हाथ-पैर चलाये। निकष के मुख पर
की रेखा दौड़ी चारुचित्रा ने आँख खोलीं विस्मय से निकष को देखते हुए पूछा निकष जी आप कमल कहा है ? वह उठ बैठी उसने चारों

ओर देखा। वह एक डाक्टर के कमरे में थी। उसके मुख से निकला, "डाक्टर !" उसने अपना मस्तक सहलाया और बोली, "मैं तो कमल जी के ड्राइंग-रूम में थी, यहाँ मुझे कौन लाया ?" निकष ने उसके सामने खड़े होकर अपने मुख पर उँगली रखी। चारुचित्रा ने पूछा, "क्यों ?"

निकष ने कहा, "फिर बताऊँगा।" चारुचित्रा ने पूछा, "यहाँ कमल बाबू और नटवरलाल नहीं आए ?"

"नहीं," उसे छोटा-सा उत्तर मिला।

"क्यों ?"

"यह भी फिर बताऊँगा।"

चारुचित्रा ने अँगड़ाई ली और अपने विशाल नेत्रों से निकष को देखा। निकष ने पूछा, "तबीयत कुछ आपकी ठीक हुई ?" चारुचित्रा ने अपने अंग-प्रत्यंग पर एक बार दृष्टि दौड़ा कर कहा, "हाँ।" वह उठकर खड़ी हो गई। डाक्टर ने कहा, "अब आप जा सकती हैं।" निकष और चारुचित्रा डाक्टर के केबिन से बाहर आए। निकष ने टैक्सी बुलाई और वे दोनों ही उसमे बैठ गए। टैक्सी चारुचित्रा के घर की ओर चली।

"निकष जी ! आप तो पद्मा के साथ घर चले गए थे ना ?"

"हाँ, हाँ। किन्तु बाद में फिर लौट कर आ गया था।"

"कब ?"

"तब आप वहाँ मूर्च्छितावस्था में पड़ी थीं।"

"हाँ, मैंने चाय का प्याला जैसे ही समाप्त किया, मुझे कुछ नशा-सा आने लगा और जहाँ तक मुझे ध्यान है मैं उठकर चलने को उद्यत हुई थी कि लड़खड़ा गई।"

"हाँ, आपके प्याले में शायद अफीम का सत मिला दिया गया था।"

"अफीम का सत मिलाया था ? आपको यह कैसे पता चला ? क्या आपके सामने··"

"नहीं, नहीं, मुझे तो अभी डाक्टर ने बताया, मैं अनुमान करता हूँ कि यह कारंवाई उस नटवरलाल की हो सकती है।"

"क्यों, क्या उन लोगों ने कोई षड्यन्त्र रच रखा था ?"

"अवश्य ही कुछ था, नहीं तो आपके मूर्च्छित होने का कोई कारण ही न था।"

"किन्तु आप कैसे वहाँ पुनः पहुँच गये ?"

"आपको पता है, आपके आने के पहले से मैं वहाँ उपस्थित था। कमल बाबू के नाटक में पद्मा मालती का पार्ट करने के लिए चुनी गई थी। मैं उसको साथ लेकर जब से वहाँ बैठा, नटवरलाल ने ऐसी-ऐसी बातें कीं जिससे मुझे उसके चरित्र पर शका हो गई।"

"तो कमल जी ने उसे कुछ नहीं टोका ?"

"कमल बाबू भी मुझे वैसे ही दिखाई दिए। उनकी बात नटवर को परोक्ष में सहायता दे रही है

'अच्छा चारुचित्रा ने विशेष विस्मय में आकर कहा, तो कमल जी की

नीयत भी ऐसी है ?"

"अवश्य, मैंने तो ऐसा भी आभास पाया है, वे दोनो ही चाहते थे कि मैं पद्मा को वहाँ अकेला छोड़कर चला जाऊँ, किन्तु मैंने खुले शब्दों में कह दिया कि यह नही हो सकता। मैं आपके सामने ही पद्मा को लेकर वहाँ से चल दिया था। वस्तुत मै आपको भी वहाँ अकेला छोड़ना ही चाहता था, किन्तु मेरा कोई अधिकार नहीं था कि मै उस समय आपसे यह कहता कि आप भी मेरा साथ करें। ऐसी स्थिति में मैं शीघ्र से शीघ्र पद्मा को घर की ओर जाने वाली बस पर चढाकर वहाँ फिर पहुँचा और तब तक आप मूर्छित अवस्था में सोफे पर पड़ी थीं।"

"बाहर द्वार के खुले थे ?"

"हाँ, वे बन्द होने ही वाले थे। नटवर द्वार को अपने हाथो से बन्द करने ही वाला था कि मै पहुँच गया। मुझे देखते ही वे दोनों कुछ भयभीत हुए और मैं आपको ऐसी दशा मे देखकर समझ गया कि उन लोगों ने आपको वश में करने का, खैर···। वे दोनों ही ड्राइंग रूम के बाहर आपस की कोई बात करने गए और मैं आपको अपने हाथो मे उठाकर वहाँ से तुरन्त बाहर आ गया। भाग्यवश टैक्सी जल्दी ही मिल गई और मैं उसमें आपको लेकर डाक्टर कल्याणचन्द्र के यहाँ उपस्थित हुआ।"

चारुचित्रा की आँखों में आँसू छलछला आए। "निकष जी, आपने मेरा उद्धार कर दिया।" चारुचित्रा ने गद्गद हृदय से कहा, "वे सम्मानित लोग जो समाज में देवता समझे जाते है, ऐसे हो सकते हैं मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकती थी। मैं आपकी आभारी हूँ।"

"मैंने तो मानवता बरती है, आभार प्रकट करने की क्या आवश्यकता, किन्तु हाँ, संसार कितना मक्कार है यह आपको समझने की आवश्यकता है।"

चारुचित्रा कुछ क्षण चुप रही और फिर बोली, "कमल ने उस दिन महाविद्यालय को जो बीस पुरस्कार दिए थे वे निश्चय ही सहायता और प्रोत्साहन की दृष्टि से नहीं, अपने स्वार्थ की दृष्टि से दिए होंगे।"

"मैं समझता हूँ वे आपको अपनी ओर आकृष्ट करने का उपक्रम कर रहे थे!"

"उफ! इतनी पतित मनोवृत्ति!"

'धनवान दो प्रकार के होते हैं। एक थे आपके पिता, जिन्होंने लोक कल्याण के लिए, साहित्य और समाज के लिए और कलाओं के उद्धार के लिए अपनी इतनी बड़ी सम्पत्ति दान कर दी और दूसरे प्रकार के धनवान हैं सेठ लक्ष्मणदास, कौड़ी-कौड़ी जोड़ना ही जिनका काम है और जिनका उत्तराधिकारी है कमल जैसा समाज का शत्रु। ये लोग आजीवन जीवकोपार्जन से मुक्त रहकर भोग-विलासी जीवन व्यतीत करते है।"

चारुचित्रा चुप रही। निकष ने उसकी ओर देखा। वह मूर्तिवत् बैठी थी और टैक्सी के हिचकोले उसे उछाल रहे थे। निकष ने उसका ध्यान आकृष्ट कर कहा, "क्या सोच रही हैं ?"

'कुछ नहीं भारी स्वर से उसने कहा 'मैं कमल बाबू के यहाँ एक बार पहले भी गई थी उस दिन वे इतनी से मिले थे कि मैं

"यदि उस दिन वे इतनी सज्जनता से न मिलते तो आज आप उनके यहाँ शाम के समय निर्भीक न जातीं।"

"किन्तु वे तो मुझे एक कलाप्रिय व्यक्ति दिखाई दिए। उनके कमरे में ऐसे-ऐसे चित्र लगे हैं जिन्हें देखकर कोई भी उनकी सुरुचि का आभास पायेगा।"

"मकड़ी का जाला कितना सुन्दर बुना होता है कभी इस पर भी ध्यान दिया है?"

"चारुचित्रा ने अपनी दृष्टि निकष की ओर घुमाई और निकष के होठों पर आप से आप मुस्कान फूट पड़ी। उसने अपना मुख दूसरी ओर घुमाया। चारुचित्रा ने टैक्सी के बाहर झाँका। देखा कि टैक्सी तिलक रोड के चौराहे पर पहुँच रही है। उसने ड्राइवर को आज्ञा दी कि लाल कोठी के फाटक पर टैक्सी रोक दे। टैक्सी रुकी। चारुचित्रा और निकष दोनो ही उतरे और निकष ने पूछा, "अब तो मैं घर जा सकता हूँ।"

"ऐसी भी क्या बात है!" चारुचित्रा ने कहा, "बाहर से बाहर ही चले जाएँगे तो उचित नहीं, चलिए अन्दर चलिए।"

निकष ने अपनी घड़ी को देखते हुए कहा, "देखिए ग्यारह बज रहे हैं, अब आप मुझे इसी टैक्सी से घर जाने दीजिये! मुझे नारायण पेठ जाना है।"

"तो आप नारायण पेठ पर रहते हैं! किस कोठी मे?"

"किरण विला में।"

"किरण विला तो सचमुच दूर है," चारुचित्रा ने टैक्सी ड्राइवर को पैसे देते हुए आगे कहा, "रात अधिक हो गई इसलिए अब आप खाना खाकर घर जाइये। घर तक आकर बाहर-बाहर ही लौट जाना मेरे ऊपर अन्याय होगा।"

निकष ने चारुचित्रा को देखा, वह तिरछी चितवन से उसे देख रही थी। निकष समझ गया कि उसके हृदय मे उसके प्रति कुतूहल जागृत हो चुका है और वह कृतार्थ होने के प्रति उत्तरस्वरूप ही उससे भोजन करने का आग्रह कर रही है।

उसने कहा, "चलिए आपकी जैसी इच्छा।"

चारुचित्रा ने किवाड़ खुलवाए और मोहिनी ने अन्दर से ही अपने क्रोध की वर्षा उस पर शुरू की, "इतनी रात को लौटना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। यहाँ से कहकर गई थी कि कमल बाबू के यहाँ जा रही हूँ और वहाँ से टेलीफोन आया कि क्या चारुचित्रा जी घर पर हैं। मैने कहा, वह तो आपके यहाँ ही गई हैं। इसका मुझे कोई भी उत्तर नही मिला। मैं तब से घबड़ा रही हूँ कि तुम कहाँ गईं।"

चारुचित्रा दौड़कर मोहिनी से लिपट गई और बोली, "कमल के यहाँ अब कभी नहीं जाऊँगी। वे अच्छे आदमी नहीं हैं। निकष की ओर इशारा करके बोली, "निकष जी यदि मेरी सहायता न करते तो आज पता नहीं क्या होता।"

"मोहिनी ने कहा, "मुझे भुलावा मत दो। तुम अपने पिता की बात भूल गईं। गंगा मे भी जब बाढ़ आती है तो वह भगीरथ मार्ग से हटकर नालों में बहने लगती है। बात बताने से कोई लाभ नहीं वहाँ यदि गई होती तो वे कभी यहाँ टेलीफोन करते?

पकड़ेगा। देखो न, अभी कितने तार ढीले हैं।"

"किन्तु तारों को यदि समय के अन्दर कसकर स्वर न अलापे गए तब भी तो गुरु की गुरुता पर आक्षेप आता है।"

रूपकुमार ने नलिनी की आँखों में आँखें भर धीरे से पूछा, "क्यों, क्या स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन आ गया है ?"

"हाँ, मेरी माँ मेरा विवाह दिल्ली में किसी लेखक महोदय से कर रही हैं।"

रूपकुमार ने मन को साधकर मुस्कराहट के साथ कहा, "अच्छा तो है, लेखक समाज का एक सम्मानित व्यक्ति होता है। उसके गुण और ज्ञान का कहना ही क्या है !"

"हूँ, मुझे पता है। लेखक समाज के लिए उपयोगी हो, तो हो किन्तु अपने घर के लिए सबसे अधिक बेकार व्यक्ति होता है।"

"आपको कैसे अनुभव हुआ ?"

"मेरी सहेली शान्ति की बड़ी बहन सुधा जो है, वह लेखकों पर जान दिया करती थी किन्तु उसने जब एक लेखक को वर लिया तो परेशान है।"

"क्यो ?"

"कहती है कि पतिदेव दिन भर किताबें चाटा करते हैं और रात को बारह-एक बजे तक लिखा करते हैं। न तो बच्चों को पढ़ाने का उन्हें अवकाश और न पत्नी से दो क्षण बात करने का समय।"

"बिना पत्नी से बातचीत करे ही आपकी बहन के बाल-बच्चे हो गये ?" रूपकुमार ने गहरी चुटकी ली और नलिनी ने लजाकर धीरे से कहा, "बच्चों को हुए सात साल हो गये और तब वे लेखक महोदय कवि अधिक थे। दिन-रात प्रेयसी के वियोग में चाँदनी को तारों जड़ी नीली साड़ी पहनाया करते थे। उस समय पत्नी-प्रेम ही सब कुछ था, किन्तु जैसे-जैसे दिन बीतते गये और लेखक महोदय भावुकता से स्वाभाविकता की ओर बढ़ने लगे, उनकी कविता सुप्त हो गई। सुना है वे अब यथार्थवादी हो गए हैं।"

"अर्थात् ?"

"अर्थात् चाँद का धब्बा उन्हें अब गोरे कपोल पर तिल नहीं पहाड़ों के बीच की गहरी घाटी दिखाई देने लगा है।"

रूपकुमार हँसा और नलिनी आगे बोली, "सुधा के पति अब किताबी कीड़े हो गए हैं। पत्नी और बच्चों पर उनकी दृष्टि भी नहीं जाती।"

"तो अन्य कलाकारों को आपने कुछ कम समझ रखा है क्या ?" सच्चा चितेरा अपनी तूलिका का शृंगार ढूँढा करता है और सच्चा संगीतज्ञ अपने वाद्य को ही दिन-रात गोद में बैठाये रहता है।"

"किन्तु सम्भवतः बेला वादक नहीं।" नलिनी मुस्कराई।

"यह सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।"

"तब सच्चे कलाकारों की गृहस्थी का सरकार को बीमा करा देना चाहिए।"

"बीमा से ही स्त्रियाँ सन्तुष्ट हो जाएँ तो फिर क्या कहना रूपकुमार बोला

सा रुका और नलिनी के अधिक निकट होकर बोला, "कौन है वह लेखक जो मेरे रहते तुम्हें अपने घर ले जाये !"

नलिनी ने ठुनककर कहा, "हटिये भी···"

अन्दर से कामिनी ने आवाज दी, "नलिनी ! मास्टर साहब गए क्या ? बाजा नहीं बज रहा है।"

रूपकुमार ने तुरन्त कहा, "हाँ, अब आपको तीन राग अच्छी तरह आ गए हैं। आज 16 मात्रा में राग तोड़ी बताऊँगा।"

नलिनी ने बेला उठा लिया और जल्दी-जल्दी सरगम बजाने लगी। रूपकुमार ने कहा, "अच्छा अब रुको और गाना सुनो—

नेक चाल चलिए रे मनुवा,
प्रभु सों डरिए गरब न करिए।
सा नि सा ग म, प म प ध, म ग रे, ग रे सा सा
म म प ध, न म ग, रे रे ग रे सा

"हाँ बजाइए ! मैं उँगलियों से तीव्र और मंद्र सप्तक के स्वर को बताता जाऊँगा।"

नलिनी ने बेला बजाना शुरू कर दिया। रूपकुमार ने अपने होंठ काटते हुए तिरछी चितवन से नलिनी को देखा और नलिनी ने आँखों को झपका कर मौन प्रति उत्तर दिया।

"यार नटवरलाल, इतना कच्चा काम तुम करोगे, मुझे आशा भी न थी।"

"फिर वही पुरानी बात, जो बीत गई सो बीत गई। आगे की बात करो।"

"क्या आगे की बात करूँ ? चारुचित्रा का जो सौन्दर्य है वह सर्वत्र थोड़े ही है।"

"तो क्या, उससे विवाह करने की सचमुच सोच बैठे थे।"

"और क्या, गुण और रूप का ऐसा संगम अन्यत्र मिलना कठिन है।"

"भगवान की सृष्टि में एक से एक पड़ी हैं। चिन्ता क्यों करते हो ? जब विवाह करने पर आ गए हो तो फिर ऐसी को वरो जो तुम्हें अपने से अधिक सम्मानित माने।"

"तो क्या चारुचित्रा मुझे नीची दृष्टि से देखती है ?"

"नहीं देखती है, तो आगे चलकर देखने लगेगी।"

"क्यों ?"

"वह एक प्रतिभावान महिला है, जो तुम्हारी निर्बलता है वह एक न एक दिन उसके सामने प्रकट होगी और उसी दिन वह तुमसे विद्रोह कर बैठेगी।"

"मैं अपने आगे उसे सिर नहीं उठाने दूंगा।"

नटवरलाल ने गम्भीर होकर कहा, "अनधिकार चेष्टा सामाजिक बन्धनों से डरने वाली महिलाओं पर ही सफल हो सकती है।"

क्यो ?

"क्योंकि जो जागरूक है वह पुरुष की किसी भी ऐसी चेष्टा का उत्तर विद्रोही के रूप मे देने में कभी झिझकेगी नहीं ।"

"मुझसे विद्रोह करके क्या समाज का मुख भी बन्द कर देगी ?"

"अवश्य। ऐसा समाज जो पुरुष वर्ग के आधिपत्य का पोषण करता आया है वह नारी-समाज में चेतना आ जाने के बाद अधिक दिन टिक न पायेगा। चारुचित्रा जैसी महिला यह कभी भी सहन न कर सकेगी कि आप नित नई-नई सुन्दरी के साथ विहार करें, रास रचावें और वह पतिव्रत आदर्श के नाते आप पर पंखा झलती जाय।"

"नटवर!" कमल ने कहा, "इस समय तो बड़े ज्ञान की बात कर रहे हो। इस मापदण्ड से उपन्यास लिखो तो फिर साधक ही न कहलाओ!"

"साधक के क्या सींग और पूँछ होती है। अच्छा-बुरा तो मैं समझता ही हूँ। लेकिन साधना तुरन्त की आवश्यकता नहीं पूरी कर सकती और मेरी आवश्यकता प्रतीक्षा नही कर सकती।"

"यह बात छोड़ो। अब दूसरा मार्ग बताओ जिससे कुछ काम बने।"

"सोलह आने की बात यह कि यदि अलमस्ती का जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो किसी भोली-भाली से विवाह कर लो। वह पति को भगवान समझकर तुम्हे पूजती भी रहेगी और मौज-मस्ती मे रहना।"

"ठीक है, तो फिर यही सही।"

इसी समय बाहर किसी के आने का आभास मिला। कमल ने द्वार पर देखा, एक बालिका लगभग 14 वर्ष की खडी थी और साथ ही एक नवयुवक भी था। कमल ने दोनों को ही अतिथि कक्ष के अन्दर बुला लिया।

नवागन्तुक युवक बोला, "ये मेरी भतीजी दमयन्ती और मैं हूँ रूपकुमार।"

"दमयन्ती!" कमल ने कहा, "मैं इसे पहचान गया। यह श्री पिल्ले जी की शिष्या है।"

"हाँ, हाँ" रूपकुमार ने कहा, "उन्होने ही तो हमें यहाँ भेजा है।"

नटवरलाल ने ध्यान से रूपकुमार को देखकर कहा, "रूपकुमार तुम यहाँ!"

"अरे नटवरलाल!" रूपकुमार ने उसे तुरन्त पहचानते हुए कहा, "तुम कहाँ? दिल्ली से कब आए?"

"तीन-चार दिन हुए। मैं तुम से मिलने की सोच रहा था। मैंने तुमसे कहा था मैं पुणे जाऊँगा अवश्य।"

"हाँ, हाँ। अच्छा यह बताओ मिस बाटलीबाय का क्या हाल है?"

बाटलीबाय का नाम सुनकर कमल बोला, "अरे आपका उससे परिचय था क्या? वह तो मर गई।"

"मर गई!" रूपकुमार ने विस्मय से कमल की ओर देखा और पूछा, "आप कमल बाबू हैं ना?"

"हाँ-हाँ आप क्या मुझे पहले से जानते हैं?"

"मैंने आपका नाम व मिस बाटलीबाय का नाम मित्रवर नटवरलाल से पहले सुना था।"

"ओ समझा!" कमल ने कहा और पूछा, "आप क्या करते है?"

"आप एक बेलावादक हैं। बहुत अच्छे वायलनिस्ट।" नटवरलाल ने बीच मे बोलते हुए कहा, "हम लोग जब लखनऊ के मारिस कालिज मे पढ़ते थे तो बेला बजाने मे आप प्रथम उत्तीर्ण हुए थे।"

रूपकुमार ने कमल की ओर देखा और बोला, "नटवरलाल का तबला तो आपने सुना होगा?"

"हाँ, हाँ, दिल्ली जब भी मैं गया हूँ इनका तबला सुना है। और अब यहाँ भी बजाना चाहिए।"

"बिल्कुल ठीक है," रूपकुमार ने कहा, "दमयन्ती का नृत्य आपके नाटक मे होगा, उसी के प्रदर्शन के लिए हम यहाँ आये हैं। अभी श्री पिल्ले भी आते होगे। उनके साथ में मीना जोशी भी आ रही है।"

"वाह, वाह, वाह!" कमल ने कहा, "भाई नटवरलाल, आज तो मजा आ गया! अब जब पिल्ले जी आ रहे है तो तुम्ही तबला साधो और दमयन्ती का नृत्य होने दो।"

नटवरलाल ने झूमकर कहा, "लाओ आज फिर यही हो।"

कमल दौड़कर अन्दर गया और तबले की जोड़ी उठा लाया। दमयन्ती ने पैर मे घुँघरू बाँधे और नृत्य शुरू हो गया। दमयन्ती ने पूरे परिश्रम से नृत्य प्रस्तुत किया और नटवरलाल ने भी अपनी उस्तादी दिखाने में कोई कसर न रखी।

थोड़ी देर बाद वहाँ मीना के साथ श्री पिल्ले पधारे। नटवरलाल अपने तबले मे मस्त रहा और दमयन्ती थिरकती गई। कमल बाबू ने श्री पिल्ले को सादर बैठाया और श्री पिल्ले ने मीना जोशी को तुरन्त संकेत किया कि घुंघरू बाँधकर वह भी प्रस्तुत हो जाय। मीना जोशी के घुँघरू भी छनछनाने लगे और श्री पिल्ले ने जोश मे आकर नृत्य के बोल प्रारम्भ किए। कुछ देर तक नटवरलाल गत को साधे रहा किंतु फिर वह उखड़ गया। दमयन्ती और मीना ने पद-संचालन को रोका और नटवरलाल ने तबले से हाथ हटाकर कहा, "बस अब हाथ नहीं चलता, क्या करूँ अभ्यास छूट गया है।"

श्री पिल्ले ने हँसकर कहा, "हाथ तो आपका मीठा है और गति भी है किंतु इतनी जल्दी आप थक कैसे गए?"

कमल ने हँसकर नटवर की चुटकी ली, "दो साधनाएँ एक साथ नहीं चल सकतीं। आजकल मेरे मित्र की दूसरी साधना चल रही है।"

श्री पिल्ले ने गम्भीर होकर मात्र सिर हिला दिया।

नटवरलाल ने तबले की जोड़ी सामने से चुपचाप खिसका दी और बोला, "लीजिए आप बजाइए।"

श्री पिल्ले ने कहा, "मुझे कहाँ कुछ आता है, आप ही बजाइये।" कमल ने श्री पिल्ले से कहा "मेरे मित्र को अब अधिक मत सताइए और अब गुरुवर आप ही

जलन से वह नलिनी का विवाह उससे नहीं होना देना चाहती जिसे वह चाहती है।"

"नलिनी के पिता का क्या नाम है ? मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

"नलिनी के पिता का नाम है तारकनाथ सान्याल।"

"सान्याल साहब ? शिक्षा विभाग वाले ?"

"हाँ-हाँ," तुम जानते हो क्या उन्हें ?"

"नहीं," नटवरलाल ने बात घुमाई, "वैसे ही एक बार नाम सुना था।"

"किससे ? कमल बाबू से ?"

"नहीं, कमल से इस सम्बन्ध में मैंने बात भी नहीं की है।"

नटवरलाल अन्दर ही अन्दर समझ गया कि नलिनी वही लड़की है जिसके साथ उसके विवाह की बात उसके पिता चला रहे हैं और जिसे पहले से देखने के लिए वह पहुँचा है।

"क्या कमल बाबू हमारे कुछ सहायक हो सकते है ?"

"बिल्कुल नहीं, उससे नलिनी की बात भी मत करना।"

"क्यों ?"

"तुम्हें नहीं मालूम, वह कुछ ऐसा ही गड़बड़ आदमी है।"

नटवर की उत्कण्ठा नलिनी को देखने को तीव्र हो उठी। वह बोला, "मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, मुझे नलिनी को दिखा दो।"

"दिखा दूंगा किन्तु वचन दो कि तुम सहायक सिद्ध होगे।"

"क्यों नहीं सहायक हूँगा। मैंने तुम्हें बताया है न कि सान्याल साहब का नाम मैंने सुना है। अब मैं ऐसे आदमी से बात करूँगा, जिसका उन पर प्रभाव भी हो।"

रूपकुमार प्रसन्नता से फूल उठा और कमल ने दमयन्ती व मीना का नृत्य स्थगित होते ही नटवरलाल को टोका, "इतनी देर से मैं देख रहा हूँ, आप दोनों की बड़ी घुलमिल कर बातें हो रही हैं। यह किसी नये नाटक का प्लाट तैयार हो रहा है क्या ?"

नटवरलाल ने सब कुछ छिपाते हुए कहा, "कुछ नहीं। कुछ निजी बातें थीं।"

रूपकुमार ने नटवरलाल का समर्थन करके कहा, "हम लोग मारिस कालिज के पुराने मित्र हैं, वहीं के दिन याद कर रहे थे।"

नटवरलाल ने बात पलटते हुए कहा, "इन लड़कियों ने तो कमाल का नृत्य प्रस्तुत किया है। मैं सचमुच बहुत प्रभावित हुआ।"

श्री पिल्ले ने प्रसन्न होकर कहा, "यह तो कुछ नहीं है. मंच पर जब पूरा आर्केस्ट्रा बजेगा तब देखिएगा—इनके नृत्य में चार चाँद लग जायेंगे।"

कमल बोला, "पिल्ले जी, आपको मैं कहाँ तक धन्यवाद दूं। आपने मेरे नाटक के लिए बहुत सुन्दर नृत्य तैयार करवाया है। मैं आपको पुरस्कृत करूँगा।"

"मेरा पुरस्कार आपके नाटक की सफलता होगी। मैं तो चारुचित्रा जी के नाते ही आपको यह कला भेंट कर रहा हूँ। चारुचित्रा जी अब स्वयं इतना सक्रिय भाग लेने लगीं तब फिर मेरा भी कर्तव्य हो जाता है

"क्या ?" चारुचित्रा ने उत्कण्ठा से पूछा ।

"विन्सलो होमर समुद्र के तूफानों को चित्रों में उपस्थित करने में जैसा निपुण था वैसे ही हमारे एक शिष्य ने हृदय के तूफान को व्यक्त करने सफलता पाई है ।"

"कौन है वह ?"

"देवकीनन्दन निकष ।"

"निकष ?"

"हाँ, उसने इतना मार्मिक चित्र बनाया है कि मैं विस्मय में पड़ गया ।"

"आप विस्मय में पड़ गए ? ऐसी क्या चीज हो सकती है ?"

"ऐसी चीज है आपकी मूर्ति, उसने आपको अपनी तूलिका से हूबहू उतार दिया है और जब मैंने धीरे पूछा कि चारुचित्रा जी हैं क्या ? तो वह मेरे हाथ से तुरन्त उसे खींच कर बोला—नहीं, नही, चारु नहीं ।"

"मेरी मूर्ति ?"

"हाँ, आपकी ही ।"

ऊंची पहाड़ी की शिखा पर देवी की मूर्ति है जो चट्टान को काटकर वहीं गढ़ दी गई है। मूर्ति का मुख पूर्व की ओर है और मूर्ति से लेकर दूर तक टेढ़ी-मेढ़ी चट्टानों की प्राकृतिक सीढ़ियाँ हैं। प्रातः के समय क्षितिज पर लाल सूर्य उदय हो रहा है और साथ ही पूर्व की ओर से भयंकर तूफान चल रहा है। दूर पूर्व में वृक्षों की डालियाँ टूट गई हैं। सूखी पत्तियाँ इधर-उधर उड़ रही हैं। काले और लाल क्षितिज के निकट एक सरोवर में एक बड़ा कमल और एक कली वायु वेग से कंपित है। उसी सरोवर में एक टूटे फूल का डण्ठल लगा है और उसका फूल तूफान के वेग से शनैः-शनैः ऊपर उठता हुआ देवी की प्रतिमा पर आकर चढ़ गया। एक फूल की अनेकानेक पंखुड़ियाँ उस पहाड़ी की चट्टानों पर खण्डित होकर बिखरी दिखाई दे रही हैं और यहाँ-वहाँ अरुण किरणें उन खण्डित पंखुड़ियों का साक्षात करा रही हैं। पहाड़ी की प्रतिमा अथवा देवी की मूर्ति और कोई नहीं केवल आप हैं, आप ।"

"मैं ! ! !"

"हाँ,···आप ! आप ही। भित्ति-चित्र, दृष्टि से निकटतम है और इसी-लिए···।"

"आपने उस चित्र को कैसे देखा ?"

"मैंने अपने छात्रों को आदेश दिया है कि महीने में एक बार वे सब अपनी कोई स्वतन्त्र कृति दिखाकर करें। इस बार जब मैं कक्षा में बैठ कर ऐसे चित्रों का अवलोकन एव निरीक्षण कर रहा था तो निकष का यह चित्र देखने को मिला ।"

"तो क्या आज ही आपने देखा ?"

"हाँ, आज ही पहले घंटे में ही ।"

चारुचित्रा ने बहुत गम्भीर बनना चाहा किन्तु उसका हृदय-कमल खिल उठा और उसकी लालिमा उसके आनन पर छिटक गयी ।

शर्मा जी ने कुर्सी से उठते हुए कहा निकष क्या आपको

"चारुचित्रा के कपोल लाज से लाल हो गए। उसके मुख से निकला, "शर्मा जी···" इसी क्षण शर्मा जी कमरे से बाहर हो गए। चारुचित्रा ने होंठ दाँतो से चबाए।

निकष कितना अजीब व्यक्ति है—चारुचित्रा अपने कक्ष में बैठकर सोचने लगी। उसने अपने प्रेम को मुझसे कभी भी व्यक्त करने का प्रयास नहीं किया। वह मेरे साथ डा० कल्याणचन्द्र के चिकित्सालय से मेरे घर तक टैक्सी में अकेला लौटा किन्तु उसने एक बात भी ऐसी नहीं की जिससे उसके अन्दर की भावना व्यक्त होती। कितना संयमी और सन्तुलित व्यक्ति है ! अभी केवल एक वर्ष ही उसे चित्रकला सीखते बीता है किन्तु इतनी प्रतिभा जागृत हो गई कि मानस में रख कर ही उसने मेरा प्रतिमा-चित्र बना दिया। अवश्य ही वह कोई पुराना चित्रकार है।

चारुचित्रा भावना मे अधिक बह गई और उसके मुँह से निकला, "निकष ! यदि मैं तुम्हें प्राप्त कर पाती···"

उसने उसी दिन सन्ध्या समय निकष से मिलना चाहा। वह पुनः सोचने लगी—माँ ने उनका अपमान किया। कितना तीखा अपमान ! उन्होंने मेरी मर्यादा की रक्षा की। मेरा उपचार करवाया और मुझे घर तक पहुँचाया, किन्तु बदले में मेरी माँ ने उनके सामने कहा, यह व्यक्ति जब उस दिन तुम्हारे साधना कक्ष में आया था तभी मुझे कुछ शंका हो गई थी कि कहीं दाल में कुछ काला न हो किन्तु···? किन्तु वे एक शब्द भी नहीं बोले। चुपचाप वहाँ से चल दिए। अन्याय—निश्चय ही उन पर अन्याय हुआ है। मैं निकष जी से क्षमा माँगूँगी···।

सन्ध्या होते ही वह नारायण पेठ की किरण विला कोठी में पहुँची। निकष ने चारुचित्रा को देख कर साश्चर्य पूछा, "आप ! आप यहाँ, चारुचित्रा जी !"

"हाँ मैं। उस रात को मेरी माँ ने आपको जिन कटु शब्दों से अपमानित किया मैं उसके लिए क्षमा माँगना चाहती हूँ।"

"कौन सी बात ? कौन से शब्द और कैसा तिरस्कार ?"

"नहीं, मैं जानती हूँ मेरी माँ ने ठीक नहीं किया। आप चुपचाप वहाँ से चले आए। भोजन भी नहीं किया।"

"आप भी बीती हुई बातों को लेकर चिन्तित हो रही है। घर के बड़े-बूढ़े यों बका ही करते है। आप बैठिए···"

चारुचित्रा के मुख पर प्रसन्नता की रेखा खिंच गई और वह कुर्सी पर बैठ गई। उसने अब प्रसंग बदला—

"पद्मा कहाँ है ?"

"वह आजकल गुन्टूर गई हुई है।"

"गुन्टूर में कौन है ?"

वहाँ उसके पिता रहते हैं पदमा का विवाह तय हो गया है इसीलिए उसे

बुला लिया है।"

"अच्छा!" चारुचित्रा ने उत्कण्ठा से पूछा, "लड़का क्या करता है?"

"लड़का सात सौ रुपये पर सरकार के एक कार्यालय में बाबू है।"

"समय को देखते तो बुरा नहीं है किन्तु पद्मा ने जो इतने दिनों तक नृत्य की साधना की है उसका मूल्य वे लोग कुछ आँक पाएँगे अथवा नहीं।"

"सुना तो है लड़का कला प्रेमी है, किन्तु बेचारा सात सौ रुपये में अपना घर सम्हालेगा या कला को सींचेगा।"

"यही तो मैं सोच रही हूँ, पद्मा को तो कोई ऐसा घर मिलता जहाँ उसका मूल्य होता।"

"क्या करें, पंद्रह सौ रुपये तो इसी लड़के से विवाह करने में खर्च हो रहे हैं। बड़े घर में ब्याहने के लिए और भी दहेज चाहिए।"

"भगवान जाने दहेज की प्रथा भारत से कब उठेगी। इसके लिए सरकार को कुछ करना चाहिए।"

"सरकार ने तो बिल पास कर दिया है और वह कर ही क्या सकती है? और फिर हर काम के लिए सरकार ही का मुँह तका जाय यह कहाँ तक उचित है? जब तक हमारा और आपका नैतिक उत्थान नहीं होता तब तक सरकार कुछ भी करे, सब बेकार है।"

चारुचित्रा कुछ चिन्तामग्न होकर चुप रही। निकष भी कुछ क्षण को चुप हुआ। चारुचित्रा ने निकष से उसके शोध विषय पर बात प्रारम्भ की। उसने पूछा, "आपकी थीसिस का क्या हाल है? कितना कार्य बाकी है उसमें?"

"उसका कार्य जितना होना चाहिए था, नहीं हो पाया। मैं कुछ अन्य कार्यों में ऐसा फँस गया कि उसकी गति में अवरोध उत्पन्न हो गया।"

"अवरोध तो उत्पन्न होना स्वाभाविक है। एक व्यक्ति क्या-क्या करेगा।" चारुचित्रा मुस्कराई और बोली, "दो-तीन साधनाएँ एक साथ चलाना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।"

"क्या तात्पर्य है आपका?" निकष ने आँख से आँख मिलाई; और चारुचित्रा ने पलकों को गिराकर मंद मुस्कान से कहा, "साहित्य की साधना, चित्रकला की साधना और···और···"

"···हाँ, और?"

"और कुछ नहीं, मेरा तात्पर्य है आपकी थीसिस में अब कितना कार्य रह गया है?"

"आपने बात बदल दी, किन्तु मैं मानूँगा नहीं। कहिए न और···"

"अच्छा कह दूँगी, पहले यह बताइए कि आपकी थीसिस कब पूरी हो रही है?"

"उसमें अभी बहुत देर है। कारण यह कि उसका कार्य केवल भारत में रहकर ही पूरा नहीं होना है मुझे विदेश जाना होगा

विदेश? कहाँ किस देश में?

"विशेषतया बर्लिन में रहूँगा, किन्तु रोम, पेरिस, स्टाकहोम और एथेन्स आदि नगरों में भी जाना होगा।"

"स्टाकहोम में क्या है ?"

"स्टाकहोम का महत्त्व नोबेल प्राइज का केन्द्र होने से बहुत बढ़ गया है। वहाँ एल्फ्रेड नोबेल मेमोरियल लाइब्रेरी में कुछ ऐसी पुस्तकें हैं जिनसे मुझे बहुत से तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।"

"हाँ, एल्फ्रेड नोबेल भी अपने जीवन में एक महान कार्य कर गए है, किन्तु एक बात खटकती है।"

"कौन-सी ?"

"नोबेल पुरस्कार के लिए शायद नियम बना है कि जिस पुस्तक पर भी वह पुरस्कार प्रदान हो, वह यूरोपीय भाषा में ही प्रस्तुत हो। यह बात उचित नहीं। परोक्ष में उन्होंने यूरोप की भाषाओं को अथवा यूरोप के साहित्य और संस्कृति को ही मान्यता दी है।"

"मेरे विचार से नोबेल पुरस्कार के समकक्ष ही भारत में भी एक समिति स्थापित की जाय जिसमें सम्पूर्ण एशिया की भाषाओं के माध्यम से प्रस्तुत साहित्य पर विचार किया जाय।"

"वाह, इससे बढ़कर क्या योजना हो सकती है, किन्तु सम्पूर्ण विश्व की समृद्ध भाषाओ को क्यो न मान्यता दी जाय ? आज हम नोबेल पुरस्कार के जिस अधिनियम से असन्तुष्ट होकर सम्पूर्ण एशिया के लिए सोच रहे हैं, कल हमारी योजना से अतृप्त होकर अन्य कोई तीसरी संस्था को जन्म दे सकता है।"

"किन्तु नहीं, घर में दिया जलाकर मन्दिर में दीया जलाना चाहिए, ऐसा न हो कि हम अँधेरे में ही रह जाएँ। मन्दिर में दीया जलाने वाला तो दूसरा भी हो सकता है।"

"हाँ ठीक है। मेरे विचार से कुछ निश्चित काल के लिए एशिया की भाषाओं को ही मान्यता प्राप्त हो और फिर उसके बाद सम्पूर्ण विश्व के लिए द्वार खोल दिया जाय।" निकष ने योजना का समर्थन करते हुए पूछा, "यह केन्द्र कहाँ हो ?"

चारुचित्रा बोली, "अपने ललित कला महाविद्यालय के साहित्य विभाग में।"

"हाँ-हाँ ठीक। जहाँ एक ओर भारत की पुरानी भाषाओं के साहित्य पर शोध कराने की योजना चलती रहेगी वहीं यह कार्य भी होता रहेगा। मेरे विचार से विश्व की प्राचीनतम भाषाओं पर भी यदि कुछ कार्य भारत में हो तो अति उत्तम होगा।"

"विश्व की प्राचीन भाषाएँ···?"

"हाँ, जैसे हिब्रू, ग्रीक, लैटिन, अरबी, पालि, मंगोल आदि।"

"अच्छाऽऽ समझी, किन्तु इतना बड़ा कार्य उठाने वाला व्यक्ति भी तो चाहिए।"

"लक्ष्य करने से मार्ग और साधन भी उपलब्ध हो जाते हैं। मेरे विचार से, मैं जब विदेश जाऊँ तो एक सूची ऐसे विदेशी ग्रन्थों की भी बनाता लाऊँ जिन पर अभी शोध का काय किया जा सकता है

"फिर तो कहना ही क्या।"

"और एक चीज छूटी जा रही है।"

"कौन-सी ?"

"भारतीय भाषाओ के पुष्ट साहित्य-पराग का सकलन।"

"हाँ वह भी साहित्य विभाग में होना चाहिए। मैंने इस क्षेत्र में कुछ काम प्रारम्भ किया है।"

"आपने ! यह कब से ?"

"आपके शोध के विषय को जब से सुना है तभी से मुझे इस प्रकार कार्य करने का संकेत मिला था। क्षमता तो मैं नहीं रखती, क्योंकि मैं केवल एक तुच्छ चितेरी हूँ किन्तु मेरे पिता जी ने कुछ पुस्तकों की सूचियाँ बनाई थीं, उनकी डायरी मेरे हाथ लग गई है।"

निकष ने विस्मय भरी दृष्टि से चारुचित्रा को ऊपर से नीचे तक देखकर कहा, "रगों के मोहक शृंगार से काव्यमय भावनाओ को रूप देने वाली चितेरी विचार और दर्शन के सघन वनो मे कैसे विचरण करने लगी !"

"वैसे ही जैसे निर्जन वन में तप करने वाला विश्वामित्र-सा व्यक्ति एक रमणी-सलाप के लालित्य पर आसक्त हो गया।"

निकष ने तिरछी दृष्टि डालकर पूछा, "यह किस छन्द में कविता है ?"

"यह रीतिकालीन छन्द नहीं है। यह तो आधुनिक कविता है। आज की कविता के छन्दो से वह व्यक्ति अनजान हो जो साहित्य का डाक्टर होने जा रहा है, ऐसी आशा तो मैं नहीं कर सकती।"

निकष जोर से हँसा और बोला, "ठीक है, ठीक है। आज के प्रतिमानो से तुम्हारी भाषा खरी कविता है। मैं समझ गया, कविता का छन्द और उसका अर्थ भी।"

चारुचित्रा ने धीरे से कहा, "मुझे सब पता है। बड़ी दूर की खोज अपने साथ रखती हूँ।"

"मानता हूँ।" निकष ने कहा और वह एकटक चारुचित्रा को देखने लगा।

चारुचित्रा ने आँखें चार कर पूछा, "क्या देख रहे हैं आप ?"

"कुछ नहीं, भगवान को सराह रहा हूँ और···।"

"और ?"

"और इस विज्ञान को समझने का प्रयास कर रहा हूँ कि···।"

"किस विज्ञान को ?" चारुचित्रा ने भोलेपन से पूछा।

"यही कि जिस रूप को इतनी बार देख चुका हूँ उसको मैं एकटक क्यों देखते रहना चाहता हूँ।" निकष ने महीन चुटकी ली।

"निकष," चारुचित्रा ने साँस छोड़ी।

"देवी," निकष ने धीरे से कहा, "प्रकृति का कुतूहल तो देखो। शुभ्र नीले में चाँदनी आदि सृष्टि से मुस्करा रही है किन्तु आज तक चकोर उसे देखने के भी तृप्त न हुआ वह थोड़ा और तन्मय हुआ चारु तुम क्या देखती हो वह

तुम नहीं समझ पाती और मैं क्या देखता हूँ मैं भी नहीं समझ पाता।"

वे दोनों ही हँसे और चारुचित्रा बोली, "मानव को अभी बहुत कुछ समझना और सीखना बाकी है। देखिए न, यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि मैं आपको ही नहीं समझ पाई।"

"मुझे ?"

"हाँ," चारुचित्रा कुछ जोर से हँसी।

निकष मन्द मुस्कान से उसको देखता रहा और वह अपनी हँसी रोक कर बोली, "निकष जी, एक बात कहूँ, मानिएगा ?"

"हूँ, कहो ना। आज्ञा दो मुझे।"

"आज्ञा ! मैं तो निवेदन करना चाहती थी।"

"अच्छा तो पहले निवेदन करने के लिए प्रार्थना-पत्र दीजिए।"

"निवेदन प्रस्तुत करने के लिए प्रार्थना-पत्र दूँ या प्रार्थना करने के लिए निवेदन-पत्र दूँ !"

"जो अधिक सुविधाजनक हो।"

"सुविधाजनक तो आज्ञा-पत्र ही होता है, इसलिए अब आज्ञा ही दूँगी।"

"आज्ञा, आज्ञा ही दो। कुछ आगे का कार्य तो चले।"

"हाँ, तो आप वह चित्र निकालिए जो आपने 'हृदय का तूफान' शीर्षक से बनाया है।"

"वास्तविक चित्र यदि आपको देखना हो तो हनुमान की तरह मुझे छाती चीरनी पड़ेगी।"

"मैं छाया मात्र से ही वास्तविकता को परख लेती हूँ।"

"यदि छाया मात्र से कार्य चल सकता है तो क्या अब भी परखने की आवश्यकता है ? मैं समझता हूँ चित्र देखने के बाद भी फिर कुछ परखने को रह जायगा।"

"आप मुझे शंका की दृष्टि से देख रहे हैं ? मैं तो केवल चित्र देखने के लिए ही बात बना रही थी। बुरा मान गए ?"

"नहीं, कैसी बात करती हैं। मैं सभी चित्र दिखाता हूँ।" निकष ने लकड़ी के एक बड़े बक्स से शीशे में जड़ा हुआ एक चित्र निकाला। चारुचित्रा ने अपनी बाँहें फैला दी। उसने दिल भरकर उस चित्र को देखा और कसकर अपने वक्ष से चिपका लिया।

निकष ने कहा, "आपको अपने से बड़ा प्रेम है।"

"नहीं, अपने से नहीं। आपकी कला से। इतनी सुन्दर भावाभिव्यक्ति तो असितकुमार हलधर या खास्तगीर ही दे पाए है।"

"मेरी हँसी उड़ाने में आपको मजा आता है। कहाँ कलाकाश के वे जगमगाते तारे और कहाँ मैं मिट्टी के तेल का टिमटिमाता दीया !"

"दीया ! किन्तु पथ को आलोकित करने के लिए दीया जितना काम आता है, नभ के तारे नहीं।"

देखि

"देवि नहीं, मुझे चारु कहो । चारु से ही सम्बोधित करो।"

"चारु !"

"निकष !" चारुचित्रा ने लम्बी साँस लेकर कहा और उपकृत नेत्रों से निकष को देखा । उसने अपने वक्ष से हटा कर उस चित्र को मेज पर रखा । निकष और चारुचित्रा एक दूसरे को कुछ क्षण तक अपलक देखते रहे और चारुचित्रा ने प्रश्न किया—

"आपने चित्रकला किस मन्तव्य से सीखना प्रारम्भ की ?"

"तुम्हे जीतने के लिए।"

"हटिए भी, ठीक-ठाक बताइए ना ?"

"अच्छा तो सुनो···" निकष पास ही पड़ी तिपाई पर बैठ गया और आगे बोला, चित्रकला एक मूक भाषा है । चित्र और शिल्प के टुकड़े प्रायः वे बातें बता देते हैं जो आलंकारिक भाषा भी नहीं बता पाती । पुरातत्व के विद्यार्थी जिस काल की भाषा को पढ नहीं पाते उस काल के शिल्प को देखकर उसका समय और काल निर्धारित कर देते हैं।"

चारुचित्रा एकटक निकष को देखती रही और निकष आगे बोला—

"शोध करने वाले विद्यार्थी यदि समय-समय की कला प्रवृत्तियों से भी अभिज्ञ हो तो उनको काल का माप उसके सहारे से मिल सकता है । मैंने चित्रकला, चित्रकला सीखने के विचार से जितनी नहीं सीखी उतनी उसके इतिहास, प्रकार व शैली को समझने के लिए सीखी । पुरानी भाषाओं के अक्षर प्रायः नहीं बता पाते कि वे किस देश व काल के हैं किन्तु उसी के बगल में चित्रित छोटी-सी पत्ती, बेल या रूपाकृति यह बता देती है कि वे किस समय की रेखाएँ हैं । उस समय वहाँ कौन भाषा थी । हम केवल खिड़की और द्वार के प्रकार को देख कर ही कह देते हैं कि अमुक बंगला किसी अंग्रेज का बनवाया हुआ है।"

"ठीक है," चारुचित्रा ने कहा, "चित्रकला तो मौन भाषा है । वह पहले समझी जाती है और फिर पढ़ी जाती है।"

निकष ने चारु की ज्ञान-पिपासा को समझते हुए अपनी बात आगे कही, "पुराने शिलालेखों मे तीन भाषाएँ प्रमुख रूप से मिलती हैं : संस्कृत, पालि, अर्धमागधी । बुद्ध और जैन धर्म-प्रचारकों ने क्षेत्रीय भाषाओं के महत्त्व को समझा था और उन्ही ने एक श्लोक को तीन स्थानों पर तीन भाषाओं में खुदवाया । यह भाषाएँ साधारण रूप से देखने में समान लगती हैं इसलिए इनके अन्तर को समझने के लिए केवल दो मार्ग रह जाते हैं । प्रथम तो तीनों ही भाषाओं से पूर्व परिचय और द्वितीय मार्ग है शिल्पकला या चित्रकला के ऐतिहासिक आधार पर उसके अगल-बगल की पच्चीकारी से उसके क्षेत्र का काल-निर्धारण करना । क्षेत्र और काल पकड़ में आ जाने से उस काल की भाषा भी पकड़ में आ जाती है और वह विशेषज्ञो द्वारा पढ़वा ली जाती है।

चारुचित्रा चुपचाप निकष के पाण्डित्य-प्रवाह में बहती गई और निकष ने आगे कहा 'यह तो हुई तीन भाषाओं की बात किन्तु जब एक ही भाषा के कई रूप दिखाई देते हैं तो उनके क्षेत्र का और भी कठिन हो जाता है हिन्दी के कई रूप मिलते

तो जाओ; देख आओ किन्तु जल्दी ही लौटना पड़ेगा।"

पद्मा को अपने निकष मामा का पूरा विश्वास था कि पत्र लिखने पर वे अवश्य ही उसे ले जाएँगे। उसने प्रसन्न होकर कहा—आपकी अनुमति मिल चुकी है, अब आगे का प्रबन्ध मैं कर लेती हूँ।

पद्मा ने उसी दिन निकष को पत्र लिखा कि अमुक तारीख को शिवशंकर का नृत्य पुणे में होने वाला है। वह उसे देखना चाहती है और पुणे आना चाहती है।

निकष पद्मा का पत्र पाकर अपने को रोक न सका और उसे लेने के लिए गुण्टूर पहुँचा। जब गाड़ी पर पद्मा बैठी तो निकष ने एक पत्रिका उसके हाथ में लाकर दी। कुछ दूर तक निकष ने पद्मा से उसके घर और विवाह के सम्बन्ध में बातें की और फिर वह स्वयं समाचार-पत्र के पन्नों में उलझ गया। पद्मा अपनी पत्रिका के साथ तल्लीन हुई। उसने पत्रिका में एक शीर्षक पढ़ा—'मध्यमवर्गीय परिवार और कला'।

पद्मा ने उस लेख को पढ़ना प्रारम्भ किया—

मध्यमवर्गीय परिवारों में कला का जितना गला घोंटा जाता है उतना कहीं भी नहीं। पाँच-सात सौ रुपया पाने वाले व्यक्ति अधिकतर घर-गृहस्थी और चूल्हा-चक्की के चक्कर में घूमते रह जाते हैं?

कोल्हू में घूमने वाले बैल की आँख पर तो पट्टी बँधी रहती है इसलिए उसे चक्कर नहीं आता किन्तु इस बैल को चारों ओर की वस्तुएँ चलती दिखाई देती हैं। फलतः उसको दिन में तीन बार चक्कर आता है। मध्यमवर्गीय परिवारों का मानसिक स्तर प्रायः ऊँचा होता है किन्तु आर्थिक सामर्थ्य और साधन का अभाव रहता है। यही दशा मनोरंजन के क्षेत्र में भी होती है और इसीलिए पुरुष को सस्ता और सुलभ मनोरंजन मात्र स्त्री-सहवास दिखाई देता है। फलतः एक सीमित अन्तराल से जो बच्चे पैदा होने शुरू होते हैं तो फिर उनकी संख्या दर्जन तक पहुँचने लगती है।

समाज के पौधे में परिवार एक डाली होती है और इस डाली के फूल अथवा परिवार के बच्चे जो डाली की शोभा गिने जाते हैं, कुछ समय बाद अधिक होने पर बोझ बन जाते हैं और वह डाली जो वायु के मधुर झोंके लेने के लिए धरती से ऊपर उठती है वही झुक कर कीचड़ में सनकर अपना अस्तित्व और सौन्दर्य खो देती है।

संसार में जितनी भी फैक्ट्रियाँ हैं उन्हें यदि चालित किया जाता है तो वे वस्तु विशेष के उत्पादन (पैदाइश) तक ही सम्बन्ध रखती हैं किन्तु स्त्री के रूप में यह ह्यूमन फैक्ट्री ऐसी है जिसे अपनी उत्पादित वस्तुओं को अपने ही चारों ओर समेटे रखना पड़ता है और सभी का लालन-पालन और भरण-पोषण भी अनेक वर्षों तक करना पड़ता है।···

इस युग में मध्यमवर्गीय विशेषतः निम्न मध्यमवर्गीय समाज के लिए सबसे अधिक संघर्षमय जीवन है। अतः जहाँ मनुष्य के जीवित रहने का और आवश्यकता भर तन ढाकने का प्रबन्ध होना सम्भव नहीं हो वहाँ कला कहाँ पनप सकती है; यह प्रत्यक्ष है। कला का जीवन प्रगति और विकास करने में ही है अन्यथा विराम तो की
कर लेने के समान ही है···

'आत्महत्या···' पद्मा सोचने लगी। पाँच-सात सौ रुपया पाने वाले परिवार अधिकतर चूल्हा-चक्की के चक्कर में घूमते रहते हैं···पद्मा ने पत्रिका बन्द करके एक ओर रख दी और अब वह गम्भीर चिन्तन में पड़ी।···मध्यमवर्गीय परिवारों में कला का गला जितना घोटा जाता है उतना कहीं भी नहीं···साधन का अभाव···फूल ही बोझ बन जाते हैं···स्त्री के रूप में यह ह्यूमन फैक्ट्री···सस्ता मनोरंजन···स्त्री मनोरंजन का साधन···वायु के मधुर झोंके में झूलने वाली डाली मिट्टी की कीचड़ मे सनकर अपना अस्तित्व खो देती है···विराम···विराम···कलाकार की आत्महत्या ··· आत्महत्या···आत्महत्या !!!

नहीं-नहीं, मैं अपनी आत्महत्या नहीं करूंगी। मैं कला की हत्या नहीं करने दूंगी। मैंने जिस कला को इतनी कठिन साधना से प्राप्त किया है उसका गला नही घुटने दूंगी, मैं क्यों न ऐसे व्यक्ति को पाऊँ जो मेरा सम्मान कर सके। जो कला को जीवन दे सके।···शिवशंकर की नृत्य मंडली में 10 लड़कियाँ है, क्या 11 नही हो सकतीं ? अवश्य हो सकती है। अहा, कितना यशपूर्ण जीवन है उनका। जहाँ भी जाती हैं उनके नाम बड़े-बड़े अखबारों में छापे जाते है। शहर में पोस्टर लगाए जाते है। और ···और क्या नहीं है उनके पास ! मैं इस कोल्हू में क्यों अपनी गर्दन दूं। मेरे पास कोई ऐसी कला न होती तो बात दूसरी थी। मैं शिवशंकर से अवश्य मिलूंगी, अवश्य ··· अवश्य। और हाँ···नटवरलाल कहते थे कि बम्बई की फिल्म कम्पनी में कन्ट्रैक्ट दिला देंगे। शिवशंकर ने ठुकराया तो नटवर को ही पकड़ूंगी। फिर चाहे कुछ भी हो।

"मैं कहती हूँ, नलिनी का विवाह होगा तो बस दिल्ली में। लड़की का ब्याहना शहर के बाहर ही अच्छा होता है।" कामिनी ने अपने प्रभुत्व को जमाते हुए कहा और सान्याल साहब बोले, "आखिर रूपकुमार से तुम्हें इतनी घृणा क्यों है ? इतना अच्छा लड़का है।"

"आप तो सठिया गए हैं, जवान लड़की को इतनी छूट आपने दे रखी है कि घर की नाक कब कट जाए इसका कोई ठीक ही नहीं है।"

"घर की नाक रखने वाली यदि तुम्हीं होती तो फिर मैं परेशान क्यों होता, नलिनी को प्रोत्साहन तुमने दिया है, उसको बढ़ावा तुम्हारी ओर से ही मिला है।"

कामिनी क्रोध से कॉप कर बोली, "मैंने प्रोत्साहन दिया है ? आपकी लाडली संगीत की पण्डित बन रही है और रूपकुमार को मास्टर रखा आपने, बढ़ावा मैं दे रही हूँ ? मैंने आपकी कौन सी नाक कटवा दी है ?"

"मैंने मास्टर नहीं रखा।"

"फिर क्या मैंने···?"

"हाँ तुमने, मैं तो नलिनी को नृत्य सिखला रहा था। श्री रामास्वामी पिल्ले ऊँचे स्तर के कलाकार और चरित्रवान व्यक्ति थे, अब तक नृत्य का कोर्स पूरा भी हो जाता। तुमने ही जिद करके ललित कला विद्यालय से नाम कटवा दिया और···"

देखिए सारा आरोप मेरे ऊपर ही थोपिएगा तो ठीक न होगा कामिनी ने

चीखकर कहा और आँसुओं को आँचल से पोछती हुई सिसक कर बोली, "आप तो मेरी जान के पीछे पड़ गए है। आज ही संखिया न खा ली तो बात क्या!"

"संखिया खाने की क्या बात है, मैं तो सीधी-सीधी बात कर रहा था और तुम लड़ने लगी।"

"मैं क्यों लड़ने लगी, घर की नाक कटवाने वाली आवारा आपने कहा।"

"मैंने आवारा का नाम भी नही लिया।"

"नाम न लेने से ही क्या होता है, आपका तात्पर्य यही है। आपने तो मुझे ही आवारा कहा है।"

"कहा है तो क्या झूठ? इतने दिन से मैं खून के घूंट पीता चला आ रहा हूँ और तुम समझती हो कि मैं मूर्ख हूँ; मैं बता देना चाहता हूँ कि···"

"बस चुप रहिए, मैं आपकी एक बात भी सुनने को तैयार नही। आज से न तो आप मेरे बीच में कुछ बोलें और न नलिनी के बीच में मैं कुछ बोलूंगी।"

"खैर, तुमसे तो मैं बाद मे भी निपट सकता हूँ, अभी प्रश्न है नलिनी का, मैं रूप से उसका विवाह करता हूँ, तुम्हें क्या आपत्ति है?"

"मुझे कुछ नही था, आप चाहे किसी भांड़ से उसका विवाह कर देते, किन्तु मैं अपने हाथो से दिल्ली पत्र डाल चुकी हूँ, वहाँ से उत्तर भी आ गया है कि लड़का शीघ्र ही नलिनी को देखने आ रहा है। वह आजकल में आता भी होगा। रूपकुमार से विवाह करना था तो पहले ही मुझसे खुलकर कह देते। अब यदि उसके आने पर उसे हम लौटा देंगे तो मैं कहाँ रहूँगी? सज्जनता की कोई मर्यादा तो रखनी पड़ेगी ही।"

"मैंने एक बार तुमसे कहा था कि नलिनी का विवाह रूप से ही कर दूंगा किन्तु तुम सुनो तब न! साफ बात यह है कि तुम उससे जलती हो, उसने तुम्हारा भण्डा फोड़ा है और तुम उसे अब उसके प्रिय से गाँठ नही बाँधने देना चाहतीं।"

"तमंचा उठा कर मुझे गोली से मार दो, मैं बात पीछे लांछन नहीं सुन सकती। उसने मेरा भण्डा फोड़ा है।" कामिनी ने दाँत पीसे और ताना देकर बोली, "वह स्वय बड़ी भोली है ना। हे भगवान! मुझे अपने यहाँ बुला लो, अब मुझसे अत्याचार नही सहा जाता।"

"भगवान ऐसे नहीं सुनेंगे, तुमने मेरी नहीं सुनी तो तुम्हारी भी कोई नहीं सुनेगा। जाओ कुएँ में कूद पड़ो।"

कामिनी घायल सिंहिनी सी गुर्रा कर बोली, "ये ही तो आप चाहते हैं। पुरानी औरत समाप्त हो तो नई एक फिर आए। मैं अब ऐसा नहीं होने दूंगी। मेरे जीवन का सुख और चैन आपने समाप्त कर दिया है, मैं आपके सुख को···।"

"कामिनी?" सान्याल साहब ने डाँट कर उसका मुँह बन्द करना चाहा किन्तु वह तत्क्षण चुप होकर फिर बोली, "आज दोनों लड़कियाँ इस समय घर पर नहीं हैं, तो आप मेरा गला घोंट देना चाहते हैं?"

'बहुत दिनो से मैं अपनी छाती पर मूग दलता रहा था सौगन्ध खाओ कि आज से तम अपना कोई भी सम्बन्ध उस से नहीं रखोगी

कामिनी ने पैंतरा बदल कहा, "कौन मक्कार ?"

सान्याल साहब ने कहा, "तुम्हारा गला सचमुच घोट दूंगा। तुमने मेरे क्रोध को जाना नहीं है। मुझसे कोई भी बात अब छिपी नहीं है। बात घुमाने का प्रयास मत करो।"

कामिनी ने देखा, सान्याल साहब सचमुच दैत्य बन कर उसके सामने खड़े हैं। वह घबड़ा गई और धीरे से बोली, "मैं सौगन्ध खाती हूँ कि आज से मैं उससे कोई भी सम्बन्ध न रखूंगी।"

द्वार पर किसी ने दस्तक दी और सान्याल साहब ने बाहर झाँका। एक नवयुवक शानदार सूट-बूट और नाइट कैप पहने, हाथ में पतली छड़ी लिए खड़ा था। सान्याल साहब ने पूछा, "आपका नाम ? आप किससे मिलना चाहते हैं ?"

"सान्याल साहब का मकान तो यही है ना, मैं दिल्ली से आ रहा हूँ।"

दिल्ली का नाम सुनते ही सान्याल समझ गये कि वह कामिनी द्वारा आमन्त्रित लड़का है। उन्होंने क्षण भर उसे बाहर रुकने को कहा और अन्दर जाकर कामिनी से बोले, "लो दिल्ली वाले मेहमान आ गए।"

दिल्ली वाले मेहमान का आना सुन कर वह अपना सारा रोष खो बैठी और सतर्क होकर बोली, "उन्हें बाहर कमरे में बिठलाओ। और हाँ, यह तो बताइए लड़का स्वयं आया है क्या ?"

"सम्भवतः लड़का स्वयं ही आया है। लड़के का क्या नाम है ? अच्छा मैं अभी नाम पूछ लेता हूँ।" सान्याल साहब बाहर की ओर चले।

"लड़के का नाम है नटवरलाल।" कामिनी ने बताया और वह कपड़े बदलने को एक ओर गई।

सान्याल साहब ने नवयुवक को बिठलाते हुए नाम पूछा। वह नटवरलाल ही था। सान्याल साहब ने देखा, लड़का देखने में अच्छा है और सम्पन्न दिखाई पड़ रहा है। मन ही मन सोचा—नलिनी का विवाह यदि इससे भी हो जाए तो कोई बुरा नहीं !

कामिनी साड़ी सम्हालते हुए नटवरलाल के पास आई और बोली, "आपकी ही प्रतीक्षा में हम लोग थे। आपको बड़ा कष्ट हुआ। मैंने तो आपके पिता को पत्र लिखा था कि वे यदि कहें तो लड़की को दिल्ली में ले जाकर दिखला दिया जाय; किन्तु यह उनकी सज्जनता ही है कि उन्होंने हम लोगों को कष्ट न देकर आपको कष्ट देना उचित समझा।"

"कष्ट की क्या बात है, इसी बहाने मेरा थोड़ा घूमना हो गया। ये तो मैंने ही लिखवाया था कि मैं पूना चला जाऊँगा।"

"क्यों नहीं, भले लड़के ऐसे ही होते हैं, जो दूसरों के दर्द को भी समझते हैं।"

नटवरलाल मुस्कराया और कामिनी जलपान का प्रबन्ध करने अन्दर लौटी। सान्याल साहब ने बातें शुरू कीं, "आपके यहाँ सम्भवतः व्यापार होता है।"

"हाँ रेडीमेड कपड़े का थोक व्यापार हमारे यहाँ होता है।"

आप भी उसी में लगे रहते हैं कि केवल आपके पिता ही

"दोनो ही को काम देखना पड़ता है, व्यापार का स्तर बड़ा है इसलिए हमारे यहाँ बिक्री मैनेजर और कई एजेन्ट भी काम देखते हैं।"

सान्याल साहब ने मन ही मन सोचा, घर तो अमीर है और अब कामिनी भी कहना मानकर अपना सिर झुका चुकी है, क्यो न उसी के मन की बात कर दी जाय। कामिनी इसी क्षण जलपान की प्लेटें लेकर बाहर आई। नटवरलाल ने संकोच से दो-एक नमकीन के टुकड़े उठाए। पहला ही कौर मुँह में गया होगा कि नलिनी और वीणा उस कमरे में बाहर से आईं। नटवरलाल ने ध्यान से नलिनी को देखा और तत्क्षण ही नलिनी को देखा और तत्क्षण ही नलिनी अन्दर चली गई। वीणा वहीं रुक गई और कामिनी ने वीणा से कहा, "···ये देखो तुम्हारे जीजा जी हैं।" वीणा ने जीजा जी से नमस्ते की और नये नवेले जीजा ने उसका हाथ पकड़कर पूछा, "कहाँ गयी थीं अभी ?"

"दीदी की एक सहेली के घर।"

नटवरलाल ने मिठाई का एक अदद वीणा के हाथ में देकर कहा, "इसे खा लो।" वीणा ने तुरन्त खा लिया। नटवरलाल ने उसे दूसरा अदद पकड़ा कर पूछा, "अच्छा इसे क्या करोगी बताओ ?" वीणा ने ढीठ होकर कहा, "दीदी को दूँगी ?"

"अरे, वाह, तुम तो बड़ी समझदार हो, जाओ दे आओ।"

कामिनी जोर से हँसी और बोली, "दीदी को मिठाई देकर कहना कि वह यहाँ कुछ देर के लिए आ जाए।"

नलिनी बगल के कमरे में द्वार से लगी खड़ी थी। वह अपनी माँ और भावी पति की बातें सुनने के लिए छिपी खड़ी थी। वीणा जैसे ही द्वार पर आई उसने नलिनी को देखकर कहा, "दीदी यह लो इमरती है, इसे खा लो। जीजा जी ने दी है।" नलिनी ने क्रोध में भर कर इमरती पर तुरन्त हाथ मार कर उसे भूमि पर गिरा दिया। वीणा ने कहा, "जीजा जी से भेंट नहीं की, और लड़ाई शुरू हो गई ?" नलिनी कुछ नहीं बोली। नटवरलाल ने देखा, इमरती भूमि पर गिरी पड़ी है। कामिनी ने अपने होंठ चबाए और सान्याल साहब ने ध्यान से स्थिति को समझने का प्रयास किया। नटवरलाल ने वीणा की बात का सहारा लेकर कहा, "वीणा, यहाँ आओ, तुम्हारी दीदी ने लड़ाई इसलिए शुरू की कि मैं तो प्लेटें लगाकर खा रहा हूँ और उसके लिए केवल एक मिठाई मैंने भेजी। यह लो यह पूरी प्लेट ले जाओ।" कामिनी नें हँसते हुए नटवरलाल की बात पर पालिश करते हुए कहा, "आप बिलकुल ठीक समझे। आप प्लेट अपने पास ही रखे। मैं अभी नलिनी को आपके सामने भेजती हूँ।" वह दूसरे कमरे में गई और फुसफुसाकर बोली, "जल्दी कमरे में चली जा, बेचारा बुला रहा है। देख तो आँख खोलकर, हीरा सा लडका है।" नलिती ने जानबूझकर कुछ जोर से कहा, "मैंने जब कह दिया था कि अन्य किसी से विवाह नहीं करूँगी तो फिर इन्हें क्यों बुलाया गया ?" इसके पूर्व कि कामिनी कुछ बोलती सान्याल साहब ने अपने स्थान पर बैठे-बैठे जोर से कहा, "नलिनी! ···यह समय तर्क का नहीं हैं। दो क्षण के लिए चली आओ।" पिता की गम्भीर वाणी में आज्ञा पाकर नलिनी की मन स्थिति डाँवाडोल हो गई और वह आख नीची कर कमरे में आ गई ने आँख भरकर उसको देखा वह निकट की कुर्सी पर

बैठ गई । सान्याल साहब चुपचाप उठकर अन्दर चले गए और अब कामिनी व सान्याल साहब छुपकर उन दोनों की बातें सुनने लगे ।

'आप किससे विवाह करना चाहती हैं ?"

"किसी से नहीं ।"

"किन्तु अभी तो आपने कहा···अन्य किसी से विवाह नहीं करूँगी । इसके अर्थ हुए कि कोई···"

"होते होंगे अर्थ किन्तु मुझे अब आपको कुछ नहीं बताना है ।"

"और जो मैं ही आपके अर्थ को पूरा कर दूं ?"

"क्या तात्पर्य है आपका ?"

"मेरा तात्पर्य है कि आपके हृदय में जो चोर है उसको यदि मैं ही बता दूं तो···?"

"आप कुछ मत बताइए, मैं अपना रोग और अपनी दवा जानती हूँ ।"

नटवरलाल ने कमरे में चारों ओर सन्नाटा देखा और वह नलिनी के अधिक निकट बैठते हुए बोला, "एक बार अपने लोचनों को उठाकर इधर तो देखो ।" वह मुस्कराया । नलिनी ने दूर हटकर कहा, "जरा दूर से ही बात करें तो अच्छा है ।"

नटवरलाल ने पुनः उसके निकट पहुँचकर कहा, "कौन है आपका प्रीतम ?"

"मैं आपसे इस प्रकार की बात करना पसंद नहीं करती ।"

"तो क्या केवल रूपकुमार से ही आप···?"

"रूपकुमार !! आप···उन्हें कैसे जानते हैं ?" नलिनी ने काँपती आवाज से पूछा ।

"उसको कौन नहीं जानता ? वह शहर का मजनू है ।"

"शहर का मजनू !!"

"हाँ, पुणे के बाई बाड़े में घूमा करता है ।"

"बाई बाड़ा !!"

"मेरा तात्पर्य है वेश्याओं के कोठे पर···"

"झूठ, बिल्कुल झूठ, वे कभी भी ऐसे नहीं हैं···"

नटवरलाल ने जोर से हँस कर कहा. "आपको यह मालूम है कि मैं दिल्ली में रहता हूँ," नलिनी चुप रही और नटवर आगे बोला, "यहाँ से इतनी दूर रहकर भी मैं जानता हूँ, आखिर कैसे ?"

"मैं क्या जानूं ।" नलिनी ने झुंझलाकर कहा ।

नटवरलाल बोला, "आप सेठ लक्ष्मणदास के लड़के कमल बाबू को जानती हैं ?"

"हाँ जानती हूँ, सुना है उनका नाम ।"

"आपने सम्भवतः यह भी सुना होगा कि वह एक नाटक खेलने जा रहे हैं ।"

"हाँ, यह भी सुना है ।"

"तो आपने यह भी सुना होगा कि नाटक का नाम मालती-माधव है "

हाँ यह भी मैंने सुना है

"तो आपको अब यह भी पता होना चाहिए कि मालती-माधव में नौ महिला पात्र हैं।"

"होंगे, उससे क्या होता है।"

"नाटकों में महिला पात्र का उपलब्ध करना कितना कठिन होता है यह भी जानती होंगी और रूपकुमार को देखिए कि वह नौओं युवतियों को नाटक में उपलब्ध करा रहा है। ये सभी उसकी प्रेमिकाएँ हैं।

"आप क्या कह रहे हैं ? इतना बड़ा कलाकार कहीं दिन-रात प्रणय और प्रेयसी के चक्कर में व्यस्त रह सकता है ? आपको यह सब कैसे पता ?"

नटवरलाल ने बात गढ़ते हुए रोब में आकर कहा, "रूपकुमार को लत पड़ गई है कि वह नई-नई युवतियों को अपने बेले के जादू से फँसाता फिरे और नित्य नया प्रणय-दान ले। रूपकुमार कमल बाबू के यहाँ आता-जाता है। कमल बाबू ने मेरा परिचय रूपकुमार से कल ही कराया है और उन्हीं ने उन लड़कियों को भी दिखलाया जिन्हे रूपकुमार ने नाटक के लिए कमल बाबू की सेवा में प्रस्तुत किया है।"

"वे लड़कियाँ वहाँ क्या करने गई ?"

"नाटक का रिहर्सल करने।"

"और रूपकुमार ने कमल बाबू को क्यो इतना कृतार्थ किया ?"

"कृतार्थ करना न कहिये। वहाँ तो स्वार्थ का सवाल है। रूपकुमार ने प्रत्येक पात्र के लिए कमल बाबू से 250 रुपये लिए हैं। पक्का मक्कार है वह।"

"250 रुपए ! एक-एक के ?"

"हाँ, हाँ !"

"नहीं, मैं नहीं मान सकती। वह ऐसा करते होते तो एक बार मुझसे भी वहाँ चलने के लिए और नाटक में पार्ट लेने के लिए कहते।"

नटवरलाल ने अपना सिर खुजलाया और बोला, "वह तो जानबूझकर उसने आपसे नहीं कहा।"

"क्यों, वह तो मेरे बदले भी रुपया पा सकते थे।"

"नहीं, नहीं, इसके अन्दर एक बहुत बड़ा भेद छिपा है।"

"कोई भेद नहीं। मुझे आप बताइए ना।"

"क्या बताऊँ।" नटवरलाल आगे बात न बना सका और उसने नलिनी की ठोडी अपनी उँगलियो से अपनी ओर खींचते हुए कहा, "छोड़ो इन सब बातों को, उस मनचले आवारा की बात ही क्या है।"

नलिनी ने नटवरलाल का हाथ झटककर कहा, "आप सीमा के बाहर मत हो। मुझसे बात बनाकर मुझे बहकाने का प्रयास न करें।"

नटवरलाल नलिनी की दृढ़ता पर विस्मयात्मक दृष्टि से देखने लगा और इसी क्षण सान्याल साहब ने कमरे में प्रवेश किया। नलिनी तुरन्त अन्दर भाग गई और सान्याल साहब ने से मोटी से कहा 'मुझ दुख है कि नलिनी आपको नहीं पसन्द कर सकी

नटवरलाल ने दाँत पीसकर कहा, "मुझे नहीं पता था कि मुझे यहाँ उसकी पसन्द के लिए बुलाया गया। मैं अपना अपमान अपने से ही कराने यहाँ न आता।"

कामिनी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, "नटवरलाल जी, आप चिन्ता न करें मैं··।"

सान्याल साहब ने कामिनी को तुरन्त डाँट कर कहा, "जब मैं बात कर रहा हूँ तो तुम बीच में क्यों बोलने के लिए चली आई। आज तक कितने लड़के-लड़कियों को चला कर, गवाकर और नचाकर देखने के बाद कह देते हैं : लड़के को पसंद नहीं, तो उन लडकियों के मान का प्रश्न ही नही उठाया जाता; आज एक लड़की ने लडके को देखकर उसको अस्वीकार कर दिया तो तुम अपनी सहृदयता दिखाने आई हो ?"

कामिनी चुप रह गई और नटवरलाल स्थिति गम्भीर देखकर, बिना कुछ चूँ-चाँ किए अपनी छड़ी उठाकर वहाँ से चल दिया। सान्याल साहब ने नमस्ते की, तो नटवरलाल ने उसका उत्तर भी नहीं दिया। सान्याल साहब ने धीरे से कहा, आवारा कहीं का ! किसी सम्भ्रांत परिवार की लड़की से कैसे बात की जाती है इसका भी ज्ञान नहीं। नलिनी को बाजार की वेश्या समझ बैठा था। मुँह के सामने पैसे का बछड़ा रखा और निरकुश थन में हाथ लगा दिया।

कामिनी क्रोध में भरी लम्बी-लम्बी साँस लेती रह गई।

प्रात: के समय चारुचित्रा अपने साधना कक्ष में बैठ एक नया चित्र बनाने लगी। एक ही रेखा खींची थी कि उसे निकष का ध्यान आ गया। वह विचारों में तल्लीन हुई। निकष भी कैसे मोहक व्यक्ति हैं। इतना विशद अध्ययन करने वाले और साथ ही इतने सरस भी। मैंने कहा कि साहित्य और कला के लिए मैं अपने सम्पूर्ण सुखों की आहुति दे सकती हूँ। निकष ने मुझ पर न्योछावर होकर मुझे अपनी बाँहों में बाँधना चाहा ! अहा, कितनी मधुर सिहरन थी वह। मेरे अंग के रोम-रोम में विद्युत दौड़ गई थी।··· किन्तु क्यों, निकष ने ऐसा क्यों किया ? उनका अधिकार क्या था ? नहीं, नहीं, मैंने ही उन्हें सम्भवत: प्रोत्साहन दिया था, मैं ही तो उनके घर गई, मैंने ही छेड़कर बात की। मैंने ही अपनी रुचि की साम्यता का प्रदर्शन करने के लिए उनकी थीसिस की बात छेडकर यह जताया था कि प्रादेशिक भाषाओं के क्षेत्र में मैंने भी कुछ कार्य किया है और उन्होंने कहा···रंगों के मोहक शृंगार से काव्यमय भावनाओं को रूप देने वाली चित्रकर्त्री विचार और दर्शन के सघन वन में कैसे विचरण करने लगी !···कितना सुन्दर ढग था उनका पूछने का, और मैंने उनके शब्द-लालित्य मे बँधकर प्रतिउत्तर दिया··· वैसे ही जैसे निर्जन वन में तप करने वाला विश्वामित्र-सा व्यक्ति एक रमणी के रूप-लालित्य पर आसक्त हो गया। ये विश्वामित्र और तप शब्द निकष और उनकी साधना के प्रतिरूप में ही तो मैंने कहे थे। और निश्चय ही मेनका का स्थान मैंने रमणी के रूप मे लिया। मैंने तो स्वयं ही अपने ऊपर आसक्त होने का निमन्त्रण ऐसी उपमा से दिया। दोष मेरा है। निश्चय ही मेरा है। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मैंने अपना सयम क्यो खो दिया ? बापू कहा करते थे चारु विवाह कर लो किन्तु मैं कहती थी मैं

आजीवन अविवाहित रहूँगी। किन्तु अब मैं क्यों किसी का आश्रय ढूंढ़ रही हूँ। मैं किसी पर क्यों न्योछावर हो जाना चाहती हूँ ? अवश्य ही मैं पथ से डिग रही हूँ। मुझे अपने ऊपर अंकुश रखना चाहिए। निकष के प्रति समर्पित हो जाने के बाद निकष सचमुच ही अपना ही चित्र न मुझसे बनवाए। मेरा वह स्वप्न कहीं सत्य न बन जाए···मैं भी कैसी हूँ, बेकार की चिंता करने लगी। मै अपने पूर्व निश्चयानुसार स्वतन्त्र जीवन ही क्यो न व्यतीत करूँ।···किन्तु नही यह जीवन तो बड़ा नीरस है। नीरस ?···आज मैं इसमे नीरसता का आभास ले रही हूँ ?···मैंने वह कौन-सा रस पाया जिसके समकक्ष आज तक के जीवन को नीरस देखने लगी ?

चारुचित्रा ने बैठे ही बैठे उस चेतनावस्था में ही यह अनुभव किया कि निकष ने पुनः उसको अपने बाहुपाश में कसने के लिए अपना हाथ बढ़ाया है, वह सचमुच ठिठक कर दीवाल से चिपट गई, फिर अपने आप ही मुस्कराई और अपनी मुस्कान पर स्वयं ही हँस पड़ी।

"···कौमार्य-जीवन में एक समय वह आता है जब व्यक्ति इस बुरी तरह से विचलित होता है कि उसे कुछ क्षण के लिए अच्छा-बुरा, ऊँचा नीचा और मान-मर्यादा किसी का भी ध्यान नहीं रहता। हिमकन्या गंगा मे भी जब यौवन की तरंग आती है तो वह भगीरथ मार्ग को भूलकर नर्कसम नालो मे बहने लगती है···" चारुचित्रा को अपने बापू के शब्द याद आए और उसने मन ही मन कहा—तो निकष के प्रति मेरा आत्मसमर्पण, मेरी यौवन तरंग ही थी। सम्भवतः उस क्षण मैं उसी तरंग मे थी। • किन्तु निकष का मार्ग तो पावन है, मैंने अभी नाले में बहना नहीं शुरू किया। बापू ठीक ही कहते थे। मुझे समय से पहले अपना भविष्य साध लेना चाहिए। मैं यदि निकष को वरूँ तो बुरा ही क्या है ? वे भी तो मुझे स्वीकार करने को तत्पर दिखाई देते है। उनके पास अवश्य ही मेरे लिए तृष्णा है। तृष्णा ? हाँ तृष्णा ही तो। किंतु तृष्णा शान्त होने के उपरांत ? उपरात क्या ? ये तृष्णा तो आजीवन शान्त नहीं होती।···होती है कि नही होती ? कुछ पता नहीं। सम्भवतः नहीं होती। संसार में इतने पति-पत्नी हैं। उनके बीच कोई तो वह चीज होती है जो एक दूसरे को अपनी ओर खींचे रहती है। कुछ में मनमुटाव भी दिखाई देता है और कुछ असन्तुष्ट भी दिखाई देते है। यह क्यों ? अवश्य ही उन दो इकाइयों मे से किसी एक में कोई न कोई कमी होगी। निकष में तो कोई कमी नही दिखाई देती। और मुझमें ? मुझमें क्या कमी है ? कोई भी तो नहीं। अच्छा माना है, तो क्या हुआ, निकष की रुचि जान कर मैं उसे पूरा कर सकती हूँ। ठीऽऽक है, मुझे अब विवाह कर ही लेना चाहिए। और हाँ, आवश्यक भी है। अविवाहित महिला की ओर ये कमल बाबू और नटवर जैसे गिद्ध दृष्टि गड़ाए ही रहते हैं।

घड़ी ने 11 बजा दिए। उसने घड़ी की ओर देखा किन्तु वह समय और कार्य से इतनी सुप्त सी रही कि जैसे कुछ करना ही नहीं है। इसी समय मोहिनी ने आवाज दी, "चारु, आज महाविद्यालय नहीं जाना है क्या ?"

चारुचित्रा की दृष्टि पुनः घड़ी पर पड़ी। देखा ग्यारह बजे हैं। मोहिनी ने कमरे मे आकर देखा कि फलक पर एक रेखा खिची है मोहिनी ने विस्मय से पूछा 'प्रात से

क्या कर रही थी ?" चारुचित्रा ने तत्क्षण उत्तर दिया, "एक नया चित्र बना रही थी।" मोहिनी ने कहा, "तब से अब तक केवल एक रेखा ही खींच पाई हो ?" चारुचित्रा ने फलक पर दृष्टि डाली तो वहाँ सचमुच केवल एक रेखा ही थी। उसने कहा, "कुछ सोच रही थी।" मोहिनी बोली, "एक रेखा खींच कर इतनी देर से सोच रही थी कोई शतरंज की चाल है कि···?" चारुचित्रा मुस्कराई और बोली, "उससे भी बड़ी चाल है।" मोहिनी ने कहा, "आजकल दिन-रात तुम कुछ न कुछ सोचा करती हो। रात को स्वप्न में बड़बड़ा उठती हो, तुम्हें हो क्या गया ?"

"कुछ नहीं," चारुचित्रा ने अपनी तूलिका समेटते हुए कहा, "आज बड़ी देर हो गई। मुझे महाविद्यालय जाना बहुत आवश्यक था।"

मोहिनी ने कहा, "महाविद्यालय जाने के लिए किसने रोका है, खाना खा लो और जाओ।"

चारुचित्रा ने जल्दी-जल्दी खाना खाया और वह कपड़े बदल ही रही थी कि महाविद्यालय का चपरासी आ गया। आते ही उसने चारुचित्रा को पूछा। मोहिनी ने द्वार पर जाकर कहा, "चारुचित्रा को अभी मैं भेजती हूँ, तुम प्रधानाचार्य कुन्दनलाल शास्त्री से कहना कि मैंने उन्हें आध घण्टे बाद घर पर बुलाया है।"

चपरासी बाहर ही से चला गया और थोड़ी देर बाद चारुचित्रा महाविद्यालय को चली गई।

कुन्दनलाल शास्त्री मोहिनी देवी का आमन्त्रण पाकर चारुचित्रा के घर आ गए। शास्त्री जी को देखकर मोहिनी ने चमकती आँखों से कहा, "शास्त्री जी, अब आपके सिवा मेरा और कोई सहायक नहीं है।"

"कहिए क्या बात हुई ?"

"बात ? बात वही पुरानी है चारुचित्रा का विवाह। आजकल वह पता नहीं कहाँ-कहाँ जाती है। कभी सुबह घर से गायब और कभी शाम। घर पर रहती है तो न जाने क्या सोचा करती है। जैसे अपने में ही वह नहीं है। देखिए न आज की ही घटना, प्रातः से 11 बजे तक बैठी-बैठी न जाने क्या सोचती रही। उसे ध्यान ही न आया कि क्या बज रहा है। जब मैंने टोका तो घबड़ा कर उठ बैठी और बोली कि उसे महाविद्यालय जाना है।"

"मैं समझता हूँ चारुचित्रा का विवाह अब अवश्य ही हो जाना चाहिए।"

"हो जाना चाहिए तो फिर कोई अच्छा-सा लड़का बताइए ना, सेठ जी का लडका कमल बाबू कैसा रहेगा ?"

"लड़का तो बहुत अच्छा है। उसके विषय में अधिक तो नहीं जानता किन्तु फिर भी धनवान है और देखने में भी अच्छा है। पता नहीं सेठ जी राजी होंगे या नहीं।"

"शास्त्री जी, यह काम तो अब आप ही को करना है।"

"मैं कब पीछे हटने की बात करता हूँ- प्रश्न तो यह है कि चारुचित्रा तैयार हो

"अब जबरदस्ती उसका विवाह किया जायगा। मैं दिन-प्रतिदिन बूढ़ी होती जा रही हूँ। घर में कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है जो चारुचित्रा को आगे-पीछे देख सके।"

"मैंने उसे कई बार महाविद्यालय में इस बात को समझाया किन्तु हर बार उसने हँस कर ही बात टाल दी।"

"मुझे तो आजकल कुछ दाल में काला दिखाई देता है। पता नही कौन है, एक व्यक्ति निकष नाम का है। आजकल वह प्राय. यहाँ आता है। चारुचित्रा उसको पता नही क्यों अपने चित्रों की प्रदर्शनी बनाकर दिखाया करती है।"

"निकष ?···देवकीनन्दन निकष ! हाँ, उसे तो मैं जानता हूँ।"

"उसे आप जानते हैं ? कौन है वह ? क्या करता है ?"

"वह हमारे महाविद्यालय में ही चित्रकला सीखता है, वैसे वह एक योग्य आदमी है।"

"तो वह आपका परिचित है ! भला आदमी है ?"

"लगता तो भला ही है।"

"चारुचित्रा उसके पास बहुत बैठती-उठती है।"

"अच्छा ! अब मैं उन दोनों पर दृष्टि रखूँगा।"

"हाँ, निकष को आप जरा ताड़ना दे दें और जल्दी से जल्दी कमल बाबू को राजी कर लें।"

"मुझे आशा है कि मैं कमल बाबू को राजी करने में सफल हूँगा ?"

"इसीलिए तो आपको बुलाया, अच्छा तो अब मैं···"

"हाँ, हाँ—अब आप बिल्कुल निश्चिंत हो जाइए, मैं चारुचित्रा को भी राजी करूँगा और कमल बाबू तो ऐसी गुणवती और सुन्दर युवती को शायद ठुकरा न सकें।"

"भगवान आपको शक्ति दे कि आप सफल हों।"

शास्त्री हँसे और चलने के लिए तत्पर होकर बोले, "अब चलूँगा, विद्यालय में कुछ विशेष कार्य है, आज्ञा हो तो फिर···"

मोहिनी हँसी और बोली, "आप भी आज्ञा की बात कहते हैं। आपका समय व्यर्थ ही मैंने लिया।"

शास्त्री जी ने कहा, "यह तो मेरा ही काम था, अच्छा चलता हूँ, नमस्ते।"

"नमस्ते।"

"भाई कमल ! मिस हेलन को एक दिन फिर बुलाओ। उस दिन सारा मजा किरकिरा हो गया। मैं तो फिर नाच ही न सका।" नटवरलाल ने शाम का जलपान करते हुए कहा।

"बुलाऊँगा, किन्तु पहले यह बताओ, यह जो नाटक का स्वांग हम लोगों ने रचा था उसका अब क्या किया जाय ?"

"कुछ नहीं। समाचार-पत्र में निकलवा दो कि कुछ विशेष कारणों से मालती माधव नाटक जो खेला जाने वाला था स्थगित कर दिया गया है होने पर पुन·

विज्ञापित किया जायगा।"

"नटवर, तुम किसी काम के आदमी न निकले।"

"क्या बताऊँ यार, आजकल कुछ सितारा ही गड़बड़ है।"

"अच्छा यह बताओ, कल दिन भर तुम कहाँ रहे।"

"यह न पूछो। बता रहा हूँ आजकल सितारा ही गड़बड़ है।"

"क्या गड़बड़ है, कुछ मैं भी तो सुनूँ।"

"क्या सुनोगे, जिस डोर को भी पकड़ता हूँ उसकी पतंग कट जाती है।"

"अरे कुछ आगे भी तो कहो।"

"कहता हूँ, किन्तु पहले आश्वासन दो कि तुम मुझे क्षमा करोगे।"

'बड़े कोमल बन रहे हो। नटवरलाल और क्षमा का प्रार्थी!!"

"यार, तुमको बड़ा भाई मानता हूँ। कल ऐसी घटना घट गई कि···"

"···घट गई कि···अरे आगे कहो कि नायिकाओं की तरह नखरे करते रहोगे।"

"मैं कल अपने विवाह के सम्बन्ध में एक लड़की देखने गया था।"

"अपने विवाह के सम्बन्ध में लड़की!"

"हाँ-हाँ, अपने ही। मैं घर से जब चला तो इसी बहाने से तो पूना आ पाया हूँ। मेरे पिता ने मेरा विवाह यहाँ पूने में ही एक लड़की से तय किया था।"

"तय किया है कि तय किया था? अभी ही मामला गोल हो गया? क्या नाम है लड़की का?"

"लड़की का नाम है नलिनी और उस नलिनी ने मुझे अस्वीकार कर दिया।"

"आएँ!! क्या अब लड़कों की देखा-भाली शुरू हो गई है?"

"कुछ न पूछो। मेरी तो ऐसी नाक कटी कि···मैंने जरा सा कहा···एक बार अपने लोचनों को उठाकर इधर तो देखो, वह तिनक कर बोली···कुछ दूर से ही बात करें तो अच्छा है।"

"ओ···"

"हाँ, मैंने उसकी आनाकानी देखकर एक बार पूछा कि कौन है आपका प्रीतम?—तो वह बोली···मैं इस प्रकार की बात करना पसन्द नहीं करती।"

"बाप से बाप! क्या कमरे में सन्नाटा था?"

"बिल्कुल सन्नाटा, किन्तु उसका बाप पता नहीं कहाँ से छिप कर यह सब देख रहा था।" मैंने निश्चितता से उसकी ठोड़ी अपनी उँगली से अपनी ओर की तो वह बोली, "आप सीमा से बाहर मत हों। मैंने उसके क्रोध के प्रतिउत्तर में उसे धीरज से कुछ समझाना ही चाहा था कि उसका बाप भूत की तरह वहाँ प्रकट हो गया और छूटते ही बोला, "मुझे दुःख है कि नलिनी आपको पसन्द नहीं कर सकी।"

कमल ने ताली बजाई और हँसा। नटवर ने चिढ़कर कहा, "मेरी नाक कट गई और आप हँसते हैं?"

कमल ने कहा हसता यू ही नही हू तुम्हारी बात पर हँसता हूँ बहुत बडे तीस

मार खाँ बनते थे। मुझसे भी बात छुपाई, अच्छा खैर, यह तो बताओ वह नलिनी है कौन ? उसके पिता क्या करते हैं ?"

"उसके पिता है श्री सान्याल साहब, शिक्षा विभाग में आफिसर हैं, जानते हो उन्हे ?"

"सान्याल साहब ! जानता हूँ।"

"आँ···"

"हाँ-हाँ जानता हूँ धरमपेठ वाले।"

"हाँ-हाँ वे ही, उन्हीं की लड़की।"

कमल जोरों से हँसा। नटवरलाल ने पूछा, "उनसे कैसे परिचय हुआ ?"

"उनकी पत्नी नवजवान-सी है ?"

"हाँ भाई ! इधर-उधर की कितनी लड़कियों की बात तुमने की किन्तु कभी उस नलिनी की बात नहीं की।"

"उसको मैंने तुम्हारे लिए सुरक्षित रख छोडा था।"

नटवर विस्मय से कमल की ओर देखने लगा और कमल ने आगे कहा, "बहुत पहले मैंने ही कामिनी देवी को तुम्हारा नाम बताया था और तुम्हारे पिता का पता उन्हें दिया था किन्तु इधर बहुत दिनो से इस सम्बन्ध में उनसे कोई बात नहीं हुई इसलिए मैं भूल गया था। वहाँ जाने के पहले यदि मुझसे चर्चा कर ली होती तो काम बन जाता। तुमने तो अपने को बहुत चतुर समझा ना।"

"अच्छा ही तो हुआ, तुम्हारी सहायता से सम्भव है नलिनी मेरे हाथ में सौंप दी जाती किन्तु विवाहोपरान्त वह यदि मुझको धोखा देती तो फिर हत्या के अतिरिक्त मेरा क्रोध दूसरी सीमा को न देखता। मै प्रेमिका के रूप में किसी भी चरित्र की स्त्री को अंगीकार कर सकता हूँ किन्तु पत्नी के रूप में···।"

"सती सावित्री ही चाहते हो।" कमल ने बात अपने मुँह में ली और बोला, "तो नलिनी का प्रेम किससे है ?"

"रूपकुमार से," नटवर बोला।

"कौन रूपकुमार ?"

"वही, जो उस दिन दमयन्ती को लेकर यहाँ नृत्य दिखाने आया था।"

"अच्छा समझा। वह तो तुम्हारा मित्र है।"

नटवर चुप रहा और कमल ने कहा, "अजीब आदमी हो। बेचारे रूपकुमार की हाँडी क्यों फोड़ने चले।"

"मैंने सुना था कि वह बेला बहुत अच्छा बजा लेती है।"

"खैर, अब तो जीती मक्खी निगलना अच्छा नही। वह दूसरे की प्रेमिका है। क्या उसका रूप बहुत ही अच्छा लगा ?"

नटवर द्विधा में चुप रहा।

कमल ने फिर पूछा अभी मन को स्थिर नहीं कर सके ? क्या वह पदमा से अधिक सुन्दर है

पद्मा का नाम सुनकर वह मुस्करा उठा और प्रसन्न होकर बोला, "पद्मा के समान ही है।"

कमल को अपना काम सिद्ध करना था। उसने हाथ पटककर कहा, "तो पद्मा को ही क्यों न अपनाने का प्रयास करो। वह बेला बजा लेती है तो यह नृत्य विशारदा है।"

"उसके लिए तो मैं पहले ही प्रयास कर रहा था किन्तु निकष के आगे जब कोई वश चलता तब ना।"

"तो बदला तो हमें निकष से लेना है। तुम पद्मा को अपने वश में करो और मैं चारुचित्रा को। बेचारे रूपकुमार ने हमारा क्या बिगाड़ा है।"

नटवरलाल की बुद्धि में कुछ बात आई, वह बोला, "तो पद्मा को कैसे पटाया जाय ?"

कमल ने चुटकी बजाकर कहा, "तुम्हें पता होना चाहिए कि पूना में शिवशंकर की नृत्य मण्डली दो-तीन दिन में आने वाली है।"

"हाँ-हाँ, विज्ञापन तो मैंने भी पढ़ा है।"

"तो फिर बस, जिस दिन उसका नृत्य होगा उस दिन ललित कला महाविद्यालय से सम्बन्धित सभी व्यक्ति नृत्य देखने जाएँगे और इसलिए पद्मा और चारुचित्रा के पहुँचने की भी पूरी सम्भावना है।"

"हाँ-हाँ, समझा, उस दिन पद्मा कह रही थी शिवशंकर उसके विद्यालय का छात्र रहा है। वाह, यह अवसर बढ़िया है।"

कमल बाबू और नटवरलाल ने हाथ मिलाया और निकष से प्रतिशोध लेने की दोनों ने ठान ली।

"उस दिन आपको राग तोड़ी त्रिताला मैंने बताया था, याद है ना ?" रूपकुमार ने कहा और नलिनी ने उत्तर दिया, "केवल राग तोड़ी त्रिताला ही नहीं मुझे राग यमन, राग खमाज और राग बिलावल भी पूरा विशुद्ध रूप से याद है।"

"ठीक है, ठीक है, वह तो याद होना ही चाहिए। आज मैं आपको एक भजन सिखाऊँगा।"

भजन का नाम सुनते ही नलिनी अपने आप ही गुनगुना उठी, "हे री, मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय···।"

"यह क्या, यह क्या ?" रूपकुमार ने विस्मयात्मक दृष्टि से उसे देखा और धीमे स्वर में कहा, "बड़ी चंचल हो गई हो !"

नलिनी ने रूप की बात सुनी, किन्तु अनसुनी करती हुई आगे गुनगुनाई, "मैंने रूप रतन धन पायो···मेरी माई···"

"मैं कहता हूँ आज हो क्या गया है ? 'रूपरतन धन' का भजन होने का कारण ? जरा अब खुल के बताओ।"

नलिनी ने इन दो पंक्तियों के साथ ही पूरी कहानी सुना दी। रूपकुमार ने अपने हाथ से अपनी पीठ ठोंकी और बेले को केस से निकालते हुए कहा, "आज भी कुछ अभ्यास हो जाना चाहिए।"

नलिनी चुपचाप रूपकुमार को ही देखती रही और रूपकुमार ने बेला बजा कर कहा, "आज अब सहगान सीख लो।"

नलिनी ने मन्द मुस्कान से कहा, "छेड़िए स्वर। आज मैं हूँ लता मंगेशकर और आप हैं मुकेश।"

रूपकुमार ने एक फिल्मी धुन छेड़ी।

निकष अपने कमरे में बैठा चारुचित्रा के स्वनिर्मित प्रतिमा-चित्र को ध्यान से देख रहा था। उसने सम्पूर्ण चित्र पर दृष्टि घुमाई और उस कमल को फिर देखा जो खण्डितावस्था में प्रतिमा पर अर्पित था। उसने सोचा इस फूल के जीवन की इति केवल क्या इस समर्पण में ही है। फूल के मधु और पराग का मूल्य? मधु और पराग। मधु अमृत है, अमृत जिससे जीवन अमर होता है और पराग पुष्प का रज जिसके आदान-प्रदान से बीज की उत्पत्ति होती है, सृष्टि की शृंखला बँधती है। मेरा मधु मेरा ज्ञान है। हाँ ज्ञान ही तो है, ज्ञान के दान से ही व्यक्ति अमर होता है और मेरा पराग—मेरा प्रेम और मेरा समर्पण है। सचमुच प्रेम का समर्पण ही उत्पत्ति का कारण है।

किन्तु यह क्यों, इसकी जीवन मे आवश्यकता क्या है? प्रेम का समर्पण···हाँ और बीज की उत्पत्ति पौधे के विकास पर विराम चिह्न होता है। विकास पर विराम! विकास पर विराम!! नहीं-नहीं, मैं विराम नहीं लगने दूँगा। मुझे अपना विकास करना है। निकष ने ध्यान से अपने चित्र के उस खण्डित कमल को देखा और मन ही मन बोला, इस पुष्प का अभी तो पूर्ण विकास भी नहीं हुआ। यह समर्पण कैसा?

कैसा अजीब व्यक्ति हूँ। थोड़े से तूफान को भी न सह सका। यौवन का तूफान···।

यह मैंने क्या किया? मुझे अभी बहुत काम करने है। मैं अपने पर···मैं अपने पर···विराम चिह्न नहीं लगने दूँगा। मैंने व्यर्थ ही चारुचित्रा तक अपने को इतना प्रकट होने दिया, मुझे संयम रखना चाहिए था संयम! काश उस दिन मैं अपने पर अंकुश रख पाता। मैंने उसको अपनी बाँहों में लेना चाहा था। यह मेरी कैसी अनधिकार चेष्टा थी। चारुचित्रा क्या सोचती होगी मेरे प्रति।

मुझे अभी विदेश जाना है। मुझे अभी अपनी थीसिस पूरी करनी है। हाँ, ठीक ही तो है। इतने दिनों से मैं अपने मुख्य लक्ष्य से कितना विमुख रहा।

प्रोफेसर साहब ने कहा था···विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में ग्रीक के महाकवि सोफोक्लीज और एस्खिलोस के काव्यों का अंग्रेजी अनुवाद आ गया है, उसे देख लेना। उन्होंने 'डान क्वेग्जट' के प्रसिद्ध स्पेनी लेखक सर्वान्तिस की भी कुछ पुस्तकों को देखने के लिए कहा था मैंने अभी वह भी नहीं किया। और हाँ- मुझे इतालियन उपन्यास को भी पढ़ना था कहते हैं ने इसी पुस्तक के रूप मे आधुनिक

उपन्यास को सबसे पहले जन्म दिया।

इतना सब काम मुझे करना है और मैं कहाँ बहा जा रहा हूँ। निश्चय ही मुझे चारुचित्रा के सम्मुख गम्भीर और दृढ़ होना पड़ेगा।···किन्तु मैं अपने को उसके सामने कैसे बदलूँगा ?···कैसे क्या ? बदलना पड़ेगा। क्या मैं उसे ठुकरा दूँ। नहीं···नहीं यह मुझसे शायद नहीं होगा, तो फिर होगा क्या ?···प्रणय-बन्धन ? बन्धन !! विकास पर विराम का चिह्न। नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं···।

महाकक्ष खचाखच भरा था। नगर की सम्पूर्ण जनता मानो उमड़ी आ रही थी। एक ओर मोहिनी देवी चारुचित्रा और श्री कुन्दनलाल जी शास्त्री बैठे थे। महाकक्ष में ही नलिनी से कुछ दूर रूपकुमार और दमयन्ती बैठे थे और उनसे कुछ ही अलग कमल बाबू और नटवरलाल विराजमान थे। इससे आगे की पंक्ति में पद्मा और निकष स्थान ग्रहण किए थे। श्री रामास्वामी पिल्ले नृत्य मण्डली के ग्रीन रूप में विशेष आदर से बुला लिए गए थे।

महाकक्ष में आर्केस्ट्रा बजना प्रारम्भ हुआ। दर्शकों में कुछ शान्ति की लहर दौड़ी। अनेकानेक राग-रागनियों से मिश्रित गत बजाई गई और एक मधुर झंकार के साथ मंच की यवनिका घाघरे के समान नाचती हुई ऊपर उठ गई, मंच के बीचोबीच एक सुगठित नर्तक पूर्ण चालित मुद्रा में दृष्टिगत हुआ। उसके अंग-प्रति-अंग के मसिल ऊपर से नीचे तक नागिन की तरह लहरा रहे थे। उसने कत्थक शैली में अनेकानेक भावों का अवतरण, अगों और नैनों के परिचालन से किया। महाकक्ष में तड़तड़ तालियाँ बजी और अब उसने घुँघरुओं के प्रयोग का विशिष्ट प्रदर्शन किया। वाद्यवृन्द ने मेघ मल्हार की धुन साधी। मंच पर बिजली चमकी, तत्पश्चात् ही बादल की गर्जना सुनाई दी और कुछ क्षण के सन्नाटे के बाद ही नर्तक ने अपने घुँघरू से जलवृष्टि के शब्द उत्पन्न किए। महाकक्ष में तालियाँ बजीं और नर्तक ने मदमत्त मयूर का नृत्य प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया—वह दायें से बायें और बायें से दायें चलता दिखाई दिया किन्तु मंच स्वयं इस प्रकार से क्रमबद्ध घूमा कि नर्तक मंच के बीच में ही रहा। मंच के घूमने का क्रम रुका और नर्तक अब स्वयं भँवरे की तरह चक्कर लेने लगा। दर्शकों ने देखा कि नर्तक के पैर के कुछ घुँघरू भी उस समय उसके पैरों में नाच रहे थे। यह नर्तक की साधारण कला न थी। उसने अपने पैर में बँधे 501 घुँघरुओं में केवल एक की छुन-छुन वहाँ दर्शकों को सुनाई। महाकक्ष में फिर तालियाँ बजीं और नर्तक विशेष अभिनयात्मक रूप से मंच से विलीन हो गया।

शिवशंकर ने मंच पर आकर ध्यान से दर्शकों को देखा और बोला, "अभी आपने कत्थक शैली का नृत्य देखा। अब आपको एक विदेशी नृत्य दिखाया जायगा। यह नृत्य रूस के प्रसिद्ध आर्केस्ट्रा निर्देशक डाक्टर सर्जेई अलेक्जेंडरोविच कुजे विट्स्की के निर्देशन में निर्मित एक धुन के साथ प्रस्तुत किया जाता है।"

जनता ने विशेष उत्कण्ठा से अपनी आँखें मंच पर गड़ाई और मंच की पृष्ठभूमि में की सहायता से रूसी आर्केस्ट्रा तुरन्त बजने लगा मंच के वाम अंग से

एक मेम लाल साये से सुसज्जित मंच पर आ गई और उसने नृत्य शुरू कर दिया। कुछ देर केवल नृत्य होने के बाद एक रूसी गाना भी सुनाई दिया। मेम ने नट के समान मच पर उछल-कूद की और दाहिने अंग से वह प्रस्थान कर गई।

शिवशकर ने मंच पर पुन: आकर ये शब्द कहे, "यह नृत्य रूस का आधुनिक नृत्य है और जो गाना उसके साथ में गाया गया है वह रूस के आधुनिक प्रसिद्ध कवि निकोलाई ग्रीवचोव का गीत था। अब आपको दो नृत्य और दिखाए जाएँगे। पहला गुजरात का लोक-नृत्य गरबा-नृत्य है और दूसरा सामूहिक नृत्य रासलीला के रूप मे प्रस्तुत किया जायगा।"

शिवशंकर मंच से उतर कर पद्मा के निकट आया और पद्मा व निकष ने तुरन्त उठ कर उससे हाथ मिलाया। पद्मा ने अपने मामा का परिचय शिवशंकर को दिया और फिर शिवशंकर के साथ वहाँ से उसके साथ चली गयी। नटवर और कमल ने ध्यान से उसे देखा किन्तु जब तक वे वहाँ से उठने की सोचें, मंच पर एक दर्जन नर्तकियाँ घेरा बनाकर नाचने लगीं। कसे हुए जूड़े और मेंहदी से रचे करतल झूमते और तालियाँ बजाते दिखाई दिये। नटवरलाल का ध्यान इधर खिच गया। पद्मा और शिवशकर महाकक्ष से गायब हो गये। नटवर को अब चिन्ता हुई। वह अपने स्थान से उठकर नि.संकोच निकष के पास पहुँचा और उससे आगे-पीछे बात किए बिना ही उसने एकदम से पूछा, "पद्मा कहाँ गई?" निकष के मुख से तत्काल निकला, "कहीं नहीं, ग्रीन रूम मे।" निकष नटवर को देखकर चौंका किन्तु बोला, "आप!! कहिए कमल बाबू कहाँ हैं? सब ठीक तो है?"

"हाँ,-हाँ, सब ठीक है।" नटवर ने कहा और कमल को दिखाकर बोला, "कमल वह बैठे हैं, चलिये मिल लीजिये?"

निकष मिलने की इच्छा न रखते हुए भी कह गया, "अभी मिलूँगा, जरा यह नृत्य समाप्त हो जाय।" नटवर निकष के बगल में ही बैठ गया और उसने पूछा, "ग्रीन रूम मे क्या करने गई है? क्या उसका भी कोई नृत्य है?"

निकष ने क्रोध से अपने होंठ काटकर छोटा-सा उत्तर दिया, "हाँ, वह गोपी बनेगी।"

बात ही बात में गरबा नृत्य समाप्त हुआ और कमल निकष के पास आ धमका। नटवर ने अपनी कुर्सी छोड़ते हुए अब कमल को निकष के बगल में बैठा दिया और स्वय पीछे जाकर बैठ गया। निकष कमल को अपने बगल में बैठा देखकर अन्दर ही अन्दर झुँझलाया, किन्तु जब तक कि वह आगे-पीछे कुछ सोचे मंच पर रासलीला नृत्य प्रारम्भ हुआ। शिवशंकर कृष्ण के रूप में दिखाई दिया और पद्मा ने राधा के रूप में मंच पर प्रवेश किया। निकष पद्मा को तुरन्त पहचान गया और उसकी कला मे लीन हुआ किन्तु नटवर चुपचाप सम्पूर्ण दर्शकों से अलग हो मंच के निकटतम एक ओर खड़ा हो गया।

"बहुत दिन बाद दिखाई दिए," कमल ने निकष से कहा।

निकष ने अपनी दृष्टि मंच पर स्थिर रखते हुए कहा "हाँ कुछ व्यस्त था।"

"चारुचित्रा तो आपके साथ उस दिन ऐसे चुपचाप चली गई कि मैं विस्मित रह गया।"

"और उससे बात करने के पश्चात मैं आप लोगों के प्रति विस्मययुक्त हुआ।"

"क्यों क्या कहती थीं चारुचित्रा जी ?"

निकष मंच की ओर ही अपनी दृष्टि किए बोल रहा था, उसने व्यंग्य किया, 'कहेंगी क्या, आप लोगो ने जिस प्रकार से उनका स्वागत किया उसकी सराहना कर रही थीं।"

कमल ने व्यंग्य को समझते हुए भी अपनी बात जमाकर कही, "सराहना की क्या बात थी, हम लोगों का पूर्ण सत्कार उन्होंने कहाँ ग्रहण किया।"

निकष ने दृढ़ शब्दो में कहा, "पूर्ण सत्कार होता तो शायद चारुचित्रा का शव ही आपके घर से निकलता।"

"निकष ! ! !" कमल ने तिलमिलाकर कहा, "चारुचित्रा को मेरे सामने अपशब्द कहा तो जबान खींच लूँगा।"

निकष ने घूरकर कमल की ओर देखा और वे दोनों ही उठ खड़े हुए। अन्य दर्शकों ने उन दोनों से बैठने के लिए कहा, किन्तु इसी क्षण नटवर ने अपने सधे हुए गुण्डो को इशारा किया। दो-तीन गुण्डे वहाँ आकर कमल से बोले—आप किस अकड़ में हैं ? खबरदार जो निकष बाबू पर हाथ चलाया। तत्क्षण ही कुछ व्यक्ति दूसरी ओर से आए और कमल बाबू की ओर से बोलते हुए उन व्यक्तियों से भिड़ गए। देखते-देखते महा-कक्ष मे मारपीट होने लगी और निकष, कमल के षड्यंत्र को समझ गया। वह वहाँ से हटा ही था कि किसी ने एक घूँसा उसे भी दिया। निकष ने समझ लिया कि उसे क्रोध में लाने की यह चाल है और नटवर व कमल उससे बदला लेना चाह रहे हैं। घूँसा खाने के उपरात भी वह कुछ न बोला और भागकर चारुचित्रा के पास गया। निकष ने शास्त्री जी से कहा कि वे चारुचित्रा को लेकर कहीं सुरक्षित स्थान पर हट जाएँ। निकष वहाँ से हट कर स्वयं भागने के प्रयास में ही था कि तीन अन्य व्यक्तियों ने उसे आकर घेर लिया और डपट कर पूछा—कहाँ है चारुचित्रा ? निकष ने सतर्क बुद्धि से काम लेकर अपने से कुछ दूर उँगली दिखाई…वह है। बदमाश उधर दौड़ पड़े और निकष ने दर्शकों की विचलित भीड़ में अपने को छुपाया। मंच का पर्दा गिरा। नृत्य रुक गया, कुछ गुण्डो ने मच पर चढ़कर पटाखे छुड़ाए और इसी क्षण बिजली का तार काट दिया गया। शास्त्री जी मोहनी और चारुचित्रा को साथ में लेकर किसी प्रकार से घर पहुँच गए किन्तु इस ऊधम के बीच मे पद्मा जबरदस्ती उठा ले जाई गई और थोड़ी देर में जब वहाँ पुनः प्रकाश का प्रबन्ध हुआ तो निकष ने पद्मा को गायब पाया। कमल अभी भी शरीफ आदमी बना वहाँ खड़ा दिखाई दिया। निकष ने बेचैन होकर शिवशंकर से पद्मा को पूछा तो उसने हताश होकर उत्तर दिया, "इस थोड़ी-सी देर में कहाँ कौन चला गया मैं नहीं जान सकता। मंच से भागकर पद्मा ग्रीन रूम की ओर आ रही थी कि बिजली फ्यूज हो गई थी कमल ने शिवशंकर के प्रति अपनी सद्भावना प्रकट करते हुए कहा आपके खेल में ऐसा ऊधम मचाने वाले गुण्डो को अवश्य पकड़ा जाना चाहिए मार-पीट

करने लगे। मेरा बस चले तो उन्हें गोली से उड़वा दूं।" निकष ने घूरकर कमल की ओर देखा, उसके मुख से निकल ही तो गया, "पहले तो आप पर गोली चलनी चाहिए।"

कमल ने दाँत पीस कर कहा, "आग से मत खेलो।"

निकष बोला, "मैं जानता हूँ, इस ध्वंसक कार्य में पलीते में आग देने वाले आप ही हैं।"

कमल ने कहा, "बस, मौन हो जाओ, अपनी मर्यादा के अन्दर बात करो।"

निकष ने कहा, 'सभ्यता का जामा यदि मैंने न पहना होता तो मेरे बाहु अभी ही तुम्हारी मर्यादा को नाप लेते।"

कमल ने वहाँ से चलते हुए क्रोध में कहा, "जब इच्छा हो मुझसे निपट लेना।" वह तेजी से वहाँ से चल दिया और निकष, शिवशंकर व उसके अन्य साथी घूरकर उसकी पीठ देखते रहे। निकष पद्मा के लिए अब चिन्तित हुआ।

कमल ने घर पहुँचकर टेलीफोन उठाया और पूछा, "क्या सारा कार्य सफलता से हो गया?"

"नहीं," नटवरलाल ने माडर्न होटल से उत्तर दिया, "केवल पद्मा ले आई जा सकी है। चारुचित्रा हाथ नहीं लग सकी।"

"चारुचित्रा, हाथ नहीं लगी! यह कैसी बात!! वह तो घेरी जा चुकी थी।"

"नहीं, चमनलाल के आदमियों को धोखा हो गया और उन्होंने अन्य महिला को घेरा।"

"फिर क्या हुआ?"

"हुआ क्या इसी बीच चारुचित्रा को किसी ने सूचना दे दी और वह निकल भागी।"

"नटवर, तुमने अपना उल्लू सीधा किया किन्तु मेरी चिन्ता नहीं की।"

"तुम्हारी धारणा गलत है," नटवर ने बड़बड़ाये शब्दों में कहा, "निकष को तुम अपने पास उलझाए न रख सके और उसने ही सम्भवतः उसे जाल से बचा दिया।"

"किन्तु अब क्या होगा?"

"होगा क्या, पद्मा को मेरे तीन आदमी होटल के 13 नं० कमरे में बन्द करे हैं। मै उसका उद्धारक बनकर उसे जीतता हूँ। चारुचित्रा के लिए फिर अन्य प्रबन्ध किया जायगा।"

रात बीती और प्रातः होते ही कुन्दनलाल शास्त्री कमल के घर आए। शास्त्री जी को अपने घर देखकर कमल अचम्भे में पड़ गया, किन्तु सत्कार सहित उन्हें उसने बिठलाया।

"कहिए, मेरे यहाँ आने का आपने कैसे कष्ट किया?"

"कष्ट की बात नहीं है कमल बाबू, मैं विशेष कार्य से आपके पास आया हूँ।"

"कहिए मेरे बस की बात जो भी होगी उसमें मैं आपको सहायता देने के लिए तैयार हूँ

"मैं जानता हूँ, और इसी आशा से आपके पास आया हूँ।"

"किसी प्रकार की विशेष निधि की आवश्यकता तो नही आ पड़ी।"

"नहीं सो बात तो नहीं है।—कल मैं आपके पिता से मिला था तो···।"

"तो···तो किसलिए मुझे बताइए।"

"बात यह है कि आपको तो पता होगा कि मेरा और मोहिनी देवी का तात्पर्य है चारुचित्रा की माँ का कैसा घरेलू सम्बन्ध है। बेचारे देसाई साहब जब मरे थे तो···।"

"मैं समझ गया, कहिए आप अपनी बात कहिए।"

"हाँ तो आपके पिता से मैंने चारुचित्रा के विवाह के सम्बन्ध में···मैं कह रहा था कि चारुचित्रा का विवाह आपसे तय करने के लिए बात हुई थी और···।"

"मुझसे ?" कमल चौंक पड़ा।

"हाँ-हाँ आपसे, आपके पिता ने अनुमति दे दी है, अब आप यदि···।"

"मैं, मैं स्वीकृति दूँ।" कमल मन में सोचने लगा, अभी कल ही जो पतंग खजूर के पेड़ पर अटकी दिखाई दे रही थी, आज वह अपने कोठे पर कैसे उड़ने लगी। उसने सोचा अवश्य ही कोई चाल है। वह चिन्तित हुआ और कुछ बोलने के पहले ही शास्त्री जी ने कहा, "आप क्या सोचने लगे, बड़े घर की लड़की की मर्यादा अब आपके हाथ मे ही है।"

कमल मौन होकर शास्त्री जी के चेहरे को पढ़ने लगा और शास्त्री जी बोले, "चारुचित्रा की माँ ने मुझे इस सम्बन्ध को स्थापित करने के लिए विशेष बल दिया है और मैं भी समझता हूँ कि आपसे अधिक उपयुक्त और कोई व्यक्ति देसाई जी जैसे घराने की लड़की के लिए नहीं हो सकता।"

कमल मुस्कराया और बोला, "आज तक मैंने कोई भी बात इस सम्बन्ध मे चारुचित्रा की ओर से किसी के मुख से नहीं सुनी। आज एकदम से यह कैसा प्रस्ताव आया मैं नहीं समझता। आप कुछ घबड़ाए-से दिखाई दे रहे है।"

"नहीं, घबड़ाने की तो कोई बात नहीं किन्तु हाँ जवान लड़की का घर में कुँवारा बना रहना···। ए···कल आप वहाँ शिवशंकर के नृत्य में थे ?"

"हाँ-हाँ क्यों नहीं, वह मार-पीट और बिजली आदि मेरे सामने ही तो बुझी।"

"देखिए कितना गड़बड़ मिनट भर में हो गया। वह निकष जो है ना, उसकी भानजी पद्मा कल गायब हो गई।"

"पद्मा गायब हो गई ?" कमल ने अनजान बनते हुए पूछा।

"हाँ-हाँ, आज का अखबार पढ़िए ना। क्या अभी आपने अखबार नहीं देखा ?"

कमल ने आलस भरी बाँहों को तोड़ते हुए कहा, "अखबार तो मैं आठ बजे चाय पीते समय देखता हूँ। किन्तु यह समाचार तो बहुत गम्भीर है।"

"हाँ जनाब, वहाँ तो सुना चारुचित्रा के लिए भी खतरा था, किन्तु बेचारे निकष ने आकर हम लोगों को समय से पहले सूचना दे दी और हम लोग किसी प्रकार भाग आए"

"अच्छा, निकष ने आपकी सहायता की।" कमल ने अन्दर ही अन्दर स्थिति को समझा।

"हाँ निकष ने, मोहिनी देवी जब से नृत्य स्थल से घर लौटी है उन्हें चैन नहीं मिला है। वे मेरे पीछे पड़ गईं कि मैं तुरन्त ही अब चारु का विवाह करा दूँ। वे तो रात को मुझे आपके पास भेज रही थीं किन्तु रात को मेरा आना सम्भव नहीं हो सका, अत मैं प्रातः होते ही आपके पास···"

कमल ने स्थिति को पूरा समझ लिया और मन ही मन सोचने लगा···कैसी अजीब बात है। मैं तो मछली फँसा ही रहा हूँ और मछली है कि पेट में उतरने को भी तैयार है। वह गद्गद होकर बोला, "शास्त्री जी, आप तो सदैव मेरे गुरु के समान रहे हैं। आपकी आज्ञा अब कैसे टाल सकता हूँ, जैसी आपकी इच्छा।"

शास्त्री जी प्रसन्नता से फूल उठे और तत्काल ही नमस्ते करके चलते बने। कमल ने चाय के लिए पूछा तो वे उसे भी पीने का समय नहीं दे सके। वे मोहिनी देवी को अपनी विजय का समाचार देने को बेचैन हो उठे थे।

निश्चित योजनानुसार नटवरलाल के आदमी पद्मा को साथ लेकर 'रायल बार' मे पहुँचे। अन्दर घुसते ही पद्मा अंग्रेजी शराबों की गन्ध से घबड़ा उठी। किन्तु दोनों ओर दैत्य-से व्यक्तियों को चलता देखकर पद्मा चुपचाप उनके साथ आगे चली गई और आगे एक टेबिल पर उन आदमियों के साथ ही बैठ गई। वह हक्का-बक्का-सी चारों ओर देख रही थी। साथ के व्यक्तियों ने दो गिलास और एक बोतल स्काच ह्विस्की माँगी। बैरे ने तुरन्त ही बोतल लाकर टेबिल पर रख दी। इसी क्षण नटवरलाल वहाँ पहुँचा और बगल की मेज पर आकर बैठ गया। उन आदमियों में से एक ने आधा गिलास ह्विस्की भरी और पद्मा से बोला, लो पियो। पद्मा मुँह बनाकर उसे देखने लगी और उमने जोर से कहा, पियो। पद्मा ने काँपते हुए हाथ आगे बढ़ाए और इसी क्षण नटवरलाल ने पीछे घूमकर पद्मा की ओर देखा। पद्मा की आँखें किसी सहारे को ढूंढ़ रही थीं। नटवरलाल को देखकर रुक गईं। आँखें चार हुईं। पद्मा को नटवरलाल उन दोनों व्यक्तियों के समकक्ष अधिक निकट दिखाई दिया। वह बोली, "नटवर बाबू!!"

नटवर ने नये प्रकार से पहचानते हुए कहा, "पद्मा! तुम यहाँ!"

"हाँ, मेरी सहायता···" पद्मा की आवाज काँपी।

नटवर ने वीर योद्धा की तरह अपनी कुर्सी छोड़ते हुए, उसकी ओर अपने पैर बढाए। उन व्यक्तियों ने कड़क कर कहा, "खबरदार जो इधर पैर रखा।"

नटवरलाल ने पद्मा का हाथ अपने में लेकर उसे अपनी टेबिल पर खींच लिया और उन आदमियों से अकड़ कर पूछा, "मुझे पहचानते हो? एक-एक के हाथ कटवा लूँगा।"

दोनों ही व्यक्ति चुप देखते रह गए और नटवर ने अपना रोब गालिब करते ए पद्मा को साथ लेकर वहाँ से किया

नटवर ने टैक्सी बुलाई और पदमा ने पूछा कहाँ चल रहे हैं आप ?

फोन पर रख दिया। पद्मा ने कहा, "मुझे घर पहुँचा दीजिए।"

नटवर ने कहा, "इतनी घबड़ाई क्यों हो, अभी पहुँचा दूँगा। आओ मेरे साथ। दो स्टेशन तक गाड़ी पर बैठो, वहाँ एक व्यक्ति से मुझे मिलना है, हम दूसरी गाड़ी से ही लौट आएँगे।"

"आप जाइए, मैं अकेली ही घर चली जाऊँगी।"

"अकेली जाना था तो रायल बार से ही चली जातीं। मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए बातें कर रहा हूँ और तुम मुझे शंका की दृष्टि से देखती हो। किस कठिनाई और जान-जोखम से तो मैं तुम्हें छुड़ा कर लाया हूँ और अब अकेला भेज कर, सारे करे-धरे पर पानी फेर दूँ?"

"मुझे आप घर पहुँचाइए, नहीं तो मैं चिल्ला दूँगी।"

"पद्मा! तुम तो बिल्कुल नासमझ दिखाई देती हो। चिल्लाओगी तो जानती हो क्या होगा?"

"होगा क्या, दो-चार पुलिस वाले आकर मुझे मेरे घर, भेज आएँगे।"

"हुँह,"—नटवर हँसा और बोला, "इतने ऊँचे चरित्र वाले जिस दिन हमारे पुलिस वाले हो जाएँगे उस दिन गांधी बाबा का स्वप्न पूरा हो जायगा। अभी तो वे किसी भागी हुई लड़की को पकड़ पाएँ तो थाना और कोतवाली बाद में ले जाएँगे, पहले तीन दिन अपने घर रखेंगे। भागी और पकड़ी गई औरत जग-नायिका होती है। अपने को शरीफ कहने का अधिकार तो उसका छिन गया होता है।"

पद्मा सिर उठाकर नटवर के मुख की ओर देखने लगी और नटवर ने उसका हाथ पकड़कर कहा, "घबड़ाओ नहीं। आओ चलें, गाड़ी में बैठें, सुबह तक लौट आएँगे।"

पद्मा ने हाथ छुड़ाकर भागना चाहा किन्तु नटवर बोला, "अपने शरीर की दुर्दशा कराने का निश्चय यदि कर चुकी हो तो पीछे पैर धरो नहीं तो बुद्धि से काम लो।"

पद्मा चुप खड़ी रह गई और नटवरलाल ने उसकी बाँह पकड़ कर उसे अपने साथ किया। सिद्धेश्वरी एक्सप्रेस प्लेटफार्म से आकर लगी और नटवर पद्मा को साथ लेकर उसमें बैठ गया।

पद्मा के हृदय में नटवर के प्रति पहले कुछ स्थान था किन्तु नटवर ने जिस बुरी तरह से उसे अपने वश में करने की चाल चली, पद्मा उसे पूर्णतया समझ गई कि वह उससे कैसे मुक्त हो।

गाड़ी छूटी और पद्मा ने स्वयं से बात करना प्रारम्भ की, "आप कल शाम तक लौट आएँगे ना।"

"हाँ, अवश्य मुझे स्वयं पुणे में काम है। तुम व्यर्थ ही घबड़ा रही हो।"

"नहीं, घबड़ाने की बात तो नहीं है, मैं समझती हूँ आपका हृदय बहुत निर्मल है। मैं तो केवल इसलिए जल्दी कर रही थी कि मामा जी घबड़ाने न लगें। आपने सचमुच उन बदमाशों से बहुत

नटवर ने मुस्करा कर कहा, "अभी तक क्यों मुझे दूसरी दृष्टि से देख रही थी।"

"यूँ ही," पद्मा ने थोड़ा सा शरमा कर कहा, "मैं तो देखना चाहती थी, आपकी मेरे प्रति कितनी लगन है।"

"लगन ! क्या चाहती हो तुम !! वह दिन भूल गईं जब कमल बाबू के यहाँ हम पहली बार मिले थे। मुझे तुमसे कितना आकर्षण मिला था। मैं तुम्हारा नृत्य देखना चाहता था किन्तु तुम्हारे मामा जी ने ऐसी जड़ काटी कि···।"

"मामा जी ऐसे ही हैं, मैं तो तैयार हो गई थी···।"

"हाँ सो तो तुमने घुंघरू भी माँग लिए थे, हाँ तो अब नृत्य दिखाओगी ना ?"

पद्मा ने पलकों को नीचे गिरा कर कहा, "अवश्य ?"

नटवर मन ही मन फूल उठा। गाड़ी तेजी से भाग रही थी। नटवर एकटक पद्मा के मुख-कमल को देखता रहा और पद्मा ने कुछ देर बाद धीरे से पूछा, "आप सिगरेट पीते हैं ?"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं !"

"आप पान खाते हैं ?"

"पान खाने में क्या हुआ, खाता हूँ,, किन्तु यह पान-सिगरेट पूछने की क्या आवश्यकता पड़ गई ?" नटवर ने मुस्कान के साथ कुछ विस्मय से पूछा और पद्मा बोली, कुछ नहीं, यूँ ही पूछा, बात यह है कि मैं पान खाती हूँ और फिर रास्ता काटने के लिए कुछ बात तो होनी चाहिए।" नटवर जोर से हँसा और पद्मा ने पूछा, "आप तम्बाकू भी खाते होंगे ?"

"नहीं तम्बाकू तो मैं एक पत्ती भी नहीं खाता।"

पद्मा मुस्कराई और बोली, "किन्तु मैं खाती हूँ।"

नटवर केवल हँसा। गाड़ी कुछ धीमी हुई। लोनावला स्टेशन आते ही संयोग से पान वाला दिखाई दिया। पद्मा ने पान के चार बीड़े लिए और एक चुटकी तम्बाकू ली। तम्बाकू को उसने मात्र दो पानों में डाला और चारों पान पत्ते में लपेट कर रख लिए। नटवर ने सोचा कि पद्मा दो पान उसे देगी किन्तु जब उसने चारों पान चुपचाप रख लिए तो उसे कुछ कुतूहल हुआ। वह मन ही मन पद्मा को कंजूस समझता रहा किन्तु उससे वह कुछ नहीं बोला। पद्मा मस्तिष्क के तूफान को मस्तिष्क में ही लिए चुपचाप बैठी रही और नटवर ने उसकी सौम्यता को देखकर मन में कहा, कितनी भोली है ! गाड़ी लोनावला से छूटी और तेजी से भागने लगी। पद्मा ने तिरछी आँखो से नटवर को देखा और नटवर ने मुस्कराकर एक लम्बी साँस ली। दोनों ही मौन बैठे रहे। नटवर ने पद्मा को अपने वश में करने का कार्यक्रम मन ही मन बनाना शुरू किया और पद्मा छूटकर भागने का मार्ग सोचना प्रारम्भ किया। गाड़ी भागते-भागते फिर धीमी हुई और नटवर ने पद्मा से कहा—"दूसरा स्टेशन आ रहा है, लाओ पहले के पान तो खा लिए जाएँ"

पदमा ने मुस्करा कर कहा अरे हाँ मेरा तो ध्यान ही न जाने कहाँ चला गया

था, लीजिए पान।" पद्मा ने दो पान पत्ते से निकाले और कहा, "मुँह खोलिए, अपने हाथ से खिला दूँ।"

नटवर ने पद्मा के हाथ से पान खाने में पता नहीं किस अपार सुख का आभास लिया और उसने आँख बन्द कर अपना मुख खोल दिया। पद्मा ने उसके मुख में तम्बाकू वाला पान भर दिया और नटवर ने जान-बूझकर उसकी उँगलियों को अपने दाँत से धीरे से काटा।

पद्मा ने अपना हाथ हटाते हुए कहा, "आप बड़े वो हैं।"

नटवर ने दाँतों से पान कुचल कर एक घूँट अन्दर की और बोला, "पद्मा, मेरे पान में तम्बाकू आ गई है शायद।"

"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।" पद्मा ने कहा, किन्तु नटवर ने इसी क्षण पान थूककर कहा, "मेरा जी मितला रहा है।"

"अरे!" पद्मा ने विस्मय प्रकट किया और गाड़ी प्लेटफार्म पर पहुँच भी न पाई थी कि नटवर ने खिड़की के बाहर थोड़ी-सी उल्टी की। पद्मा ने नटवर पर अपना आँचल झला और बोली, स्टेशन आ गया है, मैं अभी पानी लेकर आती हूँ। नटवर ने पद्मा का हाथ पकड़कर कहा, "नहीं, गाड़ी से मत उतरो।" पद्मा ने हाथ छुड़ाकर कहा, "आप कैसी बात करते हैं, मैं अभी आती हूँ।" और पद्मा गाड़ी से नीचे उतर गई। नटवर गाड़ी में बैठे-बैठे पद्मा पर दृष्टि रखने लगा। पद्मा तेजी से यहाँ-वहाँ होकर भीड़ में गायब हो गई और नटवर चलती गाड़ी से नहीं उतर सका क्योंकि बिजली की गाड़ी ने तुरन्त अपनी गति पकड़ ली थी।

सान्याल साहब और कामिनी में बातचीत हो रही थी। नलिनी दूसरे कमरे में बैठी कभी बेला को बजाने का अभ्यास करती और कभी कान लगा कर घर की बातें सुनती। सान्याल साहब ने कहा, "समय कितना खराब हो गया है, युवा लड़कियों का घर से बाहर निकलना कठिन हो रहा है। पद्मा का पता अभी तक नहीं लगा है।"

"समय सदा से ऐसा ही रहा है और स्त्रियों से बलात्कार प्रत्येक युग में किया गया है यह बात दूसरी है कि हम बीते हुए दिनों को वर्तमान से अच्छा मानते आए हैं"—कामिनी ने कहा, "किन्तु अपहृत युवती के साथ जो कुछ भी न हो जाए थोड़ा है।"

"किन्तु स्त्रियाँ कायर क्यों होती हैं, मेरी समझ में नहीं आता। उन्हें शेरनी की तरह भयंकर होना चाहिए। या तो वे छेड़ने वाले को नोच डालें या फिर अपना ही सिर कुचलवा लें।"

"संसार में भाषण देना और दीक्षा देना उतना ही सरल है जितना कठिन उसको अंगीकार कर उस पर चलना।"

बाहर किसी ने कुण्डी खटखटाई। सान्याल साहब अधूरी बात पर विराम धर कर द्वार पर गये।" श्री पिल्ले को देखकर सान्याल साहब का हृदय गद्‌गद हो उठा।

"आइए, आइए, बड़े मौके पर आए। मैं आपकी ही प्रतीक्षा में था।"

सब कुशल तो है ? नत्य देखने मे आपके साथ कोई घटना तो नहीं घटी ?

"हाँ भाई, सब कुशल है। हम लोग सौभाग्य से बड़ी अच्छी जगह पर बैठे थे। महाकक्ष मे ऐसी मारपीट शुरू हुई कि सभी दर्शक घबड़ा उठे।"

"क्या कहा जाय, इतना सुन्दर वह दृश्य चल रहा था कि···मगर इन बदमाशो को क्या कहूँ ! आप लोग तो दरवाजे के सामने ही बैठे थे इसीलिए तुरन्त निकल भागे होगे।"

"यही तो अच्छाई हुई। बताइए, पद्मा का अपहरण मंच के ऊपर से हो गया ! मैंने प्रातः अखबार में जैसे ही पद्मा का अपहरण पढ़ा, मेरा कलेजा धक से हो गया। नलिनी आपके साथ ही थी, वे बदमाश यदि इधर भी दृष्टि उठाते तो फिर क्या होता ?"

"एक नलिनी की बात आप करते है, वहाँ बीसियों नलिनी थीं। बेचारे शिवशकर की भी हानि सैकड़ों रुपए की हो गई। भला तो यह हुआ कि बिजली के कण्ट्रोलिंग बोर्ड की आग जल्द ही बुझ गई।"

"अच्छा ! बिजली के तार भी जल उठे थे क्या ?"

"हाँ, बदमाशों ने जब बिजली के तार को काटा उसी समय दो-तीन फ्यूज एक साथ जल उठे। छोटे-छोटे कई पर्दे जल गए और अँधेरे मे फोकस के शीशे भी कुचल कर टूट गए।"

"आखिर यह कौन लोग थे जिन्होंने यह सब किया ?"

"आपको अभी नहीं पता, वह कमबख्त नटवरलाल है, कमल बाबू का बायाँ हाथ। जब से पूने मे आया है, उधम मचाए हुए है।"

"नटवरलाल ! दिल्ली वाला ?"

"हाँ, हाँ दिल्ली वाला। पद्मा के मामा निकष जहाँ रहते हैं वहाँ एक आप्टे जी रहते हैं। उन्होंने टेलीफोन पर पद्मा की आवाज सुनी है। उसने अपनी सूचना स्टेशन से देनी चाही थी किन्तु बात के बीच में ही लाइन कट गई। पुलिस मे रिपोर्ट लिखा दी है, नटवर ही पद्मा को लेकर भागा है।"

नटवर का नाम सुनकर सान्याल साहब विस्मय में पड़े, किन्तु उसकी बात समाप्त करके बोले, "इतना पता चल गया है तब तो फिर वे लोग पकड़ ही जाएँगे। अच्छा अब एक नया समाचार सुनिए, नलिनी का विवाह तय हो गया है।"

"किसके साथ ?"

"उसी रूपकुमार के साथ।"

"वाह !"

"अब आप रामेश्वरी को बनारस से बुलाइए। यह काम आपका है।"

"मैं कहाँ पीछे हट रहा हूँ। बारात के दिन वह रौनक कर दूंगा कि यह भी एक ऐतिहासिक घटना हो जायगी।"

"क्यों नहीं, जिसके हाथ में इतना बड़ा विद्यालय हो वहाँ कला की कमी ! आप चाहें तो हर बराती के लिए एक नर्तकी खड़ी कर दें"

पिल्ले ने जोर से हँसकर अपना हाथ बढ़ाया और कहा 'हाथ मिलाइए अब

आप देखिएगा मेरा प्रबन्ध।"

सान्याल साहब हाथ मिलाते हुए गम्भीर होकर बोले, "आज का पढ़ा-लिखा समाज ऐसे नृत्य से कुछ भडक जाता है ?"

"समाज की भली चलाई। घूम-फिर कर काम वही करेंगे किन्तु नाम बदल देते हैं।"

"हाँ, न जाने क्यों वेश्या के नृत्य से लोग घबड़ाते हैं। अरे ये सिनेमा के अन्दर जो मुजरे भर दिए जाते हैं वह क्या है ? उसको सरकारी स्वीकृति है।"

"यही तो मजा है। मैं आपको एक किस्सा बताता हूँ। मेरे मोहल्ले में एक भट्ट जी नाम के कट्टर वैष्णव रहते हैं। उनके घर के बगल मे एक लाला जुगलकिशोर रहते हैं। उन्होंने अपनी लड़की के विवाह में बरातियों के स्वागतार्थ एक नाचने वाली बुलाई। भट्ट जी इतने क्रुद्ध हुए कि उन्होंने न्योता तक ग्रहण नहीं किया। कुछ दिन बाद उसी नर्तकी ने निशात टाकीज में कलकत्ते की डान्सर के रूप में जब अपना नृत्य प्रस्तुत किया तो श्रीमान जी ने 15 रुपये का टिकट खरीद कर उसका नृत्य देखा। मैंने भट्ट जी से कहा—निशात टाकीज वाली नर्तकी शम्पा चौधरी नहीं थी, यहीं की चम्पाबाई थी। वे तिनक कर बोले—पिल्ले जी, मुझे आप चिढ़ाया न करें।"

सान्याल साहब जोरों से हँसे और बोले, "समाज के कितने काम केवल नाम बदलने से पुण्य मान लिए जाते हैं, क्रिया में कोई भेद नहीं होता।" वे कुछ रुके और अब पिल्ले हाथ पकड़ कर बोले, "एक बात है, सभ्यता की मर्यादा रखने के लिए क्रिया का शुद्धीकरण तो करना ही पड़ेगा।"

"किन्तु मैं कहता हूँ कि भट्ट जी की चम्पाबाई और शम्पा चौधरी में क्या अन्तर आ पड़ा।"

श्री पिल्ले ने कुछ सोचकर कहा, "चम्पाबाई के साथ में वेश्यावृत्ति का कलक जुड़ा है किन्तु शम्पा चौधरी केवल कला की प्रतीक है। जनता धीरे-धीरे कला के मूल्य को समझ रही है। कला कभी भी किसी की ठुकराई नहीं जाती···। उसका मूल्य रहता है। वस्तुत: वेश्यावृत्ति की पतित और कलंकित प्रथा ने ही भारत की नृत्य-कला को बहुत बड़ा धक्का पहुँचाया। शरीर बेचने वाली नायिकाओ ने निम्नकोटि के नृत्य अपना कर सम्पूर्ण कला को कलंकित कर दिया। अब आप ही बतायें, रामेश्वरी बाई को आप क्यो पसन्द करते हैं।"

"भाई, मेरी बात जाने दो। रामेश्वरी के मेरे सम्बन्ध आपसे कुछ छिपे थोड़े ही है।" सान्याल साहब हँसे, "मैं तो इस विचार का व्यक्ति हूँ कि समाज मे प्रत्येक समय कुछ ऐसी नारियाँ बनी रहेंगी जिन्हें हम गणिका की उपाधि दे सकते हैं। हाँ आपके अनुसार यह किया जा सकता है कि कलाकर्त्री को कला के चिह्न से अपनाया जाय और गणिकाओं का चिह्न कुछ और ही हो।"

"यह बात कुछ कायदे की मालूम होती है। किन्तु क्या वेश्यावृत्ति सदैव जीवित रहेगी ?" पिल्ले ने पूछा।

'शायद क्योंकि पुरुष में जब तक की भूख और सौन्दय की पिपासा है

तब तक वह सुन्दर स्त्रियो को वश में करने के लिए ऐसे मार्ग निकालता ही रहेगा जिसके द्वारा वह उन्हें सहज ही उपलब्ध करा सके। ध्यान से देखिए तो वेश्यावृत्ति की समस्या समाज की आर्थिक समस्या से भी टेढ़ी है। मनुष्य का जैसा आकर्षण धन की ओर होता है वैसा ही सौन्दर्य की ओर भी। धन की स्थिति तो देश में उत्पादन बढ़ा कर और उसे व्यक्ति-सम्पत्ति न रख जन-सम्पत्ति सुधारी जा सकती है, किन्तु रूप और यौवन-सौन्दर्य का उत्पादन बढाना खेल नही है। इससे भी कोई मुख नहीं मोड़ सकता कि सौन्दर्य से आकर्षण और आकर्षण से लिप्सा जागृत होती है; यह क्रिया दोनों ही सेक्स से स्वाभाविक है। पुरुष रूपवती स्त्री चाहता ही है और स्त्री भी रूपवान पुरुष पर कम नहीं रीझती। यह बात दूसरी है कि बाह्य मर्यादा के नाम या वैधानिक रूप से उपलब्ध होने में असमर्थ होने के कारण महान् चरित्रवान होने का झण्डा गाड़ती फिरे। ऐसी स्थिति मे जहाँ कोई पुरुष अधिक सामर्थ्यवान हुआ वह अपना आधिपत्य अर्थ के साथ ही रूप पर भी जमाता है। उधर दूसरा व्यक्ति जो साधारण परिधि का होता है और अपने को सामर्थ्य से च्युत पाता है वह दूसरा मार्ग इस सुख-साधन को जुटाने के लिए ढूंढ़ता है और दूसरा मार्ग होता है व्यापारिक, जिसे हम क्रय-विक्रय भी कह सकते हैं। व्यक्ति धन से रूप को खरीदने लगता है। सांसारिक जीवन में चूंकि अर्थ का प्रयोग बहुत माने मे होता है इसलिए अर्थ का मूल्य रूप से बढ़ जाता है और एक स्थिति वह आती है जब रूप अर्थ के हाथ मे बिक जाता है।"

श्री पिल्ले बड़े ध्यान से सान्याल साहब की बात सुनते रहे और आगे भी कुछ सुनने को उल्लसित रहे। सान्याल साहब ने प्रसंग को आगे बढाते हुए कहा—

स्त्री और पुरुष का जीवन सबसे अधिक सेक्स पर परस्पर अवलम्बित है, जिसका सयोग तो होता है किन्तु प्रायः अमर नहीं होता। समाज में सैकड़ों विधवा होती रहती है और सैकड़ों ही विधुर। ये दोनों ही व्यक्ति जीवन के एक क्षेत्र से अतृप्त रहते हैं और जिसके फलस्वरूप उनमे से 80 प्रतिशत व्यक्ति इस तृष्णा को बुझाने का सरोवर ढूंढा करते हैं। प्राकृतिक रूप से सभी स्त्रियाँ अधिक संघर्षमय जीवन नही व्यतीत कर पाती इसलिए कुछ दिन बाद वह कोई आश्रय ढूंढ़ने लगती हैं और यहीं पर पुरुष को उनका चुनाव करने का अवसर मिलता है। बाजार के लंगड़े और दशहरी आमों की तरह सुन्दर स्त्रियाँ भी प्राथमिकता पाती हैं, वे या तो किसी के घर में पूर्ण आश्रय पा जाती है अथवा फिर अपने यौवनमय रूप का उपयोग कराने का मुआवजा लेने लगती है। समाज मे यहीं से वेश्यावृत्ति का जन्म होता है। आगे चलकर फिर इसी में बहुत तरह के व्यापार होने लगते हैं। सुसंस्कार और मर्यादा के नाम पर जीने वाले संयत परिवारों पर भी छापे मारे जाने लगते हैं।

श्री पिल्ले ने सिर हिला कर कहा, "किन्तु सुना है ससार के कुछ बहुत प्रगति-शील देशों मे वेश्यावृत्ति का सर्वनाश किया जा चुका है।"

"सुनाई देने वाली बात दूसरी है, यथार्थ यह है कि वहाँ वैधानिक रूप से स्त्रियाँ दूकान नहीं बैठ सकतीं और न वहाँ कोई व्यक्ति औरतों का सट्टा ही खेल सकता है किन्तु रूप की पिपासा चूंकि वैधानिक रूप से नहीं रोकी जा सकती और चूंकि वह

बहुत कुछ व्यक्तिगत चीज होती है इसलिए वहाँ महिलाओं को बहुत से अन्य प्रकार के प्रलोभन देकर उनसे प्राइवेट हाउस चलवाए जाते हैं।

सबके लिए रोजी-रोटी की व्यवस्था होने के उपरान्त साधारणतया व्यक्ति मे जो सुख-सामग्री जुटाने और भोग-विलास की असीमित तृष्णा होती है···उसके कारण बहुत से अनैतिक कार्य भी होते हैं और···ऐसे कार्यों पर आज भी विराम नहीं लग सका है। मनुष्य पहले दो टुकड़े रोटी, गज भर कपड़े की ही बात करता है, जब वह पूरी हो जाती है तो रोटी पर घी चुपड़ना शुरू करता है और गज से नपा तीन गज कपड़ा पहनने लगता है। उसके आगे बढ़ते-बढ़ते वह फिर रेशम के कपड़े, मखमल के बिस्तरे और शाही टुकड़ों से भी अतृप्त रहता है। यह लिप्सा ही मनुष्य से अनैतिक कार्य कराने लगती है और फिर अनैतिक कार्यों की भी अनेकानेक शाखाएँ फूट जाती हैं। पुरुष प्राकृतिक रूप से अधिक जागरूक और चालाक होता है इसीलिए वह स्त्री को अपनी आवश्यकता की पूर्ति का साधन बना लेता है और स्त्री पहले परिस्थितिवश नत होती है किन्तु आगे चलकर इस नत होने को ही जीविका का साधन बनाकर रहने लगती है। रूपवान सोलह आने सफल होती हैं और अन्य इस वृत्ति का एक अंग मात्र बन कर रह जाती हैं। प्रगतिशील देशों मे आज भी वेश्यावृत्ति है, हाँ उसका कुछ रूप सुधरा हुआ है।

श्री पिल्ले वेश्यावृत्ति पर लम्बा-चौड़ा भाषण सुनकर बोले, "विषय पर्याप्त समस्यामूलक है।"

सान्याल साहब ने अपनी विद्वत्ता पर बघार देते हुए आगे कहा, "पश्चिमी देशो मे तलाक की जो प्रथा पैदा हुई उसकी जड़ क्या है? मूल रूप से रूप-यौवन और सौन्दर्य की पिपासा, जो एक व्यक्ति के साथ में बँधकर पूरी नही होती। पारिवारिक झगड़े और रुचि के पीछे जो तलाक होते हैं वे वास्तविक कारण पर बहुत कम होते हैं, वे तो बहाना बनाने के आधार होते हैं। हमारे यहाँ विवेकशून्य पुरुष, पत्नी-रूपी एक स्त्री से जब दाल-भात की तरह ऊबने लगता है तो कुछ पैसे में वेश्या के यहाँ जाकर नये सौन्दर्य का उपभोग करता है। और विदेशों में वेश्या गमन और तलाकबाजी साथ-साथ होती है।

"मैं समझ गया, हम लोग भी कहाँ से कहाँ बहक गए।"

"भाई, बात यह है कि विचारों का स्रोत जब उबल पड़ता है तो फिर रोकते नही बनता। उस दिन आपने बुढ़ौती के ब्याह पर व्याख्यान दे मारा था। आज का प्रसग मेरे अनुरूप छिड़ गया और मैं बह निकला।" सान्याल साहब ने अपनी बात नये रूप से फिर पकड़ी, "हाँ तो मैं रामेश्वरी बाई की बात कर रहा था। मेरे कहने का तात्पर्य यह कि मैं कोई महान् साधक नहीं हूँ, साधारण व्यक्तियों के समान ही मैं भी रूप, यौवन और कला का प्रेमी हूँ। आपको तो पता है मैं रामेश्वरी बाई के सम्पर्क में तभी आया था जब मेरी पहली पत्नी नहीं रही थी।"

"समझ गया। मुझे अब यह बताइए नलिनी की बारात कब है?"

"बहुत जल्द।"

इसी समय बाहर से किसी के दस्तक देने की हुई और साहब ने

दौड़ कर द्वार खोला। देखा—रूपकुमार खड़ा है। सान्याल साहब प्रसन्नता से खिल उठे। उसे साथ ही अन्दर ले आए।

श्री पिल्ले ने स्वागत करते हुए रूपकुमार को बिठलाया और नलिनी को जोर से बुलाकर कहा, "नलिनी, चलो भाई तुम्हारे मास्टर साहब आए है।" रूपकुमार मुस्कराया और सान्याल साहब हँस कर बोले, नलिनी के मास्टर साहब और 'मास्टर' दोनों ही कहिए।"

नलिनी आती नहीं दिखाई दी और कामिनी ने वहाँ आकर रूपकुमार से कहा, "आप उस कमरे में जाइए, वहीं बेला सिखाइए, इनको तो पिल्ले साहब मिले नही कि बातों की बूटी घोटते ही जाते हैं।"

रूपकुमार उठकर दूसरे कमरे में गया। नलिनी बेला लिए पहले से ही बैठी थी। रूपकुमार को देखते ही उसने जानबूझकर आँखें बन्द कर लीं और तन्मयता का प्रदर्शन करते हुए गज को तारों पर घुमाना प्रारम्भ किया। रूपकुमार उसकी शोखी समझ गया और उसने चुपचाप तबला उठाकर बजाना शुरू कर दिया। नलिनी ने आँख खोली और अब रूपकुमार ने अपनी दृष्टि नीचे रखते हुए तबले को पीटना चालू रखा। नलिनी ने बेला बजाना बन्द कर दिया और गज को अलग रख कर तिरछी दृष्टि से रूपकुमार को ताकने लगी। रूपकुमार ने बेले के स्वर को जब शून्य पाया तो दृष्टि ऊपर उठाई। दोनों की ही आँखें चार हुईं और दोनों जोरो से हँसे। श्री पिल्ले के कानो मे जब हँसने की आवाज पहुँची तो वे उस कमरे में पहुँचे और निःसंकोच होकर बोले, "नलिनी, आज मुझे भी जरा बेला सुनाओ। देखें तुम्हारे मास्टर ने क्या-क्या सिखा दिया है।"

नलिनी ने बेला उठा लिया और बोली, "गुरु की आज्ञा अवश्य पूरी करूँगी।" रूपकुमार ने श्री पिल्ले से कहा "घुँघरू के बोल यदि आप दे सकें तो फिर एक नृत्य-धुन छिड़वा दूं।"

"श्री पिल्ले बोले, यह कौन बड़ी बात है! तबला आप साधिए, घुंघरू मैं बजा दूंगा।" कमरे में इसी क्षण वीणा आई और श्री पिल्ले ने उससे घुंघरू लाने को कहा। वीणा जब घुंघरू मांगने अन्दर पहुंची तो कामिनी और सान्याल साहब भी उस कमरे मे आ गए और फिर दो-तीन नृत्य-धुनें जम कर बजाई गईं।

श्री पिल्ले ने, 'वाह-वाह' करते हुए कहा, "सान्याल साहब कलाकारों की जोड़ी स्वर्ग का आनन्द देती है।" वे झूम उठे और सान्याल साहब ने कहा, "कलाकारो का हृदय मिला रहे और साथ ही परस्पर विश्वास बना रहे तो फिर क्या बात है?"

श्री पिल्ले और सान्याल साहब दोनों ही हँसे और अब श्री पिल्ले ने बिदा ली।

श्री कुन्दनलाल शास्त्री मोहिनी देवी को शुभ सूचना देने चारुचित्रा के घर पहुँचे, किन्तु चारुचित्रा उनके पहुँचने के थोड़ा पहले ही निकष के यहाँ चली आई।

चारुचित्रा को देखते ही निकष ने दौड़कर अभिवादन किया और चारुचित्रा ने कुर्सी पर बैठते ही पूछा 'पद्मा का कुछ पता चला?

निकष ने भारी आवाज से कहा, "कुछ पता नहीं लगा।"

"कैसी अजीब घटना घटी !" चारुचित्रा ने विस्मयात्मक संवेदना प्रकट की और लम्बी साँस खींच कर बोली, "पाजी नटवर का बुरा हो। आज का दिन भी समाप्त हो रहा है। पता नहीं रात कहाँ और कैसे कटी होगी।"

निकष ने चिन्तातुर होकर धीरे कहा, "वैसे मुझे विशेष चिन्ता न होती किन्तु थोड़े दिन के अन्दर उसका विवाह होने वाला है। उसे कल ही रात को मुझे गुण्टूर पहुँचाना है। पद्मा के पिता का पत्र आज आ गया।"

"यह तो और भी चिन्ता की बात है।"

"किन्तु अब किया क्या जाय ?"

"यह विवाह कुछ दिन के लिए टल नहीं सकता ?"

"पद्मा यदि नहीं पहुँचेगी तो फिर विवाह की तारीख आगे बढ़ानी ही पड़ेगी, किन्तु यदि पद्मा के ससुराल वाले न माने तो फिर क्या होगा ?"

"होगा क्या ? वे मानेंगे क्यों नहीं ?"

"बात यह है कि आजकल लड़के वालों का मिजाज मिलता नहीं है। नौकर-चाकर लड़का है; दस लोग अपनी लड़की की गाँठ बाँधने की चिन्ता में आगे-पीछे लगे रहते हैं। कहीं मना कर दिया ?"

"मना कर दिया तो कौन अनोखा लड़का है ? क्या पद्मा को दूसरा वर ही नहीं मिलेगा ? इच्छानुसार वर भी तो नहीं है।"

"बात तो ठीक है और यह वर पद्मा को पसन्द भी नहीं है किन्तु···"

"क्या पद्मा ने भी अपने मुख से कुछ कहा है कि उसे यह पसन्द नहीं ?"

"सो तो वह कुछ भी नहीं बोली किन्तु हाँ, मेरे देखने में एक पत्रिका का एक लेख आया है जिसकी डेढ़ दर्जन पंक्तियो पर "पद्मा ने लाल पेन्सिल से निशान लगाया है। ऐसा आभास मिलता है कि अन्दर ही अन्दर वह परेशान है।"

"कौन सी पत्रिका है ? क्या लेख है ?"

"पत्रिका का नाम है 'क्रान्ति'। इसमें प्रगतिशील विचारों के लेखों का बाहुल्य रहता है।" निकष ने पत्रिका उठाई और फड़फड़ा कर लेख खोला।

चारुचित्रा ने उत्कण्ठित होकर कहा, "जरा इन पंक्तियों को पढ़िए तो।"

निकष ने पढ़ना शुरू किया—मध्यमवर्गीय परिवार में कला का जितना गला घोटा जाता है उतना कहीं भी नहीं। चार-पाँच सौ रुपये पाने वाले व्यक्ति अधिकतर घर-गृहस्थी और चूल्हा-चक्की में घूमते हैं। कोल्हू में घूमने वाले बैल की आँख में तो पट्टी बँधी रहती है इसलिए उसे चक्कर नहीं आता किन्तु इस बैल को चारों ओर की वस्तुएँ चलती दिखाई देती हैं। फलतः उसको दिन में तीन बार चक्कर आता है। मध्यम-वर्गीय परिवारों का मानसिक स्तर तो प्रायः ऊँचा होता है किन्तु सामर्थ्य और साधन का अभाव अधिक रहता है···"

निकष ने सम्पूर्ण रेखांकित अंश चारुचित्रा को पढ़कर सुनाया। चारुचित्रा ने कहा 'बात तो सत्य ही है जिसकी जीवन में कोई कलात्मक रुचि न हो उसको ते

फिर भी थोड़े में जीवनयापन करना सरल हो जाता है किन्तु एक कलाकार को तो ऐसी स्थिति मे दम घुटने का ही आभास प्रतिक्षण मिलता है।"

निकष ने चारुचित्रा की बात सुनी किन्तु बोला, "पद्मा के पिता कलाकार के हृदय की टीस समझने में पूर्णतया असमर्थ है क्योंकि आजीवन उन्होंने किसानी की है और आज पद्मा जो कुछ भी है वह मेरी जिद से है। अब विवाह की तैयारियों को रोक कर दूसरी व्यवस्था के लिए तभी पत्र लिख सकता हूँ जब पद्मा का विवाह पूर्णतया मैं अपने कन्धे पर ओढ लूँ।"

"तो ओढ़ लीजिये, मैं आपकी सहायता करूँगी किन्तु···मेरा तात्पर्य है कि इस समय पद्मा की खोज ही प्रथम वस्तु है। बैठे-बैठाए एक मुसीबत सिर पर आ पड़ी।" चारुचित्रा ने कहा और निकष कुण्ठित होकर बोला, "आज रात तक यदि पद्मा नहीं आती तो फिर कल मुझे कहीं बाहर जाना पड़ेगा।"

"कमल बाबू से यदि नटवरलाल के घर का पता चल सके तो शायद पद्मा का पता लग जाय।"

"किन्तु कमल से बात कौन करे? वह तो शायद स्वयं इस षड्यन्त्र मे सम्मिलित है।"

"श्री रामास्वामी पिल्ले से शायद कुछ काम बने। वे कमल बाबू के नाटक मे दमयन्ती और मीना जोशी का नृत्य प्रस्तुत करा रहे थे। वे चतुर व्यक्ति भी हैं। उनसे शायद कुछ काम बने।"

"क्या उन्हें इस समय बुलाया जाय?"

"नहीं मैं तो नहीं जानता। तुम तो जानती होगी?"

"नहीं मुझे भी उनका घर नहीं मालूम। कभी···आवश्यकता ही नहीं पड़ी।"

"तब क्या किया जाय?"

"करिएगा क्या, कल प्रातः की किसी गाड़ी से बम्बई जाइए। बम्बई ही एक ऐसा नगर है जहाँ भागे और भगाए हुए लोग अधिक मिल जाते हैं।"

निकष हँसकर बोला, "बम्बई तो मुझे यों भी जाना था किन्तु···"

"क्यों, यो क्या काम था?"

"सुना है वहाँ किसी प्रकाशक ने चार्ल्स वैब्सटर लेड विथर की पुस्तक 'मैन, ह्वेंस, हाउ एण्ड ह्वीदर' का अनुवाद प्रकाशित किया है।"

"क्या है उस पुस्तक में?"

"उस पुस्तक में तो बहुत कुछ है किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि उसके अन्दर दक्षिणी अमरीका की पेरूवियन सभ्यता के साहित्य और कहानी की चर्चा के अन्तर्गत कहा गया है कि पेरूवियन संस्कृति आज से चौदह हजार वर्ष पुरानी है, उसे मैं पढ़ना चाहता था।"

"चौदह हजार वर्ष!"

"हाँ, चौदह हजार।"

चारुचित्रा की आँखें फिर गई और निकष ने कहा

"वैज्ञानिक इस धरती की आयु करोड़ों वर्ष की आँकते हैं किन्तु सभ्यता और संस्कृति का इतिहास 10-20 हजार वर्ष का भी नहीं मिलता। इतने बड़े भू-मण्डल मे संसार के अन्दर कितनी संस्कृतियाँ जागीं और सो गईं, इसको यदि हम जान सकें···"

"आप भी अजीब व्यक्ति है। हर समय इस खोज और उस खोज के चक्कर मे रहते है। बम्बई जाकर पद्मा का पता लगाइएगा कि पेरूवियन सभ्यता का। संसार मे आपकी दृष्टि किसी और वस्तु पर भी ठहरती है ?"

"मुझसे भूल हुई। सचमुच मुझे पद्मा का पता लगा लेना है। किन्तु हाँ·· यह तो बताओ यह कौन-सी बात पूछी कि मेरी दृष्टि किसी और वस्तु पर भी ठहरती है ? क्या मेरी दृष्टि तुम पर नहीं ठहरी ?"

चारुचित्रा चुप हो गई। उसने अपनी चमकती हुई आँखो से केवल निकष के मुख की ओर ताका और निकष ने धीरे से कहा—"शायद तुम भी मेरी एक खोज ही हो।"

"हूँ," चारुचित्रा ने ठुनक कर कहा, "बस मीठी बातों से बहलाए जाइए।"

"बहलाने की बात नहीं है, मुझे विदेश हो आने दो, बस फिर···"

"चारुचित्रा ने पुतलियाँ घुमा कर कहा, "और यदि विदेश में भी कोई और अच्छी खोज मिल गई तो ?"

"कैसी बात करती हो चारु ! यदि यही बात है तो मैं विवाह के उपरान्त ही अब विदेश जाऊँगा।"

चारुचित्रा खिल उठी और बोली, "आप पद्मा की खोज तुरन्त करें। सम्भव हो तो आज रात की गाड़ी ही से।"

'अवश्य, अवश्य, मैं शीघ्र ही प्रबन्ध करता हूँ।"

मथरान की हरी-भरी पहाड़ियों में पद्मा अकेली घूम रही थी। बम्बई प्रदेश के सम्पन्न परिवार वायु परिवर्तन के लिए प्रत्येक वर्ष की भाँति उस वर्ष भी बहुतायत से वहाँ आए थे। स्थान-स्थान पर पिकनिक की टोलियां बैठी दिखाई देती थीं। पद्मा ने दूर ही दूर से इन मोहक दृश्यों का आनंद लिया किन्तु 24 घंटे से उसने कुछ भी नही खाया था। वह संकोच और भय से किसी अन्जान से कुछ कह-सुन भी नहीं पाई। वह घर लौटने के लिए पर्याप्त पैसे भी नहीं लिए थी। बिना टिकट चलने से पकड़े जाने का भी भय था। उसकी दृष्टि अपने कुण्डलों पर पड़ी। उसने उन्हें बेचने का निश्चय किया। किन्तु फिर सोचने लगी इसे बेचने के लिए भी तो किसी दुकानदार के पास जाना होगा। यहाँ जितने भी लोग आते हैं वे होटलों में खाते-पीते और मौज करते हैं। दुकानों से अनेकानेक वस्तुएँ खरीदते हैं और वह एक महिला होकर जब सोने की वस्तु को बेचने जाएगी तो दुकानदार क्या सोचेगा ? वह बहुत से प्रश्न कर सकता है। उन प्रश्नो का उत्तर देना अनिवार्य होगा। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ एक चट्टान पर बैठ गई। दिन ढल गया रात फिर आई। पिछली रात विनायक के मन्दिर में किसी प्रकार कट गई थी आज भी वहाँ कोई उसे रात भर नहीं टोकेगा यह निश्चित न था वह उस सूने मन्दिर

मे जाने से डर भी रही थी। धर्मशाला मे अकेले टिकना ठीक नहीं था। बहुत बुद्धि लगाने के बाद उसने स्टेशन के प्रतीक्षालय में रहना अधिक सुरक्षित समझा। वह तुरन्त स्टेशन की ओर मुड़ गई। मार्ग से पूर्णतया परिचित न होते हुए भी वह यों चल रही थी मानो वहाँ की रहने वाली है। वह घूमती-फिरती चरलोट झील की ओर निकल गई। बड़ा मोहक दृश्य था। वह कुछ ठहरी, किन्तु जिस भीड़ को देखकर मनुष्य को आकर्षण मिलता है कि वह भी उधर जाय, उसी भीड़ से डर कर वह दूसरी ओर मुड़ी। मार्ग से कुछ दूर उसे घड़घड़ाहट की आवाज सुनाई दी। भयातुर हिरनी-सी उसने अपने को एक चट्टान की ओट में किया। छिप कर देखा तो एक मोटर-रेल पटरियो पर चलती दिखाई दी। उसकी जान में जान आई। वह अपने पर हँसी। इसी क्षण पीछे की ओर दस-बारह युवतियों के हँसने का शब्द सुनाई दिया। उसने देखा, सचमुच एक टोली आ रही है। उनके आगे-आगे तीन कुत्ते उछलते-कूदते चले आ रहे थे और उनके खेल का प्रभाव ही था कि उन युवतियो की हँसी फव्वारे की तरह छूट रही थी। पद्मा ने पुनः ध्यान से उन्हें देखा। वह विस्मय मे आ गई। वे शिवशंकर की नृत्य मण्डली की कलाकर्त्रियाँ थी। पद्मा ने उनके निकट जाकर एकदम से पूछा, "मुझे पहचाना?" दो-तीन एक साथ बोल पड़ीं, "आप पुणे में हमारे नृत्य में सम्मिलित हुई थीं।" एक ने कहा. "हाँ-हाँ, आप ही तो राधा बनी थी।" दूसरी बोली, "आप पद्मा है।" और तीसरी ने कहा, "नटवरलाल आपको ही तो लेकर भागा···।"

"हाँ, हाँ," पद्मा बोली, "उस बदमाश से प्राण बच गए यही बहुत हुआ। शिवशंकर जी कहाँ है?"

"वे बैण्ड स्टैण्ड में हवा खा रहे है।" एक ने कहा।

"बैण्ड स्टैण्ड?" पद्मा ने विस्मय से पूछा।

"हाँ यहाँ बैण्ड स्टैण्ड बहुत अच्छी जगह है। चलो वही चलें।"

पद्मा जो छुईमुई की तरह मुरझा गई थी, कुछ खिलकर बोली—

"चलो, चलो, चलो।"

"पद्मा जी," एक ने पूछा, "कैसे बचीं आप नटवर के फन्दे से?"

"क्या बताऊँ, चलो शिवशंकर जी के पास चल कर सभी को एक बार मे बता दूँगी। मुझे आप लोग यह बताएँ कि यहाँ यह मण्डली कैसे आ पहुँची?"

"हम लोग घूमने को यहाँ दो दिन के लिए रुक गये हैं। हमारी मण्डली बम्बई जा रही है। परसों हम सब यहाँ से चल देंगे।" पद्मा को उत्तर मिला और बात ही बात में वे सब बैण्ड स्टैण्ड पर पहुँच गए।

पद्मा की शिवशंकर से भेंट हुई और शिवशकर ने विशेष उत्कण्ठा से पद्मा की कथा सुनी। पद्मा का परिचय अच्छी प्रकार से अन्य नर्तकियों से हो गया और उसका अच्छा स्वागत हुआ। बैण्ड स्टैण्ड से उठकर सभी होटल में आए और रात्रि का भोजन करके पद्मा जल्द ही सो गई। प्रातः ठंड के कारण चार बजे उसकी आँख खुली। उसने देखा उसके चारों ओर सभी शाल ओढ़ गहरी निद्रा मे हैं पद्मा को ठंडक लग रही थी सभी का ओढ़ने का अपना-अपना प्रबन्ध था किन्तु उसके लिए कोई भी ध्यान

न रख सका था। पद्मा ने वैसे ही सोने का प्रयास किया किन्तु फिर वह सो न सकी। वह पड़े-पड़े सोचने लगी—

अब कल ही मैं पूना लौट जाऊँगी। शिवशंकर रुपए का प्रबन्ध अवश्य ही कर देंगे। उसने अपने हाथों की रेखाएँ देखीं और कहा—शायद ऐसी रेखाएँ अच्छे भाग्य को रखने वाली होती है। उसने अपने हाथों को चूमा और फिर आगे विचारों में बही। पूना पहुँचते ही उसे गुंटूर जाना ही पड़ेगा। उसका विवाह है! किन्तु किसके साथ? पता नहीं कैसे व्यक्ति होंगे वे। मेरे नृत्य का मूल्य कहाँ तक कर पाएँगे। कहीं ऐसा न हो जैसा उस पत्रिका में लिखा था। कलाकार की आत्महत्या···चूल्हा-चक्की का चक्कर···साधन का अभाव,···बच्चे···फूल-पौधे की सुन्दरता···फिर वे ही बोझ स्त्री के रूप में यह ह्यूमन फैक्ट्री स्त्री मनोरंजन का साधन···उसका अपना अस्तित्व नहीं, रह जाता···कला की प्रगति पर विराम···विराम···विराम लग जाता है। नहीं मैं विराम नहीं लगने दूँगी। मैं जान-बूझ कर अपनी कला की हत्या नहीं होने दूँगी। हाँ···क्यों न इस नृत्य मण्डली में काम किया जाय, अहा कितना यश मिलता है इन सभी को! पद्मा ने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। वह चुपचाप उठ बैठी और अपने कमरे से दूसरे कमरे में पहुँची। शिवशंकर सो रहा था। वहाँ दूसरा कोई भी न था। उसने सोचा कि उसे जगाकर चुपचाप नृत्य मण्डली में भरती होने की बात कर ले। पद्मा कुछ देर द्वार पर सोच-विचार करती हुई खड़ी रही। संयोग से शिवशंकर की आँख खुली। उसको जागता देखकर पद्मा उसके पास पहुँच गई। भोर होते ही पद्मा को अपने कमरे में देखकर शिवशंकर विस्मय से बोला, "क्या बात है?"

"मुझे कुछ विशेष कार्य था।"

"कहो, क्या बात है?"

"मैंने कल रात आपको अपने भगाए जाने की जैसी कहानी बताई है वह सत्य होते हुए भी मैं अब मामा जी के पास नहीं जाना चाहती।"

"क्यों?"

"मेरा विवाह गुंटूर में तय हो गया है और जिसके साथ में यह विवाह तय हुआ है, उसे बिल्कुल नहीं चाहती।"

"क्या बात है उसमें?"

"बात कोई विशेष नहीं है, वस्तुतः मैं नहीं चाहती।"

"अरे! नहीं चाहती? यह भी कोई बात है।"

"बात यह है कि उनके साथ में मेरा गला घुट जायगा।"

"क्यों घुट जायगा? पहेली मत बुझाओ। साफ-साफ बात कहो।" पद्मा सर्दी से कुछ अधिक काँप रही थी। वह कुछ रुककर काँपती हुई बोली, "मेरे होने वाले पति कला के क्षेत्र से सम्भवतः बिल्कुल शून्य हैं···"

"तुम्हें सर्दी लग रही है, आओ पलंग पर बैठ जाओ। लो चादर ओढ़ लो।"

'नहीं ठीक है, मैं चाहती हूँ कि आपकी नृत्य मण्डली में मैं भी···"

'पहले लो चादर ओढ़ो' ने पलंग से उसके ऊपर चादर

डाल दी। पद्मा धीरे से पलंग की पट्टी पर बैठ गई और बोली, "आप यदि अपने साथ मुझे भी···"

शिवशंकर ने उससे कुछ दूर बैठते हुए कहा, "मुझे कोई विशेष आपत्ति नहीं है क्योंकि कला की दृष्टि से जो कुछ मैं आवश्यक समझता हूँ वह तुम में है किन्तु क्या मामा जी तुम्हारे इस व्यापार से क्रुद्ध न होंगे ?"

शिवशकर और पद्मा की बात चल रही थी कि एक नर्तकी के कानों में कुछ महक पहुँची। उसने उठकर देखा—पद्मा और शिवशंकर एक ही पलंग पर बैठे बात कर रहे हैं। उसने विस्मय से अपने मुँह में उँगली डाली और पद्मा की बात सुनी—

"अपना जीवन सुखी बनाने के लिए यदि कुछ दिन मैं अपने मामा और पिता की दृष्टि में कुपात्र भी गिनी जाऊँ तो मैं इसकी चिन्ता नहीं करती। अब मैं बम्बई आपके साथ ही चलूँगी।"

"तो क्या पूना अब जाओगी ही नहीं।"

"जाऊँगी किन्तु अब दो दिन बम्बई में नृत्य प्रस्तुत करने के बाद।"

"मैं ऐसी सलाह नहीं दे सकता। तुमको उचित है कि पहले पूना लौट जाओ और अपने मामा से अपने हृदय की बात खुल कर कह दो। बाद में मेरी मण्डली में चली आना। मैंने तो अब आश्वासन दे दिया है।"

"अच्छा तो ऐसा ही करूँगी। दिन निकलते ही आज आप कृपा कर मामा जी को तार दे दीजिएगा कि वे मुझे यहाँ से ले जायें।"

"यह कार्य मैं कर दूँगा।"

पद्मा अपनी बात समाप्त कर शिवशंकर के कमरे से बाहर जैसे ही आई उस जागी हुई नर्तकी ने चुटकी ली, "रात तो बड़ी सुख से कटी होगी।"

पद्मा ऐसा व्यंग्य सुनने को जरा भी तैयार न थी। क्रोधित होकर बोली, "मैं किसी की नायिका नहीं हूँ।"

"गुस्सा हो गई ?" वह बोली, "मेरी आँखें कमबख्त बड़ी खराब हैं, अब कानो से सुनकर भी कल से आँख न खोलूंगी।"

"कल तो मैं रहूँगी भी नहीं।"

"भूल गई थी, किन्तु एक बात है।"

"क्या ?" पद्मा ने आँखें गड़ा कर पूछा।

"हो तुम भाग्यवान, शिवशंकर जी की आज तक किसी पर आँख नहीं उठी और तुमने पहली रात ही सिक्का जमा लिया।"

"मैं ऐसा परिहास पसन्द नहीं करती।"

"परिहास ?" वह हँसी और शिवशंकर को उस ओर आता देखकर वहाँ से हटकर अन्यत्र चली गई।

'तुम्हारा जैसा कुपात्र तो मैंने देखा नहीं आखिर पद्मा को भी वश में नहीं रख सके'

"क्या कहूँ कमल, वह इतनी चलती हुई निकली कि आशा नहीं थी।"

"सारी घटनाएँ सम्भावना के अन्दर ही नहीं घटतीं, तुमने मुझसे रायल बार में मिलने को कहा था किन्तु मेरे मिलने के पहले ही तुम वहाँ से खिसक गए आखिर…"

"उसके लिए तो मैंने पहले ही अपनी स्थिति बता दी। बार में पुलिस का खतरा…"

"तो फिर जब तुम्हें विदित था कि ऐसे कामों में कोई भी घटना घट सकती है तो पद्‌मा से सतर्क क्यों नहीं रहे?"

"अब मैं क्या बताऊँ!"

"क्या बताऊँ! बताओगे क्या? मुझसे भी चालाकी खेलनी शुरू कर दी है। तुम्हारी किसी भी बात का विश्वास नहीं किया जा सकता। चारुचित्रा को ले जाने में तुम असफल हुए। पद्‌मा को वश में करने में बेकार प्रमाणित हुए। पता नहीं तुम्हारा अपना क्या मन्तव्य था…"

"कमल…" नटवर ने घबड़ाकर कहा। और कमल ने क्रोध से दाँत पीसकर कहा, "तुम्हारे पीछे मैंने सैकड़ो रुपये बर्बाद कर दिए किन्तु…"

"कमल! मित्र! मुझ पर विश्वास लाओ…"

"विश्वास मनुष्य को अपने पर ही करना चाहिए। काम भला हो या बुरा, अपने बाहुबल से ही सिद्ध होता है। मैंने चारुचित्रा को वश में कर लिया है।"

"चारुचित्रा को वश में कर लिया है! कैसे?"

"कैसे!" कमल अट्टहास करके हँसा और बोला, "उससे मेरा विवाह तय हो गया।"

"विवाह तय हो गया!!" नटवर ने विस्मय में आते हुए पूछा और कमल ने अकड़कर कहा, "हाँ।"

नटवर हक्का-बक्का होकर कमल की ओर देखने लगा और इसी क्षण सेठ लक्ष्मणदास ने जो उस समय ऊपर के कमरे में थे, कमल को बुलाया।

कमल ऊपर पहुँचा और सेठ लक्ष्मणदास ने उसके हाथ में एक पत्र पकड़ाकर कहा, "इसे पढ़ो।" कमल ने पढ़ना शुरू किया—

आदरणीय लक्ष्मणदास जी,

इस पत्र के पूर्व आपको एक पत्र और लिख चुका हूँ किन्तु उत्तर पाने में असमर्थ रहा। मेरी आपकी जैसी बातचीत हुई थी उसी के अनुसार चिरंजीव नटवरलाल को मैंने सान्याल साहब की लड़की देखने के लिए भेजा था। आज डेढ़ महीने से ऊपर हो गया है और नटवरलाल लौटकर नहीं आया है। पूना पहुँचने पर उसने एक पत्र अपने सकुशल पहुँचने का डाला था किन्तु फिर कोई भी समाचार हाथ नहीं लगा। यदि नटवर अभी आपके यहाँ हो तो उसे शीघ्र ही दिल्ली भेज दें। विवाह तय हुआ या नहीं कुछ भी पता नहीं चला कृपया पत्र पाते ही उत्तर दें

आपका

कमल ने पत्र पढ़कर समाप्त ही किया था कि लक्ष्मणदास ने क्रोध में आकर कहा, "मुझको धोखा दिया गया। यह आपके मित्र मिस्टर जेम्स नहीं नटवरलाल है। मैं कहूँ दो महीने से इन जेम्स साहब को अपने घर की खबर क्यों नहीं। वह औरत जो उस दिन मिसेज जेम्स बनी थी वह कौन थी ?"

कमल चुप रहा और लक्ष्मणदास ने कहा, "आवारगी सूझ रही है। विवाह के नाम से चिढ़ते हो और उस बदमाश नटवर के साथ बाजारू औरतों के साथ डान्स किया जाता है।···बुलाओ अपने मित्र को।" कमल ने चुपचाप नटवर को बुलाया और लक्ष्मणदास ने संयत होकर कहा, "मिस्टर जेम्स, आप आज ही यहाँ से अपने घर दिल्ली जाइए और अपनी नटलीला समाप्त कीजिए।" सेठ जी ने कमल के हाथ से पत्र छीनकर नटवर के सामने फेंकते हुए कहा, "पढ़िए इसे और···"

नटवरलाल ने पत्र पढ़ा और चुपचाप वहाँ से सिर नीचा करके नीचे के कमरे में चला आया।

सेठ जी ने कड़ककर कमल से कहा, "बेचारे कुन्दनलाल शास्त्री चारुचित्रा का विवाह लेकर आए थे और मैंने तुम्हारे लिए उस गुणवती लड़की को पाकर अपने को धन्य समझा था किन्तु मुझे नहीं मालूम था कि उस नटवर का जहर यहाँ भी चढ़ चुका है। ऐसे नालायक लड़के से ऐसी लड़की का जीवन बर्बाद नहीं होने दूँगा। अब चारुचित्रा का विवाह तुमसे नहीं होगा···"

"पिता जी···"

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहता।" सेठ जी ने मुख फेरकर कहा।

कमल चुपचाप नीचे उतर आया और नटवरलाल ने अपना सूटकेस उठाते हुए कमल से कहा, "मुझे क्षमा करना मित्र। नमस्ते।" वह चल दिया।

कमल ने केवल हाथ जोड़े। वह मुँह से कुछ नहीं बोला। नटवर चला गया।

मैंने सोचा था चारुचित्रा से विवाह करने का विचार छोड़ दूँगा। इतना अधिक सम्पर्क बढ़ाना ठीक नहीं। विदेश से लौटने पर जैसी भी स्थिति होगी देखा जायेगा। किन्तु यह मुझे हुआ क्या ? मैं अपने को रोक क्यों न सका। मैंने व्यर्थ उसके कन्धों पर हाथ रखे। उहूँ, कैसा कमजोर व्यक्ति हूँ मैं ! कितनी उल्टी बात हुई ! मैंने सोचा था चारुचित्रा से विमुख होकर बात करूँगा किन्तु मैंने कहा···मैं···मैं अब पीछे नहीं हटूँगा। बँध गया ना उस मृगनैनी के जाल में। जाल ! मृगनैनी का जाल ! नहीं-नहीं वह जाल नहीं था। वह जाल नहीं है किन्तु हाँ···पद्मा का पता नहीं। उसकी खोज की चिन्ता नहीं और प्रेम की भँवर में घूमने लगा। मैं कितना अनुत्तरदायी व्यक्ति हूँ। पद्मा कहाँ होगी, कौन जाने ! पुलिस ने भी कोई समाचार नहीं दिया ! पद्मा बड़ी है। उसे स्वयं किसी प्रकार बचने का मार्ग निकाल लेना चाहिए था। मैं अब नरसिंहम् जी से क्या कहूँगा···सचमुच मैं बड़ा मूर्ख हूँ। मूर्ख ! किन्तु क्यों ? मेरी क्या भूल है ? ठीक है पद्मा को मंच पर जाने ही नहीं देना चाहिए था। किन्तु क्यों, क्या मुझे पता था कि ऐसा कुछ होने जा रहा है ?

निकष विचारों में उलझा बैठा था कि तारघर के चपरासी ने आवाज दी। निकष दौड़कर बाहर गया और तार को पढ़ते ही उछल पड़ा। उसने एक रुपया चपरासी को इनाम दिया और उसने अपने घर के सभी व्यक्तियों को शुभ समाचार सुनाया—तुरन्त मथरान चले आइए। पद्मा यहाँ हम लोगों को मिल गई। "शिवशंकर।" निकष ने चारुचित्रा को स्वयं सूचना दी और वह मथरान के लिए तुरन्त ही चल दिया।

गाड़ी चट्टानों और पहाड़ों की छातियाँ चीरती आगे-आगे भाग रही थी और उससे भी तेज निकष के मस्तिष्क में विचारों की शृंखला बँध रही थी।

पद्मा को पूना लाते हुए गुण्टूर पहुँचा दूँगा। उसके भगाए जाने का समाचार यदि उसके ससुराल वालों को पता चल गया तो फिर बहुत बुरा होगा। शायद वे विवाह भी न करें। किन्तु इसमें पद्मा का क्या दोष है, जो उसका विवाह रोक देंगे।···रोक देने दो विवाह। कौन बहुत अच्छा वर है। ऐसे तो बीसियों पड़े हैं।···नहीं यह बात गलत है। आज के युग में नौकर-चाकर लड़के मिलते कहाँ हैं। अधिक सम्पन्न घराने के लड़के अपने स्तर से ऊँचे घर में सम्बन्ध खोजा करते है। बेचारे नरसिंहम् जी के पास कहाँ रुपयों की गाँठ है जो गजेटेड आफिसरों से पद्मा की भाँवर फेरी जा सके।···सौन्दर्य के बूते पर अमीर घर मिल सकता है, किन्तु क्या यह आवश्यक है कि वहाँ पद्मा की कला का मूल्य हो ही जाय ? सचमुच रूप और कला में महान् अन्तर है। केवल रूप पर रीझने वाले व्यक्ति बुद्धिमान नहीं कहे जा सकते और हाँ कला का मूल्य केवल धनवान ही समझते हो यह भी नहीं कहा जा सकता। कला यदि कला के लिए ही है तो केवल सामर्थ्य को ही आनन्द दे सकती है किन्तु यदि कला मानवमात्र के लिए है तो वह धनी और निर्धन दोनो को ही सुख प्रदान कर सकती है। धनवालों ने सदा ही पैसे के जोर से कला को अपनी बाँदी बनाकर रखा है, क्यों न इसे सर्वव्यापी और जनोपयोगी बनाया जाय। पद्मा ने साधारण घर में जन्म लेकर अपनी कला सिंचित की है, अब इस बिरवे को किसी धनवान के हाथ क्यों सौंपा जाय ? जैसे घर में वह पाली गई है वैसे ही घर का गौरव भी उसे बढ़ाना चाहिए। ठीक है संघर्ष से डरने की आवश्यकता नहीं। पद्मा का विवाह गुण्टूर में ही होना चाहिए। उसी क्लार्क के साथ। कला का आनन्द उठाने का अधिकार क्या साधारण वर्ग को नहीं है। हम क्यो उसके इस अधिकार से उसे वंचित कर ऐसे वर्ग को समर्पण करें जो स्वयं सब कुछ पाने में सामर्थ्य है और जो उपकृत होने पर भी उपकारक बना रहता है ! पद्मा की कला का हनन हो जाना अच्छा किन्तु उपेक्षा की दृष्टि से देखने वालों के हाथ बिक जाना अच्छा नहीं। निश्चय ही कला को आने वाले दिनों में महलों से उतरकर झोंपड़ियों मे आना होगा।

पद्मा ने उस पत्रिका में जो कुछ भी पढ़ा है ठीक है किन्तु संघर्षशील जीवन से भागकर कितने कलाकार धनवालों की छाया मे बैठ सकते है ? पद्मा महिला है और सुन्दर है इसलिए सचमुच उसे बहुत से रईसजादे मिल सकते हैं ? किन्तु ससार के सभी कलाकार तो रूप के साँचे में ढले नहीं हो सकते। उन्हें तो अपना मार्ग निर्माण स्वय से करना होगा। सचमुच पुरुष ने अभी तक रूप का ही आदर करना सीखा है कला का नहीं गुण का नहीं

पद्मा के रूप और गुण को किसी धनवान को सौंपने की आवश्यकता नही। निश्चय ही पद्मा का विवाह उसी लिपिक उसी क्लार्क से ही करना ठीक है।

चारुचित्रा ने पद्मा की कला पर तरस खाया था। किन्तु नही मैं चारु को भी समझाऊँगा कि वह स्थिति को समझे और यदि पद्मा सचमुच इस विवाह से कुण्ठित है, तो उसे समझाए कि उसे यह विवाह कर लेना चाहिए।

विचारो के सागर में डुबकी लगाते ही मथरान स्टेशन पर आ पहुँचा।

गाड़ी से उतरते ही निकष ने प्लेटफार्म पर शिवशंकर और पद्मा को खड़ा पाया। पद्मा ने दौड़कर मामा जी का हाथ पकड़ा और निकष ने शिवशंकर की ओर कृतार्थ दृष्टि से देखा। वे तीनों ही लौटकर होटल में पहुँचे और निकष का उचित स्वागत किया गया।

बडी देर तक उन लोगों में नटवर की बात चलती रही। उस दिन की घटना की पुनरावृत्ति अनेक प्रकार से की गई। बात ही बात में पद्मा के विवाह की बात भी चली और तभी निकष ने कहा, "पद्मा का विवाह गुण्टूर मे तय हो गया है।" शिवशकर ने पूछा, "लड़का क्या करता है ?" निकष ने गर्व से कहा, ' सरकारी कार्यालय में लिपिक है लगभग 700 रु० पाता है।" शिवशंकर ने कहा, "लड़का तो बुरा नहीं है।" निकष ने कहा, "अगले माह में यह विवाह होना है। मैं पूना पहुँचने के बाद ही तुरन्त गुण्टूर जाऊँगा। शिवशंकर ने सिर हिलाया और पद्मा का विवाह हो जाने के बाद फिर कभी जब पूना आऊँगा तो सम्भव है पद्मा से भेंट हो सके। और हॉ, यदि पूना में नही तो गुण्टूर में तो अवश्य ही एक बार पद्मा से मिलने जाऊँगा।" पद्मा ने चिढ़कर कहा, "आप कभी मत आइएगा गुण्टूर। क्या जले पर नमक छिड़कना आवश्यक है ?" शिवशंकर चौंक पड़ा और निकष समझ गया कि पद्मा को अपना विवाह पसन्द नही।

निकष ने बात टाल दी और हँसकर बोला, "चलो आज रात की गाड़ी से ही पूना लौट चलें, वहाँ सब प्रतीक्षित होगे।"

पद्मा चुप रही और निकष उस समय उठकर थोड़ा घूमने के लिए होटल के बारे चला गया। पद्मा का मानसिक द्वन्द्व तीव्र हो गया किन्तु रात की गाड़ी से पद्मा और पूना चले आए।

सान्याल साहब ने नलिनी का विवाह करने के लिए तैयारियाँ शुरू कर दी। कार्यालय से डेढ महीने की छुट्टी लेकर वे छुट्टी के पहले दिन ही श्री पिल्ले के यहाँ पहुँचे और पूछा, "रामेश्वरी बाई का कोई उत्तर आया या नहीं ?"

"हाँ-हाँ, आया क्यों नहीं···" श्री पिल्ले ने कहा, "वह अगले पन्दह-बीस दिन के अन्दर ही यहाँ आ रही है।"

"उसके साथ और कोई भी आ रहा है ?"

"हाँ-हाँ, दो व्यक्ति और हैं।"

'दो और हैं ? भाई तब तो महँगी पड़ेगी सैकड़ों रुपया तो किराये में ही मेरा लग जायगा

"इसकी चिन्ता क्यों करते हैं, इसका प्रबन्ध तो मैंने पहले ही कर रखा है।"

"अच्छा ! क्या प्रबन्ध है ?"

"देखो, तय हुआ है कि नलिनी के विवाह के पूर्व ही वह पुणे में आ जायगी और वहाँ दो-दिन अपने नृत्य का प्रदर्शन चित्रा टाकीज में करेगी। उसके साथ में विद्यालय के कुछ नर्तक भी अपनी कला दिखाएँगे और टिकट से लाभ होगा उसी में उन चारों का किराया भुगत जायगा।"

"वाह, यह व्यवस्था तो बड़ी अच्छी बनी, किन्तु रामेश्वरी इसके लिए राजी हो चुकी है या नहीं ?"

"बिल्कुल राजी, उसकी अनुमति का पत्र मैं दिखा सकता हूँ।" कच्ची गोलियाँ नहीं खेलता। हाल मैंने तय कर लिया है। नृत्य मण्डली मैं तैयार कर रहा हूँ। दमयन्ती और मीना को भी मंच पर उतारूँगा। चार दिन लगातार दैनिक पत्रों में वाराणसी का नाम लेकर जहाँ रामेश्वरी बाई का डंका बजाया, हाल खचाखच भर जायगा और फिर रामेश्वरी नृत्य में किसी से कम भी नही है।"

"ठीक-ठीक, बिल्कुल ठीक," सान्याल साहब ने कहा और फिर धीरे से बोले, "रामेश्वरी बाई के लिए कहीं दूसरा नटवर न तैयार हो जाय।"

श्री पिल्ले ने हँसकर उत्तर दिया, रामेश्वरी पर हाथ धरना इन लड़कों के वश का कार्य नहीं। वह तो आप ही जैसे…"

सान्याल साहब जोरों से हँसे और श्री पिल्ले ने सान्याल साहब के कान में फुसफुसाया, "घर पर क्या हाल, कामिनी के पास अब तो कोई नहीं आता ?"

सान्याल साहब ने मुस्कराकर कहा, "घर का भेद किसी को एक बार बता देना भी मुसीबत ही होती है। तुमको कामिनी की क्यों चिन्ता लग आई ?"

"कामिनी की चिन्ता किस भड़वे को है, सान्याल साहब की इज्जत बनी रहे। नलिनी का विवाह होने जा रहा है। घर में पुराना व्यापार यदि चलता रहा तो फिर एक दिन रूपकुमार को भी यह बात मालूम हो सकती है।"

"हाँ भाई, बात तो ठीक कहते हो, किन्तु स्थिति सुधरकर भी फिर बिगड़ गई। सुना है दो बार उसका आना फिर हुआ।"

"अच्छा…! वह कमबख्त है कौन, आज तक आप पता न लगा सके। सचमुच इश्क की आग तब तक नहीं बुझती जब तक वह अपने आश्रयदाता को ही समाप्त नही कर देती। मैं अब उसका पता लगाकर ही रहूँगा।"

सान्याल साहब ने दाँत पीस कर कहा, "पता चल जाए तो फिर मैं उसे गोली न मार दूँ। नलिनी तो उसे तरह पहचानती है। उसने शिवशंकर का जिस दिन नृत्य हो रहा था उस व्यक्ति को देखा था।"

"अच्छा ! तो आपको उसने नही दिखा दिया !"

"नहीं, बात यह हुई है कि मेरे बगल में ही कामिनी बैठी थी और इसके पहले कि वह अवसर निकाल कर मुझे बताती वहाँ दंगा शुरू हो गया।"

कैसा आदमी है, कुछ रूपरेखा उसने बताई है ?

"सो तो कहती थी, 30-32 वर्ष का आदमी है वह। रंग गोरा और सुन्दर चेहरा है। अधिक तो वह कुछ बता नहीं सकी, बात यह है कि वह स्वयं मुझसे इस प्रकार की बात करने में हिचकिचाती है।"

"ओ समझा। बाप से बेटी बात ही क्या कर सकती है। मैं अब पता लूंगा इन हजरत का।"

सान्याल साहब ने चिढ़ते हुए कहा, "आज तक कुछ भी पता नहीं लगा पाए तो अब क्या पता लोगे ? जब जरा बात हुई दिलासा बँधा दिया। पीठ पीछे फिर जैसे के तैसे।"

"घबड़ाइये नही। नलिनी के विवाह में दिल खोलकर लोगों को निमन्त्रण बाँटिये। यह आदमी भी अपना कोई जाना-पहचाना ही होगा और विवाह में सम्भवत. अवश्य सम्मिलित होगा। नलिनी को दूर से खड़ा करके मैं पूछूँगा कि वह आदमी वहाँ दिखाई दे रहा है या नहीं।"

"और जो वह न आया तो।"

"देखा जायगा। मैं तो इधर कुछ ढीला हो गया था कि शायद अब वह नहीं आता-जाता किन्तु आज फिर यह सुन रहा हूँ। पता नहीं घर में सेंध लगाने वालों को क्या मजा आता है।"

"यह बात भी एक लत होती है, जिसको लग गई फिर कठिनाई से छूटती है। सुना है इसका भी मजा कुछ और ही होता है।"

"हाँ, क्यों नहीं, अफीम को खाकर धीरे-धीरे मृत्यु को बुलाने में भी बड़ा मजा आता है।"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं। इसका नशा अफीम से कम थोड़े ही होता है। एक बार जिससे नजर लड़ गई फिर बस···"

"आप समझदार मालूम होते हैं," श्री पिल्ले ने हँसते हुए व्यंग्य से कहा, "रामेश्वरी के तीर आप भी तो खाए हुए हैं।"

सान्याल साहब श्री पिल्ले का मुँह ताकते रह गए।

चारुचित्रा अपने साधना-कक्ष में बैठी एक भिक्षुक का चित्र बना रही थी। झुर्रियाँ पड़े शरीर की एक-एक रेखा चित्र को सजीव बना रही थी। पीठ से पेट लगा था, हाथ में लकुटिया लिए फटी झोली फैलाए वह कंकरीले मार्ग पर नंगे पैर चल रहा था। उसके अगल-बगल दो बच्चे भी थे जिनके खुले हुए हाथ कुछ माँग रहे थे। सामने की ओर एक तरफ कुछ कूड़ा पड़ा था जिसमें एक कुत्ता कुछ सूँघ रहा था।

चित्र अभी पूर्णतया तैयार नहीं हुआ था। मोहिनी ने वहाँ प्रवेश किया। कुछ देर चित्र को देखने के बाद बोली, "यह क्या है ? कंगालों और भिखमंगों के चित्र बनाना भी क्या कोई कला है ?"

चारुचित्रा ने मुस्करा कर धीरे से कहा 'माँ तुम नहीं समझतीं यह महाकवि निराला की कविता भिक्षक' की है

"होगी। किन्तु उससे क्या है। कंगालों के चित्र तुम खींच कर मेरे घर में रखो यह मुझे असहनीय है, तुम्हारी दृष्टि महलों की ओर क्यों नहीं उठती ? ऐसे ही चित्र बनाने हैं तो फिर अपने यहाँ के ऋषि-मुनियों के चित्र बनाओ। वाल्मीकि हैं, वशिष्ठ हैं…"

"किन्तु वे आज कहाँ हैं ?"

"कुछ सही, मैं कहती हूँ तुमको इनसे आकर्षण हुआ ही क्यों ?"

"आज की कला का माप-दण्ड बदल गया है। तुम नहीं जानती माँ, यह तो दरिद्रनारायण है।"

"मुझे बहलाओ मत, मुझे कष्ट हो रहा है।…मैं क्या कहूँ ? अपने यहाँ इतने तैलचित्र लगे हैं कभी उन्हें भी देखा करो। मलका विक्टोरिया का वह चित्र तुमने देखा है जो तुम्हारे बापू ने नगर के संग्रहालय को दान दिया था। कितनी बढ़िया मूर्ति है उसकी। सर पर सोने का ताज और ताज में वह हीरा ऐसा रंगा गया मानो सचमुच वहाँ जड़ दिया गया हो। सोने और चाँदी से बना तख्त और लाल-लाल मखमल की गद्दी उसमें ऐसी बनी है मानो वह चित्र नहीं किसी मंच पर दिखाई देता हुआ यथार्थ दृश्य है। अहा वह भी क्या चित्र है ! वैसा चित्र तुम क्यो नहीं बनातीं ? तुम्हें मालूम है विक्टोरिया के राज में घी दो-ढाई सेर का मिलता था और गेहूँ था दो रुपया मन। हमारे घर में तो लक्ष्मी-पूजी गई है। तुम्हारी दादी कहती थीं विक्टोरिया के चित्र के पीछे तुम्हारे बाबा ने तीन लाख की जागीर पाई थी। बड़े लाटसाहब ने अपने हाथ से सनद लिखी थी। अब तो समय ही बदल गया। दरिद्रनारायण की पूजा ने ऐसा सत्यानास किया है कि आजकल वेजीटेबिल को घी के इत्र से सुगन्धित कर…"

"बात बिल्कुल उल्टी है। घी के स्थान पर घी का इत्र बिकने का कारण आधुनिक रानी और राजा हैं। इन्हीं की पूजा और सुख-चैन के पीछे आज गली-गली यह भिखमंगे दिखाई देते हैं।"

"क्या बक रही हो, अंग्रेजी राज में सुख-चैन से दिन कट भी जाते थे किन्तु आज किसी करवट भी चैन नहीं। स्वराज के बाद आफत ही आफत आ गई।"

'यह सब जटिल आर्थिक गुत्थियाँ हैं, तुम नहीं समझती माँ।"

"हूँ मैं क्या समझूँ, मै तो दूध पीती बच्ची हूँ। बात पीछे यही कहती हो…तुम नही समझती माँ। संसार भर की समझ तो तुमने अपने पास रख ली है।"

चारुचित्रा कुछ नहीं बोली। मोहिनी ने उसके अधिक निकट आकर धीरे से फुसफुसाया। चारुचित्रा ने तूलिका रख कर कहा, "मैं समझी नहीं। क्या कहा आपने ?"

"बात ही ऐसी है, जल्दी समझ में नहीं आती। कोई साधारण बात थोड़ी हुई है ?"

"क्या बात है ?"

"कमल बाबू राजी हो गए हैं।"

"कमल बाबू राजी हो गए हैं !! किस बात के लिए ?"

तुमसे विवाह करने के लिए

मुँह देखकर बैठी रह गई। निकष ने कुछ तीव्र होकर कहा, "गुण्टूर मुझे आज ही तुम्हें पहुँचा देना है। तुम्हारे बाबू जी प्रतीक्षा में होंगे। आज शाम 4 बजे की गाड़ी से हम अवश्य चलना चाहते है।"

पद्मा ने मुरझाए स्वरों में कहा, "चारुचित्रा जी से अभी भेंट नही हुई है, क्या उनसे मिले बिना ही चलना होगा ?"

"क्या हुआ, उनसे मिलना इतना आवश्यक नहीं है कि उसके लिए गाड़ी छोड़ दी जाय।"

"किन्तु···"

"मैं सब समझता हूँ। तुम्हारे मन की बात तुम्हारे मामा से नही छिपी है, किन्तु भलाई इसी में है कि तुम इस विवाह को सहर्ष स्वीकार करो।"

"मेरा मतलब यह नहीं था।"

"तब क्या था ? मुझसे बात बनाने की चेष्टा मत करो। जिस प्रकार प्रसन्न-चित्त होकर तुम अपने घर से चली थीं आज तुम यहाँ आकर वह नहीं रह गयी। उसका कारण पहले तो मैं नहीं समझा था किन्तु अब वह भी समझ गया हूँ।"

"आप क्या समझ गए हैं, मामा जी ?"

निकष ने बात समाप्त कर कहा, "पहले तैयारी कर लो, फिर गाड़ी पर मुझसे प्रश्न करना, मैं बताऊँगा कि मैं क्या समझ गया हूँ," निकष इतना कह कर घर से बाहर चल दिया और वह अकर्मण्य होकर बैठ गई।

थोड़ी ही देर में चारुचित्रा ने निकष के कमरे में पैर रखते हुए पूछा, "पद्मा ! निकष जी कहाँ हैं ?"

पद्मा चारुचित्रा को देखते ही खिल उठी। बोली, "आप आ गईं, मामा जी अभी कहीं गए है।"

"कहो कब पूना आईं ? नटवर कहाँ ले गया था ?"

"अब क्या बताऊँ ? मामा जी से ही सब पूछ लीजिएगा। पूना तो कल आ गई थी।"

"सुना है मथरान में शिवशंकर ने तुम्हें उसके चंगुल से बचाया।"

"हाँ, ऐसा ही समझ लीजिए। वस्तुत: बच कर तो मैं ही निकल भागी।"

"यही तो मैं सुनना चाहती हूँ ! कैसे ?"

"बच गई, अब कैसे क्या बताऊँ !!"

"अच्छा खैर ! मैं तुम्हारे मामा से पूछ लूँगी। यह बताओ गुण्टूर कब जा रही हो।"

'आज ही।" पद्मा ने उन्मन होकर कहा।

"चारुचित्रा ने पद्मा के भावों को पढ़ते हुए कहा, "इतनी गम्भीर क्यों हो गईं। गुण्टूर में तुम्हारा विवाह तय हो गया है ना ?"

"हाँ।" पद्मा ने छोटा-सा उत्तर दिया।

चारुचित्रा ने कहा 'बहुत उदास-सी हो गई तुम अभी हँस रही

थी किन्तु अब तुम्हें क्या हो गया ?"

पद्मा मौन रही।

चारुचित्रा ने कहा, "सम्भवतः तुम्हें यह विवाह पसन्द नहीं।"

पद्मा ने सिर उठा कर चारुचित्रा की ओर देखा और अपनी पलकें फड़फड़ा कर चारुचित्रा के शब्दों का समर्थन किया, किन्तु मुख से फिर भी न बोली।

चारुचित्रा ने आगे अपने आपसे बात बढ़ाकर कही, "उस पत्रिका की बात इतनी अधिक तुम्हारे मस्तिष्क में जम गई ?"

"किस पत्रिका की ?" पद्मा के मुख से शब्द निकले और चारुचित्रा ने मुस्करा कर कहा, "मुझसे बात छिपाने का प्रयास मत करो, मुझे तुम्हारे मामा ने सब दिखा दिया है।"

"तो क्या मामा जी ने उसे पढ़ा है ? और वे फिर भी मुझे गुण्टूर पहुँचाना ठीक समझते है ?"

"तो क्या हुआ, "चारुचित्रा ने कहा, "कोई लेखक यदि तर्क का आंशिक सहारा लेकर कोई बात बात लिख दे तो वह सम्पूर्ण सही नही मानी जानी चाहिए। उसको ग्रहण करने के पूर्व कुछ अपनी बुद्धि और अनुभव का प्रयोग भी करना चाहिए। सघर्ष से घबडा कर अपने मार्ग को बदल देना, दूसरों को अनधिकारी अधिकार सौंप देना कहलाता है। तुम्हारे सामने जो समस्या आ रही है वह तो आज के युग के मध्यम वर्ग मे विश्वव्यापी समस्या है; उससे व्यक्तिगत रूप से भागकर कहाँ तक बचा जा सकता है। तुम्हें अपना विवाह कर लेना चाहिए। समाज में प्रत्येक स्त्री का पति न गजेटेड आफिसर ही हो सकता है और न मिल मालिक ही, फिर तुम्हें तो सम्भवतः अपनी कला की चिन्ता अधिक होगी, सो कला का संरक्षण धन से नहीं होता, रुचि से होता है और कलाकार में उसके लिए लगन होनी चाहिए। मैं समझती हूँ तुम में लगन है। है ना ?"

पद्मा ने कहा, "मैं क्या जानूँ !" वह मुस्कराई। चारुचित्रा ने कहा, "किन्तु मैं जानती हूँ, तुम में लगन है और योग्यता भी है। तुम अपने चातुर्य से दाम्पत्य जीवन मे रहकर कला को विकसित करो। तुम्हें साधना में आत्मिक सुख मिलेगा।"

"आत्मिक सुख ?"

"हाँ, आत्मिक सुख, जो बाह्य सुख से कहीं अधिक मूल्यवान है।"

पद्मा ने कृतार्थात्मक दृष्टि से चारुचित्रा को देखा और चारुचित्रा ने चलते हुए कहा कि निकष जी से कह देना कि मैं आई थी। इस समय कुछ आवश्यक कार्य से जा रही हूँ।

पद्मा ने धीरे से कहा, "अच्छा।"

पद्मा गुण्टूर पहुँचा दी गई और दो दिन के अन्दर ही निकष लौटकर पुनः पूना आ गया

सान्याल साहब के यहाँ नलिनी के विवाह की पूरी तैयारी हो गई। रामेश्वरी पुणे पहुँच गई और उसके साथ में नूर और वारिस भी पहुँचे। समाचार-पत्रो मे रामेश्वरी बाई के नृत्य का विज्ञापन जोरों से किया गया और श्री पिल्ले को अपने इस आयोजन में पूर्ण सफलता मिली। चित्रा टाकीज का हाल खचाखच भर गया।

इस आयोजन में मुख्य कार्यक्रम जयदेव के ग्रन्थ 'गीतगोविन्द' की कथा का भावाभिव्यक्तिकरण था। मंच की यवनिका हटी। भगवान श्री कृष्ण की आरती हुई। पार्श्व संगीत में मधुर वंशी की ध्वनि इतनी कर्णप्रिय थी कि सम्पूर्ण दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। इसी मधुर सन्नाटे में अचानक एक बाघ के गर्जन का स्वर उभरा जो इतना स्वाभाविक था कि अनेकानेक व्यक्ति सचमुच में काँप उठे, किन्तु मंच पर अभिनेतागण रचमात्र भी प्रभावित नही दिखाई दिए। इस गर्जन के कुछ क्षण बाद ही एक सुन्दरी चीत्कार कर मंच पर गिर गई। गीत गोविन्द के कथनानुसार वह निर्धारित घटना थी किन्तु दर्शको ने दुर्घटना समझी। कुछ दर्शक आगे की पंक्ति से सहायता के लिए मंच पर दौडे किन्तु तत्क्षण ही वे समझ गए कि वह अभिनय ही था।

श्री पिल्ले के निर्देशन की यह चरम सफलता थी। दृश्य बदला और अनेकानेक नृत्य प्रस्तुत किए गए। एक पृथक दृश्य में नूर और वारिस ने नवाबी जमाने के खेल दिखाए। बटेर और भेड़ को लड़ाया, कबूतरबाजी करना और पतंग के दाँव-पेच अभिनयात्मक रूप मे प्रस्तुत करना उनका विशेष प्रदर्शन था।

सान्याल साहब के मकान पर प्रातः से ही शहनाई बजने लगी। मेहमानों और सम्बन्धियो से घर भर गया। कामिनी के मायके से उसकी छोटी बहन रसवन्ती आई हुई थी। रसवन्ती सान्याल साहब के विवाह के समय युवती हो चली थी और उसने अपने जीजा जी से हृदय खोलकर हास-परिहास भी किया था किन्तु सान्याल साहब के पूना आने के समय से दो वर्ष पहले ही वह विधवा हो चुकी थी। उसका यौवन तब से अब अधिक उठान पर था किन्तु दुर्भाग्य कि हँसने-खेलने के दिनों में ही उसे चारों ओर अन्धकार दिखाई दिया। प्रकृति से वह चंचल थी अतः संसार की आँखों में बल्लम की तरह गड़ने लगी थी। पुणे जैसे अनजान नगर के व्यक्तियों के बीच आकर उसने अपने को अधिक स्वतन्त्र पाया। घर की चहल-पहल और नाच-गाने को देखकर वह अपने को भूल बैठी। महिलाओं के गाने में सबसे अधिक गीत उसी ने गाए। दो-चार युवतियो ने नलिनी जैसी सहेली को रिझाने के लिए जब अपने पैरों में घुँघरू बाँधे तो रसवन्ती ने ढोलक का ठेका लोहे के छल्ले पहनकर देना शुरू किया। कामिनी जो आनन्द ले सकी उससे कहीं अधिक आनन्द रसवन्ती ने लिया।

सन्ध्या के समय चारुचित्रा भी आई। रात को बारात आने वाली थी। मोहल्ले की अन्य महिलाएँ भी आने लगीं। ललित कला महाविद्यालय की भी दो-चार लड़कियाँ नलिनी की पुरानी मित्रता के नाते आ गईं। अब गाने-बजाने का स्तर और भी ऊँचा हो गया। बैठे-बैठे चारुचित्रा से किसी ने रसवन्ती का परिचय कराते हुए कहा- "ये हैं नलिनी की छोटी मौसी बढ़िया ढोलक बजाती हैं और हाँ सुना है नाच भी लेती हैं

रात आई। सान्याल साहब का मकान बिजली की रोशनी से चमकने लगा। श्री पिल्ले ने शामियाना लगवाया। कुर्सियाँ लगवाईं और लाउडस्पीकर भी लगवाए। वे प्रमुख प्रबन्धक थे। बारात के स्वागत के लिए एक दर्जन व्यक्तियों को गुलाबजल और केवड़े के पात्र पकड़ा कर खड़ा किया गया। रामेश्वरी बाई ने भी अपना तराना छेड़ा और रूपकुमार की बारात शान के साथ द्वार के सामने आकर लगी।

एक भव्य जलपान-गोष्ठी हुई। नगर के प्रतिष्ठित और सम्मानित व्यक्ति सम्मिलित हुए। सेठ लक्ष्मणदास घर की ओर से सम्मिलित थे जबकि कमल बाराती बनकर आया। निकष और उसके बड़े भाई सुन्दरलाल भी बारात में आए। रूपकुमार ने ललित कला महाविद्यालय के बेनी शर्मा, पाठक और शास्त्री जी को बुलाया था, वे भी बारात में आए। जलपान के बाद थोड़े से लोग चले गए और बाकी सब रामेश्वरी बाई को चारों ओर से घेर कर बैठे। रामेश्वरी बाई का गाना शुरू हुआ। सान्याल साहब सब से आगे जाकर बैठे।

बारात के सभी आवश्यक कार्यों से मुक्त होने पर श्री पिल्ले को कामिनी के प्रेमी का पता लगाने की सूझी। उन्होंने नलिनी से जाकर कहा कि वह बाहर के बारजे पर खड़ी होकर जरा ध्यान से बाहर की भीड़ में देखे। वह व्यक्ति रामेश्वरी बाई के जमघट में दिखाई देता है अथवा नहीं। नलिनी ने भी सोचा, शायद वह आदमी दिखाई दे जाए। श्री पिल्ले को साथ लेकर वह ऊपर बारजे पर गई और ध्यान से उसने लोगों पर दृष्टि दौड़ाई। कुछ क्षण देखने के बाद वह बोली, "वह है।"

"कौन, कौन ?

"वह देखिए, जो मक्खन जीन का सफेद पैण्ट और बुशर्ट पहन कर दाहिने हाथ के सोफे पर बैठा है।"

"दाहिने हाथ के सोफे वाला ?"

"हाँ-हाँ, वही।"

"वह तो कमल बाबू हैं।"

"कमल बाबू !"

"हाँ।"

"तो क्या कमल बाबू वे ही हैं ?"

'अरे तुम अभी तक कमल बाबू को नहीं पहचानती।"

"कैसे पहचानती, पहचानने का अवसर ही नहीं आया। नाम तो सुनती आई थी। नाटक आदि खेलने वाले कमल बाबू ही तो थे।"

"हाँ, यह वही हैं।"

"तो होंगे, किन्तु यही हैं जो आते रहे हैं।"

"धोखा तो नहीं हो रहा है ?"

"नहीं, मैं ठीक पहचान गई हूँ।"

शाबाश पट्ठे" श्री पिल्ले ने कमल की ओर देखकर कहा "तूने भी खूब हाथ मारा यहाँ भी तू ही डोरे डाले था

"क्या और कहीं भी उन्होंने कुछ किया है ?" नलिनी ने पूछा और श्री पिल्ले ने वहाँ से चलते हुए कहा, "ये प्रसिद्ध नायक हैं, इनका काम ही क्या है ? किन्तु मैं नहीं समझता था कि यह यहाँ तक हाथ मार सकते हैं।"

नलिनी बोली, "ये बड़े लोग ऐसे···!!"

श्री पिल्ले ने वहाँ से भागकर रामेश्वरी बाई के जमघट में प्रवेश किया और सान्याल साहब के कान में बात डाली। सान्याल साहब भीड़ के बाहर आ गए और तुरन्त भागकर नलिनी के पास गए। नलिनी ने वही कहा जो श्री पिल्ले से कहा था। सान्याल साहब क्रोध से तमतमा उठे और वे कमल बाबू से उसी समय प्रतिशोध लेने की ठान बैठे। श्री पिल्ले ने उन्हें समझाया और अवसर आने तक की प्रतीक्षा करने को कहा। बारात में रंग में भंग करना कभी भी उचित न था।

रामेश्वरी बाई का गाना और नृत्य रात भर हुआ। प्रातः होते-होते रूपकुमार ने नलिनी से गाँठ जोड़ कर मण्डप के नीचे सात फेरे किए।

चारुचित्रा ललित कला महाविद्यालय में अपने कक्ष में बैठी थी। कुन्दनलाल शास्त्री ने वहाँ पदार्पण किया। चारुचित्रा को यह समझते देर न लगी कि शास्त्री जी उसकी माँ की प्रेरणा से ही उससे बात करने आए हैं। शास्त्री जी ने कुर्सी पर बैठते ही प्रश्न किया—

"चारुचित्रा जी, आपकी कुछ बातचीत अपनी माँ से हुई थी ?"

"उनसे तो नित्य ही बात होती है।"

"मेरा तात्पर्य है, आपके अपने विवाह के सम्बन्ध में।"

"हुई थी और मैंने उन्हें अपना निर्णय भी बता दिया है।"

"क्या ?"

"यही कि मैं कमल से विवाह नहीं कर सकती।"

"आखिर क्यों ? मुझे भी तो पता चले।"

इसके पहले चारुचित्रा कोई उत्तर दे वहाँ निकष ने प्रवेश किया। शास्त्री जी निकष को देखकर सकुचाए। उसकी उपस्थिति वहाँ न चाहते हुए भी वे कुछ बोल न सके। निकष ने उन्हें प्रणाम किया और वह एक कुर्सी पर बैठ गया। शास्त्री जी ने अपनी बात समेटते हुए कहा, "अच्छा अब मैं फिर बात करूँगा।" निकष ने कुर्सी छोड़ते हुए कहा, "क्षमा करिएगा शास्त्री जी, मेरे आने से यदि कोई बाधा आ गई हो तो मैं जाता हूँ।"

चारुचित्रा ने गम्भीर होकर कहा, "आप बैठिए, शास्त्री जी से आपके सम्मुख ही मैं बात करने को तैयार हूँ।"

शास्त्री जी ने सोचा, इन दो एक मत के व्यक्तियों के बीच बैठकर चारुचित्रा को समझाना सम्भव नहीं हो सकता। वे कुर्सी से उठकर खड़े हुए और बोले, "मुझे एक विशेष काय ध्यान में आ गया है फिर बात करूँगा वे कक्ष से बाहर चले गए

चारुचित्रा ने निकष की ओर देखा और निकष ने चारुचित्रा की ओर, दोनो ही हँस पड़े ।

"क्या बात थी ?" निकष ने पूछा ।

"बात क्या थी, वही विवाह की । मेरी तो नाक में दम है । घर में माता जी कमल की माला मेरे गले में लटकाना चाहती हैं और यहाँ···"

"···शास्त्री जी । समझा ।"

"कुछ नहीं समझे ।'

"क्यों ?"

"क्यों क्या ? आखिर मैं कब तक इस द्वन्द्व में पलती रहूँगी ?"

"थोड़े दिन की बात और है । मेरी थीसिस में जो काम भारत में होना था वह लगभग समाप्त है और अब मुझे केवल एक महीने के लिए विदेश जाना होगा ।"

"किन्तु आपने जो मुझे वचन···"

"मुझे क्षमा करो । मुझे विदेश हो आने दो । थीसिस पूर्ण होने के पूर्व मैं भाई साहब से अपने विवाह के सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता ।"

चारुचित्रा अपने हृदय के तूफान को मन में दबाती हुई धीरज बाँध कर बोली, "जैसा भी उचित समझें ।"

"तुम कुछ दुखी-सी दिखाई देती हो ।"

"जहाँ विवशता है वहाँ दुःख-सुख का क्या प्रश्न ।"

"मैं तो चाहता था कि तुम्हें साथ लेकर विदेश जाता, किन्तु···"

"जाने भी दें यह बात । यह बताएँ कि क्या सरकार से जो छात्रवृत्ति मिलने वाली थी वह मिल गई ?"

"नहीं । अपनी पहुँच कहाँ ? मेरी व्यवस्था तो भाई साहब ने ही की है ।"

"कौन भाई साहब ? सुन्दरलाल जी ?"

हाँ और कौन ? उन्ही के विद्या प्रेम के कारण मैं जीवित हूँ, नहीं तो अर्थ के अभाव में मैं पता नहीं कहाँ की धूल में ढकने लगा होता ।"

"किन्तु उन्हें क्या इतनी आय हो जाती है कि···"

"बात यह है कि उन्होंने इधर बच्चों के लिए कई विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी मे लिखी हैं और वे उपयोगी सिद्ध हुई हैं, फलतः उनकी बिक्री से अच्छा लाभ हो गया है ।"

"इन पुस्तको में है क्या ?"

"ये पुस्तकें बड़ी रोचक हैं । उनको पढ़ने से आँख खुल जाती है । वैज्ञानिक कहते हैं कि इक्कीसवीं सदी में मंगल ग्रह के निवासियों के साथ व्यापार करने लगेंगे । चाँद के खनिज पदार्थ इस धरती की धनराशि होंगे । अणुशक्ति से केवल एक केन्द्र से सम्पूर्ण देश के कारखानों को चालित रखा जा सकेगा । समुद्र के जल से सोना, चाँदी और अलमुनियम निकाला जा सकेगा, ऐसी ही बातों को सरल रूप से उन पुस्तको मे प्रकाशित किया गया है ।"

"हूँ समझी अच्छा तो आप अब विदेश हो आने के बाद ही मेरा मतलब है

पहले आप कहाँ जाइएगा ?"

"रोम !"

"रोम ! आप तो पहले बर्लिन जाने वाले थे।"

"हाँ, किन्तु एक नई बात ज्ञात हुई है। इस कारण पहले रोम ही जाऊँगा और फिर बर्लिन।"

"कौन सी नई बात ?"

"यह फिर बताऊँगा। हाँ मुझे पहले यह बताओ कि शास्त्री जी कमल के चक्कर मे कैसे आ गए ?"

"कमल के चक्कर में नहीं माता जी के चक्कर में वे हैं। वे समझते हैं कि वे उनकी लड़की का जीवन बना रहे हैं किन्तु यहाँ मेरा दिल ही जानता है कि···मैं तो सोच रही थी कि मैं कुछ समय के लिए पुणे से बाहर जा पाती। आप अपनी स्थिति से बँधे है। मैं आगे अब बात ही क्या कर सकती हूँ !"

"एक बात और है।" निकष ने धीरे से कहा।

"वह कौन बात है ?" चारुचित्रा ने उत्कण्ठा से उसकी ओर झुक कर पूछा।

"भाई साहब मेरे विदेश जाने के प्रबन्ध के बाद कुछ अपने विवाह की चिन्ता मे है और इसलिए अब जब तक उनका विवाह नहीं हो जाता मैं अपने विवाह की बात भी कैसे उठा सकता हूँ।"

"तो यह बात अब तक मुझे क्यों न बताई। आपके विदेश जाने के पूर्व ही मैं प्रबन्ध कर दूंगी, बताऊँ लड़की ?"

"तुम तो ऐसी बात कर रही हो जैसे लड़की को कमर में बाँध कर आई हो।"

"संयोग ही तो है। लड़की परसों देखी है।"

"कहाँ ?"

"नलिनी के घर। अहा-हा, बिल्कुल भाई साहब के योग्य।"

"तुम वहाँ विवाह में गई थीं ? मैं भी गया था।"

"हाँ-हाँ, मैंने श्रीमान् जी को बारात में देखा था। हाँ, लड़की का नाम है रसवन्ती।"

"रसवन्ती ! वाह नाम तो सुन्दर है।"

"कैसा नाम वैसा काम। गाने में निपुण, देखने में सुन्दर।"

"क्या आयु होगी ?"

"आयु 25 वर्ष। भाई साहब की क्या आयु है ?"

"32 वर्ष।"

"फिर क्या कहने ! जोड़ी मिल गई।"

"किन्तु भाई साहब विधुर हैं, विधुर से विवाह करने में उन्हें कोई आपत्ति तो न होगी ?"

वह विधवा है "

विधवा

"हाँ विधवा, क्या भाई साहब उसे अंगीकार न कर सकेंगे ?"

"निश्चित रूप से नहीं कह सकता, किन्तु विचारों से आभास मिलता है कि वे स्वीकार कर सकते है।"

"उन्हें स्वीकार करना चाहिए।"

"मै बात करूँगा। रसवन्ती को कभी मेरे यहाँ ला सकती हो ?"

"बात दूसरे घर की है। अभी देखो, रसवन्ती की अपनी राय क्या होती है। वैसे 50 प्रतिशत पक्का समझो। विधवा स्त्री यदि इतनी चंचल रहे जैसे मैंने देखी, तो उसका साधु जीवन व्यतीत हो ही नहीं सकता।"

"आवश्यकता भी क्या है। भगवान ने पति छीन लिया है तो शरीर से हृदय तो नही निकाल लिया। वह अपना कार्य करेगा ही। घर में अन्न न हो तो भूख न लगे—ऐसी बात तो नहीं होती।"

चारुचित्रा चुप रही। निकष उठकर चलने लगा। चारुचित्रा ने कहा, "मेरी समस्या अभी बाकी ही है।"

निकष ने रुकते हुए कहा, "माता जी को साफ-साफ बात बता दो। कमल की पोल खोलकर क्यों नही रख देतीं ?"

"वह सब मैं बता चुकी हूँ।"

"तब भी वे नही मानतीं ?"

"वे कहती हैं यह सब मनगढ़न्त बातें हैं। इतने बड़े घर का लड़का कभी यह सब कर ही नहीं सकता। वे तो आप से चिढ़ रही हैं।"

"शास्त्री जी को क्यों नहीं सब हाल बता देतीं ?"

"वह तो आज बताना चाहती थी किन्तु वे न जाने क्या सोच कर भाग खड़े हुए।"

"कोई बात नहीं। चिन्ता मत करो। रसवन्ती को किसी दिन मेरे घर ले आओ। भाई साहब का विवाह होते ही मैं अपना विवाह भी···बस समझ जाओ।

निकष कक्ष के बाहर चला गया। चारुचित्रा उसे देखती रह गई।

"क्या आप चारुचित्रा से मिले थे ?" मोहिनी ने पूछा।

"हाँ, किन्तु मैं मतलब की बात प्रारम्भ भी न कर पाया था कि वहाँ निकष आ पहुँचा।"

"निकष आ पहुँचा ! वह तो आपका छात्र है उसे कक्ष से बाहर जाने की आज्ञा आपने नहीं दी ?"

"मैं यदि अपने कमरे में होता तो सम्भवतः ऐसी ही आज्ञा देता किन्तु चारुचित्रा के कक्ष में···।"

"तो फिर क्या कोई भी बात नहीं हुई ?"

"नहीं। नहीं हो पाई। मैं स्वयं वहाँ से लौट आया।"

"निकष तो हाथ धोकर पीछे पड़ा है मैं जानती हूँ [illegible] में बात करने

का अवसर नहीं निकल सकता ।"

शास्त्री जी चुप रहे और मोहिनी ने आगे कहा, "आज शाम को मैंने कमल बाबू को यहाँ बुलाया है । चारुचित्रा के आने के पूर्व ही वह आ जायगा और फिर पूछूँगी चारु से कि उसे उससे क्या शिकायत है ।"

"ऐसी बातें कहीं आमने-सामने होना सम्भव हो सकती हैं ?"

"कुछ भी हो यदि सत्य है तो फिर चारु डरने वाली नहीं और मैं भी फिर कमल को अपनाना नहीं चाहूँगी ।"

"यदि ऐसी बात है तो फिर यह मार्ग उचित नहीं। कमल को बुलाकर यह, उसका अपमान करना कहलाएगा ।"

"तो फिर समस्या कैसे हल हो ?"

"समस्या तो हल हो सकती है किन्तु अब संध्या हो चली है, कमल बाबू तो आते ही होंगे । अच्छा यह है कि चारु को और कमल को अकेले बात कर लेने दिया जाय । हम लोग अपनी ओर से कोई भी प्रसंग न छेड़ें ।"

द्वार पर दस्तक हुई। मोहिनी ने किवाड़ खोले तो कमल आ गया था । सत्कार के साथ उसे अतिथि कक्ष में बिठलाया गया । शास्त्री जी ने इधर-उधर की बातें शुरू की और जल्द ही मोहिनी चाय की ट्रे लेकर कमरे में पहुँची । कमल ने प्रणाम किया । मोहनी गद्गद हो उठी ।

इसी क्षण द्वार पर फिर चरमराहट हुई और वहाँ चारुचित्रा दिखाई पड़ी। अतिथि कक्ष में शास्त्री जी व माँ को देखकर वह भी वहाँ पहुँची। कमल ने उसे देखा और चारुचित्रा की आँखों से चिनगारियाँ निकलीं। शास्त्री जी चुपचाप अतिथि-कक्ष से बाहर आए। मोहिनी भी तुरन्त उठकर कक्ष से बाहर हो गई और अब चारुचित्रा ही वहाँ रह गई। कमल उसे देख कर मुस्कराया। चारुचित्रा वहाँ से लौटने लगी। कमल ने कहा, "आइए चाय पीजिए।" चारुचित्रा कुछ रुकी, किन्तु बोली नहीं। कमल ने कहा, "मुझसे स्यात् आप रुष्ट है ।" चारुचित्रा ने पीठ फेर कर केवल अपने होठ काटे। कमल ने कहा, "आपको भ्रम हुआ है ।"

"मुझे यदि भ्रम हुआ है तो कोई बात नहीं । अब आपको भ्रम नहीं होना चाहिए।" चारुचित्रा ने पलटते हुए उत्तर दिया ।

"आपने यदि अपना भ्रम दूर कर लिया तो फिर मेरे भ्रम का प्रश्न ही नहीं रह जाता ।"

"प्रत्यक्ष देखी बातों से और भुक्तभोगियों से भ्रम का प्रश्न उठाना धृष्टता है।"

"धृष्टता ! अपने शब्दों में सन्तुलन रखिए, उस दिन जो कुछ भी हुआ उसका कारण नटवरलाल है, जिसको मैंने अपनी मित्रता तक से अलग कर दिया है ।"

मोहिनी और शास्त्री जी चुपचाप बाहर खड़े होकर बातें सुन रहे थे । मोहिनी ने शास्त्री जी के कानों में फुसफुसाया—देखो मैं कहती थी कि कमल ऐसा नहीं कर सकता वह तो पाजी नटवर था। शास्त्री जी ने सिर हिलाया और फिर अन्दर की बातों पर कान लगाए ।

"मैं मानने को तैयार नहीं, खैर होगा। अब कहिए आपका क्या तात्पर्य है।" चारुचित्रा ने कहा।

"तात्पर्य।" कमल हँसा और उसने उठकर चारुचित्रा का हाथ पकड़ने का प्रयास कर कहा, "आइए चाय पीजिए।"

चारुचित्रा ने पीछे हटकर कहा, "सावधान ! आप अपनी मर्यादा न लाँघिए। नटवर का नाम लेकर आप अपने आप से मुक्त नहीं हो पाए हैं। आप वही हैं जो मैंने समझा है।"

"सावधान" शब्द को सुनकर शास्त्री जी ने अन्दर झाँका और देखा कि कमल अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा है और चारुचित्रा कक्ष के बाहर आ रही है। चारुचित्रा अतिथि कक्ष के बाहर आ गई और मोहिनी ने वहाँ प्रवेश किया। शास्त्री जी मोहिनी से विचार कह भी नहीं पाए कि मोहिनी ने कमल से कहा, "बेटा, मैं सब ठीक कर लूँगी। कमबख्त नटवरलाल ने यहाँ का वातावरण बिगाड़ रक्खा था। वही तो है जिसने अभी पद्मा नामक किसी लड़की को गायब किया है।"

"हाँ-हाँ, वही। पद्मा, निकष की भाजी है।"

"हाँ निकष की भांजी। आजकल की लड़कियाँ भी कम थोड़े ही है। उसने भी कुछ किया होगा। मैं तो यह जानती हूँ कि ताली दोनों हाथ से बजती है।"

यह तो है ही।" कमल ने कहा और इधर शास्त्री जी ने चारुचित्रा से धीरे से कहा, "बेटी मुझे क्षमा करना। मैं समझ गया हूँ। कमल पाजी आदमी है। मैं अब तुम्हारा विवाह कमल के साथ कभी नहीं होने दूँगा।"

चारुचित्रा ने कृतार्थ दृष्टि से शास्त्री जी को देखा। शास्त्री जी मोहिनी देवी से यह कहकर चल दिए कि वे जा रहे हैं। मोहिनी देवी शास्त्री जी को बुलाती रही किन्तु जब वे न लौटे तो मोहिनी ने कमल बाबू से कहा, "मैं शास्त्री जी से बात करके शीघ्र ही अब चारु के हाथ पीले कर दूँगी।"

कमल ने आशा और निराशा के झूले में झूलते हुए वहाँ से प्रस्थान किया।

नलिनी रूपकुमार के कमरे मे बैठी अपना श्रृंगार कर रही थी। रूपकुमार ने कमरे में प्रवेश किया। नलिनी ने श्रृंगार के अवयवों को समटते हुए हँसकर कहा, "मास्टर साहब बैठिए। मैं अभी बेला लाती हूँ।"

रूपकुमार हँसा और बोला, "तुम्हारी जैसी शिष्या ने ही आज के गुरुओं को बदनाम कर रखा है।"

"हूँ, गुरु बेचारे तो माटी की मूरत होते हैं।"

"यही तो कठिनाई है कि वे भी प्राणवान होते हैं, आमन्त्रण मिला नहीं कि हुए "

और डगमग होना ही सबसे बड़ी गुरुता है नलिनी ने चुटकी

को नहीं ठुकराते । और फिर नारी का आमन्त्रण !"

"क्यों ? नारी के आमन्त्रण की क्या विशेषता है ?"

"विशेषता नही भयंकरता कहना चाहिए, उसे ठुकराना और स्वीकार करना दोनों ही साहस के कार्य है। कुणाल ने तिष्यरक्षिता के आमंत्रण को ठुकरा कर अपनी आँखे दी थीं।"

"तब तो मैं समझती हूँ, आपने मुझे हृदय से नहीं अगीकार किया, वरन् भय से।" नलिनी की मुखमुद्रा बदली।

रूपकुमार ने उसकी पीठ पर हाथ फेरकर कहा, "घबड़ा गईं। मैंने तो प्रसंग की बात की। लो देखो मैं तुम्हारे लिए एक नयी भेंट लाया हूँ।"

नलिनी ने पलकें उठाईं और रूपकुमार ने अपने रूमाल से हाथीदाँत का बना हुआ एक सुन्दर-सा खिलौना निकाला। नलिनी ने देखा, वीणापाणि की कलात्मक उँगलियाँ वीणा के तारो को छेड़ रही हैं। रूपकुमार ने कहा, "मेरे हृदय के तार तुमसे झंकृत हो रहे है।"

नलिनी ने अँगड़ाई लेकर मन्द मुस्कान में कहा, "हटिए भी।" रूपकुमार ने वीणापाणि की पीठ पर लगे एक बटन को दबाया और उसी क्षण वीणा के दोनों तुम्बे डिब्बियो की तरह खुल गये। नलिनी ने आँखें फड़फड़ाकर देखा—एक में उसका छोटा-सा चित्र जड़ा था और दूसरे मे रूपकुमार का। नलिनी ने कहा, "बस इसे मैं घर ले जाऊँगी।"

"घर तो यही है, अब किस घर में ले जाओगी ?"

"अपने घर।"

"ओ हो, समझा। किन्तु तब की तब देखी जायगी।"

"तब क्या, मैं कल जा रही हूँ।"

"कल !"

"और क्या बाबू जी, कल मुझे लेने आ रहे हैं। आज उनकी चिट्ठी आ गई है।"

"इतनी जल्दी क्या है ?"

"बात यह है कि घर के सारे मेहमान ससुराल से लौटी हुई लड़की को देखने के विशेष इच्छुक हैं और मैं भी सबसे फिर से मिलना चाहती हूँ। मुझे अपनी रसवन्ती मौसी से विशेष रूप से मिलना है। चारुचित्रा दीदी उनका विवाह तय कर रही है।"

"चारुचित्रा ! ललित कला महाविद्यालय वाली ?"

"हाँ-हाँ।"

"वे पहले अपना तो विवाह कर लें। उनके विषय में जहाँ देखो वहीं अजीब-अजीब बातें होती सुनाई देती हैं।"

"अजीब-अजीब बातें ?"

"हाँ, बात यह है कि लोगो को आयु प्राप्त कुँवारियों की चर्चा करने में बड़ा आनन्द आता है। मैं जानता हूँ वे बहुत ही गम्भीर महिला हैं किन्तु···"

हाँ चारुचित्रा जी को अपना विवाह कर लेना चाहिए किन्तु वे यदि रसवन्ती

मोमी का विवाह करवा देंगी तो बड़ा उपकार होगा।"

"क्यों उपकार की क्या बात है?"

"आपने रसवन्ती मौसी को देखा है?"

"देखा होगा किन्तु पहचाना नहीं।"

"तो अब पहचनवा दूंगी। बड़ी सुन्दर-सी हैं। गोरी-गोरी।"

"अच्छा!"

"हाँ तो उन्हीं का विवाह होना है, बेचारी विधवा हैं।"

"क्या अभी युवा हैं?"

"हाँ, अभी 24 25 वर्ष की तो हैं ही।"

रूपकुमार ने नलिनी को अपनी बाँहों में समेटते हुए कहा, "ओ हो, तब तो फिर उनका विवाह अवश्य हो जाना चाहिए।"

नलिनी ने उसके हाथो से अपने को छुड़ाते हुए कहा, "हटिए भी, मुझे यह विवाह की हथकड़ियाँ पसन्द नही।" नलिनी ने कटाक्ष किया और रूपकुमार मुस्कराया।

चारुचित्रा ने निकष का द्वार खटखटाया। संयोग से निकष उस समय घर पर नहीं था। सुन्दरलाल ने किवाड़ खोले। चारुचित्रा ने प्रणाम किया और वह निकष के कमरे मे आप से आप जाकर बैठ गई। उस दिन सुन्दरलाल उस कमरे में आकर बैठे। चारुचित्रा सोचने लगी—आज तक कभी भी सुन्दरलाल मुझसे बात करने नहीं आये, आज क्यों ये यहाँ आ गए? अवश्य ही निकष ने इनसे विवाह की बात की होगी।

चारुचित्रा अन्दर ही अन्दर यह सब सोच रही थी कि सुन्दरलाल जी बोले, "निकष से कदाचित् आपने ही मेरे विवाह के सम्बन्ध में वार्ता चलाई है।"

"जी हाँ, आप रसवन्ती से सम्बन्धित चर्चा करना चाहते है ना?"

"जी हाँ, पहले तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपको यह प्रसंग मिला कैसे?"

"मुझे निकष जी ने ही बताया कि आप अपना विवाह करना चाहते हैं।"

"आपका रसवन्ती जी से कोई सम्बन्ध है?"

"नहीं, किन्तु जिनके यहाँ रसवन्ती जी से मेरी भेंट हुई है वे मेरी अच्छी परिचिता हैं।"

"कौन हैं वे?"

उसका नाम है नलिनी। नलिनी के पिता का नाम है तारकनाथ सान्याल और सान्याल साहब की पत्नी की बहन का नाम है रसवन्ती।"

"सान्याल साहब के घर की बात है?"

"हाँ-हाँ, आप उन्हें जानते हैं?"

"वे शिक्षा विभाग में हैं, अध्यापक होने के नाते मैं उनके सम्पर्क में बहुधा आया हूँ। अभी उस दिन नलिनी का ही तो विवाह था जब बारात के दिन मैं वहा गया था।"

ओ हो तो बारात के दिन ही मैंने रसवन्ती को घर में देखा है

"स्वभाव की कैसी है ?"

"बहुत ही मृदुल ।"

'देखने-सुनने में ?"

"अधिक सुन्दर तो नहीं किन्तु अच्छी है । गोरे वर्ण की है ।"

"क्या उनकी अपनी रुचि विवाह करने की है ?"

"विवाह के सम्बन्ध में मैंने उनसे बातें नहीं कीं, किन्तु नलिनी ने बताया है कि वे विवाह कर सकती हैं।"

सुन्दरलाल जी मत्थे पर हाथ फेरकर कुछ सोचने लगे और फिर बोले, "आपका निकष के पास आना कैसे हुआ करता है ?"

चारुचित्रा ने इस प्रश्न की आशा रंच मात्र भी नहीं की थी । वह कुछ क्षण अवाक् रही फिर बोली, "निकष मेरे महाविद्यालय के छात्र हैं और उनकी रुचि चित्रकला में अत्यधिक है । मुझे जब भी वे अपनी किसी नई कृति को दिखाने के लिए बुलाते हैं, मैं आ जाती हूँ ।"

"तब तो अब तक निकष ने बहुत से चित्र बना डाले होंगे ?"

चारुचित्रा चुप रही ।

सुन्दरलाल मुस्कराये ।

चारुचित्रा ने दाँतों से उँगली काटी ।

सुन्दरलाल ने कहा, "आपको पता है कि निकष विदेश जाने वाला है ?"

"जी ?"

"हाँ, वह विदेश जाने वाला है, शायद उसने आपको यह नहीं बताया ।"

चारुचित्रा फिर चुप होकर सुन्दरलाल का केवल मुँह ताकने लगी ।

सुन्दरलाल ने कहा, "आप क्या देख रही हैं, मैं जो कह रहा हूँ उसे आप समझ रही है ना ।"

"नहीं, मैं नहीं समझ पा रही हूँ ।"

"इसमें समझने की क्या बात है, सादी-सी बात है कि वह विदेश जाएगा ।"

"यह तो मैं समझी," चारुचित्रा कुछ शंकित होकर बोली, "किन्तु इसमें आप क्या समझाना चाहते हैं उसे नहीं समझ पा रही हूँ ।"

"हूँ," सुन्दरलाल फिर मुस्कराए और बोले, "घबड़ाइए नहीं । उसके विदेश जाने से आपका कुछ नहीं बिगड़ेगा ।"

"चारुचित्रा कुछ मुस्कराई किन्तु बोली, "यह क्या पहेली है ? मेरे बनने-बिगड़ने का क्या प्रश्न है ?"

"आप समझती हैं मुझे कुछ पता नहीं । मुझे सब पता है । निकष ने मुझे सब बता दिया है । अब घबड़ाने और मेरी बातों को पहेली के समान बूझने की अधिक आवश्यकता नहीं । आपका विवाह निकष से ही होगा ।"

चारुचित्रा ने अपने आँचल से अपना मुँह ढँक लिया और वह वहाँ से चलने के लिए उद्यत हुई कुर्सी से उठकर खड़ी ही हुई थी कि निकष आ पहुँचा चारुचित्रा

निकष को देखकर भी अपना मुंह ढांके हुए कमरे के बाहर जाने लगी। निकष ने कहा, "रुकोगी नहीं, कितनी देर से आई हो ?"

इसके पहले कि चारुचित्रा कुछ उत्तर दे सुन्दरलाल ने कहा, "उसको जाने दो। मुझे बताओ कि तुमने अपने मुख्य लक्ष्य की ओर कितनी प्रगति की ? निकष अपने भाई की ओर घूमा और सुन्दरलाल ने वहाँ से धीरे-धीरे खिसकती चारुचित्रा को बात सुनाते हुए कहा, "आज से अपनी सारी सक्रियता को सीमित कर केवल अपनी थीसिस की ओर ध्यान दोगे।"

चारुचित्रा वहाँ से चल दी और निकष ने आँख उठाकर भइया की ओर देखा। सुन्दरलाल ने अपनी गम्भीर मुद्रा के साथ घूमते हुए कमरे के बाहर पैर रखे। निकष हतबुद्धि होकर चुपचाप खड़ा रह गया।

"देखूँ तो तेरी ससुराल से तुझे क्या-क्या मिला ?" रसवन्ती ने कहा और नलिनी ने अपने सन्दूक की चाबी मौसी को पकड़ा दी।

घर में उपस्थित अन्य महिलाएँ उसी प्रकार से सन्दूक को घेर कर खड़ी हो गई जिस प्रकार से किसी मदारी के चारों ओर जिज्ञासु बच्चे।

रसवन्ती ने ताला खोला किन्तु सन्दूक के खुलने के पहले ही कामिनी ने भीड़ को चीरते हुए पदार्पण किया और बोली, "हट तो रसवन्ती, मैं दिखा देती हूँ सारा सामान।" रसवन्ती वहाँ से हटी और कामिनी ने सन्दूक खोलकर साड़ियों और गहनों के डिब्बों को खोल-खोलकर दिखाना शुरू किया। हर वस्तु के पीछे थोड़ा-सा मुँह बिचकाता और अपने मायके की बड़ी-बड़ी बातें करना उस प्रदर्शन का मुख्य अंग था। देखते-देखते एक नेकलेस केस में रसवन्ती की मूर्ति दिखाई दी। केस को खोलकर कामिनी ने पहले तो स्वयं ध्यान से देखा और फिर सबको दिखाकर बोली, "गिन्नी सोना है। सब ताँबा जैसा। चार आने बट्टे से कम नहीं है। क्या कहूँ, उन लोगों को ऐसी चीज देते भी लज्जा नहीं आई।" कामिनी ने नलिनी से पूछा, "यह किसने दिया है ? सास की चीज है ?" नलिनी चुप रही। "बड़ी नन्द ने दी है ?" फिर प्रश्न किया गया और नलिनी बोली, "नहीं।"

"फिर किसने दी ?" कामिनी ने जोर से पूछा।

नलिनी कुछ नहीं बोली और रसवन्ती बोली, 'मैं बता दूँ ?"

"तू क्या जाने ?" कामिनी बोली।

"मैं सब जानती हूँ। यह चीज है रूपकुमार की।" रसवन्ती ने नलिनी की ओर देखा और नलिनी ने पलकें झपका कर समर्थन किया। कामिनी के नेकलेस को बन्द कर दिया और बोली, "पतिदेव की भेंट है।"

"रसवन्ती को कामिनी की इस प्रकार की बातें पसन्द नहीं आई और वह बोली, "दीदी, कैसी बात करती हो ? नलिनी भी क्या तुम्हारी लड़ाकू ननद है जो उसके ससुराल का पानी उतार रही हो ?"

रसवन्ती ने ऐसी बात हँसकर कही किन्तु कामिनी झपट पड़ी "छोटे मुँह बड़ी बात नहीं अच्छी लगती रसवन्ती मेरे मुह बहुत मत लगा करो ठला भर कर दहेज

दिया गया है। लड़की को ससुराल से गहने क्या-क्या मिले हैं क्या यह भी नहीं देखूँगी।"

रसवन्ती चुप हो गई और नलिनी ने दौड़कर मौसी का हाथ पकड़ा। बोली, 'आओ मौसी, उधर कमरे मे चलें, माँ को सब देख-समझ लेने दो।"

नलिनी और रसवन्ती वहाँ से दूसरे कमरे में पहुँचीं और कामिनी ने सन्दूक से सब सामान उल्टा-सीधा निकालते हुए कहा, "आजकल की लड़कियो पर ससुराल का जादू इतनी जल्दी चढ़ता है कि वहाँ की बुराई एक शब्द भी नहीं सुन सकती।" महिलाओं ने सिर हिलाया और भेंट देखती रही।

"नलिनी! दीदी की बातों का बुरा न मानना। यह सदैव से तानेतंज की बातें करती है।" रसवन्ती ने कहा।

"मैं नहीं चिन्ता करती। मैं जानती हूँ इतने दिन से मैं भी साथ रह रही हूँ।"

रसवन्ती मुस्कराई। नलिनी ने कहा, "मौसी, एक बात पूछूँ?"

"पूछो।"

"तुम्हें मेरी सौगन्ध है, बुरा न मानना।"

"बुरा मानने की कौन बात हो सकती है।"

"अपना विवाह करोगी?"

रसवन्ती की आँखें और मुंह विस्मय से खुलकर स्थिर हो गये। उसने आँचल को मुँह पर रखकर गम्भीर होकर पूछा, "यह कैसा प्रश्न?"

"मौसी," नलिनी ने अपनी आँखें फड़फड़ाईं।

रसवन्ती चुप रही और नलिनी ने कुछ रुककर कहा, "उस दिन तुमने चारुचित्रा दीदी को देखा था ना?"

"हाँ।"

"वे बहुत भली है। इतने बड़े महाविद्यालय का प्रबन्ध-कार्य वे स्वयं करती हैं। समाज की सेवाओ में बड़ा आनन्द लेती हैं। चित्रकला में बड़ी ख्याति प्राप्त कर चुकी है।"

"तो इन सबसे मुझे क्या करना है?" रसवन्ती ने पूछा।

"वे ही तुम्हारा विवाह लाई हैं। कोई अच्छा ही पात्र होगा।"

"कहाँ हैं वे?"

"अब आती ही होंगी। मुझको सूचना दी थी कि वे आज आवेंगी और मैं तुम्हें साथ लेकर किसी अकेले कमरे में मिलूँगी।"

"अकेले क्यों?"

"इसलिए कि कुछ ऐसी बातें उन्हें करनी है जो सभी के बीच नहीं की जा सकती और फिर···।"

"···और फिर?"

"और फिर इससे अच्छा अवसर ही क्या हो सकता है कि इस समय सभी लोग मेरी ससुराल की सौगातों को देखने में व्यस्त हैं

रसवन्ती के मस्तिष्क मे एक संघर्ष-सा उठने लगा और इसी समय अतिथि-कक्ष के

द्वार पर किसी ने धीरे से दस्तक दी। नलिनी ने तुरन्त किवाड़ खोले और चारुचित्रा ने वहाँ प्रवेश किया।

रसवन्ती अन्दर से बहुत घबड़ाई हुई थी। औपचारिकता के नाते नमस्कार करना भी वह भूल गई। नलिनी की ओर चारुचित्रा ने प्रश्न भरी दृष्टि डाली और नलिनी ने मुस्कराकर संकेत किया कि वह विवाह की चर्चा चलाये।

चारुचित्रा ने रसवन्ती के आनन की रेखाएँ पढ़ना शुरू किया। वह उससे आँख बचा रही थी। चारुचित्रा ने प्रश्न किया, "आपने नलिनी को तो अपनी अनुमति प्रदान कर दी होगी ?"

रसवन्ती ने दृष्टि उठाकर केवल चारुचित्रा की ओर देखा।

चारुचित्रा आगे बोली, "मैं समझती हूँ, आपको विवाह अवश्य ही कर लेना चाहिए।"

रसवन्ती आँखों में आँसू भरकर बोली, "मेरे भाग्य में वैवाहिक सुख नहीं लिखा। मुझे आप क्षमा कर दें।"

"नहीं, यह आप कैसी बात कर रही है ?"

"वैधव्य पूर्व जन्म में मिले किसी श्राप का प्रतिफल होता है।" रसवन्ती ने धीरे से कहा।

चारुचित्रा बोली, "दो जन्मों के पाप-पुण्य के पलड़ों को किस काँटे की डाँड़ी पर प्रत्यक्ष देखा गया है। ये रूढ़िवादी विचार आधुनिक समाज के विकार हैं। आपको अपना विवाह सचमुच कर लेना चाहिए।"

"लोग क्या कहेंगे ! समाज के बन्धन तोड़ना···।"

"समाज के बन्धन और नियम व्यक्ति के सुख के लिए बने हैं, व्यक्ति नियम और बन्धनों के लिए नहीं बना है।"

"सुख ! ···किन्तु सुख के पीछे मै अपना सम्मान कैसे खो दूँ ? नहीं, नहीं मैं ऐसा नही करूँगी, लोग मुझे सम्मानित दृष्टि से देखना बन्द कर देंगे।"

"व्यक्ति का सम्मान अवांछनीय मर्यादाओ में बँधने और औपचारिकता बरतने से नहीं होता, सम्मान उसकी कार्यपरायणता और कृतित्व से होता है।"

"तो फिर क्यों न कृतित्व का आँचल पकड़ूँ।"

"इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है, किन्तु आपके जीवन में क्या कोई योजना या लक्ष्य है ?"

"योजना और लक्ष्य ! ! यह क्या है ?"

"योजना और लक्ष्य कार्यपरायणता की आधारशिला है। व्यक्ति मे यदि यह नही है तो उसके भटकने की सम्भावना बनी रहती है।"

रसवन्ती आँख फाड़कर चारुचित्रा को देखने लगी और नलिनी बीच में बोली, "और फिर लक्ष्य भी हो तो उसके लिए वैसी योग्यता भी चाहिए।"

"निश्चय ही ?" चारुचित्रा ने कहा- "किन्तु व्यक्ति की लगन भी उसमें योग्यता की जागृति कर सकती है इसलिए यह बाद की वस्तु है प्रथम प्रश्न लक्ष्य का है और

फिर महिलाओं के लिए उनके लिए ? तो सभी कुछ साथ-साथ चाहिए ।"

"हूँ" नलिनी बोली, "मौसी जी के पास तो कोई लक्ष्य नहीं, हाँ मीराबाई बनने की चिन्ता वे प्रायः किया करती है ! क्यों मौसी ?" उसने रसवन्ती की ओर देखा और रसवन्ती बोली, "हट, चुटकियाँ लेने में तुझे बड़ा आनन्द आता है ।"

चारुचित्रा ने पूछा, "कौन-सा गाना आपको प्रिय है ?"

नलिनी बोली, "मैं बताऊँ—

मैं तो गिरधर के घर जाऊँ, गिरधर म्हारो साचो प्रीतम ।
देखत रूप, लुभाऊँ, रैन भाए तब ही उठ जाऊँ भोर भए उठ आऊँ ।।"

रसवन्ती ने लपक कर नलिनी का मुँह बन्द किया और चारुचित्रा बोली, "मीराबाई ने तो नारी के हृदय की सच्ची पीड़ा को अभिव्यक्त किया है । उनके गीतो ने यदि आपके हृदय को भी पकड़ लिया हो तो कोई संकोच की बात नही ।"

नलिनी खिलखिलाकर हँसी और रसवन्ती भी मुस्करा उठी । चारुचित्रा ने पूछा, "नलिनी, यह बताओ आपके विवाह से आपके ससुराल वालों को तो कोई आपत्ति नही होगी ।"

रसवन्ती ने स्वयं से उत्तर दिया, "उन लोगो ने तो उनकी मृत्यु के बाद से अपना सारा सम्बन्ध मुझसे तोड़ लिया ।"

"...और मौसी जी तो नाना जी के पास रहती है । बेचारे नाना जी स्वय विपन्न व्यक्ति हैं । उनके बोझ को कुछ हलका करने के लिए बाबूजी ने कुछ दिन के लिए इन्हें यहाँ बुला लिया है ।" नलिनी बीच में बोली ।

"बोझ !" चारुचित्रा ने कहा, "परिवार का वह व्यक्ति जो सम्बन्धियों को बोझ मालूम होता है उसे यदि किसी के घर का शृंगार बना दिया जाय तो..."

"मेरी मौसी फूलों का हार बनेंगी । वे अवश्य विवाह करेंगी । मैं यह विवाह सम्पन्न कराऊँगी । बाबूजी मेरी बात कभी नहीं टाल सकेंगे । विवाह मेरे ही यहाँ से होगा । यहीं से होगा ।"

चारुचित्रा ने रसवन्ती की ओर देखा, वह मौन होकर भी अपनी स्वीकृति प्रदान कर रही थी ।

"लो सुनो । एक नया समाचार है ।" सान्याल साहब ने कहा और श्री पिल्ले ने उत्कण्ठा से पूछा, "क्या ?"

सान्याल साहब ने नवभारत टाइम्स का तीसरा पन्ना पढ़कर कहा, "नटवरलाल पर 10,000 रुपये की नालिश हुई है ।"

"किसलिए ?"

"उसने किसी अंग्रेजी उपन्यास का प्लाट चुराकर एक जासूसी पुस्तक लिखी थी । विदेशी प्रकाशक ने दावा ठोक दिया ।"

"ओ हो हाँ मैंने सुना था कि वह उपन्यास भी लिखता है, उसके कथानको का

आधार अब दिखाई दिया। श्री पिल्ले ने मुंह बनाया।

"क्या उसने कई उपन्यास लिखे हैं?"

"हाँ-हाँ. दो दर्जन तो मैंने सुने हैं।"

"दो दर्जन!" सान्याल साहब ने विस्मय प्रकट किया और फिर बोले, "चोरों की सम्पत्ति सचमुच जल्दी बढ़ती है।"

"और वैसे ही जाती भी है। अब सारी तिड़ीबाजी याद आ गई होगी, जब दस हजार की नोटिस मिली होगी। जासूसी प्लाट यहाँ भी तो खेला था, पद्मा के साथ।"

"हाँ, किन्तु पद्मा तो मिल गई शायद।"

"हाँ-हाँ, वह तो यहाँ अपने मामा के घर से अपने पिता के घर गुण्टूर भी चली गई, अब उसका विवाह भी हो रहा है।"

"तुमको कैसे मालूम?"

"मुझे चारुचित्रा ने महाविद्यालय में सब बताया था। कल निकष भी पद्मा की शादी में शामिल होने के लिए गुण्टूर गया।"

"अच्छा! बहुत जानकारी रखते हो।"

"अब आजकल रखनी ही पड़ती है। कमल बाबू को फाँसना चाहता हूँ, इसलिए और भी सचेत रहता हूँ।"

"नटवर की तरह यह भी किसी मामले में फँसे तब सन्तोष हो।"

'सचमुच वह बड़ा भयानक हो गया है। अभी दो-तीन दिन पहले मेरे पास कुन्दनलाल शास्त्री आये थे। आप तो उन्हें जानते होंगे?"

"हाँ-हाँ, महाविद्यालय वाले।"

"जी हाँ। वे ही। वे मुझसे कमल के विषय में पूछने लगे कि मैं उसके विषय में कुछ जानता हूँ अथवा नहीं। मैंने जब उनको सारा समाचार सुनाया तो उनकी आँख खुली।"

"तो क्या तुमने मेरे घर की बात भी कह दी?"

"नहीं। कहीं ऐसा हो सकता है! मुझे क्या आपकी बदनामी होने का डर नहीं? मैंने चारुचित्रा के साथ जो घटना घटी उसको उन्हें बताया।"

"अच्छा! तो क्या चारुचित्रा भी उसका शिकार हो चुकी?"

"नहीं, वह सफल नहीं हो पाया। शास्त्री जी, चारुचित्रा की माँ के जोर लगाने से कमल बाबू के साथ चारुचित्रा का विवाह तय करना चाहते थे किन्तु चारुचित्रा ने जब कड़ा विरोध किया तो वे मेरे पास राय लेने आए और जब मैंने कमल और नटवर की बातें बताई तो उनके कान खड़े हो गये।"

"ओ यह बात है। तो कमबख्त कमल को किसी चक्कर में फाँसो न।"

"फाँसूंगा, मेरे पास भी कुछ बुद्धि है।"

"क्या सोचा है?"

"देखिए रामेश्वरी बाई यहाँ से बम्बई घूमने-घामने गई है। दो-तीन-दिन में वह यहाँ फिर लौटकर आएगी और मुझसे मिलने के बाद ही वह वाराणसी लौटेगी"

"तो उसके आने से क्या होगा ?"

"उसके आने से कमल को ऐसे चक्कर मे फाँसूँगा कि उसकी सारी हेकड़ी भूल जायगी ।"

"कमबख्त फँसे भी तो किसी तरह !"

सध्या का समय था। मोहिनी चुपचाप बैठी किसी चिन्ता मे मग्न थी। टेलीफोन की घण्टी ने उसका ध्यान आकर्षित किया। मोहिनी ने टेलीफोन कान में लगाया और बोली—

"हलो, मैं हूँ मोहिनी देवी ।"

"माता जी, प्रणाम। मैं हूँ कमल।"

"जियो बेटा, कहो क्या बात है ?"

"कहना क्या है। बात यह है कि जब तक बाबूजी ने विवाह की अनुमति नही दी थी आपने शास्त्री जी को भेज-भेज कर मेरी देहली की धूल साफ कर दी, किन्तु अब आपका क्या मन्तव्य है कुछ समझ में नहीं आता। जिस दिन से मैं आपके यहाँ से लौटकर आया हूँ, आपने कोई भी सूचना मुझे नहीं दी। ऐसा ही करना था तो व्यर्थ ही स्वाँग रचा, मैंने इस समय आपको टेलीफोन केवल इसलिए किया है कि आपको सूचना दे दूँ कि अब मैं यह विवाह नहीं कर सकता···"

"नहीं, नहीं बेटा, यह कैसी बात! मैं तो शास्त्री जी की प्रतीक्षा में हूँ। उस दिन से वे आए ही नहीं। आते तो अवश्य ही उन्हें तुम्हारे यहाँ भेजती। आज ही शास्त्री जी को बुलाया है। देखो शायद आते हो।"

"किन्तु मैं शास्त्री-वास्त्री को नहीं जानता। वे आयें या न आयें, यह भी कोई बहाना है ?"

"बहाना! मैं बहाना कर रही हूँ? मैं कहती हूँ चारुचित्रा का विवाह तुम्ही से होगा। लड़की मेरी है। मुझ पर विश्वास करो।"

"तो कब तक ?"

"तो कब तक! मैं इस समय तिथि भी बता दूँ ?"

द्वार पर कुण्डी खड़की और मोहिनी ने फोन पर कहा, "लो शास्त्री जी आ गए शायद। मैं अभी उनसे बात कर तिथि भी निर्धारित कर लेती हूँ।"

"तो क्या मैं फोन पकड़े रहूँ ?"

मोहिनी किवाड़ खोलने की जल्दी में कुछ अधिक न सोच सकी। उसने कह दिया, "अच्छा पकड़े रहिए।" रिसीवर को अलग रखकर मोहिनी ने किवाड़ खोला। शास्त्री जी खड़े थे। वे अन्दर आए। मोहिनी झटपट उन्हें अपने कमरे में ले गई। कमरे में आते ही शास्त्री जी की दृष्टि टेलीफोन से हटे रिसीवर पर पड़ी। उन्होंने पूछा, "यह टेलीफोन किसका आया है? आप किससे बात कर रही थीं ?"

मत्थे को हाथ से सहलाते हुए मोहिनी ने कहा, "कमल बाबू का है। वे रिसीवर पकड़े हैं कह रहे हैं विवाह की तिथि अभी बताइए

शास्त्री जी को हँसी आई और साथ ही क्रोध भी आया ! रूखे होकर बोले, "आपको चारु का विवाह कमल से नहीं करना है। वह प्रथम श्रेणी का आवारा है। अब यही देखिए, टेलीफ़ोन पर खड़े-खड़े विवाह की तिथि माँग रहा है, यह भद्र लड़कों का कार्य है !"

"तो क्या जो चारुचित्रा कहती थी वह बिल्कुल सत्य है ?"

"बिल्कुल सत्य। कमल को फोन पर कह दो यह विवाह नहीं होगा।"

"अरे, कमल इतना आवारा···!"

"हाँ, वह महा आवारा है। लाओ मैं फोन पर बात कर लूँ।"

"कर लीजिए।"

शास्त्री जी ने फ़ोन उठाया, "हलो कमल, मैं हूँ शास्त्री।"

"शास्त्री जी।"

"हाँ, मैं खेद के साथ सूचित करना चाहता हूँ कि चारुचित्रा का विवाह आपके साथ नहीं हो सकेगा।"

"माताजी कहाँ हैं, उन्हें फ़ोन पर भेजिए।"

शास्त्री जी ने फोन रख दिया। कमल हलो-हलो करता ही रह गया। खिसिया कर उसने भी फ़ोन रखा और बड़बड़ाया, "अभी उस बुढ़िया ने वचन दिया कि चारु का विवाह मुझी से होगा। देखता हूँ, चारुचित्रा को कौन अपने सीने से लगाता है। मेरा अपमान ! हुँह !

शास्त्री जी ने मोहिनी को कमल का सारा हाल बताया और मोहिनी ने कहा, "यही तो बेचारी चारु मुझसे कहती थी; किन्तु मैंने विश्वास नहीं किया। क्या बताऊँ, मैंने तो अभी-अभी कमल को विश्वास बँधाया था कि···।"

"इतनी जल्दी करने की क्या आवश्यकता थी, खैर जो कुछ भी हुआ चिन्ता मत करो।"

"मैं बड़ी मूर्ख थी।"

"कोई बात नहीं। संसार में धन आँखों पर रंगीन चश्मा चढ़ा देता है जिससे वास्तविक रूप दिखाई नहीं देता।"

मोहिनी मौन हो गई। शास्त्री जी ने चलते हुए कहा, अच्छा फिर आऊँगा।

चारुचित्रा महाविद्यालय में अपने कक्ष में बैठी थी। अचानक द्वार की चिक हटी और निकष ने कमरे में प्रवेश किया। चारुचित्रा अभिवादन के लिए उठकर खड़ी हो गई। निकष कुर्सी पर बैठा और चारुचित्रा ने पूछा—

"गुण्टूर से कब लौटे ?"

"परसों प्रातः आया।"

"परसों ! और मुझसे मिलने आज आए हैं ?"

निकष चुप रहा।

ओ समझी चारुचित्रा ने कहा दादाजी की आज्ञा का पालन हो रहा है

"अर्थात् कानूनी विवाह।"

"मण्डप और बारात आदि ?

"यह सब कुछ नहीं होगा। वे केवल अपने कुछ इष्ट-मित्रों सहित सान्याल साहब के द्वार पर जाएँगे। एक बढ़िया सी चाय-पार्टी चाहेंगे और भाभी रसवन्ती को ब्याह कर घर ले आएँगे।"

"यह तो अजीब प्रकार का विषय होगा।"

"नहीं अजीब क्यो, दुनिया में आजकल ऐसे बहुत विवाह हो रहे है। लड़को को नीलाम में खड़ा करने की प्रथा अथवा लड़की को अंगीकार करने का जुर्माना लेने का चलन अत्यधिक प्रगतिशील देशों से उड़ गया है। भारत मे इस प्रकार के विवाहो का चलन अभी नहीं है इसलिए अजीब प्रकार का विवाह मालूम होता है।"

"ऐसे विवाह की शोभा ही क्या ?"

"जो कुछ भी हो, यह तो व्यक्तिगत विचारों की बात है। मेरे भाई साहब कुछ ऐसे ही है। उनका पहला विवाह भी इसी प्रकार से हुआ था।"

चारुचित्रा ने विस्मय प्रकट किया, बोली, "तब उनको अपनी ससुराल से कुछ भी नही मिला होगा।"

"मिला क्यों नहीं, बहुत कुछ मिला था। मेरे कमरे में जो सोफा पड़ा है वह भाई साहब की ससुराल से ही मिला था और वह रेडियो-सेट जो ड्राइंगरूम में रखा है वह भो ससुराल वाला है।"

"सो कैसे ? क्या दहेज लिया गया था ?"

"नहीं, ऐसे विवाह में कही दहेज चल सकता है ? लड़की के पिता से दहेज रूपी जुर्माना नहीं लिया जाता। पिता जिस स्थिति का होता है उसके अनुसार वह स्वयं अपनी लड़की को स्नेहवश देता है।"

"और यदि वह न दे तो ?"

"तो कोई बात नहीं। विवाह का मुख्य ध्येय जीवन साथी को पाना है, किसी को कृतार्थ करना या उसकी कमजोरी से लाभ उठाना नहीं।"

"किन्तु पैतृक संपत्ति से कुछ कन्या को भी मिलना चाहिए।"

"यह पिता के सोचने की बात है, दामाद को इसका ठेकेदार बनने की आवश्यकता नही।"

"किन्तु प्राय: कन्याओं के पिता ऐसे आदर्शवादी वरों को पाकर लड़की को अपनी सपत्ति से कुछ भी नहीं देते।"

"ठीक है, उन्हीं के लिए तो भारत सरकार ने हिन्दू कोड बिल के उस भाग को पास किया, जिसके द्वारा कन्या भी पिता की संपत्ति की अधिकारिणी हो जाती है।"

"हाँ कानून, कानून की दृष्टि से तो ठीक है किन्तु एक बात है।"

"वह क्या ?"

इससे सामाजिक और पारिवारिक जीवन के विकृत हो जाने का भय प्राय बना रहता है

"वह कैसे ?"

"भाई बहन के स्वाभाविक स्नेह में अन्तर आ जाता है। एक प्रकार से देखा जाय तो इस कानून की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि परिवार की सपत्ति और पारिवारिक स्नेह समाज-विशेष की अपनी आन्तरिक वस्तुएँ हैं। देखिए न, कितनी लड़कियों के माता-पिता जब नहीं रहते अथवा सामर्थ्यवान नहीं होते तो उनके भाई कर्ज काढ़कर भी अपनी बहनो को ऊँचे-ऊँचे घरो मे ब्याहते हैं, प्रायः अपनी हैसियत से भी ऊपर। ऐसे पवित्र स्नेह को यह कानून क्या धक्का नही पहुँचाता ? क्या यह कानून बहनो को इस बात के लिए बढ़ावा नहीं देता कि वे ऐसे पवित्र सम्बन्ध को तिलाजलि देकर मात्र अपने अधिकार को भी देखें ? क्या यह परिवार और सम्बन्धियों के जीवन में कलह उत्पन्न नही कर सकता ?"

"कर सकता है, बहुत गम्भीर स्थिति उत्पन्न कर सकता है किन्तु केवल आदर्श और आत्मिक सिद्धान्त के आधार पर किसी के अधिकार से कानूनी व्याख्याएँ कब तक वंचित रखी जा सकती हैं !"

चारुचित्रा चुप रही निकष की ओर जिज्ञासा भरी दृष्टि से देखती रही। निकष ने आगे कहा—

"किसी भी अस्त्र का निर्माण इसलिए नहीं किया जाता कि उसका प्रयोग आवश्यक ही हो। अस्त्र समय विशेष के लिए रख छोड़ा जाता है। सरकार की ओर से यदि एक ऐसा अस्त्र बना दिया गया है तो कोई बात नहीं, प्रयोग करने वाले सोच-समझ कर प्रयोग करें। प्राकृतिक स्नेह कानून से नहीं मरता-जीता, प्रश्न तो दायित्व निभाने और तत्पश्चात् त्याग का है। यदि अवसर पड़ने पर भाई त्याग कर सकता है तो सम्पन्न होने पर बहिन को भी त्याग करना चाहिए। कानून बन गया है तो क्या यह आवश्यक है कि हर बहिन अपना टुकड़ा अवश्य ही तोड़ ले।"

"नहीं, यह तो आवश्यक नहीं।"

निकष ने अपनी बात अपने पास ही रखते हुए आगे कहा, "समय बदल रहा है, सामाजिक ढाँचे बदल रहे है, अर्थ का वितरण और संपत्ति का व्यक्तिगत आधिपत्य बदल रहा है। आप से आप कितने परिवर्तन आने वाले हैं। सामाजिक जीवन में अवश्य ही क्रान्ति आएगी, ऐसे कानूनों से डरना ही क्या। लोगो को इन सब बातों को कोई महत्त्व नहीं देना चाहिए। तुमको क्या चिन्ता है ?"

"मुझे ? मुझे क्या चिन्ता हो सकती है, मैंने तो बात पर बात कही !"

"खैर, अब यह बताओ भाई साहब ने तुम्हारे विवाह के बारे मे क्या कहा।"

"यह क्यों बताऊँ ?" चारुचित्रा ने नटखट होकर कहा। निकष बोला, "अच्छा अपने विवाह के विषय में तुम्हें लज्जा आती हो तो मेरे विवाह के विषय में बता दो।"

चारुचित्रा ने पीठ फेरकर कहा, "आपका विवाह होगा।"

"किससे ?"

है एक लडकी शायद उसका नाम चारुचित्रा है

निकष ने आगे बढ          के दोनो कन्धो पर अपने हाथ रखकर उसका मुँह

अपनी ओर घुमाया और वह बोली, "यह महाविद्यालय है।"

"तो मैं आपसे कहाँ बोल रहा हूँ, मैं तो अपनी चारुचित्रा से बोल रहा हूँ।"

चारुचित्रा हाथ हटाकर कमरे के बाहर झूठमूठ जाती हुई बोली, "जब चारुचित्रा को अपनी कर लीजिएगा तब बोलिएगा।"

निकष हँसा और बोला, "अच्छा कमरे में बैठो, मैं स्वयं चला जा रहा हूँ, फिर मिलूँगा।"

वह वहाँ से चलने लगा। चारुचित्रा पीछे-पीछे दौड़ी और बोली, "अभी तो आप से बहुत-सी बातें करनी थी।" निकष बोला, "भइया प्रतीक्षित होंगे उन्हीं के काम से इधर आया था, फिर मिलूँगा।" निकष वहाँ से चल दिया।

रसवन्ती के विवाह के सम्बन्ध में आगे की योजना जानने के लिए नलिनी चारुचित्रा के घर पहुँची। मोहिनी ने नलिनी को देखते ही स्वागत करते हुए कहा, "आज हमारे घर कहाँ भूल पडी ? बहुत दिन बाद आई हो। रास्ता तो नहीं भूल गई ?"

"जरा दीदी से मिलने आई थी, क्या कहूँ माता जी ने मेरा नाम महाविद्यालय से जब से कटवाया मेरी आने की हिम्मत नही हुई। वीणा तो आपके यहाँ आती रही है।"

"हाँ वह तो आती रहती है, भगवान की कृपा से उसका स्कूल यदि इस मोहल्ले मे न होता तो फिर वह भी क्यों आती। ससुराल तो अच्छी मिली ?"

नलिनी ने लजाकर कहा, "हाँ आपका आशीर्वाद है।"

"चारु के पास किस काम से आई हो ?"

"मेरी रसवन्ती मौसी का विवाह वे तय करा रही हैं, उसी सम्बन्ध में कुछ बात करनी थी।"

"किससे तय हो रहा है ?"

"एक श्री देवकीनन्दन निकष हैं, उन्हीं के बड़े भाई सुन्दरलाल से।"

"निकष के यहाँ ? सुन्दरलाल के साथ ? क्या निकष के बड़े भाई का विवाह अभी नहीं हुआ ?"

"नहीं, उनका विवाह हो चुका था किन्तु उनकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है।"

"अच्छा समझी, तो तुम्हारी मौसी के लिए कोई क्वांरा लड़का नहीं मिलता ?"

"मिल तो सकता था किन्तु बात यह है कि मौसी जी स्वयं विधवा हैं।"

"विधवा ! और फिर विधवा का विवाह !"

"तो क्या हुआ ?"

"संसार में इसी से तो प्रलय आ रही है। अब धर्म-अधर्म कहीं रह ही नहीं गया है। भगवान के श्राप से लड़ना कहाँ तक उचित है। तुम्हारी मौसी को पति सुख बदा होता तो वे पहले ही विधवा क्यों होतीं ? मैं कहती हूँ तुम लोग नर्क में जाने का क्यों प्रबन्ध कर रही हो।"

नलिनी हँसी और बोली माता जी स्वर्ग और नर्क किसने देखा है जो कुछ भी है इसी धरती पर है जो सुखी है वह स्वर्ग मे है और जो दुखी है वह नर्क में है

"क्या कहूँ आज की लड़कियों को अपने आगे किसी की सुनती थोड़े ही हैं। चारु की भी यही दशा है। खैर यह बताओ तुम भी निकष के घर के विषय में कुछ जानती हो, कि केवल चारु के कहने से ही यह विवाह तय हो रहा है ?"

"मैं तो अधिक नही जानती फिर भी सुना है घर अच्छा है। सुन्दरलाल जी पढ़े-लिखे समझदार व्यक्ति है। घर मे बाबूजी एक दिन कह रहे थे कि घर अच्छा है।"

"निकष के विषय मे भी कुछ सुना है, कैसा लड़का है ?"

"सुना है वह तो डबल एम०ए० है. किन्तु क्यों उसकी फिक्र आपको कैसे हुई ?"

"अरे बेटी चारु का विवाह उससे तय हुआ है।"

नलिनी प्रसन्न होकर बोली, "सच ?"

"हाँ-हाँ।"

"किसने तय करवाया ?"

"शास्त्री जी ने।"

"वाह, इतनी बढ़िया खबर और मुझे पता भी नहीं ! निकष तो सोना है सोना यह बताइये कब हो रहा है विवाह ?"

"बहुत जल्दी इसी मास के अन्दर। निमन्त्रण पत्र भेजूंगी।"

"मैं अवश्य आऊँगी, किन्तु माता जी आप तो मेरे विवाह में नही आईं।"

"हाँ मेरी तबीयत ठीक नहीं थी। चारु को तो मैंने भेजा था।"

"हाँ दीदी तो आई थी और तभी तो मौसी जी के विवाह की बात छिड़ी।"

"समझी, अब क्या बात बाकी है जो चारु से पूछना है।"

"यही कि विवाह कैसे होगा, वे लोग क्या-क्या चाहते हैं।"

"तो ये बातें सुन्दरलाल के यहाँ पूछने की हैं, चारु उनके यहाँ की चौधराइन थोड़े ही है।" मोहिनी से हँसकर कहा।

नलिनी भी हँसी और बोली, "बात यह है कि बिचवानी दीदी ही बनी हैं इसलिए पूछना आवश्यक है।"

इन्ही बातों के बीच चारुचित्रा बाहर से आई। नलिनी को अपने घर में देखकर विस्मित हुई, फिर प्रसन्न होकर बोली, "नलिनी !"

"दीदी आप आ गईं ? मैं प्रतीक्षा कर रही थी।"

"कहो कैसे आना हुआ ?"

"मौसी जी के वि···वा···ह···।"

"समझी, मैंने सब बातें कर ली हैं।"

"वही तो पूछना चाहती हूँ।"

चारुचित्रा नलिनी के पास बैठी और बोली, "सब बता दूंगी। पहले यह बताओ तुम्हे आए कितनी देर हुई ?"

"अभी-अभी आ रही हूँ।"

"जलपान किया ?"

मोहिनी ने बीच में टोककर कहा तेरी प्रतीक्षा कर रही थी अब साथ ह

लपान कर लो। अभी लाती हूँ।"

मोहिनी जलपान का प्रबन्ध करने चली गई और चारुचित्रा ने नलिनी को सब बता दिया। नास्तिकता की बात सुनकर नलिनी चौंकी किन्तु चारुचित्रा ने कहा, "माता जी के सामने यदि यह बात होती तो वे बहुत बुरा मानतीं।"

"हाँ, और फिर नास्तिकों के यहाँ आपका विवाह भी नहीं करतीं।" नलिनी ने चुटकी ली।

"मेरा विवाह !" चारुचित्रा ने विस्मय प्रकट किया, किन्तु फिर बोली, "तुम्हें कैसे मालूम ?"

"मुझे ? मुझे सब पता है। क्या मैं शहर में नहीं रहती हूँ ?"

चारुचित्रा मुस्कराई और बोली, "समझ गई, माता जी ने अभी बताया होगा।"

"और क्या, वे मुझसे क्यों छुपाने लगीं ! अच्छा क्या निकष भी नास्तिक हैं ?"

"नहीं वे तो पूरे सनातनी हैं। ईश्वर और मूर्ति दोनों को ही मानते हैं।"

"हूँ···" नलिनी ने सिर हिलाया और मोहिनी जलपान लेकर आई। तीनों ने ही जलपान किया। इधर-उधर की बहुत-सी बातें हुईं और नलिनी घर चली गई।

'नवभारत टाइम्स' को कमल ने जब पढ़ना शुरू किया तो स्थानीय समाचार पृष्ठ पर राक्सी होटल का बहुत बड़ा विज्ञापन पढ़ा—

> नृत्य जगत में हलचल पैदा कर देने वाली रामेश्वरीबाई को राक्सी होटल में साकी बाला के रूप में देखिए। भोजन में नई-नई प्लेटों और मधुर पेय का आनन्द लीजिए। रामेश्वरी बाई जो आजकल बम्बई के ताज होटल मे विदेशियों को चकित कर रही है, वही हमारे ग्राहकों की सेवा में प्रस्तुत हो रही हैं; आइये और साकी बाला के हाथों से मधुपान कीजिए। जनाब 'नूर' और मास्टर वारिस उमर खय्याम की दिलकश रुबाइयाँ पेश करेंगे। धरती पर स्वर्ग का आनन्द यदि लूटना चाहते हैं तो मत चूकिए। स्थान सीमित। भोजन दर 80 रुपया प्रति व्यक्ति। नृत्य और संगीत मुफ्त। प्रदर्शन तिथि 2 अक्टूबर। स्थान आज ही सुरक्षित करवाएँ।

कमल ने विज्ञापन फिर पढ़ा। धीरे से अँगड़ाई ली और सोचने लगा, उमर खय्याम की रुबाइयाँ। अहा, क्या चीज है···'

> हाथ लगे सो मौज लो, प्रियतम, यौवन के दिन तीन
> हाय ! अन्त में तो होना है सब ही को अनन्त में लीन
> हाय ! अन्त में तो क्या जाने कहाँ पड़ें होंगे खय्याम
> सुरा - हीन, संगीत - हीन, संगिनी - हीन औ अन्त - विहीन !
> लो प्याला भर-भर दो फिर-फिर, फिर-फिर कहने का क्या फल ?
> हाथों से निकला जाता है लाख-लाख का इक-इक पल
> बीत चुका कल 'कल' होना था क्या जाने होगा क्या कल
> आज चैन से कटती है तो 'कल' के हित क्यों हो बेकल ?

कमल अन्दर ही अन्दर झूम उठा । उसका राक्सी होटल जाने का कार्यक्रम बन गया ।

रसवन्ती नई दुल्हन बनी । सुन्दरलाल की अनोखी बारात द्वार से आ लगी। पुलिस बेंड की धुनें सभी के कानों को तरंगित करने लगी। एक ऊँचे मच के ऊपर सुन्दरलाल जी आकर खड़े हो गये और रसवन्ती ने खुले आनन के साथ आकर पति के गले में जयमाला डाल दी । धमाके और पटाखे भी छूटे। बरातियों ने पण्डाल के नीचे भोजन करना शुरू किया। शहनाई की मधुर-मधुर ध्वनि बजती रही। श्री पिल्ले ने एक शिष्या का नृत्य प्रस्तुत किया। लोगों ने तालियाँ बजाई और लगभग दो घण्टे के अन्दर ही सुन्दरलाल रसवन्ती को मोटर में बिठाकर अपने इष्ट मित्रों सहित घर लौट आए, लोगो ने आशीर्वाद और भेंटें दीं ।

दूसरे दिन सान्याल साहब व श्री पिल्ले अनेकानेक भेंटें लेकर एक टेम्पो पर सुन्दरलाल के द्वार पर पहुँचे । निकष यह सब देखकर चकित हुआ । पहले उसने ही देखा, वह दौड़कर पिल्ले जी के पास पहुँचा और बोला, "सान्याल साहब को यह सब देने की क्या आवश्यकता थी ?"

श्री पिल्ले ने उत्तर दिया, "रसवन्ती कामिनी की छोटी बहन है, इस नाते यह सारा सम्मान कामिनी ने भेंट किया है।"

"कामिनी कौन ?"

"कामिनी, सान्याल साहब की पत्नी ।"

"ठीक, ठीक याद आया ।"

सारा सामान टेम्पो से उतरवाया गया। सुन्दरलाल घर से बाहर निकले तो उनके साथ शास्त्री जी दिखाई दिए । श्री पिल्ले ने दौड़कर शास्त्री जी का हाथ पकड़ा और पूछा, "कहिए आज आप यहाँ कैसे दिखाई दे रहे है ?"

"कल कुछ विशेष कारणों से नहीं आ सका था। आज नव-दम्पति को आशीर्वाद देने चला आया।"

"केवल आशीर्वाद देने ?"

"नहीं वह तो बाद की बात है । वस्तुतः चारु के विवाह का दिन निश्चित करने आया था ।"

"तो तय हो गया ?" वे दोनो सुन्दरलाल जी से कुछ दूर हटकर खड़े हुए ।

"हाँ, सुन्दरलाल जी पहले यह कहते थे कि निकष जब विदेश से लौट कर आएगा तब विवाह हो सकेगा किन्तु तुम तो उस कमल नामक साँड़ को जानते हो, उससे डर ही लगता है। मैंने जोर देकर पहले ही विवाह की तारीख तय कर ली है ।"

"बहुत अच्छा किया । वैसे कमल से भिड़ने के लिए मैं पर्याप्त था। उसका प्रबन्ध मैं कर भी चुका हूँ । अब तारीख बताइए, विवाह कब है ?"

"विवाह केवल 10 दिन बाद ही है क्योंकि 12 तारीख को निकष रोम जा रहा है। आज 22 सितम्बर है 2 तारीख को बारात होगी ।"

साहब सारा रखवाने के बाद शास्त्री जी के निकट आए।

श्री पिल्ले ने शुभ समाचार सुनाया। सुन्दरलाल ने तीनों को जलपान कराया और निकष के विवाह की चर्चा की। बात ही बात में सान्याल साहब बोले, "कमबख्त कमल का अभी तक कोई प्रबन्ध नहीं हुआ।" श्री पिल्ले ने कहा, "आप मुझसे पूछे बिना कैसे कह रहे है। उसको 15 लाख की कोठी में बन्द करने का प्रबन्ध मैंने कर दिया है।" सान्याल साहब ने श्री पिल्ले की पीठ ठोकी और शास्त्री जी को साथ लेकर वे दोनो सुन्दरलाल के घर से लौटे।

जैसे-जैसे निकष के विदेश जाने का दिन निकट आता जाता, चारुचित्रा की उत्कण्ठा निकष की खोजों के विषय में बढती जाती। विवाह तय हो जाने से न तो निकष ही चारु के घर आने मे स्वतन्त्र था और न चारु ही निकष के यहाँ निर्बाध पहुँचना उचित समझती थी। महाविद्यालय के कक्ष में भी चारु निकष को बुलाकर कमरे में बिठलाना अब अधिक अच्छा नहीं समझती थी। उसे पता चला था कि निकष इन दिनों अपने शोध निर्देशक प्रोफेसर भण्डारकर के निजी पुस्तकालय में अधिकतर रहते हैं। चारुचित्रा महाविद्यालय के कार्यों से समय निकाल कर प्रो० भण्डारकर के पुस्तकालय मे पहुँची। निकष लगभग 20-25 पुस्तकों को एक साथ खोलकर बैठा था। चारुचित्रा को देखकर विस्मित हुआ। दोनो की आँखें चार हुई, दोनों ही मुसकराए। चारुचित्रा ने वहाँ की शान्ति भंग करते हुए कहा, "आप उस दिन रसवन्ती के विवाह मे इस बुरी तरह से बारातियों के बीच अपने को छुपाए रहे कि एक बार भी मेरी ओर दृष्टि नहीं उठाई।"

"वहाँ यदि अकेली तुम होतीं तो मैं यह धृष्टता कर सकता था, किन्तु उतनी महिलाओं के बीच आँख गड़ाना कहाँ तक उचित था।"

"किन्तु छिपने का प्रयास क्यों किया गया ?"

"इसलिए कि तुम मुझसे मिलने का और अधिक प्रयास करो।" निकष ने चुटकी ली।

चारुचित्रा हँसी। निकष ने अपनी किताबें समेटीं। चारुचित्रा ने धीरे से पूछा, 'क्या मुझे साथ ले चलने की व्यवस्था किसी प्रकार से नही हो सकती ?"

"तुम्हारे चलने की आवश्यकता क्या है ?"

"आपके साथ मैं भी विदेश घूम आऊँगी।"

"मुझे वहाँ घूमने का समय कहाँ होगा। दो महीने में बहुत से पुस्तकालयो मे जाना होगा, अनेक विद्वानों से मिलना होगा। कुछ एक ऐसे स्थानो में जाना होगा जो खँडहर पड़े हैं, विदेश में घूमना ही है तो फिर कभी इत्मीनान से चलना।"

"खँडहरों मे क्या देखिएगा ?"

"खँडहरो में ही तो शोध की अन्तिम पुष्टि मिलती है। पुस्तकें तो बहुत कुछ कहती हैं किन्तु प्रमाण मिलना कठिन हो जाता है।"

"समझ गई। किन्तु आप पहले रोम क्यों जा रहे हैं, क्या वहाँ कोई नई खोज हुई है ?

"हाँ-हाँ इटली के पांपेई नामक स्थान की खुदाई में बहुत-सी ऐसी वस्तुएँ मिली है जिनसे पता चलता है कि भारतीय शिल्प कला का रोमन कला पर अच्छा प्रभाव पड़ा था। आज भी इटली के नेपिल्स संग्रहालय में प्राचीन कला के कितने ही नमूने मिलते हैं।"

"यह तो बहुत बड़ी बात है।"

"बड़ी बात ! बड़ी बात की खोज करने को ही तो शोध कहते हैं। किन्तु यह बहुत बड़ी बात नहीं है, अभी और बड़ी बातें विदित होनी हैं।"

"किन्तु इस खोज से आपके विषय को क्या मिलना है ?"

"मेरा विषय है भारतीय संस्कृति का आधुनिक पाश्चात्य भाषाओं के साहित्य पर प्रभाव। भाषाओं का प्राण है साहित्य, साहित्य का आधार है समाज, समाज का आधार है संस्कृति और संस्कृति का आधार है काल; काल का अनुशीलन इतिहास से होता है और यदि हम किसी देश के इतिहास को भली भाँति समझ लें तो वहाँ के समाज, साहित्य, संस्कृति और भाषा को बहुत कुछ समझ सकते हैं। वस्तुतः शोध के कार्यों मे जितनी गहराई में जाकर काम किया जाता है उतनी ही स्थायी वस्तु प्राप्त होती है।"

चारुचित्रा एकटक निकष की ओर देखती रही और निकष ने एक ग्रन्थ उठाते हुए कहा, "देखो ये 'मानुमेण्टम ग्रनसीसनम्' की प्रतिलिपि है। इसमें लिखा है—सम्राट अगस्टस के राज्यकाल में अर्थात् 27 ई० पू० भारत के राजदूत रोम राज्य में रहा करते थे, यही नहीं अन्य ग्रन्थों के देखने से विदित हुआ है कि भारतीय राजदूत सम्राट ट्राजन, सम्राट गुण्टोनिनस, सम्राट् हेलियोग विल्स, सम्राट कान्सटेण्टाइन, सम्राट ग्रिप्नस्टेट और सम्राट जस्टिनियन के दरबारो में भी थे। सम्राट जस्टिनियन ने तो अपने राज्य के नियम और उपनियम बनाने में भारतीय मुनियों द्वारा रचित स्मृतियो से सहायता ली थी। यही नहीं राजनीति से पृथक सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र मे भी भारतीय संस्कारों का प्रभाव प्राचीन इटली की सभ्यता में पाया जाता है। अग्नि को साक्षी बनाकर विवाह करना अथवा पति के कुल और पत्नी के कुल में अधिक से अधिक अन्तर होने पर ही विवाह होना प्रत्यक्ष ही भारतीयता की छाप है। ग्रन्थो के पढने से विदित होता है कि वैदिक काल से पहले भारत में भाई-बहिनों का आपस मे विवाह हो जाता था और ठीक इसी प्रकार से ग्रीक-कुलों में भी भ्राता-भगिनी विवाह उचित मान लिया जाता था। क्लियोपेट्रा को अपने को अपने सगे भाइयो से विवाह करना पड़ा था किन्तु कालान्तर में सर्वप्रथम भारतीय मुनियो ने ही यह जाना कि इस प्रकार के संयोग से जो सन्तान उत्पन्न होती है उसका मानसिक विकास अपर्याप्त और सीमित होता है। ऋग्वेद में यम और यमी के संवाद में यम इस प्रकार के विवाह को अनैतिक घोषित करता है। इस प्रकार के प्रचलन को धिक्कारता है। ग्रीक और रोम के राज्य ऋग्वेद के सृजनकाल से बहुत बाद में हुए हैं और भारतीयो का आना-जाना वहाँ बराबर होता रहा है इसलिए यह कहा जा सकता है कि ग्रीक में भ्राता भगिनी विवाह की प्रथा जो टूटी वह भारतीय सभ्यता का ही प्रभाव था

चारुचित्रा ने बड़े ध्यान से यह सब सुना और निकष ने आगे कहा, "ज्ञान और विद्या की इतालियन मूर्ति मिनर्वा भारत की सरस्वती की प्रतीक है। शुभ कार्यों के प्रथम देवता जेनस भारत के देवता गणेश ही हैं। ओलम्पियो पहाड़ पर रहने वाली देवी जूनो, हिमालय पर रहने वाली पार्वती ही हैं। अब यदि उस समय का साहित्य मिल सकेगा तो अवश्य ही उसमें भारतीय संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है। नोनस के ग्रन्थ 'ज्योनीनस' को यदि तुम पढ़ोगी तो तुम्हें पता चलेगा कि उसका नायक 'ज्योनीनस' राम के चरित्र की छाया है। यह प्रमाणित हो चुका है कि नीनस वाल्मीकि के बाद हुए। ज्योनीनस में अनेक स्थान पर घटनाओं का साम्य मिलता है। इन चीजों को जानने से आभास मिलता है कि एक समय भारतीय संस्कृति का पूर्ण प्रभाव अवश्य ही दूर-दूर के देशों पर था।"

चारुचित्रा ने उत्कण्ठा से भर कर पूछा, "क्या अन्य किसी स्थल पर भी ऐसी वस्तुएँ मिली हैं?"

"हाँ बहुत जगह।" निकष ने कहा, "भारत के पूर्वी देशों की यदि चर्चा करूँ तो···"

"पूर्व के देशों के विषय में तो मैंने स्वयं बहुत पढा है···" चारुचित्रा ने कहा, "बर्मा, श्याम, जावा, सुमात्रा और बोर्नियो में प्राप्त मन्दिरों के विषय में मैंने कई लेख पढे हैं किन्तु पाश्चात्य जगत मे क्या कुछ है। मेरे जानने में कम ही आया है।"

निकष बोला, "सर्प-पूजा की महत्ता हमारे पुराणों में मिलती है किन्तु पुराना साहित्य यदि पढ़ा जाय तो सीरिया, इजिप्ट, ग्रीक, चीन और अमेरिका तक में सर्प-पूजा के प्रमाण मिलते हैं। सर विलियम जोन्स ने एक स्थान पर लिखा है—यह सचमुच अद्भुत बात है कि पेरू देश के निवासी अपने सबसे बड़े पर्व को 'राम सितवा' के नाम से सम्बोधित करते हैं।"

चारुचित्रा ने लम्बी साँस छोड़ी और निकष ने आगे कहा, "महाभारत के अन्तर्गत पाण्डव दाह की कथा में अर्जुन ने जब 'मय' दानव को अभयदान दिया था तो मय ने अर्जुन की उदारता का प्रतिकार चुकाना चाहा था। श्रीकृष्ण ने जब यह जाना तो मय से कहा, 'मयासुर, तुम शिल्पियों में श्रेष्ठ हो, इसलिए पाण्डवों के लिए एक ऐसे सभा भवन का निर्माण करो जो अद्वितीय हो।' इन मय जाति के लोगों का नाम आज भी प्राचीन मैक्सिको और अन्य अमरीकन निवासियों में मिलता है और मय जाति के लोगों के कितने ही सांस्कृतिक संस्कार भारत के लोगों से मिलते हैं। मय लोग अपने एक विशेष पर्व के अवसर पर रावण सरीखे दैत्य की चौकियाँ निकालते हैं और तत्पश्चात् उस दैत्य को जला देते हैं। उ० अमेरिका में मैक्सिको के क्षेत्र में ही जो खुदाई हुई है उसमें हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों से मिलती-जुलती अनेकानेक मूर्तियाँ मिली है। भारतीय संस्कृति की छाप प्रमाणित करने के लिए केवल उस देवता की मूर्ति ही पर्याप्त है जिसका आधा धड़ मनुष्य का है और आधा हाथी का अर्थात् गणेश का है।"

"यह तो पुरातत्व सम्बन्धी खोज है- योरप की भाषाओं के साहित्य पर प्रभाव इनसे कहाँ प्रकट होता है?

"मैंने तो अभी अपने विषय का आधार बताया है, वैसे 'ज्योनीनस' की कथा प्रत्यक्ष ही भारतीयता की छाप का प्रमाण देती है। प्रोफेसर मैक्डानेल ने एक स्थान पर लिखा है—"गेटे कृत 'फौस्ट' नामक नाटक के आरम्भ मे शकुन्तला की प्रस्तावना का अनुकरण किया गया है।" यह प्रमाण क्या पर्याप्त नहीं। वस्तुतः अभी तो इसमें बहुत खोज बाकी है। गहराई में पैठने पर ही कुछ मिलेगा। मैंने अपनी थीसिस की जो इकाइयाँ तैयार की है, उनको कहाँ तक सुनोगी किन्तु दो मिनट इन ग्रन्थों को देखो, तुम्हें बहुत कुछ मिलेगा।"

चारुचित्रा ने ग्रन्थों पर दृष्टि गड़ाई और निकष ने कहा, "यह देखो मैक्डानेल द्वारा लिखित संस्कृत साहित्य का इतिहास है। मैक्डानेल लिखता है, " 'जौन' द्वारा लिखित बर्लाम और जोजफट की कहानी में जोजफट जो एक नायक है वास्तव मे वे भारत के भगवान बुद्ध देव ही है, जोजफट बोधिसत्व का अपभ्रंश है। जोजफट ग्रीक और रोमन दोनो गिरजो में ईसाई संत के रूप मे माने जाते है। एक पूर्वीय व्यक्ति नास्तिक मत का स्थापन करने वाला धीरे-धीरे ईसाई साधु समझा जाय यह बात धर्म के इतिहास में अत्यन्त अनोखी है। यह क्या कम महत्त्व की बात है ?"

चारुचित्रा ने कहा, "हाँ यह तो सचमुच बड़ी अनोखी बात है।"

निकष बोला, "ईसाइयो की अहिंसा सम्बन्धी कथाओं को यदि ध्यान से पढा जाय तो निश्चय ही उसमें बहुत कुछ बौद्ध अहिंसा की छाया देखने को मिलेगी।"

चारुचित्रा ने सिर हिलाया और निकष बोला, "देखो इस ग्रन्थ मे विख्यात गणितज्ञ टामस कोल्ब्रूक कहता है कि बीजगणित योरप वालो को अरब वालो से मिला किन्तु अरब वालों ने भारत से इसे प्राप्त किया। अरब के आर्जभर और कोई नहीं, भारत के आर्यभट्ट ही हैं। आर्यभट्ट के उपरान्त भारत में ब्रह्मगुप्त, पद्मानभम् और श्रीधर आदि प्रसिद्ध बीजगणिताचार्य हुए हैं। क्या भारत की यह छाप योरप वालों पर कम हुई है !"

"योरप वालों को ही क्यों कहिए, समस्त विश्व को कहिए।" चारुचित्रा बोली और निकष हँसा। उसने दूसरा ग्रन्थ उठाया और बोला, "देखो यह मैंनिग साहब द्वारा लिखित भारतवर्ष का इतिहास है। आप लिखते हैं—हिन्दुओं के शल्य सम्बन्धी अस्त्र इतने प्रखर होते थे कि उनसे बाल भी लम्बाई की हालत में बीच से चीरा जा सकता था।"

"बाल भी !" चारुचित्रा ने विस्मय प्रकट किया और निकष ने कहा, "हाँ, बाल।"

चारुचित्रा बोली, "उफ, तब तो तुम्हारी खोज पता नही क्या-क्या खोज लाएगी। मै समझती हूँ इन सब तथ्यो की छाया योरप के उत्तरकालीन साहित्य में अवश्य मिलेगी।"

"हाँ मिलेगी क्यों नहीं, हम लोग अब तक जानते ही न थे कि हमने पहले क्या-क्या किया है अब हम जानेंगे किन्तु यह काय केवल एक-दो व्यक्तियों के करने का नहीं है बेचारे राहुल ने तो अकेले दस-बीस विद्वानो का काम कर डाला,

जाने कितनी अमूल्य पाण्डुलिपियाँ उन्होंने विदेशों से लाकर अपने देश को समर्पित की, किन्तु उन पर अभी तक कोई खोज-कार्य शुरू नहीं हो सका। हमें एक योजना बनाकर विभिन्न विषयों से सम्बन्धित खोज करनी होगी।"

"निश्चय ही!" चारुचित्रा ने समर्थन किया और निकष ने कहा, "यह देखो, भास्कराचार्यकृत 'सिद्धान्त शिरोमणि' है। इसके एक श्लोक में लिखा है—पृथ्वी निज आकर्षण शक्ति के कारण समस्त पदार्थों को अपनी ओर खींचती है और इसी से वे पृथ्वी की ओर गिरते हुए दीख पड़ते हैं। इंग्लैण्ड का वैज्ञानिक न्यूटन 17वीं शताब्दी में पैदा हुआ था और भास्कराचार्य सन् 1114 ई० में हुए थे। अब देखो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति वाली जानकारी हमारे यहाँ 500 वर्ष पूर्व हो गई थी कि नहीं।"

"अवश्य," चारुचित्रा ने कहा और उसने अँगड़ाई ली। निकष ने मुस्कराकर कहा, "तुम शायद थक गईं।"

"हाँ अब बन्द करिए अपनी पुराण पोथियों को।"

"देखो तो इसे और देख लो। मौनियर विलियम्स द्वारा लिखित 'भारतीयो का ज्ञान' नामक पुस्तक है इसमें···"

"कुछ नहीं, अब मैं कुछ नही सुनूँगी। मुझे यह बताइए आपकी भाभी जी का क्या हाल-चाल है?"

"भाभी जी का!" निकष ने अपना सिर खुजलाया और वह बोला, "वे तो बड़े मजे में हैं। मैंने उनकी जैसी प्रसन्नचित्त महिला ही नहीं देखी।"

"रसवन्ती की यही तो विशेषता है और इसीलिए तो मैंने उन्हें आपकी भाभी बना दिया।"

"तुम उनका नाम क्यों लेती हो। वे तुम्हारी जिठानी है।"

"जिठानी! हुँह, जब होंगी तब होंगी। भगवान जाने होंगी भी या नही।"

"क्यों इसमें भी कोई शंका की बात है?"

"आप मुझे अपने साथ विदेश ले चलने की बात क्यों नहीं करते?"

"घूम-फिर कर पुरानी बात पर आ गईं, ले चलने मे मुझे क्या कठिनाई है। भगवान की कृपा से तुम स्वयं अर्थ-सम्पन्न हो, किन्तु मैं चाहता हूँ तुम यहाँ रह कर अपनी तूलिका से मेरा घर ऐसा सजा दो कि जैसा कि एक चितेरी का स्थान होना चाहिए।"

"ओ, आपका तात्पर्य है मैं आपके आगमन के लिए गोबर आदि से घर का चौका लीप कर रखूँ।"

निकष हँसा और बोला, "अब जो समझ लो, कलाकारों को कोई बात बताना भी तो एक कला है। मैं इस कला से अनभिज्ञ हूँ, तुम्हारे हाथों गोबर का चौका भी एक अल्पना बन जाएगा।"

"अल्पना! अहा! अल्पना विशुद्ध भारतीय रेखा-चातुर्य है। उसमें जितना आकर्षण है वह शायद पेरिस की कला प्रदर्शनी में भी नहीं मिलेगा। ठीक है मैं नहीं जाऊंगी मेरे चले जाने से यहाँ उस पवित्र अल्पना को कौन खींचेगा जिस पर चरण धर

कर घर में विष्णु आते हैं, जिसके द्वारा सरस्वती पधारती हैं, और जिस पर चरण धर कर हमारी अयोध्या का राम आएगा।"

निकष मुस्कराया और उसने बढ़कर चारुचित्रा के दोनों हाथ अपने हाथों मे ले लिए। चारुचित्रा ने आँखें बन्द करके लम्बी साँस ली। निकष ने एकटक चारु को देखा और इसी क्षण चारु ने अपने हाथ छुड़ाकर कहा—"अब मैं घर जाऊँगी। मुझे यहाँ बहुत देर हो गई।"

निकष ने हाथ छोड़कर कहा—"ठहरो, मैं भी साथ चलता हूँ।"

चारुचित्रा ने कहा, "अब आप अपना कार्य देखिए, वह अधिक आवश्यक है। मैं समय निकाल कर फिर मिलूँगी।"

चारुचित्रा वहाँ से चल दी। निकष एकटक ओझल होने तक उसे देखता रहा।

श्री पिल्ले और शास्त्री जी चारुचित्रा के घर पहुँचे। मोहिनी ने अभिवादन सहित दोनों को ही बिठलाया और पूछा, "कहिए विवाह की तिथि निश्चित हुई?"

"हाँ," शास्त्री जी ने कहा, "इसी 15 तारीख को बारात होगी। वे तो कह रहे थे कि निकष जब विदेश से लौट आए तभी ठीक होगा, किन्तु मैंने जोर देकर···"

"आपने मेरा बहुत उपकार किया," मोहिनी बोली, "मैं तो बहुत परेशान थी।"

"क्यों इतनी चिन्ता की क्या बात थी?" शास्त्री जी ने पूछा।

मोहिनी ने इसी क्षण एक लिफाफा उनके हाथ में रखा और कहा, "यह कल मेरे पास आया, आप इसे पढ़ें।"

शास्त्री जी ने पत्र खोलकर श्री पिल्ले के हाथ में दिया। कहा—"आप पढ़िए।"

श्री पिल्ले ने पढ़ना शुरू किया—

आदरणीय माता जी,

आपने मुझे जैसा आश्वासन शुरू से दे रखा था मैंने उस पर पूरा विश्वास किया और जिसके कारण मैंने अपनी जाति के घरानों की कितनी ही शादियाँ केवल चारुचित्रा के लिए लौटा दी। उस दिन टेलीफोन पर जब आप मुझसे बातें कर रही थीं तो बीच में शास्त्री जी ने आकर जिस अभद्रता से मुझे निराश किया वह असहनीय था। मैं समझता हूँ कि आप अपनी इकलौती बेटी के भविष्य के लिए शास्त्री जी जैसे मक्कार व्यक्ति के चक्कर में न पड़ेंगी और चारुचित्रा का विवाह मुझसे, केवल मुझसे करना ही उचित समझेंगी।

आप स्वयं समझदार हैं आपने बहुत दुनिया देखी है इसलिए मैं समझता हूँ कि आप इस समय भी अपनी बुद्धि से काम लेंगी। अन्त में इतना कह देना और भी आवश्यक समझता हूँ कि यदि यह विवाह मेरे अतिरिक्त अन्य किसी से हुआ तो उस बारात का दूल्हा आपके द्वार पर पहुँचने के पहले ही···"

मैं हूँ

जिसे आप समझ गई होंगी

"यह धमकी !" शास्त्री जी बोले।

मोहिनी ने कहा, "मेरा कलेजा काँप रहा है।"

शास्त्री जी ने कहा, "कमल के ऊपर मुकदमा चलाने के लिए यह पत्र ही पर्याप्त है।"

"नहीं," श्री पिल्ले ने कहा, "यह पत्र पर्याप्त नहीं है। प्रथम तो यह टाइप किया हुआ है और द्वितीय इसमें किसी का नाम अथवा हस्ताक्षर नहीं है।"

तीनों ही ने एक-दूसरे को देखा और फिर श्री पिल्ले बोले, "नवभारत टाइम्स में राक्सी होटल का विज्ञापन आपने पढ़ा था ?"

"हाँ," शास्त्री जी ने कहा।

"तो आप यदि कहें तो उसी दिन चारुचित्रा की बारात भी रख दी जाय।"

"उससे क्या होगा ?"

"बात यह है कि रामेश्वरी बाई के कार्यक्रमों की व्यवस्था मैं ही कर रहा हूँ और राक्सी होटल से मुझे यह पता चल गया है कि कमल बाबू ने साकी बाला के लिए एडवान्स टिकट ले लिया है। वह उस दिन अवश्य ही वहाँ जाएगा और इधर निश्चिन्तता से विवाह सम्पन्न हो जायेगा।"

"किन्तु यदि उसको यह पता चल गया कि विवाह अमुक-अमुक दिनांक को है तो यह सम्भव है फिर उसे देखने न जाए और···।"

कोई बात नहीं। एक काम तो यह मैं करे ही देता हूँ और उससे भी अच्छी एक नई योजना अपने पास है।"

"वह कौन सी ?"

"हड्डी डाल कर कुत्ते फँसाना।"

"क्या मतलब ?"

"अब आप इस कार्य को मेरे ऊपर छोड़ दीजिए, चारु के विवाह की तैयारी बेखटके करिये।"

मोहिनी ने विस्मय और कृतार्थ भरी दृष्टि से श्री पिल्ले को देखा और शास्त्री जी ने मोहिनी देवी को धीरज बँधा कर कहा, "हमारे पिल्ले जी चतुर व्यक्ति हैं, मैं समझता हूँ वे अवश्य ही उचित व्यवस्था कर लेंगे।"

मोहिनी ने कहा, "दिन बहुत कम रह गए हैं। सारे सम्बन्धियों को बुलाना है, उन्हें सूचना देनी है। घर की बहुत-सी व्यवस्था बाकी है, मैं अकेली क्या-क्या करूँगी।"

"आप चिन्ता न करें।" शास्त्री जी ने कहा, "मैं महाविद्यालय के नौकरों को आपके यहाँ का कार्य करने की छुट्टी दे देता हूँ। हमारे विद्यालय की छात्राएँ अपनी चारुचित्रा दीदी के विवाह में कौन-सा कार्य है जो करने को तैयार न होंगी। मुझे आप अपने सम्बन्धियों के पते दीजिए, मैं तार द्वारा सबको सूचना दे दूंगा। अभी 10 दिन हैं। जिसे आना होगा उसके लिए 10 दिन पहले की सूचना पर्याप्त। है"

मोहिनी प्रसन्न हुई और आगे की सारी व्यवस्था प्रारम्भ हुई।

घड़ी ने प्रातः के सात बजाए। कमल ने अँगड़ाई लेते हुए अपना पलंग छोड़ा। सिगरेट सुलगा कर मुँह मे धरी और कैलेण्डर की ओर देखता हुआ मन ही मन बोला, हूँ तो कल है 2 तारीख। उसने अपने कोट की जेब से राक्सी होटल का कूपन-टिकट निकाला और बड़बड़ाया, यह कार्यक्रम भी कमबख्त कल ही होना था। कोई बात नही, देखता हूँ चारुचित्रा का विवाह निकष से कैसे होता है। कल बारात है। वह मन ही मन हँसा और उसने अपने अतिथि-कक्ष में जाकर टेलीफोन उठाया। उसने डायल घुमाकर नम्बर मिलाया और बोला—"हलो, शंकरलाल ;"

"जी हाँ, कमल बाबू, मैं तिलक होटल पहुँच गया हूँ।"

"बहुत अच्छे, यह बताओ कल की तैयारी कर ली ?"

"जी हाँ, हमारे आदमी तैयार हैं और हमने ट्रक का प्रबन्ध भी कर लिया है।"

"देखो, सबसे खास बात यह होनी चाहिए कि निकष की बारात मे किसी को भी किसी प्रकार की चोट न लगे और तमंचों की नली पर निकष पकड़ लिया जाय और ट्रक···"

"बिल्कुल समझ गया, किन्तु फिर···"

"फिर क्या ? निकष को तो फिर हमारे हथकण्डे समझाएँगे।"

"चारुचित्रा के यहाँ तो हम लोगों को कोई कार्यवाही नहीं करनी है ?"

"नही, बिल्कुल नही···"

"तो सरकार, हम लोगों का इनाम !"

"इनाम ! देखो जैसे ही निकष को सफलतापूर्वक तुमने बन्द कर लिया तुम्हारे सभी आदमियो को कल ही इनाम दे दिया जायगा।"

कमल ने फोन रखा और उसकी दृष्टि दरवाजे के पास पड़े हुए एक कागज पर पड़ी। उसने उसे उठाया और पढ़ा—

मित्र कमल !
मैं आज दो बजे रात को तुम्हारे कमरे में यह पत्र छोड़ रहा हूँ। बड़ी कठिनाई से अपने मुकदमे से कुछ समय के लिए छुट्टी पाकर पुणे आ पाया हूँ। मैं जिस गाडी से आया उसी गाड़ी पर बम्बई के कुछ कलाकार भी पुणे आए हैं। उनसे बातचीत में विदित हुआ है कि फिल्म 'अण्ट-बण्ट-सण्ट' की एक 'स्टण्ट' शूटिंग के लिए कल सुबह अर्थात् दो तारीख को दिन में ग्यारह बजे गांधी पार्क मे कई-एक दृश्य लिए जाएँगे। इन दृश्यों में वाराणसी की प्रसिद्ध नर्तकी रामेश्वरी बाई का एक नृत्य है। उनके साथ में मास्टर फड़के एक नृत्य प्रस्तुत करेंगे। मैं गांधी पार्क में तुमसे मिलूँगा। वहाँ अवश्य-अवश्य मिलो। तुमसे बहुत सी बातें करनी हैं। मैं इस समय अपने एक अन्य मित्र के साथ एक होटल में टिकने जा रहा हूँ।

तुम्हारा मित्र
नटवरलाल

मोटर पर ले आए। आपको शायद नहीं पता, आज यहाँ एक फिल्म की शूटिंग होने वाली है।"

"मुझे पता है। वह 'अण्ट-बण्ट-सण्ट' की न ?"

"हाँ-हाँ, उसी की।"

"नाम तो बड़ा अजीब है।"

"यही नाम तो फिल्मी दुनिया में चलता है।"

"ठीक है, जनता जब शिनशिनाकी, बूबला-बू और मिस्टर फण्टूश जैसे चित्रों को पसन्द करती है तो 'अण्ट-बण्ट-सण्ट' क्या बेजा है ?"

"कुछ नहीं और फिर मुझे क्या लेना-देना। यहाँ तो पैसे मिलते हैं। चाहे जैसे कोई नचवा ले और चाहे जो कहलवा ले।"

"ठीक ही बात है, अभिनेत्री की सफलता यही तो है।" कमल ने कहा और वे दोनों अधिक निकट हो गये।

रामेश्वरी बाई ने तिरछी दृष्टि से कमल को देखकर कहा, "आपका अभिनय से कुछ लगाव है ?"

"बहुत है, किन्तु कभी किसी कम्पनी में अवसर नहीं मिला।"

"आप यदि फिल्मी हीरो बनें तो जच सकते है।"

कमल मुस्कराया और बोला, "यह तो आपकी दृष्टि का सौन्दर्य है। मेरे जैसे कितने···"

"वह सब बात जाने दीजिए। यह बताइए कि आज यदि आपको मैं मास्टर फड़के के स्थान पर अपने साथ कैमरे के सामने लाऊँ तो ?"

कमल ने मुस्कराकर कहा, "मुझे तो प्रसन्नता ही होगी, किन्तु वह कैसे सम्भव है ?"

"सम्भव करने वाली मैं हूँ। इस दृश्य का दायित्व मुझ पर है। जिसे भी मैं उचित समझूँगी वह मेरे साथ अभिनय करेगा।"

कमल ने रामेश्वरी बाई की ओर विस्मय से देखा और वह आगे बोली, "आपको कुछ नहीं करना है, केवल थोड़ी-सी उछल-कूद और प्रेम-प्रदर्शन।"

"प्रेम-प्रदर्शन ! वह कैसे होगा !"

"मैं बताऊँगी। आपने कभी होटलों की कॉकटेल पार्टियाँ देखी है ? आप किसी कैबरे में गए हैं ?"

"बहुतों में। मैं तो आपके राक्सी होटल वाले कार्यक्रम में भी आ रहा हूँ।"

"ओ तब क्या है ! तब तो आप अभी ही रिहर्सल कर लीजिए मैं अब आपके साथ ही यह सीन सूट करवाऊँगी।"

कमल ने अपनी दृष्टि इधर-उधर घुमाई। रामेश्वरी ने पूछा, "आप क्या देख रहे है ?"

"कुछ नहीं [illegible] बोला मेरा एक मित्र आने वाला था मैं उसी को देख रहा था।

"ओ मै समझी आप कुछ झिझक रहे हैं। देखिए फिल्मी कलाकार बनने के लिए पहली बात यह कि अपनी झिझक नीलाम कर दीजिए। क्या आप से यह सम्भव नही?"

कमल ने घबड़ाकर कहा, "सम्भव है, सम्भव क्यो नहीं! मेरी झिझक लीजिए मिट गई।"

रामेश्वरी ने कहा, "आपने कभी अंग्रेजी फिल्म देखी है?"

"बहुत-सी देखी है।"

"कोई 'केवल व्यस्कों के लिए' वाली देखी है?"

"उन्हीं को तो मैं देखता हूँ।"

"तब तो ठीक है, देखिए मैं नशे में चूर होने का अभिनय करती हुई अभी आपकी गोद मे गिरूँगी और आप तत्काल ही अपने मुख को मेरे होंठों के निकट लाइएगा। मैं आधी खुली हुई पलकों से देखती रहूँगी और जैसे ही अधिक निकट हम और आप होंगे मै उठकर भागूँगी, आप तुरन्त ही अपना बायाँ हाथ मेरी कमर पर रखकर मुझे खींचने लगेंगे। मैं पहले नहीं मानूँगी। आप जबरदस्ती मुझे पकड़िएगा और फिर मैं अलमस्त होकर आपके साथ नाचने लगूँगी। बस यहीं से मेरा असली नृत्य शुरू होगा और आपकी ऐक्टिंग समाप्त; समझ गए आप?"

"जी हाँ, बिल्कुल समझ गया।"

"तो लो मैं अभिनय के लिए अभिनय शुरू करती हूँ।" रामेश्वरी ने अभिनय शुरू किया और कमल ने रिहर्सल देना प्रारम्भ किया। कुछ ही देर में कमल को रामेश्वरी बाई का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचना पड़ा और इसी समय पहले वाला व्यक्ति अपनी फ्रेंच कट कूँचीनुमा दाढ़ी के साथ वहाँ दिखाई दिया। उसने आने के साथ ही कमल की गरदन पकड़ी और उस पर वह चढ़ बैठा। रामेश्वरी बाई ने पुलिस को आवाज दी और इसी क्षण एक मौलाना साहब तीन-चार पुलिस मैनों के साथ वहाँ पहुँचे। रामेश्वरी ने कहा, "इस कमबख्त आदमी से मेरी जान बचाइये। इसने अभी ही मेरी इज्जत ले ली थी।"

कमल ने घूर कर रामेश्वरी की ओर देखा और पुलिस ने कमल को गिरफ्तार किया। दाढ़ी वाले व्यक्ति ने कहा, "यह तो रिहर्सल था। असली कचहरी के मंच पर देखियेगा।"

कमल ने क्रोध में भरकर कहा, "यह धोखा है, अन्याय है, षड्यन्त्र है।"

"आग से खेलने वाले एक दिन यों ही जलते हैं। सान्याल साहब के घर में सेंध लगाकर कामिनी के रूप का अपहरण जब आपने किया था तब आपका न्याय कहाँ सो रहा था? चारुचित्रा को अफीम खिलाकर वश में करने का षड्यन्त्र जब आपने रचा था तो धोखे की परिभाषा क्या दूसरी थी?" रामेश्वरी ने फटकार कर कहा।

"किन्तु तुम्हें किसने यह सब बताया, यह बिल्कुल झूठ है।"

"झूठ तो आप यह भी साबित करिएगा कि आपने मुझको यहाँ अपने बहुपाश में जबरदस्ती कसा और

'''और, कमल गुर्राया और रामेश्वरी ने कहा, "और अब कचहरी में बात की जायगी।"

कमल के गिरफ्तार होने के विषय में सेठ लक्ष्मणदास को शाम तक कोई सूचना नहीं मिली। लगभग सात बजे शंकरलाल का टेलीफोन कमल के यहाँ आया। सेठ जी ने सूचना दी कि कमल प्रातः से ही गायब है।

शंकरलाल ने अपने आदमियों को कमल बाबू के बारे में सूचना लाने का आदेश दिया। एक घण्टे बाद पता चला कि कमल बाबू प्रातः ही से गिरफ्तार हैं। शंकरलाल को घबड़ाहट पैदा हुई। उसने सोचा, पुलिस वालों को सम्भवतः आज होने वाली घटना के विषय मे ज्ञात हो गया है और कमल बाबू शायद इसीलिए पकड़ लिए गये हैं। उसने अपने आदमियो से कहा—जब कमल बाबू ही गिरफ्तार है तो सम्भव है पुलिस हम लोगो की भी खोज में हो। इसलिए अच्छा यही है कि आज की योजना समाप्त कर दी जाय। निकष को यदि हम लोग पकड़ भी लें तो उससे क्या लाभ ? इस समय तो कमल बाबू को छुड़ाने की चिन्ता करनी चाहिए।

शंकरलाल की सारी योजना समाप्त हो गई और लक्ष्मणदास जी को कमल की स्थिति से अवगत कराया गया। सेठ जी के पसीना छूट गया। वे शीघ्र ही रुपयों की थैली लेकर कमल बाबू की जमानत लेने की व्यवस्था करने चल दिए।

निकष की बारात हाथी और घोड़ों के साथ धूमधाम से चारुचित्रा के द्वार से जा लगी। श्री पिल्ले और शास्त्री जी वहाँ मुख्य प्रबन्धक थे। सान्याल साहब बारात की अगवानी के लिए फूलमालाओं और गजरों को लेकर 100 गज आगे से जा डटे थे। सभी बारातियो को बेला के ताजे फूलों की मालों से सुशोभित किया गया। निकष शानदार सजे हुए घोड़े पर था। सुन्दरलाल जी व निकष के पिता श्री रमणलाल जी चाँदी की मूठ की छड़ी लेकर अपने सम्बन्धियों के साथ-साथ घोड़े के पीछे चल रहे थे।

द्वार पर बड़ा-सा चौक आटे और रोली से लगाया गया था। निकष ने घोड़े से उतरकर एक पीढ़े पर अपने दोनों चरण रखे। पंडित ने संस्कृत के श्लोको से शुभ कार्य सम्पन्न किया। बारातीगण एक सुन्दर पण्डाल के नीचे मेज और कुर्सियों पर बिठलाये गए। पण्डाल के एक ओर मंच बना हुआ था। मंच पर सफेद पर्दा पड़ा था। बारातियो ने देखा, मिठाई और नमकीन की प्लेटें उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। इसी समय मंच की ओर एक जोर से धमाका हुआ। पण्डाल में सन्नाटा छाते ही लाउड स्पीकर से आवाज निकली, आप लोग जलपान ग्रहण करें और निवेदन है कि साथ ही कुमारी दमयन्ती और मीना के शास्त्रीय नृत्य का आनन्द लें। वाद्यवृन्द बज उठे। पर्दा उठा और बारातियो ने जलपान करते हुए नृत्य का आनन्द भी लिया।

जलपान समाप्त होने के बाद नलिनी ने एक छाया-नृत्य प्रस्तुत किया और तत्पश्चात् रूपकुमार ने ललित कला के कलाकारों के साथ बेंसे पर अनेकानेक धुनें छेड़ीं सभी हो उठे

चारुचित्रा का विवाह रात को सम्पन्न हुआ और प्रातः ही उसकी विदाई हो गई। सुन्दरलाल ने चमकते हुए नये सिक्कों को निकष और चारुचित्रा की डोली के ऊपर से लुटाया।

सेठ लक्ष्मणदास बड़ी दौड़-धूप के बाद 2,000 रुपये की जमानत पर कमल बाबू को 12 बजे रात को छुड़ाकर घर लाए। क्रोध के मारे सेठ जी एक शब्द भी कमल से न बोले। कमल को अन्दर ही अन्दर बहुत ग्लानि हुई, किन्तु उसके मस्तिष्क में निकष की चिन्ता लग रही थी। शंकरलाल वाला षड्यन्त्र पूरा हुआ अथवा नहीं, उसको इसकी फिक्र थी। घर आकर पहले तो वह चुपचाप अपने कमरे में चला गया किन्तु थोड़ी देर बाद उसने टेलीफोन उठाकर तिलक होटल में शंकरलाल को फोन किया। लगभग 3 मिनट बीतने पर होटल के मैनेजर ने फोन उठाया। कमल ने पूछा—

"क्या शंकरलाल इस होटल में हैं?"

"नहीं, वे नहीं हैं।"

"क्यों? उन्होंने तो आज और कल के लिए आपका 24 नं० कमरा बुक कराया था।"

"हाँ, वह अब भी बुक पड़ा है किन्तु इस समय उसमें कोई नहीं है।"

"क्या आज शंकरलाल आए ही नहीं?"

"नहीं, वे आए तो थे किन्तु शाम 5 बजे के बाद से फिर नहीं आए।"

"आपको किसी व्यक्ति ने कोई समाचार तो मुझसे कहने को नहीं कहा?"

"नहीं, कुछ भी नहीं।"

"यह तो विस्मय की बात है।"

"क्यों? कोई विशेष बात थी?"

"अब क्या कहूँ आपसे। शंकरलाल से जब कोई बात ही नहीं हुई तो आपसे आगे कुछ कहना व्यर्थ है।"

कमल ने टेलीफोन रख दिया। वह लौटकर अपने कमरे में आया और थोड़ी देर बाद पलटकर वह फिर टेलीफोन के पास पहुँचा। और उसने इस बार राक्सी होटल को फोन किया—

"हलो, मैनेजर!"

"कहिए आप कहाँ से बोल रहे हैं?"

"मैं सेठ लक्ष्मणदास के यहाँ से बोल रहा हूँ।"

"इस समय रात के दो बजे हैं, खैर कहिए क्या सेवा चाहते हैं?"

"आपके यहाँ आज रामेश्वरी बाई का साकी वाला नृत्य होने वाला था, क्या वह हो गया?"

"हाँ-हाँ, अभी आध घण्टे पहले ही तो वह समाप्त हुआ।"

"क्या वह कल भी होगा?"

'नहीं क्यो क्या बात है?

"बात यह है कि मैंने आपके यहाँ के आज के कार्यक्रम के लिए एडवान्स टिकट ले रखा था किन्तु कुछ विशेष कारणवश नहीं आ सका। कृपया बताएँ अब उसका उपयोग कैसे हो सकेगा।"

"यह तो बड़ी कठिन बात है। मैं उस टिकट से आपके भोजन का प्रबन्ध कर सकता हूँ किन्तु नृत्य के लिए आप मुझे क्षमा प्रदान करें।"

"क्या रामेश्वरी बाई और उनके साथी, आपके ही होटल में टिके हैं ! मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।"

"नहीं। वे तो कहीं और टिके हैं और हाँ अब आप उनसे शायद मिल भी न पाएँ।"

"क्यों ?"

"वे लोग प्रातः 4 बजे की गाड़ी से वाराणसी जा रहे हैं।"

"क्या आपको निश्चित रूप से पता है ?"

"निश्चित ही समझिए। क्योंकि हमारा होटल तो उनका कार्यक्रम तीन दिन चाहता था और वे पहले राजी भी हो गए थे किन्तु पता नहीं क्या बात हो गई कि आज का कार्यक्रम देने के पहले ही वे वाराणसी जाने की चिन्ता में हो गए। होटल की बदनामी को बचाने के लिए बड़ी कठिनाई से आज रात को ही हम लोग उन्हें रोक पाये। कल तो वे अवश्य ही चले जाएँगे।"

"यह तो दुख की बात है।"

"हाँ है ही। ऐसे कलाकार जल्दी-जल्दी थोड़े ही आते हैं।"

"वे कलाकार नहीं हैं धोखेबाज हैं। मुझे उनकी कलाकारिता को ध्वस करना था।"

"यह आप क्या कह रहे हैं ?"

कमल ने जोश में आकर कहा, "वे मक्कार हैं। मैं ठीक ही कह रहा हूँ, आप तो बहुत बच गए, नहीं तो आज आपके होटल की वह बदनामी होती कि···"

"क्यों ? क्यों ?"

"क्यों का उत्तर देना कठिन है किन्तु···" कमल ने टेलीफोन रख क्रोध से अपने दाँत पीसे। वह लौटकर पुनः अपने कमरे में आया और अपने पलंग के बगल से इधर से उधर टहलने लगा। वह रामेश्वरी बाई से बदला लेने की योजना बनाने लगा।

सेठ जी वहाँ से दूर हटकर भी कमल के कार्यों की आहट ले रहे थे। कमल का कमरे में आकर चिन्तित होकर घूमना सेठ जी के लिए अधिक चिन्ता का विषय बना और वे कमल के आगे आकर खड़े हो गए। कमल की दृष्टि जब उधर गई तो उसने भय और विस्मय से पूछा, "आप ?"

"हाँ, मैं। इतनी रात को कहाँ टेलीफोन किया गया था ?"

"टेलीफोन !"

हाँ टेलीफोन तुम समझते हो कि मुझे कुछ पता नहीं मैंने तुम्हारी सारी बातें सुनी हैं

कमल चुप रहा और खुली आँखों से सेठ जी को केवल ताकता रहा।

सेठ जी ने पूछा, "रामेश्वरी बाई कौन है?"

"कोई नहीं।"

"कोई नहीं, तुमने उसका नाच देखने के लिए टिकट खरीदा था?"

"जी हाँ।"

"तो यों कहो वह एक नर्तकी है। होटल में नाचने वाली। उससे धोखा खाने की क्या बात हुई?"

"धोखा खाने की?"

"हाँ धोखा खाने की। मैंने तुम्हारी सारी बातें अभी सुनी हैं।"

"उसी के कारण आज मैं पकड़ा गया।"

"लज्जा नहीं आती। एक नाचने वाली के पीछे तुमने अपनी और अपने घर की इज्जत पर कितना बड़ा धब्बा लगाया है।"

"किन्तु उसमें मेरा दोष नहीं है।"

"आग से खेलना अच्छा नहीं होता। कितनी बार समझाया, अपना विवाह कर लो। घर का कारबार देखो और शरीफ व्यक्तियों के समान जीवन व्यतीत करो किन्तु तुम लफंगों की तरह अपना जीवन व्यतीत करने पर लगे हो।"

"बाबू जी?" कमल जोर से बोला, "आप पूरी बात पहले समझ लें।"

"मैंने सारी बात समझ ली है। इतनी उमर पानी में नहीं गँवायी है। कल अखबार में यदि तुम्हारे पकड़े जाने का समाचार निकल गया तो फिर मैं कहीं का नही रहूँगा। इतने दिन से मैं तुम्हारी हरकतें देख रहा हूँ। उधर पाजी नटवर के साथ अपने को बर्बाद करते रहे और अब अकेले ही धरती हिला रहे हो।"

कमल ने अपने हाथों से अपनी आँखें मलीं और दो-चार लम्बी-लम्बी साँसें छोड़ी। सेठ जी ने आगे कहा, "2000 रुपये नकद देकर आया हूँ। अभी आगे मुकदमा लड़ना बाकी है। गांधी पार्क में तुम्हें उस फिल्म एक्ट्रेस को छेड़ने की क्या पड़ी थी!"

"वह फिल्म एक्ट्रेस नहीं थी, रामेश्वरी बाई है। आपको यही तो बताना चाहता था।"

"मैंने पुलिस रिपोर्ट में सब पढ़ लिया है; मुझे कुछ बताने की आवश्यकता नही।"

"मुझे अभी रामेश्वरी बाई से बदला लेना है।"

"नर्तकी से बदला! अहा क्या बात है। जितने दिन तक मुकदमा चलेगा उतने दिन तक लोगों के मुख पर तुम्हारी और उस नर्तकी की चर्चा रहेगी। यह तुम्हारे मान को घटायेगा या बढ़ायेगा? मैं रामेश्वरी बाई से मिलकर इस मुकदमे को ही समाप्त करवा देना उचित समझता हूँ। इस घटना की चर्चा भी होना हमारे लिए कलंक की बात होगी।"

किन्तु यह कार्य मेरे आत्म को दूसरा धक्का देगा "

बुद्धि और विवेक से काम लेना चाहिए समाज के बीच और मर्यादा

सहित रहने के लिए बहुत-सी बातों को कड़वा घूंट समझ कर भी पी लेना चाहिए। मैं तुम्हारी इस अस्थिर दिनचर्या पर विराम देना चाहता हूँ। अभी अच्छा है, अपना विवाह कायदे से करके भले आदमियों की तरह नई जिन्दगी शुरू करो। मुझे रामेश्वरी बाई का पता दो, मैं इस मुकदमे को कल ही समाप्त कर दूंगा।"

रामेश्वरी बाई यहाँ नहीं रहती। वह तो वाराणसी की है, कल प्रातःकाल 4 बजे की गाड़ी ही से वह वाराणसी जा रही है।"

"अच्छा खैर, मैं उसका पता लगा लूँगा। इस समय तुम कसम खाओ कि अब कभी भी इस प्रकार के चक्कर में न पड़ोगे।"

कमल चुप रहा। सेठ जी ने कहा, "तुम्हें अब पुणे में रहने ही नहीं दूंगा। जाओ नागपुर की डिपो का कार्य सम्भालो। मैं वहाँ के सेल्स मैनेजर को वहाँ अलग किए देता हूँ।"

कमल फिर भी चुप रहा और सेठ जी पीठ फेर कर अपने कमरे की ओर चले आये।

श्री रामास्वामी पिल्ले प्रातः सात बजे ही सान्याल साहब के घर पहुँचे और अखबार दिखाकर बोले, "देखो रामेश्वरी बाई ने क्या कमाल का काम किया है। मेरी योजना साधारण थोड़े ही होती है। कमल पकड़ा गया?"

"हाँ, सान्याल साहब बोले, "मेरे कलेजे को अब ठण्डक मिली है। कमबख्त अपने को बड़ा अमीरजादा बनता था। लफंगा कहीं का। मेरे घर में सेंध लगाने आया था।"

"आपको असली बात तो बताना भूल ही गया। कल चारुचित्रा की बारात में इतना व्यस्त रहा कि आपसे बात करने का समय ही नहीं मिला। कमल ने जो पत्र मोहिनी के पास भेजा था उसके विषय में आपने अभी तक कुछ सुना या नहीं?"

"नहीं। मुझे तो कुछ भी नहीं पता। कमल ने क्या लिखा था मोहिनी देवी को?"

"उसने धमकी दी थी कि चारुचित्रा का विवाह यदि उसके साथ नहीं किया गया तो फिर अनर्थ हो जायगा। शास्त्री जी ने भी पत्र देखा है। मैंने सोचा मेरे रहते चारुचित्रा पर कोई आँख कैसे उठा ले। बेचारे देसाई जी की लड़की, जिनकी सम्पत्ति से आज इतना बड़ा विद्यालय चल रहा है उनकी आत्मा को शान्ति देने का दायित्व हम लोगों पर नहीं तो किस पर है।"

सान्याल साहब ने सिर हिलाया और कहा, "आपने तो बहुत बड़ा उपकार का काम किया है। निकष से अच्छा उसके लिए दूसरा वर भी कौन हो सकता था। मैंने स्वयं उसकी बहुत बड़ाई सुनी है।" सान्याल साहब ने श्री पिल्ले की सराहना करते हुए एकदम से पूछा, "हाँ यह तो बताओ रामेश्वरी बाई रुकी कहाँ हैं।"

"वह तो वाराणसी चली भी गई।"

वाराणसी चली गई? कब?

"आज प्रातः 4 बजे

"मैं उसे इनाम देना चाहता था।"

"इनाम तो उसे मोहिनी देवी से दिलवाऊँगा। आपके इनाम को वह अपना अधिकार ही समझेगी।"

"हाँ बात तो तुम ठीक ही कह रहे हो।" सान्याल साहब मुस्कराए और श्री पिल्ले ने अखबार को लपेटते हुए कहा, "अब मैं चलता हूँ फिर मिलूँगा। मुझे अभी महाविद्यालय जाना है।"

सान्याल साहब ने श्री पिल्ले को विदा दी।

रसवन्ती ने अपनी देवरानी के स्वागत के लिए निकष का कमरा दिल खोल कर सजाया। मिलनयामिनी के दुर्लभ क्षण जीवन में एक बार ही आते हैं। रसवन्ती ने अपने जागे भाग को सराहते हुए चारुचित्रा के लिए अनेकानेक मंगल कामनाएँ कीं। सेज की सज्जा और धूपबत्तियों से बल खाती हुई धुएँ की डोर कक्ष के सम्पूर्ण वातावरण को अपने में लपेटने लगी। रसवन्ती ने चारुचित्रा को गोद में उठाकर कमरे में ला बिठाया। चारुचित्रा ने अपना घूँघट उठा कर धीरे-धीरे चारों ओर दृष्टि घुमाई। निकष अभी वहाँ नहीं था। चारुचित्रा ने कमरे में लगे हुए चित्रों की ओर देखा, वहाँ निकष का 'समर्पण' चित्र भी लगा था। चारुचित्रा ने उसे उतारा और अपनी प्रतिमा तथा उस खण्डित कमल की ओर देखा। उसने उस चित्र में अपनी प्रतिमा को नापा और कमरे में ही रखी मेज की दराजें खोलीं। सौभाग्य से उनमें निकष के रंग और ब्रुश दिखाई दिए। चारुचित्रा ने एक कागज के टुकड़े पर निकष का चित्र बनाया और तत्पश्चात् उसे शिव का रूप दे दिया। उसने उस शिवमूर्ति को समर्पण वाले चित्र पर अपनी प्रतिमा के ठीक ऊपर लगाया और उस चित्र की पृष्ठभूमि के साथ इस प्रकार से मिला दिया कि पर्वत पर देवी के स्थान पर शिव की प्रतिमा स्थापित हो गई। चारुचित्रा ने दो-चार पिन की सहायता से चित्र के रूप को कुछ समय के लिए बदल दिया और उस चित्र को धीरे से उठा कर ऐसे स्थान पर रखा जहाँ निकष की दृष्टि अवश्य पड़े।

चारुचित्रा अपनी ढिठाई पर स्वयं हँसी और निकष के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी।

दीवाल-घड़ी ने रात के 10 बजाए और इसी क्षण निकष ने कमरे में चरण धरे। चारुचित्रा ने आगे बढ़कर पति का अभिवादन किया। निकष की आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं और उन दोनों ने एक दूसरे को तृषित दृष्टि से कुछ क्षण तक देखा। चारुचित्रा ने अपने बारीक आँचल को अपनी आँखों के आगे गिराया और वह पीछे घूमी। निकष ने पीछे से उसके कन्धों पर हाथ रखे।

"कैसे हैं आप! कोई देख लेगा तो क्या कहेगा?"

"यहाँ कौन है?"

चारुचित्रा ने दीवाल पर लगे हुए कुछ महापुरुषों की ओर इंगित करके कहा, 'देखिए न यह सभी हमारी ओर देख रहे हैं"

निकष ने एक दृष्टि चारों ओर घुमाई और बोला इन सब के जीवन में भी

एक बार ऐसा ही क्षण आ चुका है। यह कुछ नहीं बोलेंगे।"

चारुचित्रा ने नीची गर्दन से एक तिरछी चितवन शिव के चित्र की ओर फेंकी और मन्द मुस्कान से कहा, "आपको यदि मनुष्यों की चिन्ता नही तो देवताओं का ध्यान तो रखना ही पड़ेगा।"

निकष की दृष्टि नवनिर्मित शिव की मूर्ति पर पड़ी और विस्मय से उधर बढ़ा। वह बोला, "अरे! यह चित्र तुमने कब बनाया? अपने साथ लेकर आई हो?"

चारुचित्रा ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह मात्र मुस्कराई। निकष ने कहा, "किन्तु यह चित्र तो सम्भवतः मेरा ही है। इसका सम्पूर्ण पार्श्व मेरे समर्पण वाले चित्र तो का है।" उसने कमरे में उस स्थान पर दृष्टि फेंकी जहाँ पर उसके द्वारा निर्मित चित्र लगा था। स्थान को खाली देखकर बोला, "यह बात है। चित्र पर जादू की छड़ी फेरी गई है। देवी की मूर्ति के स्थान पर शिव उतर आए है।" निकष ने चित्र अपने हाथो मे उठाया। ध्यान से देखकर हत्प्रभ हुआ। "चारु, यह तो मेरा ही रूप है। वाह, तुमने तो कमाल कर दिया। मैं और शिव!! किन्तु मुझमें शिवत्व कहाँ? भगवान शंकर का तप और यह नश्वर शरीर! चारु मुझे भय लग रहा है। तुमने मुझसे यदि इतनी महान तपस्या की आशा की है तो मुझे क्षमा करो। मैं मानव हूँ। एक साधारण इन्सान···!"

"इतने भावुक! आप इतने भावुक हो उठे! आपने जब मुझे देवी का रूप दिया था तो क्या यह नहीं सोचा था कि मैं एक साधारण, अत्यन्त साधारण स्त्री हूँ।" चारुचित्रा ने निकष की आँखों में आँखें डालीं और आगे बोली, "जिस प्रेम की पराकाष्ठा ने अपनी भावनाओं को मुझे देवी के रूप में देखने को बाध्य किया यदि उसी पराकाष्ठा ने मुझे आपमे शिवत्व के दर्शन कराये तो क्या आश्चर्य?"

निकष मुस्कराया, उसने चित्र में लगी हुई पिनो को हटाया। जैसे ही वह चित्रमय कागज को हटाने लगा चारुचित्रा ने कहा, "देवी को देवता के अन्दर ही निहित रहने दीजिए, अब उसके पृथक अस्तित्व की आवश्यकता नहीं।"

निकष ने कागज के टुकड़े को अलग रखते हुए कहा, "मैं तो देवी का व्यक्तित्व अलग मानने वाला व्यक्ति हूँ। स्त्री पुरुष की छाया के रूप में नहीं वरन् सहयोगी के रूप में है।"

चारुचित्रा ने दाँतों से अपना अँगूठा काटा। निकष ने पूछा, "क्या सोचने लगीं?"

"कुछ नहीं।"

वे दोनों पलंग पर आकर बैठे। निकष ने कहा, "कमल बाबू को जानती हो!"

'हाँ, उसको कौन नहीं जानता।"

"वे पकड़ लिए गए हैं?"

"कहाँ, कब?"

"कल। गांधी पार्क में वे पकड़ गए हैं?"

"कैसे मालूम?"

"आज प्रात· के पत्र में निकला है

"याद है, किन्तु तब की बात और थी, अब की बात दूसरी है। मैं तब उस पर विश्वास कर गई थी, अब मैं बहुत सतर्क हूँ। उसकी मुझसे एक चाल भी नहीं चल सकती।"

निकष ने ममता और प्यार की बोली में कहा, "चारु, तुम कितनी भोली हो।"

चारु मुस्कराई, उसने फड़फड़ाती आँखों से निकष की ओर एक बार ताका। निकष ने चारु का हाथ अपने हाथों से सहलाते हुए कहा, "तुम्हें छोड़कर जाने का मन नहीं होता।"

"कैसी बात आप कर रहे हैं! अभी आप विदेश-विदेश और खोज ही खोज की रट लगाये थे, आज विवाह होते ही इतने डगमग हो गए! इतने दिनों की साधना अधूरी रह जायगी।"

"कुछ समय बाद यह कार्य पूरा कर लूँगा। अभी कुछ दिन अधूरी ही रहेगी तो क्या हुआ।"

"नहीं यह बात ठीक नही है। एक लगन से जो कार्य हो जाता है वह शृंखला टूट जाने से फिर नहीं होता। आप केवल मेरे लिए अपने कार्य को मत रोकिए।"

"मेरा कार्य मेरे लिए है और मैं तुम्हारे लिए हूँ। कार्य के लिए मैं तुम्हें कैसे छोड़ दूँ?"

"आपका कार्य आपके लिए है यह कैसे मान लूँ। सभी कार्य एक-से नहीं होते। कार्य-कार्य में अन्तर होता है, आपका कार्य ज्ञानार्जन और अनुशीलन का है। ऐसे कार्य कभी व्यक्तिविशेष के लिए नही होते। इन कार्यों के पीछे सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र का हिताहित छिपा रहता है। एक व्यक्ति के लिए···"

"चारु मैं समझता हूँ, किन्तु करूँ क्या? मुझे तुम्हारी ममता ने आ घेरा है। क्या तुम चाहती हो मैं जल्द से जल्द तुम से दूर हो जाऊँ?"

चारु ने निकष की बाँह पकड़कर अपना सिर उसके कन्धों से रगड़ा और बोली, "आप कैसी बात कह रहे हैं? मेरे हृदय की टीस को यदि आप पहचान पाते···। मैं कितने भारी हृदय से आपको बाहर जाने का प्रोत्साहन दे रही हूँ, आप नहीं जानते।"

निकष चुप रहा! एकटक वह चारु की ओर देखता रहा। चारु आगे बोली, "ललित कला महाविद्यालय का साहित्य विभाग आपके संरक्षण की प्रतीक्षा कर रहा है। उसके कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए आवश्यक है कि आप अधिकृत रूप से उसका कार्य-सचालन करें। यदि आपका विदेश जाने का कार्य पूरा हो जायगा तो···"

"मैं सब समझता हूँ चारु किन्तु···"

"कहिए न।"

"यदि यहाँ कमल ने कोई अनधिकृत कार्य किया तो···"

"मैं उसके लिए सिंहिनी से भी अधिक घातक हूँ। मुझे कोमलांगी के रूप में ही न देखें, शक्ति के रूप में भी देखें।"

निकष ने चारु के गालों को थपथपाया, "तुम कितनी अच्छी हो।"

चारु ने गद्‌गद हृदय से लम्बी साँस छोड़ी

निकष बोला, "तुमने मुझे बल दिया है। मैं अवश्य ही अब विदेश जाऊँगा।"

चारुचित्रा ने निकष से दृष्टि मिलाई और निकष ने उसे बाहुपाश में भर लिया।

सेठ लक्ष्मणदास कमल के गिरफ्तार होने वाला समाचार अखबार में छपा देखकर बहुत दुखी हुए। कमल को भी इस बदनामी से बहुत बड़ा धक्का लगा। वह दिनभर अपने घर में ही बन्द रहा। शाम को सेठ लक्ष्मणदास कमल के पास आकर बोले, "तुम्हारे गिरफ्तार होने की सूचना पाते ही मैंने नवभारत टाइम्स के स्थानीय सम्वाददाता को टेलीफोन किया था कि यह समाचार पत्र में प्रकाशित न हो, किन्तु क्या कहूँ इन कमबख्त अखबार वालों को, ये लोग तो गरम समाचार के पीछे जिसकी इज्जत हाथ लगी उसी की उतार लेते हैं।

"आपने कुछ रुपये भी देने को कह दिया होता तो शायद वह मान जाता।"

"कहा था, मैंने पहले 100 रुपये की बात की थी किन्तु वह कहाँ मानने का। सारी पत्रकारिता उसको यहीं पर दिखानी थी।" सेठ जी दुःख के साथ कुछ देर मौन बैठे रहे फिर धीरे से बोले, "मैं वाराणसी जाकर रामेश्वरी बाई से एक पत्र यहाँ की पुलिस के नाम लिखवाए देता हूँ कि वह अब मुकदमा नहीं चलाना चाहती और बाद मे जब पुलिस अपनी ओर से मुकदमा चलाएगी तो कोशिश करके उसे खारिज करवा दूँगा। साथ ही मानहानि के मुकदमे के चलाने का विज्ञापन कराकर अपनी मान-मर्यादा पुन वापिस लूँगा।"

कमल ने अन्दर ही अन्दर अनुभव किया कि वास्तव में उसने एक बड़ी भूल की। वह चुपचाप अपने बाबूजी की बातें सुनता रहा। उसने सेठ जी की बातो से सहमत होते हुए अपना सिर हिलाया। सेठ जी ने कुछ ढाढ़स बाँध कर कहा, "बेटा, अपना विवाह कर लो।"

कमल कुछ नहीं बोला। सेठ जी ने आगे कहा, "दुनिया में एक से एक सुन्दर लडकियाँ पड़ी हैं। जिस घर की लड़की से कहो विवाह करवा दूँ।"

कमल फिर भी कुछ नहीं बोला और सेठ जी ने कहा, "इतनी आयु तुमने जवानी की दीवानगी मे गँवाई है। जिस धैर्य से आज तुम मेरी बातें सुन रहे हो यदि पहले तुमने सुनी होतीं तो आज क्यों···?"

"बाबू जी!" कमल बोला, "मुझे आप अधिक दीक्षा न दें। मैं स्वयं अपनी स्थिति का अनुभव कर रहा हूँ।"

"भगवान की कृपा है जो तुम्हें स्वयं अपनी चिन्ता हो गई।" सेठ जी ने कहा और वे वहाँ से पलट कर चल दिए।

कमल मात्र मौन बैठा रहा। वह चिन्तित था कि रामेश्वरी बाई को उससे किसने भिड़ाया? उसकी चाल को निकष तो समझ ही नहीं सकता था। वह टाइप किया हुआ पत्र किसने भेजा था? नटवर का नाम लिखकर मुझे धोखा दिया गया। उसने बहुत माथा-पच्ची की किन्तु वह समझ न पाया। वह अन्दर ही अन्दर बबडाया। वह सोचने लगा ने ही हजार-पाँच सौ रुपये लेकर मेरी बात उन लोगों को बता दी

होगी । इन बदमाशों का क्या ठीक । इनका देवता तो मात्र पैसा होता है । अवश्य ही शकरलाल ने ऐसा कुछ किया होगा । क्या इस बदमाश से लड़ा जाए ? किन्तु इससे लाभ क्या होगा ? जो होना था सो हो गया । चारुचित्रा तो हाथ से निकल ही गई । · अब पुणे में रहना व्यर्थ है । नागपुर चलना ही अच्छा है । वहाँ सम्मानपूर्वक नया जीवन प्रारम्भ किया जा सकता है । बाबू जी भी सन्तुष्ट हो जाएँगे । ठीक ही है, अब मैं नागपुर ही जाऊँगा ।

निकष के विदेश जाने का प्रबन्ध एयर इण्डिया इण्टरनेशनल के जहाज से बम्बई के सान्ताक्रुज हवाई अड्डे से हुआ । निकष को विदाई देने के लिए सुन्दरलाल जी के साथ ही चारुचित्रा भी गई । समय होते ही निकष अपने भइया से गले मिला । चारुचित्रा ने अपनी आँखों में छलके हुए आँसुओं को चुपचाप रूमाल से पोंछा और अपने आँचल में छिपी एक डायरी निकाल कर निकष के हाथ में रखी । निकष ने पूछा, "यह क्या है ?"

"इसमें पाश्चात्य जगत के प्रसिद्ध चितेरों के नाम और उनकी कला पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ दी हुई हैं । अवसर मिले तो इनकी कलाकृतियाँ अवश्य देखिएगा ।"

निकष ने मुस्कराते हुए डायरी हाथ में ली और बोला, "तुम सचमुच बहुत चतुर हो ।"

चारुचित्रा ने निकष की इस बात को अनसुनी करते हुए कहा, "पत्र हर दूसरे दिन दीजिएगा ।"

निकष ने कहा, "निश्चय ही ।" वह जहाज की सीढ़ियों से अन्दर जा बैठा और कुछ ही देर में जहाज के भीमकाय पंखे निकष को ले उड़े ।

चारुचित्रा अपने मन को धीरज बँधाती हुई पुणे लौट आई । निकष पर हर प्रकार का विश्वास रखते हुए भी उसके मन का चोर उसके हृदय में अनेकानेक अशुभ शकाएँ उत्पन्न करने का प्रयास करता रहा । निकष को गए एक सप्ताह हुआ था । उसका जहाज जिस दिन बम्बई से उड़ा था उसी रात को रोम पहुँच गया था । अतः हवाई डाक से अब तक दो पत्र आ जाने चाहिए थे किन्तु कोई समाचार नहीं मिला । एक मन बोला—आजकल हवाई दुर्घटनाएँ अधिक हो रही हैं, कहीं जहाज··· किन्तु नहीं ऐसा नहीं हो सकता, यदि ऐसा कुछ होता तो समाचार पत्र में अवश्य ही वह खबर आती । ···उन्हें तो पत्र लिखना चाहिए था । कौन जाने उन्होंने पत्र लिखा हो और यहाँ डाकघर से किसी ने···किसी ने क्या कमल ने ही डाकिए से मेल करके उसे गायब कर दिया हो तो···?···ऊँह, कैसी अजीब हूँ मैं ? कैसा उल्टा-पुल्टा सोचती हूँ । उनका पत्र गायब करने से भला कमल को मिलेगा क्या ? शायद पत्र आता हो, आज शनिवार है । यदि आज नहीं आया तो फिर परसों सोमवार को डाक मिलेगी ही, हवाई डाक तो रविवार को भी बटती है ।

चारुचित्रा अन्दर ही अन्दर चिन्तित हुई । उसने सोचा हंस को दमयन्ती ने शायद इन्हीं विरह के क्षणों के लिए पाला था और उस विरहिणी के चित्रण की चिन्ता कितने ही

की किन्तु निकष ने ? आखिर वह भी तो एक चितेरा है, उसने मेरी चिन्ता की ?

दिन ढल गया। सन्ध्या हुई। चारुचित्रा ने मुख्य द्वार के दो-चार चक्कर लगाए किए की परछाईं दिखाई न दी। वह उदास होकर अपने कमरे में जा बैठी। श्री सुन्दरलाल जी का आना हुआ और आते ही वे जोर से बोले, "देवकी का । है।" चारुचित्रा दौड़कर कमरे के बाहर आई। रसवन्ती व श्री रमणलाल जी से भर कर सुन्दरलाल के निकट आए। सुन्दरलाल ने कहा, "यह पत्र मुझे में मिला।"

उन्होंने लिफाफा खोलकर पढ़ना आरम्भ किया—

पूज्य भइया,

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। प्रोफेसर भण्डारकर के मित्र डाक्टर पीयेत्रो मुझे हवाई अड्डे पर ही मिल गए थे। रोम के जिस धनाढ्य मोहल्ले में मैं रह रहा हूँ उसकी इमारतों की शोभा लिखने में मैं अपने को असमर्थ पा रहा हूँ। डाक्टर पीयेत्रों की 'सियोरा' अर्थात् 'श्रीमती' मेरीना भी एक विद्वान महिला हैं। उन्होंने मेरा विशेष स्वागत किया। बातचीत से पता चला कि वे भारतीयों से विशेष स्नेह रखती हैं और भारतीय कला की भी विशेष प्रेमी हैं। सबसे बड़ी प्रसन्नता की यह बात है कि सियोरा मेरीना चारु के स्वर्गीय पिता श्री मगनलाल देसाई से पूर्व परिचित हैं और उन्होंने देसाई जी की मृत्यु को सुनकर खेद प्रकट किया। उन्होंने बताया कि फ्लोरेन्स की कला प्रदर्शनी में उनकी भेंट देसाई जी से हुई थी। मैंने उनके पास देसाई जी द्वारा भेंट की हुई गीता भी देखी है जिस पर उनके हस्ताक्षर हैं। डाक्टर पीयेत्रों और सियोरा मेरीना दोनों ही पक्के मसीही हैं किन्तु उन्होंने गीता का अध्ययन बाइबिल से कम महत्त्व देकर नहीं किया। कल मैंने रोम के संग्रहालय में बहुत-सी पुरानी हस्तलिखित पुस्तकें देखीं। डाक्टर पीयेत्रों मेरे साथ ही थे। उन्होंने ग्रीक और लैटिन के उन ग्रन्थों को मेरे सामने रखा जिनमें भारतीय विद्वानों की चर्चा किसी न किसी रूप में आई है अथवा उनमें यहाँ की भाषा या संस्कृति की चर्चा मिलती है। संस्कृत भाषा से अनूदित ग्रन्थ भी मुझे देखने को मिले। मुझे ऐसा आभास मिल रहा है कि मुझे यहाँ काफी दिन रुकना पड़ेगा। यथासम्भव मैं अपना कार्य शीघ्र ही पूरा करूँगा और जल्द ही लौटने का प्रयास करूँगा। इस समय कोई अन्य बात लिखने की नहीं है। मैं सकुशल हूँ। बाबू जी को प्रणाम कहिएगा। भाभी जी को नमस्ते तथा चारु को मेरा स्नेह अर्पित करें, शेष शुभ।

आपका

देवकीनन्दन 'निकष

चारुचित्रा ने पत्र सुना। उसको संतोष मिला।

ललित कला महाविद्यालय का कार्य पूर्ववत् चल रहा था। चारुचित्रा ने पुन महाविद्यालय के उन्नयनात्मक कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ किया। कला-विभाग का कार्य श्रीयुत बेनी शर्मा ने अच्छी प्रकार से सम्हाल लिया था। श्री रामास्वामी पिल्ले की लगन के कारण नृत्य विभाग भी पर्याप्त उन्नति पर पहुँचा। श्री पाठक ने अपने प्रयास से वाद्य-वादकों की कक्षाएँ भी विस्तृत कीं। रूपकुमार महाविद्यालय मे अब बेला शिक्षक हो गया। नलिनी ने नृत्य सीखने का कार्य पुनः आरम्भ किया।

साहित्य विभाग के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए चारुचित्रा ने एक पुस्तकालय की स्थापना की। पुस्तकालय मे आधुनिक भारत की समस्त प्रादेशिक भाषाओ के प्रमुख लेखको की विशिष्ट पाण्डुलिपियो की तथा अनेक महत्त्वपूर्ण प्राचीन ग्रन्थों की माइक्रो फिल्में संगृहीत की गयी। देसाई जी ने जो भी ग्रन्थ अपने जीवन-काल मे संचित करके रखे थे, वे सभी सग्रहालय में आ गए। पुस्तकालय में एक ऐसी पंजिका रखी गयी जिसमे विद्वान पाठक उन उपयोगी ग्रन्थों के नाम लिख सकते थे जिनका होना शोध-कार्यों की दृष्टि से आवश्यक था।

चारुचित्रा चाहती थी कि निकष के आने से पूर्व वह इतना कुछ कार्य कर डालें कि निकष विस्मय में आ जाए।

आजकल चारुचित्रा अपनी ससुराल से अपनी माँ मोहिनी देवी के पास आ गई थी और उसने चित्रों की प्रदर्शनी के लिए विशेष लगन से कार्य आरम्भ कर दिया था। मोहिनी देवी के जीवन की अन्तिम आकाक्षा पूरी हो चुकी थी। उन्होंने अपने सारे धन को एकत्र कर चारुचित्रा और निकष के लिए नवीन बंगला बनवाने की योजना बनाई।

पहला पत्र के आने के बाद से 25 दिन बीत गए थे। दूसरा कोई पत्र न आने से चारुचित्रा अन्दर ही अन्दर बहुत चिन्तित हुई। वह कोई भी कार्य करती अन्दर-अन्दर ये ही सोचती रहती···निकष का पत्र क्यों नहीं आया। उसकी चिन्ता बढ़ती गई और एक दिन ऐसी उदासीन हुई कि वह महाविद्यालय भी नहीं गई। भाग्यवश उसी दिन घर पर उसे पत्र मिला—

लैडन विश्वविद्यालय
इण्डोलोजिकल विभाग
लैडन, हालैण्ड

प्रिय चारुचित्रा,

मेरा प्रथम पत्र भाई साहब को मिला होगा और उसे सम्भवतः तुमने भी पढा होगा। मैं जैसा वचन देकर आया था कि पत्रों का क्रम बँधा रहेगा उसे पूरा नहीं कर पाया। कार्य-व्यस्त अधिक रहने से समय कम पाता हूँ। मैं समझता हूँ तुम क्षमा प्रदान करोगी। प्रिये! जिस प्रकार मृग अपने शरीर से कस्तूरी की गन्ध पृथक नहीं कर सकता उसी प्रकार से मेरे हृदय से तुम्हारी मधुर स्मृति कभी भी अलग नहीं हो सकती आज तुमसे कितनी दूर हूँ किन्तु एक पल ऐसा

नहीं बीता होगा जब तुम्हारी मन्द-मन्द मुस्कान मेरे मानस में न आयी हो। वाह ! मैं तो खुली पलकों में स्वप्न देख रहा हूँ। प्रिये ! जो आकांक्षाएँ तुम्हारे निकट रहकर सुप्त रही थीं वे ही अब बलवती हो रही हैं। इतने दिनों तुम्हारे सम्पर्क में रह कर मैंने तुमसे उस वाणी, भाषा और विषय की बात नहीं की जिसकी हूक आज उठ रही है। बड़े लोगों ने कहा है, अभाव में वस्तु की आवश्यकता अधिक अनुभव होती है। मैं अपने हृदय के रागात्मक वेग को उसी प्रकार से रोके था जिस प्रकार कोई झरना किसी विशाल शिला के आँचल में बँध जाता है, किन्तु फिर···फिर क्या वह रुकता है ? नहीं यह इतने वेग से निकलता है कि दशो दिशाएँ प्रकम्पित हो जाती हैं। सचमुच मैं तुम्हारे प्रति बड़ा शुष्क-सा रहा। यदि आज तुम मेरे साथ होती तो पता नहीं मैंने किस स्वर्ग का आनन्द उठा लिया होता।

मैंने तुम्हारी डायरी को पढ़ा और मैंने उन बहुत से चितेरों की कला को देखा जिनका हवाला इस डायरी में दिया है, उनमें निर्दिष्ट अनेक चित्रों को देखने के बाद तुमसे बात करने की प्रबल इच्छा हुई, किन्तु यहाँ तो सियोरा मेरीना, मदाम मादलेन अथवा मिस पिटर ही साथ थीं ! कला की बारीकियों को समझने में वे कम पटु नहीं दिखाई देती थीं, किन्तु उनसे वे बातें कैसे हो सकती थीं जो तुमसे होतीं। मैंने तुमसे एक बार इटली के पांपेई क्षेत्र की खुदाई की चर्चा की थी, मैं उसे देखने गया था। मैंने वहाँ ध्वंसावशेषों के अनेकानेक चित्र भी लिए हैं। सियोरा मेरीना के कैमरे ने बहुत काम किया। नैपिल्स के संग्रहालय में अनेक उच्चकोटि की कलाकृतियाँ देखीं। नैपिल्स से मैं सीधा पेरिस आया। यहाँ मदाम मादलेन के यहाँ उतरा। उनके साथ मैंने स्वर्गीय रोमाँ रोलाँ का निवासस्थान देखा। भारतीय कला और साहित्य का उत्कृष्ट संकलन यहाँ देखने को मिला और यही नहीं, मुझे अपने विषय की भी बहुत सामग्री मिली। अब्राहिम रोजर द्वारा पुर्तगाली भाषा में 'भर्तृहरि' के श्लोकों का अनुवाद मैंने यहाँ देखा। रोमाँ रोलाँ ने भारतीय दर्शन से प्रभावित होकर जो साहित्य-सृजन किया है उसमें रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द की वाणी बोल रही है। सम्पूर्ण योरप के विद्वत् क्षेत्र में इस महात्मा ने गांधी की अहिंसा के माध्यम से विश्वभ्रातृत्व के बीज बोने का प्रयास किया है। यह भारतीयों के गौरव का विषय है। पेरिस कला और साहित्य की जादू नगरी है। प्रिये ! यहाँ के संग्रहालयों के चित्र यदि महीने-महीने भर लगातार देखे जाएँ तब भी मन नहीं ऊब सकता।

गोया माद्रिदा के चित्रों ने स्पेन को वह गौरव प्रदान किया है कि पेरिस में स्पेन की कला बोल रही है। फ्रांस्वा बूशे के यौवनमत्त चित्रों को देखकर फ्रांस की चरम शृंगारिक प्रवृत्ति का आभास मिला और माइत्रिवियाँ के भावात्मक चित्रों ने बहुत अधिक प्रभाव मेरे ऊपर डाला। इन चित्रों के विषय में मदाम मादलेन ने मुझे अच्छी जानकारी दी जब मैंने उन्हें तुम्हारी डायरी के

पन्ने पढ़ कर सुनाए तो वे चकित हो गईं। उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं एक बार उन्हें तुमसे मिलाऊँ। मैंने उन्हें आश्वासन बंधा दिया है। वहाँ से विदा होते समय मैंने उनसे तुम्हारे लिए उनका एक चित्र लिया है। इस पत्र के साथ मे जो फोटो है वह उन्हीं मादाम का है।

पेरिस यात्रा के बाद मैं अब हालैण्ड के नगर में आ गया हूँ। इस पत्र के ऊपर जो लिखा है उससे तुम समझ गई होगी कि यह पत्र मैं लैडन से लिख रहा हूँ। लैडन विश्वविद्यालय भारतीय साहित्य के दृष्टिकोण से अपना विशेष महत्त्व रखता है। यहाँ एक 'केरन इन्सतीतियूत है। इस इन्सतीतियूत मे भारतीय संस्कृति व साहित्य पर विशेष शोध का कार्य होता है। सम्भवत तुम्हें विस्मय होगा यदि मैं लिखूँ कि इन्सतीतियूत में 450 हस्तलिखित संस्कृत के ग्रन्थ हैं, किन्तु यह विस्मयजनक बात होते हुए भी सत्य है। इन ग्रन्थो को उन्नीसवी शताब्दी में डा० वान मानेन ने कलकत्ते मे रहकर एकत्र किया था और बाद में अपने देश में आकर इस इन्सतीतियूत को दान किया था। सन् 1830 से इस देश मे संस्कृत साहित्य को लेकर खोज और अध्ययन का कार्य चल रहा है। तब से अब तक डेनिश और फ्लेमिश भाषा में बहुत-से ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं जिनमे भारतीय विचारो का प्रत्यक्ष ही प्रतिपादन हुआ है और कुछ ऐसा कथा-साहित्य भी प्रकाशित हुआ है जिसमे भारतीय आचार-विचार को डच संस्कृति का अंग बनाकर एक नये आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मैंने ऐसी कुछ पुस्तकों की सूची अपनी थीसिस के लिए तैयार की है। यहाँ श्री जे० एस० स्पयर नाम के संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान हो गए हैं। उन्होंने बौद्ध दर्शन पर अनेकानेक ग्रन्थ लिखे हैं। डच साहित्य की क्लासिक मे इन ग्रन्थो का बहुत मूल्य है। आजकल भी अनेकानेक विद्वान भारतीय दर्शन को अपना विषय बनाकर उस पर कार्य कर रहे हैं। यहाँ मुझे रामानुज के गीता-भाष्य की समीक्षा देखने को मिली है।

चारु! इतनी अधिक सामग्री मुझे यहाँ आने पर मिल रही है कि मै समेट नहीं सकता। काश, तुम भी मेरे साथ होतीं। मुझे बहुत-सी बातें लिखना बाकी है किन्तु अब उन्हें अब दूसरे पत्र में लिखूँगा। मेरे पत्र को इस बार शीघ्र ही पाओगी।

केवल तुम्हारा
देवकीनन्दन 'निकष'

चारुचित्रा की उदासीनता इस पत्र से प्रसन्नता और आह्लाद में उसी प्रकार ई जिस प्रकार जेठ की सूखी रेत आषाढ़ की वर्षा से कुनमुना उठती है। वह उठी। उसने पत्र को अपने हृदय से लगाया और मादाम मादलेन के चित्र को देख स्कराई।

मोहिनी देवी चाहती थीं कि निकष के भारत आने पर वे उसका स्वागत नये बँगले में करें। उन्हें पता था कि निकष अब दो महीने बाद ही भारत लौट आएगा। उन्होंने बँगले को पूरा कराने का कार्य बहुत तेजी से कराया और वह एक महीने के अन्दर ही बहुत कुछ बन कर तैयार हो गया।

चारुचित्रा एक ओर जहाँ महाविद्यालय के साहित्य विभाग के विकास की ओर प्रयत्नशील थी वहीं दूसरी ओर अपनी कला-साधना में भी कम रत नहीं थी। उसने अनेकानेक नए-नए चित्र बनाए। उसके चित्रों की विशेष बात जो थी वह यह कि उसने प्रादेशिक भाषाओं के अनेक उत्कृष्ट कथानकों के अनेकानेक दृश्य उद्धृत किए थे। गुजराती उपन्यास 'सरस्वतीचन्द्र', तेलुगू उपन्यास 'राजशेखरचरित्रम्' और बंगला उपन्यास 'गोरा' के दृश्य जहाँ उसकी तूलिका के नीचे आए वहीं कन्नड़ के प्रसिद्ध कवि राघवांक के महाकाव्य 'वीरेश्वर चरित्रे' तमिल के महाकाव्य 'जीवक चिन्तामणि' और बंगला के प्रसिद्ध काव्य 'ब्रजांगना' के मोहक दृश्य भी वह नहीं छोड़ सकी। उसने अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में सभी प्रादेशिक भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रन्थों को मँगवा लिया था और विद्यालय के ही विभिन्न प्रदेशों के शिक्षकों की सहायता से उसने उन ग्रन्थों के लालित्य-सार को प्राप्त कर अपनी तूलिका से अभिव्यक्त करने का प्रयास शुरू किया था। वह चाहती थी कि इस वर्ष ललित कला महाविद्यालय का जब वार्षिक उत्सव मनाया जाय और उसमें साहित्य विभाग का विधिवत् उद्घाटन हो तो उस अवसर पर वह साहित्य से सम्बन्धित अपने चित्रों की एक प्रदर्शनी कर सके।

एक ओर महाविद्यालय का कार्य, दूसरी ओर नये बंगले को सजाने की चिन्ता और चित्र-प्रदर्शनी के मोह ने चारु को अत्यधिक व्यस्त कर दिया! निकष के दूसरे पत्र को आए 40 दिन बीत गए थे किन्तु इस बार वह इतनी चिन्तित नहीं थी। वह अपने कार्य में मस्त रही।

चालीसवें दिन उसके घर पर एक रंगीन लिफाफा आया। चारु ने अत्यधिक उत्कण्ठा से उसे फाड़ा और उसे पढ़ना शुरू किया—

वार्धा रोड<br>
नागपुर<br>
दिनांक···

भुलाने पर भी न भूलने वाली<br>
प्रियतमे !

चारुचित्रा ने पत्र को उलट-पलट कर देखा। अन्त में कमल चन्द्र (कमल बाबू) टाइप किया हुआ था। कहीं भी हाथ की लिखावट नहीं थी। उसने झुंझला कर पत्र मरोड़ कर फेंक दिया किन्तु थोड़ी ही देर बाद उसने उस पत्र को फिर उठाया और पढ़ने लगी—

विदित हो कि मैं अब पूना छोड़कर नागपुर में रहने लगा हूँ। मैंने तुम्हारे विवाह के बाद यह सोचा था कि मैं अब अपना नया जीवन प्रारम्भ करूँगा

किन्तु ऐसा मालूम होता है कि मेरा जीवन तुम्हारे बिना सूना ही रहेगा। मैं तुम्हे भुलाने का प्रयास करने पर भी भुला नहीं सका हूँ। मैंने हृदय से एक वार यह निश्चय किया था कि तुम्हें अपना करके रहूँगा किन्तु क्या करूँ, मैं ऐसी परिस्थिति में पड़ गया कि···। अब मैं तुमसे क्या कहूँ समझ नहीं पा रहा हूँ। तुमने मेरे हृदय की स्थिति को एक बार भी समझा होता तो तुम इतनी निष्ठुर न होतीं। देखो न यह हृदय कहाँ मानता है। मैं विवश होकर पत्र लिख रहा हूँ। मैंने सुना है निकष तुम्हें यहीं छोड़कर विदेश चला गया है। तुम तो जानती हो विदेश की हवा कैसी है। निकष अब वहाँ से लौटेगा तो क्या वह वही रहेगा। जो यहाँ से जाते समय था ? कभी नहीं। मुझे तुम्हारी स्थिति पर दुःख हो रहा है। काश, तुमने समझ से काम लिया होता ! मुझे पता है तुम कला की प्रेमी हो। तुम्हें उस ओर अग्रसर होने के लिए उसके अनुकूल वातावरण की आवश्यकता है। तुम यदि आज भी मुझे स्वीकार करने को तैयार हो तो मैं तुम पर लाखों रुपयों की सम्पत्ति अर्पण कर सकता हूँ और तुम्हारा नाम देश भर में 24 घण्टे के अन्दर फैला सकता हूँ। कलाकार का सबसे बड़ा पुरस्कार है उसका यश, और यश मैं खरीद सकता हूँ। प्रिये ! मेरी बातों को ध्यान देकर सोचना। तुमने मेरे अतिथि-कक्ष में जो चित्र लगे देखे थे उससे आभास लो कि मेरी कैसी रुचि है। काश, तुमने मुझे समझने का प्रयास किया होता तो आज तुम मेरे साथ उसी प्रकार से विदेश में होतीं जिस प्रकार से आज निकष वहाँ घूम रहा है ! मुझे पता है निकष कितना मनचला व्यक्ति है। वह जानबूझकर तुम्हें विदेश नहीं ले गया। तुम्हारे जाने से वह विदेश की तितलियों के साथ स्वच्छन्द नहीं घूम सकता था।

प्रिये ! निकष अभी विदेश में है। अच्छा हो उसके आने के पूर्व तुम अपना भविष्य सुधार लो। मैं तुम्हारे सुख के लिए तुम्हारा कौमार्य खण्डित होने पर भी तुम्हें अंगीकार करने के लिए तैयार हूँ। मुझे सूचना मात्र दो; आगे का प्रबन्ध मैं कर लूँगा। आशा है एक सच्चे प्रेमी को पहचानने का प्रयास करोगी।

केवल तुम्हारा
कमल चन्द्र

चारुचित्रा के नथुने क्रोध से फूल उठे। उसने पत्र मरोड़ कर लिफाफे में रखा हा—दुष्ट कहीं का। सच्चा प्रेमी बनने चला है। व्यभिचारी, गुण्डा। यश रुपए दने चला है। मुझे यश खरीदवा देगा। जैसे कि यश कोई खिलौना है। कलाकार रीदता नहीं, मूर्ख को इतना भी नहीं पता। धन और प्रतिभा का अन्तर नहीं और चला है कलाकार को प्राणदान देने। जीवन भर आवारा रहकर आज नने चला है। पता नहीं इस दुष्ट के मन में क्या समाया है। यह कमबख्त जेल मे कर भी छूट आया वे ठीक ही कहते थे वह जेल से पर छूट आय।

होगा ? और यह आखिर छूट ही आया। सरकार के पास ऐसे साँड़ो के इलाज की दवा नहीं है क्या ? दो महीने से वातावरण शान्त था। मैं समझती थी कि कमल जेल की हवा खाकर ठीक हो गया होगा किन्तु कहाँ जा सकती है ऐसे लोगों की आदत ! आखिर फिर अपनी रंगत पर आया। शहर छोड़कर नागपुर चला गया किन्तु फिर भी पिण्ड न छूटा।

चारुचित्रा जहाँ एक ओर क्रोधित हुई, वहीं दूसरी ओर अत्यधिक चिन्तित भी हुई। उसने उस पत्र को शास्त्री जी अथवा श्री पिल्ले को दिखाना चाहा, किन्तु फिर अपनी ही हँसी होने के भय से वह अन्दर ही अन्दर मन मसोस कर रह गई।

कमल का पत्र जिस दिन से आया उसे निकष के पत्र की चिन्ता और अधिक बढ़ गई। 45 दिन बीत जाने पर भी जब निकष का पत्र नहीं मिला तो उसके मस्तिष्क में कमल की बात आई···निकष तुम्हें यहाँ छोड़कर विदेश चला गया।···निकष जब वहाँ से लौटेगा तो क्या वह वही रहेगा जो यहाँ से जाते समय था। कभी नहीं।···वह जानबूझकर तुम्हें विदेश नहीं ले गया। तुम्हारे जाने से वह विदेश की तितलियों के साथ स्वच्छन्दता से नहीं घूम सकता था···। विदेश की तितलियाँ···मरीना, मादलेन और मिस पिटर। यह सभी तो महिलाएँ हैं। निकष इनके ही साथ में तो घूमते रहे हैं।

···उँहँ, मैं भी कितनी मूर्ख हूँ। कमल के बहकाने से यह क्या सोचने लगी ? कहीं निकष इतने पथच्युत हो सकते हैं ? कभी नहीं, कभी नहीं। किन्तु···नहीं, नहीं-नहीं। किन्तु-परन्तु की बात ही नहीं उठती।

चारुचित्रा ने अपनी मनःस्थिति को बदलना चाहा और उसने अपना ध्यान दूसरी ओर मोड़ा। वह सोचने लगी···जब वे आएँगे तो नये बंगले को देखकर वे विस्मय अवश्य ही प्रकट करेंगे और फिर हाँ, जब वे मेरी दीवाल की उन पेन्टिंग्स को देखेंगे जो यथार्थ दृश्य-सी लगती हैं तो अवश्य ही चकित होंगे। वह मन ही मन मुस्कराई किन्तु तत्क्षण ही उसके मस्तिष्क में निकष के पत्र की वे पंक्तियाँ उभरीं ···'जो आकांक्षाएँ तुम्हारे निकट रहकर सुप्त रहती थीं वे ही अब बलवती हो रही हैं।···झरना क्या किसी विशाल शिला के आँचल में बँधकर रुकता है ? वह इतने वेग से निकलता है कि···।' यह वेग और निर्झर दो के किनारे। आह मैं कितनी अभागिनी हूँ ! तूफानी प्रपात कहीं अपना मार्ग न बदल दे। आज माह भर से ऊपर हो गया उनका पत्र क्यों नहीं आया। उन्होंने लिखा था अबकी जल्द ही पत्र भेजूँगा किन्तु इस बार और भी देर ! उन्होंने अपने पत्र में सियोरा मेरीना, मदाम मादलेन की चर्चा तो की किन्तु मिस पिटर की चर्चा क्यों नहीं की।

चारुचित्रा के अन्दर ही अन्दर सशंकित हुई। वह कुछ चिन्तित-सी रहने लगी। मोहिनी ने भी इस स्थिति का कुछ आभास पाया और पूछा भी, किन्तु चारु ने न तो कमल के पत्र की चर्चा की और न अपने मन की शंका पर ही बात करना उचित समझा। जैसे-तैसे करके दो दिन और कटे और निकष का तीसरा पत्र आया

चारुमित्रा

होमर मेमोरियल इन्सतीतियूत
एथेन्स, ग्रीस

प्रिय चारु !

आशा करता हूँ मेरे पत्र तुमने पढ़े होंगे। मैं यदि कवि होता तो शायद अधिक सुन्दर भाषा में अपनी प्रेयसी को पत्र लिख सकता। प्रिये ! तुम मेरे हृदय को शुष्क शब्दों से मत पहचानना। यह पत्र बहुत दिन बाद लिख रहा हूँ तो क्या हुआ, इसके पीछे एक हल्का-सा परिहास छिपा है जिसे मैं अब खोल देना ही उचित समझता हूँ। मैंने सोचा था कि अपने इस पत्र के स्थान पर स्वयं को ही प्रस्तुत कर जब तुमसे साक्षात् करूँगा तो तुम्हें अपना विस्मय और आनन्द अनुभव होगा, किन्तु कुछ विशेष कारणवश मैं यहाँ कुछ दिन के लिए रुक रहा हूँ, फलत: मैंने यह उचित समझा कि मैं तुम्हें पत्र लिखकर तुम्हारे कुतूहल को शान्त करूँ। प्रियतमे ! पिछला पत्र मैंने लैडन से लिखा था। वहाँ से मैं स्टाकहोम गया और फिर बर्लिन में कुछ दिन रहकर मैं चेकोस्लोवाकिया के प्रेग विश्वविद्यालय के डा० ओदोलेन स्मकल का अतिथि बना। वहाँ से मैं सीधा एथेन्स आ गया। लैडन में जब मैं था तो मिस पिटर ने मेरी बड़ी सहायता की थी। वे केरन इन्सतीतियूत में संस्कृत की एक छात्रा हैं। उन्होंने हेग नगर के उस संग्रहालय को मुझे घुमाया जिसमें डच साम्राज्यवादियों ने अपनी लूट के नमूने इण्डोनेशिया से लाकर एकत्र किए हैं। पीतल और काँसे की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ और बौद्धकालीन शिल्प-कला की अद्भुत मूर्तियाँ वहाँ मैंने देखी। मिस पिटर ने मुझे कई एक पुस्तकें भेंट की हैं जिनमें भारतीय साहित्यकारों का अनूदित साहित्य है। प्रेमचन्द और जैनेन्द्र की कहानियो तथा निराला व अज्ञेय की कविताओं के संकलन भी वहाँ निकल चुके हैं। मिस पिटर को मैंने जब अपनी थीसिस का विषय बताया तो वे बोलीं—यह विषय भारत के स्वतन्त्र होने के बाद ही अपने आप विद्वानों के लिए शोध का विषय बन गया है। भारत नींद की गहरी अवधि के बाद जागा हुआ शेर है। हम योरप वाले अब पहले से अधिक आपको और आपके प्रभाव को समझने के प्रयास में हैं। मिस पिटर ने मेरा साथ स्टाकहोम की यात्रा में भी दिया। मैं नोबेल फाउण्डेशन से सम्बन्धित स्वीडिश अकादमी के पुस्तकालय को देखने भी गया। यह पुस्तकालय बहुत बडा है। और यहाँ विश्व-साहित्य की क्लासिक अनूदित रूप में एकत्रित की गई है। इस पुस्तकालय की स्थापना यहाँ के महाराजा गस्टेव्स तृतीय ने सन् 1786 ई० में की थी। भारत के स्वतन्त्र होने के बाद यहाँ भारतीय भाषाओं को विशेष महत्व मिलना प्रारम्भ हो गया है। स्वीडिश साहित्य में भारतीय दर्शन का प्रवेश सत्रहवीं शताब्दी में हुआ किन्तु रवि बाबू को 1913 में जब नोबुल पुरस्कार मिला तो उसके बाद यहाँ भारतीय विचारधारा ने अच्छा निखार पाया यही नहीं योरप के समस्त देशों में भारतीय दर्शन की अच्छी छाप दिखाई

पड़ती है। स्टाकहोम से मैं मिस पिटर के साथ ही बर्लिन पहुँचा। बर्लिन मे संस्कृत भाषा के जर्मन विद्वानों की जितनी अधिक कृतियाँ मुझे मिलीं उतनी अन्य कहीं नहीं। मैक्समूलर, शिलर, वेबर जैसे विद्वानों के अनेके ग्रन्थ सैकड़ों की संख्या में यहाँ दिखाई दिए। डा० आर्थर बेरीडेल कीथ द्वारा लिखित ग्रन्थ 'रेलिजन एण्ड फिलासफी आफ वेद एण्ड दि उपनिषद्स' का लोहा कौन नहीं मानेगा ? उन्होंने हमारी संस्कृति को पश्चिम के देशों में आगे बढ़ाया और उसके दर्शन के मूल तत्व को पाश्चात्य विद्वत्जनों के सम्मुख रखा। निश्चय ही जर्मन साहित्य में भारतीय दर्शन का समावेश प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। जर्मन लेखिका बरथा वान सट्टर को 1890 में प्रकाशित 'डाई बेफेन नीयडर' अर्थात् 'हथियार रख दो' नामक उपन्यास पर शान्ति पुरस्कार दिया गया था। उसको पढ़ने से साफ पता चलता है कि उसके नायक पर बौद्ध अहिंसा का प्रभाव था। भले ही लेखिका ने कथानक का ताना-बाना पाश्चात्य वातावरण का रखा है। किन्तु उपन्यास की आत्मा भारतीय है। बर्लिन में मुझे अपने विषयानुकूल बहुत सामग्री मिली है।

मैंने बर्लिन में पश्चिमी और पूर्वी बर्लिन की विभाजनात्मक प्राचीरें भी देखीं। वहाँ मुझे पूर्व बर्लिन में झाँकने की जिज्ञासा हुई मैंने इसकी व्यवस्था की और पूर्वी बर्लिन में मुझे मिली एक रूसी लड़की जिसका हिन्दी का उच्चारण सुनकर मैं विस्मय में पड़ गया। भाषा का यह नैकट्य मुझे इतना अधिक उसकी ओर खींच ले गया कि उसके एक ही प्रस्ताव पर मैं मास्को की स्टेट लेनिन लायब्रेरी देखने को जिज्ञासु हो उठा। यह प्रस्ताव उसने मेरे सम्मुख तब रखा जब मैं उसके साथ पूर्व बर्लिन के एक म्यूजियम में घूमता हुआ कुछ प्राच्य पाण्डु-लिपियों पर अटक गया था और मैंने उसे अपनी थिसिस का विषय बताया था। उसने एक ही दिन मे मेरा आरक्षण एक रूसी विमान में करा दिया और विमान परिचारिका को अपनी भाषा में मुझे सहेजते हुए मुझसे कहा—आपको मास्को मे मेरी एक मित्र मिलेगी। वह आपके पहुँचने के पूर्व ही आपको स्टेट लेनिन लायब्रेरी दिखाने की व्यवस्था कर चुकेगी और आप कम से कम समय में उस पुस्तकालय को घूम लेंगे।

मास्को हवाई अड्डे पर विमान से बाहर आते ही मेरे निकट एक रूसी लड़की बढ़ती हुई आई और उसने पूछा क्या आपका नाम निकष है। आप पूर्वी बर्लिन से आ रहे हैं ? मैं विस्मय से उसे देखते हुए मुस्कराया और उसने कहा—मुझे टेलीफोन पर मेरी सहेली ने आपकी इतनी सूक्ष्म पहचान दे दी थी कि मुझे आपको पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई। सम्पूर्ण औपचारिकताओं के बाद मैं जब उस भव्य पुस्तकालय के प्रांगण में पहुँचा तो उसके बाह्य स्वरूप से ही चकित रह गया। पुस्तकालय मास्को के सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र क्रेमलिन के ठीक दूसरी दिशा में एक पहाड़ी पर स्थित है। इसे पहले पाशकोव हाउस कहा जाता था इस समय इस पुस्तकालय में तीन करोड़ पुस्तकें हैं और बाईस

वाचनालय हैं जिनमें आठ हजार पाठक एक ही समय में बैठ सकते हैं। यह पुस्तकालय अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकों का सौ से अधिक देशों से विनिमय करता है।

इस छोटे से पत्र में मैं इस वृहत् पुस्तकालय का पूर्ण विवरण नही दे सकता, किन्तु यह निश्चित है कि मैं एक दूसरी यात्रा का कार्यक्रम बनाकर कुछ दिन जमकर इस विशाल सम्पदा का लाभ उठाना चाहता हूँ।

हमारे देश मे जगत्गुरुओं की कमी नहीं किन्तु क्या वहाँ एक भी ऐसा पुस्तकालय है जहाँ ज्ञान-विज्ञान की इतनी विपुल राशि एक ही स्थल पर उपलब्ध हो !

खैर, मास्को घूमकर मैं एथेन्स आ गया हूँ। जर्मन तो जर्मन थे, रूसियों का भारतीयो के प्रति आकर्षण देखकर मैं दंग रह गया।

सचमुच पाश्चात्य महिलाएँ पठन-पाठन में कितना आनन्द लेती है और साथ ही कितनी निर्भीक भी है ! ! चारु ! मैं देखता हूँ, ज्ञान के आगे व्यक्ति की उद्दण्डता भी नत हो जाती है।

मिस पिटर जितने दिन मेरे साथ रही, मेरी भावना, श्रद्धा और स्नेह से अलग ही नहीं हुई। अब उसके पृथक होने पर सोचता हूँ यदि मैंने उससे कोई छेड की होती तो ? तुम मेरी इस बात पर हँसोगी अवश्य, पर दिल की बात दिल मे क्यो रखूँ। पत्र मे लिख देता हूँ।

एथेन्स मे मुझे अधिक समय नहीं लगाना चाहिए किन्तु प्रो० भण्डारकर ने यहाँ के जिस प्रोफेसर से मिलने को कहा था वे आजकल रूस गए हुए हें। उनके आने तक मुझे यहाँ रुकना पड़ेगा। उनके मिलने पर केवल 10 दिन का कार्य शेष होगा।

प्रियतमे ! अब मैं जल्दी ही आऊँगा। मेरी प्रतीक्षा करना और हाँ मेरे पत्रों को सँजोकर रखना यह मेरे काम के हैं। अन्त में मेरा एक बार प्यार लो और क्या ? सब कुछ मिलने पर।

केवल तुम्हारा
निकष

चारुचित्रा निकष के इस पत्र को पढ़कर मन ही मन बोली—मैं कितनी नासमझ कष को मैंने क्या अभी तक नही समझा ? उस दुष्ट के बहकाने में मैं इतनी जल्दी ! मिस पिटर जैसी सहृदय महिला को बिना समझे ही मैं शंका की दृष्टि से देखने साधारण-सी बात थी, निकष इतने व्यस्त समय मे सचमुच पत्र कैसे लिख सकते ा कमल को अवश्य ही दण्ड मिलना चाहिए। अभी भी अपनी कुचालों से वह ाही हुआ।

चारुचित्रा ने फटकार से भरा एक पत्र लिखा और टाइप कराकर उसे कमल के ज दिया उसने ताड़ना दी यदि भविष्य में कोई भी अनधिकारी कदम उठाया

गया तो उचित न होगा।

ऐसा पत्र लिख कर भेज देने के बाद चारु को कुछ शान्ति मिली। उसने अपनी माँ व रसवन्ती को सूचना दी कि निकष शीघ्र लौट रहे हैं।

मोहिनी देवी ने बँगला बनवाकर खड़ा कर दिया था। उसकी केवल सफाई बाकी थी। चारुचित्रा ने नवीन अतिथि-कक्ष, अध्ययन-कक्ष व शयन-कक्ष में अपनी कला का कमाल दीवालों पर अवतरित किया।

उसने महाविद्यालय के साहित्य विभाग की व्यवस्था भी यथासमय पूरी की और चित्र प्रदर्शनी के लिए भी पर्याप्त तैयारी की। अब एक-एक दिन कठिन प्रतीक्षा में कटने लगा। तीसरे पत्र के केवल 15 दिन बाद ही घर पर एक तार आया—

26 जनवरी को प्रातः शान्ताक्रुज पर बी० ओ० ए० सी० के डकोटा से पहुँच रहा हूँ।

'निकष'

इस तार की प्रतिलिपि सुन्दरलाल जी के पास भी पहुँची।

चारुचित्रा महाविद्यालय से अपनी ससुराल इस समाचार को देने पहुँची और उसी क्षण सुन्दरलाल जी भी तार को लेकर घर आए। श्री रमणलाल जी व रसवन्ती की प्रसन्नता की सीमा न रही। चारुचित्रा ने मोहिनी देवी को भी शुभ समाचार बताया।

25 तारीख की रात को वे सभी पुणे से बम्बई के लिए रवाना हुए।

26 तारीख के प्रातः ही वे लोग शान्ताक्रुज पहुँच गए। पहला ही जहाज जो हवाई अड्डे पर उतरा वह बी० ओ० ए० सी० का था। निकष जहाज से निकल कर बाहर आया। श्री रमणलाल जी ने सर्वप्रथम उसे कलेजे से लगाया, सुन्दरलाल ने निकष को छाती से लगाकर उसे थपकियाँ दीं। रसवन्ती ने मिठाई का थाल निकष के हाथ पर रखा और मोहिनी देवी ने वहीं राई और नोन से निकष की आरती उतारी। चारुचित्रा की आँखों में स्नेह के आँसू उमड़ आए, वह फड़फड़ाती हुई आँखों से दूर खड़ी होकर अपने निकष का स्वागत देखती रही। निकष ने आगे बढ़कर चारु के दोनों हाथ अपने हाथों में लिए। मोहिनी ने माथा सिकोड़ा किन्तु श्री रमणलाल और सुन्दरलाल मुस्कराए।

ललित कला महाविद्यालय के साहित्य विभाग का उद्घाटन समारोह धूमधाम से आयोजित हुआ। रंग-बिरंगे बन्दनवारों से सम्पूर्ण विद्यालय सज उठा, पुस्तकालय मे साहित्य-प्रदर्शनी आयोजित की गई। महाविद्यालय के महाकक्ष में विद्वानों का जमघट लगा। शास्त्री जी ने निकष को अनेक बार स्नेह से थपथपाया। नगर के और कुछ-एक बाहर के विद्वान भी वहाँ आमन्त्रित थे। उद्घाटन समारोह का कार्य प्रोफेसर भण्डारकर के कर-कमलों द्वारा होने वाला था।

घड़ी ने प्रातः के ग्यारह बजाए और इसी समय प्रोफेसर भण्डारकर महाकक्ष मे प्रवेश करते हुए दिखाई दिए चारुचित्रा ने आगे बढ़कर उनका अभिवादन किया

जी ने अपने हाथ से प्रोफेसर भण्डारकर के गले में गजरा पहनाया। हाल में बजीं। सर्वप्रथम वाणी वन्दना हुई और तत्पश्चात् शास्त्री जी ने प्रोफेसर र से निवेदन किया कि वे उद्घाटन करें। प्रोफेसर भंडारकर ने बोलना आरम्भ —

मेरे लिए यह महान गौरव की बात है कि जहाँ इतने विद्वान एकत्र हैं वहाँ मुझ जैसे नगण्य व्यक्ति को इस बड़े कार्य का भार सौंपा गया है। उद्घाटन-भाषण देने की क्षमता मुझमें नहीं है, फिर भी आज्ञा का पालन कर अपना कर्त्तव्य मुझे पूरा करना है।

इस ललित कला विद्यालय में जहाँ अब तक संगीत, नृत्य और चित्रकला का शिक्षण-क्रम चलता आया है और जहाँ से शिवशंकर जैसा प्रसिद्ध नर्तक है उसी विद्यालय में अब साहित्य विभाग भी खुल गया है, यह कम महत्त्व की बात नहीं है। सबसे बड़ी बात जो इस उद्घाटन की है वह यह कि इस उद्घाटन के बाद से यहाँ साहित्य अनुशीलन का कार्य प्रारम्भ होगा। भारतवर्ष में ऐसे विद्यालय बहुत कम है जिनमे नितान्त शोध का कार्य हो। आज हमारे यहाँ इसकी बड़ी आवश्यकता है। हमारे पूर्वजों ने क्या-क्या उपलब्धियाँ पिछली शताब्दियों में अर्जित की हैं, हम उनसे बहुत अनभिज्ञ हैं। समय के फेर से हमारी ज्ञान-शृंखला गुलामी के समय में बुरी तरह से भंग हो गई और हमारी ज्ञान-राशि को इस बुरी तरह से हमारे भाग्य-विधाताओं ने कलुषित किया कि हम अपनी ही वस्तु को अपना कहने में भय खाते हैं। जिस व्यक्ति ने अपने को अच्छी प्रकार से नहीं समझा वह दूसरे के कार्यों को देखकर सदा यह सोचता है कि वह बहुत ही दीन है। किन्तु हम जिस दिन यह जान लेते है कि जिन कार्यों को देखकर आज हम चकित हो रहे है उन्हें हमीं ने किसी समय किया था तो हममें आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न होती है। हम अपने को हेय दृष्टि से देखना भूल जाते हैं और हममें नयी स्फूर्ति आती है।

शोध का कार्य बहुत क्षेत्रों में होता है और सब का अलग-अलग महत्त्व है, किन्तु साहित्य के क्षेत्र में जो खोज हुई है या साहित्य की जो निधियाँ आज हमारे पास हैं उससे ही हम आज उन्नतिशील संसार के बीच बहुत पिछड़े हुए होने पर भी सम्मान के पात्र बने हुए हैं।

किसी भी देश का स्थायी मूल्य और आदर उस देश की कला व साहित्य से जितना होता है उतना अन्य किसी वस्तु से नहीं। बड़े-बड़े राजे और महाराजे भारत में हुए। एक से एक रईस और भोगी यहाँ पैदा हुए। बड़े से बड़े वीर और चाणक्य यहाँ हुए किन्तु किसी का भी वह मूल्य नहीं जो कालिदास, भवभूति या तुलसीदास का है। हमारा परिष्कृत और वास्तविक रूप हमारे इतिहास से अधिक हमारे साहित्य से विश्व के समक्ष आता है। मानव का बड़प्पन उसकी बबरता या योद्धत्व में नहीं उसका बड़प्पन धनाढ्यता और मदमत्तता में भी नहीं उसकी महानता है उसकी रुचि में उसके संयम में और उसकी

जनोद्धारक भावना में। रामायण के राम यदि अन्य राजाओं के समान राज्य की लिप्सा में लिप्त होते, तो वे तुलसी के राम न हो पाते। मनुष्य के जो कृतित्व आत्मिक तथा आध्यात्मिक सुख देते हैं वे ही सबसे अधिक स्थायी होते हैं और जिस व्यक्ति के पास, जिस देश के पास अथवा जिस राष्ट्र के पास कितनी भी बड़ी ऐसी निधि है वह उतना ही अधिक सम्मान का अधिकारी आपसे आप हो जाता है। बड़े से बड़े राजो और महाराजों ने बड़े-बड़े साम्राज्य बनाए। रँगीले नवाबों ने हरम के अन्दर इत्र के तालाब खुदवाए और हजार-हजार बेगमो को पान और फूल की तरह अपनी गोद मे उछाला किन्तु उनके नामों को लेकर कौन गर्व अनुभव करता है। दूसरी ओर वाल्मीकि, भवभूति, कालिदास, बाणभट्ट, रहीम, तुलसी, सूर अथवा गालिब का नाम लेकर हम आज भी जीवित हैं। हमारी संस्कृति का स्तम्भ ही आज हमको कीर्ति प्रदान कर रहा है। सभ्य और विद्वत् समाज में हमारी आज भी गणना है।

सचमुच यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि ऐसे पवित्र कार्य को आगे बढाने का शिलान्यास इस महाविद्यालय में आज हो रहा है। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस विभाग का कार्य मेरे अनन्य प्रिय शिष्य श्री देवकीनन्दन निकष को सौपा जा रहा है। वे अभी-अभी ही विदेश से लौटे है और उन्होंने जो कार्य वहाँ किया है और जो कुछ वे वहाँ से लाए हैं उसे देखने से मुझे बहुत बड़ी प्रसन्नता मिली है। वे अपने कार्य में सफल दिखाई दे रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि उनकी अध्यक्षता में इस विद्यालय का साहित्य विभाग अवश्य ही उन्नति करेगा। हमारे नवजवानों के सामने अभी खोज करने की इतनी चीजें पड़ी हुई है कि ऐसे-ऐसे विद्यालय यदि अभी 50 और खोल दिए जाएँ तो कम हैं। वस्तुतः हमें ललित साहित्य तक ही सीमित होकर नहीं चलना है क्योंकि केवल साहित्य से काम नहीं चलेगा। हमें ज्ञान की दूसरी शाखाओं पर भी ध्यान देना होगा, विश्व-विज्ञान की प्रगति से भी अपने चरण हमें मिलाने पड़ेंगे किन्तु साहित्य की खोज ही हमें अपने अतीत के ज्ञान-भण्डार का दर्शन कराएगी। हमें जल्द से जल्द अपने अतीत को अपने भविष्य से जोड़ लेना है।

इन शब्दों के साथ मैं ललित कला महाविद्यालय के साहित्य विभाग का उद्घाटन करता हूँ और एक बार पुनः इस विद्यालय के कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देता हूँ। मैं अपनी ओर से आश्वासन देना चाहता हूँ कि इस विद्यालय को जो भी सहायता मेरी, जब कभी भी आवश्यक अनुभव होगी वह प्राप्त होगी।

प्रोफेसर भण्डारकर का भाषण समाप्त हुआ और महाकक्ष में करतल ध्वनि हुई। शास्त्री जी ने प्रोफेसर भण्डारकर को धन्यवाद देते हुए कहा—

मैं महाविद्यालय की ओर से भण्डारकर जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और उनसे तथा यहाँ पर उपस्थित सभी महानुभावों से अनुरोध करता हूँ कि आप सब हमारे विद्यालय की चित्र-प्रदर्शनी को देखें इसमें 100 से अधिक चित्र हमारे के ही चित्र विभाग की श्रीमती चारुचित्रा

के हैं और कुछ अन्य इसी विद्यालय के शिष्यो के चित्र हैं। हाँ, एक बात मुझे कहना और बाकी है। संस्था के संस्थापक श्री मगनलाल देसाई ने आज से 5वर्ष पूर्व अपने जीवन के अन्तिम क्षणो मे मेरे सम्मुख दो आकांक्षाएँ रखी थीं। प्रथम महाविद्यालय में साहित्य विभाग का समावेश और द्वितीय अपनी चारुचित्रा का विवाह। प्रसन्नता की बात है कि आज वे दोनों ही कार्य पूरे हो गए है और मैं समझता हूँ कि उनकी आत्मा को अवश्य ही आज संतोष मिल रहा होगा।

मैं एक बार पुन: अपने प्रमुख अतिथि, आमंत्रित विद्वानो और उपस्थित जनो को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने हमारे इस कार्य को सफल और भव्य बनाने में सहयोग दिया।

अब आप सब प्रदर्शनी देखें।

नये बँगले में गृह-प्रवेश-यज्ञ बड़ी धूमधाम से किया गया। नृत्य, गायन और भजन के कार्यक्रम हुए। ललित कला महाविद्यालय के सम्पूर्ण कार्यकर्ता आमन्त्रित हुए। पद्मा भी गुण्टूर से बुलाई गई और उसके पति भी आए। नलिनी, रूपकुमार, कामिनी, श्री तारकनाथ सान्याल, श्री रामास्वामी पिल्ले, श्री बेनी शर्मा, प्रोफेसर जोगाल्कर, प्रोफेसर भण्डारकर, श्री सुन्दरलाल, श्रीमती रसवन्ती और श्री रमणलाल आदि सभी सम्मिलित हुए। शास्त्री जी प्रमुख प्रबन्धकों में थे। मोहिनी देवी ने ब्राह्मण भोजन का अलग प्रबन्ध किया था। वहाँ आनंदमंगल छा गया। आमन्त्रित जनों ने वाटिका-भोज (गार्डेन पार्टी) का आनन्द उठाया और भोजनोपरान्त जो मुख्य चर्चा वहाँ चली वह थी चारुचित्रा के चित्रों की प्रदर्शनी की। सभी हृदय खोलकर चारु की तूलिका की सराहना कर रहे थे।

घर मे आयी महिलाओं ने मोहिनी देवी के पुराने घर में ही जमघट लगाया और अब चारुचित्रा को अवसर मिला कि वह निकष से कुछ बातें करे। वह निकष के पास पहुँची और बोली, "अहो भाग्य, आपको मेरे पास आने का अवसर तो मिला। रोम, लैंडन और एथेन्स से ऐसे सम्मोहक पत्र लिखे किन्तु यहाँ आकर···।"

"तुम्हें तो पता है, मैं आते ही कितना व्यस्त रहा हूँ। घर पहुँचते ही मुझे भण्डारकर जी से मिलना परम आवश्यक अनुभव हुआ। उन्हें अपने स्टेडी नोट्स मेरा मतलब है अध्ययन टिप्पणियाँ जिन्हें मैंने विदेश में रहते हुए तैयार किया था, दिखाना था।" निकष ने चारु के मुख की ओर देखा, वह मुस्कराती रही। वह आगे बोला, "जब तक वे यह नहीं कहते कि जो कुछ कार्य मैं करके आया हूँ वह संतोषप्रद है तब तक मुझे शान्ति कैसे मिलती ?"

"तो भण्डारकर जी ने क्या कहा ?"

"उन्होंने, कल महाविद्यालय में अपने भाषण में कहा है कि वे सन्तुष्ट हैं। मेरा जाना सार्थक हुआ।"

"तो क्या अब डाक्टरेट मिल जायगी ?"

"आशा तो पूरी हो रही है किन्तु उस थीसिस को अभी तो फिर से संशोधित करके प्रस्तुत करना होगा और फिर वह दो अन्य विद्वानो के पास भी जाएगी।"

"हूँ, तो परसों दिन भर भण्डारकर जी के यहाँ लग गया !" उसने कुछ गम्भीर बनना चाहा।

"नही, वहाँ जाकर पता चला कि महाविद्यालय की मन्त्राणी महोदया ने दूसरे ही दिन साहित्य विभाग का उद्घाटन समारोह आयोजित कर रखा है और फिर उस उद्घाटन के साथ ही मेरी नियुक्ति भी महाविद्यालय में हो रही है। ऐसी स्थिति में मेरे लिए स्वाभाविक ही था कि मैं इस समारोह को भव्य बनाने के लिए अच्छी दौड़-धूप करता। दस-बीस अच्छे विद्वान भी सम्मिलित न होते तो।"

"ओह, समझी। महाविद्यालय की मंत्राणी को इसका दण्ड मिलना चाहिए।"

"जी हाँ, अब आप समझीं।"

"तो फिर उन्हें क्या दण्ड दिया जाय !"

"मैं समझता हूँ कि इस बार उन्हें मैं अपनी ओर से क्षमा कर दूँ, क्योंकि बेचारी को यों ही थोड़ा-बहुत दण्ड मिल चुका है। छः महीने बाद उनका पति विदेश से आया और फिर भी वह दो दिन तक मिल न सकीं, क्या यह दण्ड पर्याप्त नही ?"

चारुचित्रा ने अपने होंठ काटकर अपनी मुस्कान रोकी और बोली, "मै क्षमा नही कर सकती, उसको दण्ड मिलना ही चाहिए। आप उसे दण्ड दें तभी मुझे सन्तोष होगा।"

"मैं किस अधिकार से मन्त्राणी महोदया को दण्ड दे सकता हूँ। कहाँ मैं एक साधारण और नया अध्यापक और कहाँ···"

"अच्छा तो मैं ही उसे दण्ड देती हूँ।" चारुचित्रा ने कहा, "मैं आज्ञा देती हूँ कि वह प्रायश्चित करने के नाते आज भी अपने पति के निकट दो क्षण न बैठने पाए।" चारुचित्रा वहाँ से चल दी।

निकष उसके पीछे दौड़ा और आगे बढ़कर बोला, "कैसा अजीब परिहास कर रही हो, चलो मुझे अपना कक्ष तो घुमा दो।" चारुचित्रा रुकी और तिरछी चितवन से निकष की ओर देखकर बोली, "पति-आज्ञा पालन करना भी आवश्यक है, आइए आपकी ही इच्छा पूरी की जाय।"

वे दोनों बँगले के परिसर से नये बँगले की ओर बात करते हुए बढ़े। चारुचित्रा ने पूछा, "आपने कल मेरे चित्रों की प्रदर्शनी देखी थी ?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं। मैं न देखता तो फिर मुझे चैन कैसे आता। तुमने तो अपनी प्रतिभा का कीर्तिस्तम्भ ही गाड़ दिया। जिसके मुख से सुना वह ही तुम्हारी कला को सराह रहा था। किसी को रैपिड स्केचेज, किसी को कैरीकेचर्स, किसी को लैण्ड स्केप्स और किसी को माडर्न आर्ट की पेंटिंग्स पसन्द आ रही थीं। हाँ, आयल पेन्टिंग्स भी लोगों को बहुत पसन्द आईं। 'वासवदत्ता का स्वप्नभंग' और दुष्यन्त के दरबार में शकुन्तला' बहुत ही सुन्दर चित्र हैं

और वे निम्नतम रेखाओं वाले चित्र

"वह काम तो आपका बिल्कुल निराला था।"

चारुचित्रा ने पूछा, "आपने बँगला अन्दर से देखा अथवा नहीं ?"

"अभी कहाँ ! बाहर-बाहर ही तो रहा हूँ। हाँ, मैंने उस रंगीन अल्पना को अवश्य देख लिया है जो मुख्य द्वार के सम्मुख रंगीन सीपियों की सहायता से बनाई गई है। उसका अभिकल्प और रूपांकन सिवा तुम्हारे और किसने किया होगा !"

"चलिये आपको नया अतिथि-कक्ष दिखाऊँ।" चारुचित्रा ने अतिथ-कक्ष के द्वारा खोले। निकष ने देखा, सम्पूर्ण कक्ष सुन्दर टीक लकड़ी के फर्नीचर से सजा है। इसी क्षण उसकी दृष्टि एक दीवान की ओर गई। उसने देखा मखमल का बड़ा भारी बैंगनी रंग का पर्दा टँगा है और उस पर ऊपर की ओर सुनहरी गोट लगी हुई है। नीचे, पर्दे से लगे हुए छोटे-छोटे चार-पाँच, गोल तकिये रखे है और उन तकियों के आगे कई एक बाजे इस प्रकार से रखे हैं मानो उन्हें बजाते-बजाते कोई छोड़कर हट गया हो। बीच में वीणा, एक ओर तानपूरा और सितार। दूसरी ओर वाइलिन व तबला। निकष ने उन बाजो की ओर बढ़ते हुए पूछा, "संगीत की कक्षा क्या यहीं लगने लगी है ?" चारुचित्रा ने निकष का हाथ पकड़ते हुए जैसे ही कहा कि उसे छूना मत, निकष का हाथ दीवाल से जा टकराया और वह लजाकर बोला, "स्टिल पेंटिंग है। मुझे तो दृष्टि-भ्रम हो गया।" चारुचित्रा मुस्करा पड़ी।

निकष ने चारुचित्रा के हाथों को अचानक अपने मुख के पास लाकर चूम लिया। वह आनन्दविभोर हो उठा और चारुचित्रा सिहर उठी। उसकी आँखें बन्द हो गयी और निकष ने उसे अपनी बाँहो में भर लिया। कुछ क्षणों तक वे दोनों आँख बन्द कर एक-दूसरे के हृदय की धड़कनों को सुनते रहे। निकष ने धीरे से अपनी आँखें खोली। देखा चारुचित्रा की आँखें अब भी बन्द हैं, उसने उसके कपोलों के ऊपर उड़ती केशराशि को अपनी उँगलियों से हटाया और चारुचित्रा ने अपनी कमनीय बाँहों में निकष को भरकर अपना मुख ऊपर उठा दिया।

ये वे क्षण थे जहाँ विशिष्ट से विशिष्ट परिवेश की नारी का सम्पूर्ण दर्प और साधक पुरुष का भी गाम्भीर्य तिरोहित हो जाता है।

□□